सत्यमेव जयते

50

आज़ादी की गूँज

ਆਜ਼ਾਦੀ ਦੀ ਗੂੰਜ

सम्पादक

सुकुमार सरकार

राष्ट्रीय अभिलेखागार

नई दिल्ली

सत्यमेव जयते

आज़ादी की गूँज
ਆਜ਼ਾਦੀ ਦੀ ਗੂੰਜ

आज़ादी की स्वर्णिम जयंती के अवसर पर ज्ञात एवं अज्ञात
शहीद वीरों को श्रद्धांजलि के रूप में प्रस्तुत

सम्पादक
सुकुमार सरकार

राष्ट्रीय अभिलेखागार
नई दिल्ली

प्रस्तावना

राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली में विभिन्न भाषाओं में रचित ऐसा साहित्य उपलब्ध है जिसे ब्रिटिश सरकार ने राजद्रोह भड़कानेवाला कहकर ज़ब्त कर लिया था। यह साहित्य न केवल हमारे देश की स्वतंत्रता के लिए किए गए संघर्ष का सूचक है, बल्कि आज की युवा पीढ़ी में राष्ट्रीय भावना का संचार करने में भी सहायक है। इस लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए, इस विभाग द्वारा उपलब्ध सामग्री में से विभिन्न भाषाओं में कई प्रकाशन* 1985-95 तक निकाले जा चुके हैं।

उन प्रकाशनों से मिले प्रोत्साहन से प्रेरित होकर अब हम पंजाबी भाषा में उपलब्ध सामग्री से कुछ ऐसी ओजस्वी एवं मर्मस्पर्शी कविताओं और ग़ज़लों का संकलन प्रस्तुत कर रहे हैं, जिन्हें कवियों ने प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध के बीच कलमबद्ध किया था। इन रचनाओं में स्वतंत्रता संघर्ष की उन मुख्य घटनाओं का वर्णन मिलता हैं जिन्होंने उस समय के विचारशील लोगों और कवियों के मन को झकझोरा।

यह संकलन ब्रिटिश सरकार द्वारा पंजाबी भाषा में प्रतिबंधित उस साहित्य तक ही सीमित है जो समय के कुचक्र से बचकर आज राष्ट्र की धरोहर के रूप में हमारे पास सुरक्षित है। इसमें कविताओं का चयन उनके साहित्यिक मूल्यों, विषय के महत्व और लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए किया गया है। इनकी भाषा शैली भी बड़ी

---

*प्रकाशनों का विवरण :

1. देश के गीत, 1985, हिन्दी में।
2. आजादी के तराने, 1986 उर्दू में (हिन्दी रूपान्तर भी उपलब्ध है)
3. धरती की पुकार, 1993, हिन्दी में।
4. स्वतंत्रता स्वरम, 1993, तेलुगू में।
5. आशोब खण्ड-I, 1993 उर्दू में।
6. लहूलुहान वैसाखी, 1995 उर्दू में।

सरल और स्वाभाविक है। इन कविताओं और ग़ज़लों को इस प्रकार से संजोया गया है जिससे राष्ट्रीय स्वतंत्रता के इतिहास की झांकी ऐतिहासिक घटनाक्रम के साथ पाठकगण की आंखों के सामने प्रस्तुत हो सके। कुछ कविताओं का प्रकाशन वर्ष अज्ञात है इसलिए उन्हें पुस्तक में विषय के आधार पर यथास्थान क्रमबद्ध किया गया है।

स्वतंत्रता संघर्ष में हर देशवासी चाहे वह दक्षिण भारत का था अथवा उत्तर, पश्चिम या पूर्व का, सबका ध्येय एक ही था अर्थात् आज़ादी प्राप्त करना। इसलिए यहां जब हम विशेषकर पंजाबी भाषा में, जो प्रमुख रूप से पंजाब में प्रयोग में लाई जाती है, रचित प्रतिबंधित साहित्य को प्रस्तुत कर रहे हैं, तो भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन के इतिहास और इसमें पंजाब के योगदान की घटनाओं को संक्षिप्त रूप में पाठकों के सामने रखना उचित होगा। इससे पाठकों को उन कविताओं के माध्यम से पंजाब के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान का जहां एक ओर स्वतः स्मरण होगा, वहीं कविताओं के स्वरूप को भी समझने में सहायता मिलेगी। ऐतिहासिक घटनाओं को दर्शाती हुई इन कविताओं के नाम एवं कुछ अंशों का हिन्दी रूपान्तर यथास्थान पर पाठकों की सुविधा के लिए दिया गया है। इसके अतिरिक्त कवि का नाम और जिस पुस्तक या अखबार से कविता ली गई है, उसकी विस्तृत जानकारी हर कविता के नीचे गुरूमुखी के साथ-साथ देवनागरी लिपि में भी पाठकों की जानकारी के लिए दी गई है।

पंच नद अर्थात् पंजाब की धरती पर अनेक वीर एवं महापुरूष पैदा हुए जिनमें सबसे अधिक प्रसिद्ध थे— महाराजा रणजीत सिंह। उन्होंने छोटी-छोटी मिसिलों को संगठित कर पंजाब में शक्तिशाली राज्य स्थापित किया। 1839 में उनकी मृत्यु के पश्चात् 1849 में ब्रिटिश सरकार ने तत्कालीन पंजाब को अपने राज्य में मिला लिया और अंतिम सिख महाराज दलीप सिंह को गिरफ्तार करके बड़ी

चालाकी से देश निकाला दे दिया। इससे पंजाब के लोगों के सम्मान को बहुत धक्का लगा। इस दुखद ऐतिहासिक घटना का वर्णन कवि **रतन सिंह आजाद** ने अपनी कविता **पंजाब दा राज**[.] में निम्न पंक्तियों में कुछ इस प्रकार से किया है:

जदों राज पंजाब दा सांभिआ सी,
तदों कीता सी की इकरार आके।
महाराज नु आपे ही आखिआ सी,
बालग होण तक हां सेवादार आके।
पिछों दिओगे राज महाराज जी नु,
नौकरशाही करन है बपार आके।
राज राजिआं दा मुड़के परत देना,
मालक बनण मुड़के हकदार आके।

★ ★ ★

★ ★ ★

की रजे नां तुसीं बपार करके,
अजे तक बालग नां महाराज होइआ?
गबन कीती अमानत पंजाब साढ़ा,
सच आखिआ तु नाराज़ होइआ।

पंजाब में अंग्रेजी शासन के विरूद्ध जनता में असंतोष की आग धीरे-धीरे सुलग रही थी जोकि कूका आन्दोलन (1862-72) के रूप में सबसे पहले प्रज्जवलित हुई। यह आन्दोलन बाबा राम सिंह के नेतृत्व में शुरू हुआ था। आन्दोलनकारियों की उग्रता को देखकर अंग्रेजी सरकार बौखला गई और उन्हें बड़ी ही निर्दयता से कुचल डाला गया परन्तु इसका पंजाब के सामाजिक, धार्मिक, नैतिक और राजनैतिक जीवन पर बहुत

---

*सिख कौम के अंतिम वादशाह अर्थात् महाराजा दलीप सिंह जी :
[.] क्रम संख्या-1

गहरा प्रभाव पड़ा। इसके परिणामस्वरूप कूकाओं ने अपने बलिदान से स्वतंत्रता संघर्ष के इतिहास में एक प्रेरणाप्रद पृष्ठ जोड़ा। इससे लोगों में यह भावना जगी कि संकुचित, क्षेत्रीय और प्रांतीय दृष्टिकोण से सोचने विचारने के बजाय राष्ट्रीय स्तर पर कार्य करना चाहिये।

भारत में 1875 से 1885 के दौरान नई राजनैतिक चेतना पनपी। 1876 में बंगाल में "इंडियन एसोसिएशन", 1884 में मद्रास में "मद्रास महाजन सभा" और 1885 में बम्बई में "बांबे प्रेसीडेंसी एसोसिएशन" का गठन हुआ। राजनैतिक जागरूकता के साथ-साथ भारतीय बुद्धिजीवियों ने ब्रिटिश शासन के आर्थिक पहलू को भी विश्लेषित किया। भारतीय पूंजी के भारत से निकासी की बात, सबसे पहले दादाभाई नौरोजी ने उठाई और खुले तौर पर कहा कि भारतीय पूंजी का विदेश में जाना ही भारत की गरीबी का मूल कारण है। उनके ही समकालीन न्यायमूर्ति महादेव गोविंद रानाडे और रमेश चन्द्र दत्त ने भारतीयों को आधुनिक औद्योगिक विकास का महत्व समझाया। यह आर्थिक मुद्दा ही बाद के आन्दोलनों में प्रमुख था।

1885 में इन्डियन नेशनल कांग्रेस की स्थापना हुई। जिसका लक्ष्य शुरू में सरकार से सीधे टकराव के बजाय सहयोग करना रहा परन्तु नरम पंथियों की प्रार्थनाओं और प्रस्तावों का ब्रिटिश सरकार पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। 1905 में बंगाल विभाजन से राजनैतिक वातावरण बदलने लगा। गरम दल के लिए अनुकूल वातावरण भी इसी समय तैयार हुआ। अरविन्द घोष, विपिनचन्द्र पाल, बाल गंगाधर तिलक और लाला लाजपतराय सरीखे राष्ट्रीय नेताओं ने कांग्रेस की नीतियों को बदलने का सुझाव दिया और जनसाधारण को कष्ट सहकर राष्ट्र के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने को प्रेरित किया। सारे देश में तिलक का नारा "स्वराज हमारा जन्म

सिद्ध अधिकार है, इसे हम लेकर रहेंगे" गूंज उठा।

बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ के साथ ही भारत में और विशेष रूप से पंजाब तथा बंगाल में एक नई लहर ने जन्म लिया। वास्तव में पंजाब के लोगों में सरकार की आर्थिक नीतियों को लेकर असंतोष बढ़ रहा था। चारों ओर घोर अशांति फैली हुई थी। किसानों की हालत बहुत दर्दनाक थी क्योंकि सरकार ने ज़मीन और पानी पर लगने वाले कर की दरें बहुत बढ़ा दी थी।

कवि "करतार सिंह करतार" ने अपनी कविता **किरती खरचां दे भारां दबाये होय ने** [.] में किसानों की इस दयनीय स्थिति का इस प्रकार वर्णन किया है:

ऐसी ज़िन्दगी तो मौत बहुत चंगी,
आवे सुख दा इक साह वी नां।
दिन ते शाम तीकर हाय खून डोहलां,
फिर अफसोस कि हुंदा निबाह वी नां।
किश्त बैंक दी उधरो सिर आई,
गलों मामले दा लथा फाह वी नां।
हाय अफसोस कि नहरां वी बंद होईयां,
पैदा खेत विचों हुंदी सवाह वी नां।
इक डंग दा वी घर खान नु नहीं,
साह नक ते असां दे आय होय ने।
की करीये नहीं कोई पेश जांदी,
किश्ती खरचां दे भारां दबाये होय ने।

किसानों में उमड़ते इस असंतोष को देखकर पंजाब के प्रमुख नेता सरदार अजीत सिंह और लाला लाजपतराय ने कई सभाओं में जोरदार भाषण दिये और किसानों का हौंसला बढ़ाते हुए उन्हें बढ़े हुए करों का भुगतान रोकने की सलाह दी। हालात को बिगड़ता

[.] क्रम सख्या-4

हुआ देखकर, अंग्रेज सरकार ने 1907 में दोनों को गिरफ्तार कर मांडले जेल में भेज दिया। कुछ समय के लिए सरकार के दमनचक्र के सामने किसानों का संघर्ष तो दब गया मगर इन दोनों नेताओं का पंजाबवासियों पर गहरा असर पड़ा।

इन राष्ट्रवादी नेताओं ने किसानों का जहां एक ओर नेतृत्व किया वहीं दूसरी ओर कवियों ने भी अपनी जोशीली कविताओं के माध्यम से उनको जागृत किया और अपना हक पाने के लिए एकजुट होकर उठ खड़े होने के लिए प्रेरित किया। इसी संदर्भ में कवि करतार सिंह करतार की कविता **जाग हुण हिंदिआ किसाना जाग ओए**[.] की कुछ पंक्तियां हैं:

खून ढोल के तूं करना ऐ कमाई जो,
रल मिल गैर इह नूं जांदे खाई ओऐ,
लभदा नी तैंनू हाय अल्णा साग ओऐ।
जाग हुण हिंदिआ किसाना जाग ओऐ।
छती निहमतां तूं जटा पैदा करनाऐ,
अफसोस भूख नाल फेर तूं ही मरनाऐ,
आख गैरां तांई ऐथों जाण भाग ओऐ।
जाग हुण हिंदिआ किसाना जाग ओऐ।

अपनी जीविका की तलाश में कई भारतीय कैनेडा, संयुक्त राज्य अमेरिका, अफ्रीका, सिंगापुर, मलाया और हांगकांग जैसे देशों में चले गये थे, इनमें पंजाब के किसान वर्ग से भी काफी लोग थे। उन पर भी रंगभेद के कानून बड़ी सख्ती से लागू किये गये। काले और गोरे के इस भेदभाव का कवि भाई विधाता सिंह "तीर" ने अपनी कविता **सोहणा सोभदा काला नशान बहुता**[..] में बड़े सुन्दर ढंग से वर्णन किया है कविता के कुछ अंश :

[.] क्रम संख्या-5
[..] क्रम संख्या-15

सुण वे चिटिआ! जगत ते कालिआंदा,
सदा होवंदा है यार मान बहुता।
सदा वसदा ऐ अंदर कालिआं दे,
बाहुबल हिम्मत जोर तान बहुता।
अखां विच हन धीरीआं कालीआं वे,
जगत विच है जिन्हा दा शान बहुता।
काला होवणे दी यार दस तैनु,
क्यों नहीं आवेदी कदे बी सदर मासा।

इन भारतीयों ने विदेशों में पहले से बसे लोगों को देश की हालत से परिचित कराया जिसके फलस्वरूप अमेरिका में सोहन सिंह भाकना, लाला हरदयाल, करतार सिंह सराबा, केसर सिंह, रासबिहारी बोस, पंडित काशी राम और भाई परमानंद आदि के प्रयत्नों से 1913 में "गदर पार्टी" की स्थापना हुई। "गदर" के नाम से पार्टी की एक पत्रिका गुरूमुखी के अतिरिक्त उर्दू, मराठी और बंगाली भाषा में भी निकाली जाती थी जिससे भारतीयों की जीवन परिस्थितियों और कष्टों के बारे में जन मानस को अवगत कराया जाता था।

इसी संदर्भ में **गदर पार्टी दा जन्मदिन**[.] नामक कविता में से कुछ पंक्तियां इस प्रकार हैं:

जुल्म हो रिहा सी बहुत देस अंदर।
अखां खोलिआं ना हिन्दुस्तानीयां ने।।
जा हिंद फिरंगीआं लुट चाटे।
साढ़ी बहुत ही दुख कहानियां ने।।
पैसा कढ़ वलैत पुचा दिता।
सानु नंग कीता दगे दानीआं ने।।

[.] क्रम संख्या-16

लगे जौंक वांगु पीणे रत साढ़े।

कीता तंग है दुश्मनी जानीआं ने।।

1914 में प्रथम विश्व युद्ध के शुरू होने से पहले एक ऐसी घटना हो गई जिसने न केवल गदर पार्टी का मार्ग ही बदल दिया अपितु सारे पंजाब को बहुत ही प्रभावित किया। स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में घटना **कामागाटामारू** के नाम से प्रसिद्ध है। मूल रूप से यह एक जापानी जहाज का नाम था जिसे सिंगापुर से बम्बा गुरूदित्त सिंह ने किराये पर लिया था और प्रवासी भारतीयों को लेकर कैनेडा पहुंचा। परन्तु कैनेडा सरकार ने भारतीयों पर भेदभावपूर्ण अप्रवासी नियम लागू कर दिये और उन्हें वैन्कूवर बंदरगाह पर उतरने की अनुमति नहीं दी। इससे यात्रियों को बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। अंततः उन्होंने जहाज भारत की ओर मोड़ लिया और आखिर में भूखे प्यासे जर्जर अवस्था में कलकत्ता के बज-बज बंदरगाह पर पहुंचे। यहां आये यात्रियों को ब्रिटिश सरकार ने खतरनाक क्रांतिकारी घोषित कर दिया। यात्रियों और पुलिस में मुठभेड़ हुई, कई पुलिस की गोलियों से हताहत हुए, अनेक को गिरफ्तार कर पुलिस के पहरे में एक विशेष रेल द्वारा पंजाब भेज दिया गया। पंजाब में इस घटना ने युद्ध की सी स्थिति उत्पन्नकर दी।

इस घटना का वर्णन कवि भाई सूरज सिंह ने अपनी कविता **श्री गुरूनानक जहाज (कामागाटामारू)**[.] में बड़े विस्तार से किया है। कविता के कुछ अंश इस प्रकार हैः

हिन्दुस्तानी आदमी, चल जांदे दूरी।

अमरीका, अफ्रकीओं, कैनेडा दूरी।

जिले चंगी लभी है खास मजूरी।

हिंदू, मुसलमान दे, मन मनसा भूरी।

[.] क्रम संख्या-6

किंवे गरीबी असां दी, हो जावे पूरी।
विच कैनेडा वड़न दी, वड़ी मजबूरी।
चिट्टे चमड़े रोकदे, ढाड़े मगरूरी।
आखन साढ़े वासते, हैं, हुक्म हजूरी।
हिंदी बंद खाकदे, हन गोरे नुरी।
ऐथे वड़ने न दिआंगे, कीती मशहूरी।

★ ★ ★

श्रीमान गुरूदित्त सिंह, बाबा उपकारी।
वासी माझे देश दा, कौमी हितकारी।

★ ★ ★

थोड़े चिर दे विच ही, सब काज बनाया।
इक जहाज खरीदिआ, लोकां दरसाया।

★ ★ ★

बज-बज उते आन के, तकलीफ उठाई।
कैनेडा तो कढिआ, धक्के मरवाई।
नाल विचारे हिंदिआं, क्या ऐह वरताई।
गवर्नमेंट-सौदागर, क्यों तक सकाई।
ऐसे करके उसने, सब रोक लगाई।
होर न दूजी गल है, इसदे विच काई।

इस घटना का एक तुंरत परिणाम यह हुआ कि गदर पार्टी के सदस्य और अधिक सक्रिय हो गये। बहुत से भारतीय विदेशों से भारत वापिस लौटे और पंजाब आये लोगों के नये विचारों तथा कार्यक्रम का काफी स्वागत किया गया। आम जनता का सहयोग पाकर विद्रोह की योजना बनाई गई परन्तु ब्रिटिश सरकार ने बड़ी चालाकी से विद्रोह को पनपने से पहले ही दबा दिया। बहुत बड़ी संख्या में गदर पार्टी से जुड़े लोगों को गिरफ्तार कर अभियोग चलाया जोकि "पंजाब षड़यंत्र केस" के नाम से जाना जाता है।

करतार सिंह सराबा पर अंग्रेज सरकार का तख्ता उलटने की साजिश का मुकदमा चलाया गया और नवम्बर, 1915 में उन्हें फांसी दे दी गई। अन्य बहुत से लोगों को उम्र कैद की सज़ा दी गई तथा अण्डमान, मांडले या दूसरे स्थानों की जेलों में बंद कर दिया गया। जेलों में इन कैदियों के साथ अत्यधिक बर्बरता का व्यवहार किया गया।

कवि भाई मोहनलाल "दीवाना" ने अपनी कविता **साढ़ा हाल–काले पाणी वालिआं दी सिक**[.] में इन कैदियों के मन की व्यथा का वर्णन कुछ इस तरह से किया है:

हाल अपणा दसीये जा किये
मेहरबान सारे मुंह मोड़ बैठे।
जिन्हां वास्ते असां ने दुख झेले,
ऊहतां नाल होरां दिल जोड़ बैठे।
छड़े बैण भाई नाले बाप माई,
तुसां वास्ते सब कुछ छोड़ बैठे।
तुसीं सुखां दे विच ही मौज लुटो,
असी दिल दे लहु निचोड़ बैठे।

अंग्रेजों ने प्रथम विश्व युद्ध के समय भारत के धन एवं जन शक्ति का खुलकर लाभ उठाया और बदले में कुछ ऐसे आश्वासन दिये कि यदि उनकी विजय हुई तो वे भारत को आत्मनिर्णय का अधिकार देंगे। अंग्रेजों को सफलता तो मिली परन्तु भारतीय जनता को अधिकार के नाम पर कुछ नहीं दिया गया, बल्कि वे भारतीयों के योगदान को ही भूल गये। रौलेट एक्ट लागू कर दिया गया। जिसके अधीन बगैर मुकदमा चलाये किसी भी व्यक्ति को कैद किया जा सकता था। विशेष न्यायालयों को गठित करके किसी के विरूद्ध भी

[.] क्रम संख्या-8

गोपनीय मुकदमा चलाया जा सकता था। इसके अतिरिक्त सरकार को किसी भी प्रकाशन सामग्री को राजद्रोहात्मक घोषित करने का भी अधिकार था। सरकार के इस तरह के व्यवहार से भारतीयों को घोर निराशा हुई।

उस समय जनता में फैल रहे इस आक्रोश का वर्णन इन कविताओं में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। इस संदर्भ में कवि तरलोक सिंह "सीतल" की कविता "असा" **समझिआ जिवें है शक्ल सोहणी, तिवें अंदरों भी नुरो नुर होसें**[.] की कुछ पंक्तियां देखिए:

ढाड़ा फसदों विच मुसीबतां दे,
वेले सिर जे तैनूं बचावंदे ना।
बेड़ा गरक हुंदा तुभी डुब जांदो,
मोढ़ा ढाह जे पार लगावंदे ना।
नानी याद आ जावंदी तुझतांई,
जरमन कोलों जे असी छुड़ावंदे ना।
आकड़ यार तेरी सारी दिस पैंदी,
खातर तेरी जे वीर कुहावंदे ना।
सानू पता की सी तैं है दगा देणा,
विचों जहर दे नाल भरपूर होसें।
असां समझिआ जिवें है शक्ल सोहणी,
तिवें अंदरों भी नुरो नुर होसें।

गांधी जी के आवाह्न पर देशभर में रौलेट एक्ट का कड़ा विरोध किया गया और हड़ताल हुई। लोगों ने जगह-जगह जुलूस निकाले, सभायें की और सरकार की नीतियों की खुलेआम निन्दा की गई। परन्तु सरकार का दमनचक्र और जोरों से चलने लगा। पंजाब में इसका प्रभाव सबसे अधिक रहा। असंतोष की ज्वाला तब और भी

[.] क्रम संख्या-9

भड़क उठी जब वहां के दो स्थानीय नेताओं डा. सैफुद्दीन किचलू तथा डा. सत्यपाल को गिरफ्तार कर लिया गया। गांधी जी भी गिरफ्तार कर लिये गये।

इसके बाद १३ अप्रैल, १६१६ बैसाखी के दिन अमृतसर के जलियांवाला बाग़ में जनरल डायर के नेतृत्व में बिना कोई चेतावनी दिए हजारों की संख्या में एकत्रित शांतिप्रिय, निहत्थे और निर्दोष लोगों पर बड़ी बेरहमी से गोलियां बरसाई गई। यह एक ऐसी लहूलुहान बैसाखी थी जिसकी याद आज भी भारत की जनता को उद्विग्न कर देती है क्योंकि दुनिया के इतिहास में किसी भी साम्राज्यवादी हुकूमत द्वारा की गई बर्बरता का इतने निम्न स्तर का उदाहरण शायद ही कहीं मिल सके।

कवियों ने भी इस जघन्य हत्याकाण्ड को अपने शब्दों में कलमबद्ध करके लोगों के सामने रखा। इस घटना से जुड़ी कई कवितायें हैं जैसे **जलियांवाले बाग दा हाल**[.] **वतन आज़ाद**[..] **रलिआ खून हिंदू मुसलमान ऐथे**[...]। एक प्रसिद्ध कवि फिरोज़दीन शरफ ने इस हत्याकाण्ड के दृश्य को अपनी कविता **जलियांवाला बाग**[....] में कुछ इस तरह दर्शाया है:

"नौनिहाल" कई जड़ा तो पुट सुटे,
जेहियां सख्त अंधेरीआं छुटीआं सम।
इह ओह "बाग" ऐ, जिहदे विच "हाय" "हाय",
मदन मोहन जेहियां कलियां टुटीआं सन।
"रतनदेई" ने लाल "नौरतन" बदले,
बैह के राम भर मीढीआं पुटिआं सन।

[.] क्रम संख्या-11
[..] क्रम संख्या-13
[...] क्रम संख्या-14
[....] क्रम संख्या-12

कईयां "नथा" दे "लाल" गवाच गये सन,
गइयां कई "सुहागना" लुटीआं सन।
"नामलेवा" ना कईयां दा रिहा कोई,
हो गये ओतरे कई खानदान ऐथे।
"भारत माता" दे सच्चे सपूत पिआरे,
कौम वास्ते हो गये कुर्बान ऐथे।

इसके बाद गांधी जी ने देशवासियों को "असहयोग" का एक नया मंत्र दिया और यह आन्दोलन (1919-1921) के रूप में देश भर में फैल गया। विदेशी कपड़ों की होलियां जलाई गईं, स्वदेशी वस्तुओं और खद्दर का, शहर-शहर, गांव-गांव सब जगह बहुत प्रचार किया गया।

खद्दर की महिमा का गुणगान कवि भाई विधाता सिंह तीर की कविता हिंद दा ताज चरखा[.] में किया गया है, कुछ पंक्तियां इस प्रकार हैं:

मुलक देश आजद कराण खातर,
आप कतिआ गांधी महाराज चरखा।
कढ देवसी कफस, चों कैदीआं नू,
खोहल देवसी जुल्म दे पज चरखा।
देश सेवकां दी होसी चाह पुरी,
गांधी, दास दी रखसी लाज चरखा।
शहिन शाह जहान दा थाप दित्ता,
करके टोरिआ हिंद दा ताज चरखा।

पंजाब में लाला लाजपतराय, सरदार सरदूल सिंह कवीशर, रामभज दत्त, रूचिराम साहनी, डा. गोपीचंद भार्गव, डा. सैफुद्दीन किचलू जैसे प्रमुख नेताओं ने आगे बढ़कर युवाओं और

[.] क्रम संख्या-18

सत्याग्रहियों का आवाह्न किया। ग्रामीण, खद्दर और स्वदेशी के विचारों से बहुत प्रभावित हुए और आन्दोलन में भारी संख्या में शामिल हुए। **कांग्रेस दा ढंढोरा, एकता दा मंदिर ते आजादी देवी, साढे बंदीवान लीडर ते असीं, आजादी दे दान की मंग, अजे होर शहीदीआं मंगदा जे**[.] कुछ ऐसी कवितायें हैं जो इस आन्दोलन के भिन्न-भिन्न पहलुओं को दर्शाती हैं।

चौरा-चौरी की घटना के फलस्वरूप गांधी जी ने जब अचानक असहयोग आन्दोलन को वापिस ले लिया तो उनके इस निर्णय से लोगों को घोर निराशा हुई इसीलिए क्रांतिकारी आन्दोलन की गतिविधियां और तेज हो गईं इस समय पंजाब में कुछ वर्षों से बाहर से आने वाले प्रवासियों ने युवकों की विचारधारा को बदला। इसके अतिरिक्त रूस की क्रांति और विशेषकर साम्यवादी विचारधारा से पंजाब के किसान व मेहनतकश लोग बहुत प्रभावित थे।

पंजाब में सरदार सोहन सिंह जोश ने "किरती" नामक किसान पार्टी संगठित की। इस संगठन की एक पत्रिका 'किरती' गुरूमुखी में प्रकाशित की जाती थी जिसमें पंजाब के किसानों की हालत का खुलकर वर्णन और सरकारी नीतियों का विरोध किया जाता था। इसकी कुछ जब्त प्रतियां हमारे पास उपलब्ध हैं जिनमें से कुछ कवितायें चयन करके इस संकलन में सम्मिलित की गई हैं जैसे : **"छड़िया ना फका ऊका चंदरे लुटेरे ने, "हिंद लुटी जांदे ने"**, **किरती दल नु हलुणा,** "किरती" किरती दे सदा हमदर्द रहसणा[..]" इत्यादि।

कवि श्रीमान "दिलगीर" जी ने अपनी कविता **"किरती दल नु हलुणा** में किसानों को कुछ इस प्रकार से प्रेरित किया है।

उठों किरतीओ होश विच आओ रती, काहनु सोचां दे वहिण विच
वहि रहे हों।

[.] कृपया देखें क्रमशः संख्या-17, 19, 21, 22, 23

[..] कृपया देखें क्रमशः संख्या-28, 29, 30 ओर 31

बल हुदिंआं वी आपणी बांह अंदर, काहनु धोंस गुलामी दी सह रहे हों।

★ ★ ★

आओ "पार्टी लेबर" बनाओ तुसी, तदे हक दे तुसी हकदार होसो।

इक मुठ होके इत्तपाक कर लो, वड़े माण वाले इज़तदार होसो।

यह समय का ऐसा दौर था जब कवियों ने बड़े जोश खरोश के साथ दुनिया को भारत के किसानों, मजदूरों और निम्न वर्गों की दयनीय दशा से अवगत कराया। उन्होंने प्रचारित किया कि यह कैसी विडम्बना है कि भारत जो कृषि प्रधान देश है उसका किसान सबके लिए अन्न उगाता है परन्तु स्वयं भूखा रहता है। सारी दुनिया के बाज़ारों में कपड़े की पूर्ति करने वाले बुनकर अपने बच्चों के शरीर को ढकने के लिए पूरे वस्त्र प्राप्त नहीं कर पाते। बढ़ई और भवन निर्माण कार्यों में लगे लोग भी इसी तरह शानदार महल बनाते हैं, मगर खुद गंदी बस्तियों में रहते हैं। दूसरी ओर समाज पर घुन की तरह जीने वाले पूंजीपति लोग अपनी सनक पूरी करने के लिए करोड़ों रूपये पानी की तरह बहा रहे हैं। इन भयंकर विषमताओं और असमानताओं को दूर करने के लिए उन लुटेरों को हर हाल में अपने देश से बाहर निकालना ही होगा क्योंकि वे देश की सम्पत्ति लूट-लूटकर विदेश में जा रहे हैं। कुछ कविताओं में जैसेः **असी अग असमान नु ला दिआंगे, पूंजीदारी दे महल सब ढाह दिआंगे, मुस्लिम हिन्दू, सिख नहीं असी, साढ़ी कौम हुण हिन्दुस्तानियां दी असी हिंद आजाद करावांगे, पूंजीदारी फुका मार उड़ाइये**[.] आदि में कवियों ने किसानों और सर्वहारा को एकजुट होने को उकसाया। इनमें नव-चेतना, एकता, देशभक्ति और बलिदान की झलक मिलती है।

[.] कृपया देखें क्रमशः संख्या-34, 36, 38, 39 ओर 40

2—254/Deptt. of Archives/ND/97

इसी संदर्भ में कवि अमरसिंह आज़ज की कविता उठ पग दे पेच संभाल जटा[.] से कुछ पंक्तियां :

उठ! उठ! मल्ला खबरदार हो जा।
छडवे नींव मेडी होशियार हो जा।
डाकू पऐ धर तेरे, बेदार हो जा।
अखां खोल ते पग संभाल जटा।
उठा! पग दे पेच संभाल जटा।
आपणे आप दा कुछ खिआल तां कर।
जालम लुट के लै गये नी तेरा सब ज़र।
तैनू कढ के कीता ने घरों बे घर।
ज़रा सिर तां ऊब उठाल जटा।
उठा! पग दे पेच संभाल जटा।

देश के नौजवानों के मन में भी नई आशा को जागृत करने में कवियों का बड़ा योगदान रहा। उनकी जोशीली एवम् राष्ट्रप्रेम से ओत-प्रेत कविताओं ने युवकों को अपना सर्वस्व न्यौछावर करने को प्रेरित किया। देश तेरा ढाडा मंदे हाल ऐ, सिर तली ते लै नौजवान निकले, लोक राय, लगन आजादी मन विच पार मरने ते हुण डरना की, गबरूआं नु[..] आदि कुछ कवितायें उल्लेखनीय हैं:

इसी संदर्भ में कवि "हरनाम सिंह कमला" की कविता सिर तली ते जै नौजवान निकले[...] के कुछ अंश इस प्रकार हैं।

देश वास्ते मरन सरवौण वदले, हंस हंस शहीदीआं पौंण वाले।
गलों जुआ गुलामी दा लाहण वदले, वदले दे जिंदा धमौणवाले।
रूठी हीर आजादी मनौंण वदले, दर-दर अलख कुर्बानी जगौण वाले।
सिर धर तली दूल्हे नौजवान निकले, हिन्दुस्तान आज़ाद करौण वाले।

[.] क्रमशः संख्या-45

[..] कृपया देखें क्रमशः संख्या-42, 44, 49, 59 और 60

[...] क्रमशः संख्या-44

1927 में भारत में साइमन कमीशन आया। राष्ट्रीय नेताओं ने इसके बहिष्कार की घोषणा की एवं जगह-जगह विरोध में जुलूस निकाले गये। कमीशन जब लाहौर पहुंचा तो वहां पंजाब के प्रमुख नेता लाला लाजपतराय के नेतृत्व में लोगों ने काले झण्डों से इसका स्वागत किया और विरोध में प्रबल प्रदर्शन करते हुए "साइमन वापिस जाओ" के गगन भेदी नारे लगाये। जनता के उत्साह और क्रोध की उमड़ती लहर को देखकर सरकार एकदम सतर्क हो गई और उसने दमन करना शुरू किया। पुलिस द्वारा एकत्रित भीड़ पर बड़ी निर्दयता से लाठियां बरसाई गईं। लाला लाजपतराय के सिर पर लाठियां लगीं और वह बुरी तरह घायल हो गये। भारतीयों को इस घटना से बहुत आघात पहुंचा।

इस घटना के थोड़े दिनों बाद ही लाला जी की मृत्यु हो गई। इससे नौजवानों का खून खौल उठा। प्रतिशोध की ज्वाला और भी तेज हो गई। घटनास्थल पर उपस्थित भगत सिंह ने अपने आदर्श नेता की मौत का बदला लेने की शपथ ली। वे तो पहले से ही क्रांतिकारियों से जुड़े हुए थे अब उनकी विचारधारा ने क्रांतिकारी आन्दोलन में एक नया अध्याय जोड़ा। अप्रेल 1929 में दिल्ली के सेंट्रल असेम्बली में हुए बम काण्ड के फलस्वरूप उन्हें गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया गया।

इन्हीं दिनों देश में साम्यवादी विचारधारा जोर पकड़ रही थी। सरकार ने ट्रेड यूनियन आन्दोलन में कम्युनिस्टों के बढ़ते प्रभाव से चिंतित होकर कई लोगों को गिरफ्तार कर लिया, मुकदमा चलाया और सजायें दी। "मेरठ षड़यंत्र केस" (1929-33) के नाम से विख्यात इस घटना पर "किरती" के जुलाई, 1929 के अंक में एक गीत छपा था, जिसका शीर्षक था- **सांझा गौणा**[.] यह वह गीत है जिसे गाते हुए "मेरठ षडयंत्र केस" के अभियुक्त एवं किरती नेता

[.] क्रमशः संख्या-33

अदालत के कमरे में दाखिल हुए थे। इसकी कुछ पंक्तियां:

उठो गुलामी छड़ों, नवां सुनेहा आया।
दुनिया नवीं बसेगी, सुन लो है इह सुनाया।
फिर हो रिहा ऐ पैदा, हुण तों नवां ज़माना।
सब कुछ हाऊ उन्हां दा, जिन्हां ने है कमाया।
उठो भरा गरीबो, निकलो खां कस कमरां।
अंतली लड़ाई लड़ो इह हुक्त आया।

इन्हीं दिनों भगत सिंह जेल में थे। उन्होंने जेलों में सुधार लाने के लिए सरकार पर जोर डाला और भूख हड़ताल भी की। जेलों में सुधार की मांग करने में जो सबसे आगे आये वे कलकत्ता के क्रांतिकारी जतिन थे जो 63 दिन की भूख हड़ताल के बाद देश के लिए सितम्बर, 1929 में बलिदान हो गये।

कविता **पिआरा दास**[.] उन्हीं से सम्बन्धित है और कवि "कैनेडयन" ने उनका यश गायन कुछ इस प्रकार से किया है:

की होइया जे दास शहीद होइया, जान पा गिआ हिन्दुस्तान दे विच।
खातर देश दे होंण शहीद होके, दस गिआ है ठीक बयान दे विच।
भांडा भनिआ सीस ते जालमां दे, नेकी खट लई कुल जहान दे विच।
नौकरशाही ते लाहनता पैण सारे, कीता जुल्म जो दास मरवान दे विच।
जड़ा कर गिआ पोलिआं राज दीआं, गिआ खेल पिआरी अपनी जान उसे।
जिंदा रहेगा रहेगा जग तौंणी, हर इक दी दास ज़वान उसे।

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने दिसम्बर, 1929 में पंजाब की ही धरती पर रावी नदी के किनारे लाहौर में कांग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षता करते हुए बड़े ही उत्तेजनाजनक वातावरण में "पूर्ण स्वराज्य" को कांग्रेस का लक्ष्य घोषित किया। इस ध्येय को आगे बढ़ाते हुए गांधी जी के नेतृत्व में नमक सत्याग्रह अप्रेल, 1930 में शुरू हुआ। पंजाब में सरदार जसवंत सिंह ने सत्याग्रहियों का नेतृत्व

[.] क्रमशः संख्या-37

किया। उल्लेखनीय है कि देश भर में महिलाओं ने भी इसमें बढ़ चढ़कर भाग लिया। प्रमुख रूप से श्रीमती सरोजनी नायडू, श्रीमती एल.आर.जुत्शी, कुमारी विद्यावती, श्रीमती सूरजभान, श्रीमती पार्वती देवी आदि ने नमक कानून तोड़ने के अतिरिक्त विदेशी कपड़ों की होली जलाई और गिरफ्तारियां दीं। महिलाओं में जागरण से राष्ट्रीय आन्दोलन को और बल मिला।

नमक सत्याग्रह को कवि "जीवन" ने अपनी कविता "**लूण**"[.] में कुछ इस तरह कलमबद्ध किया है:

लूण खाके हिंदिआ दा हिंदिआ दे हथों खोहवे,
कैद कीता ऐहने वेखो पहरिआ दे नाल लूण।
ताहींऐ गांधी आखदा मरेगा इह इसे नाल,
टकरेगा इहनु हो के ऐसे दा ही काल लूण।
बुढ़ा हां में भांवे पर बली हां सच्चाई वलों,
खोहवे हथों मेरियां की कीसे दी मजाल लूण।
पिसु पै गये उसनु ने आखदा इह की होइया,
गांधी ने की काढ कढ़ी छेड़िया सवाल लूण।

मार्च, 1931 में "लाहौर षडयंत्र केस" के अभियुक्त भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरू को फांसी की सज़ा सुनाई गई और उन्होंने हंसते हंसते फांसी के फंदे को "भारतमाता की जय", "बंदेमातरम" "इंकलाब जिंदाबाद" के नारे लगाते हुए सहर्ष स्वीकार किया। उससे सारे देश के साथ-साथ पंजाब में स्वतंत्रता आन्दोलन ने उग्र रूप ले लिया। क्या बच्चा, क्या बूढ़ा सबके मुंह पर भगत सिंह का ही नाम था। वह "शहीदे आज़म" कहलाये। भगत सिंह के बलिदान ने कवियों व गीतकारों को नये स्वर दिये। इसका प्रमाण वह साहित्य है जो उनके बलिदान के एकदम बाद बड़ी संख्या में सारे भारत में

[.] क्रमशः संख्या-50

विभिन्न भाषाओं में रचा गया। जिनमें प्रमुख हिन्दी, उर्दू, गुरूमुखी और तेलुगू इत्यादि में था। पंजाब में तो उस दौरान विवाह के अवसर पर गाये जाने वाले लोकगीत, जोकि "घोड़ियां" कहलाते हैं तथा "हीर रांझा" के पुराने किस्सों पर गाये जाने वाले गीतों की धुनों पर कई कवितायें व गीत रचे गये जो बहुत प्रसिद्ध हुए और आज तक भगत सिंह की याद में कवि सम्मेलनों, जलसों इत्यादि में गाये जाते हैं।

इसका प्रमाण कवि "करतार सिंह करतार" की कविता **वाह जी वाह! सोहणे सरदार भगत सिंह**[.] में उन्होंने भगत सिंह के व्यक्तित्व का गुणगान इन पंक्तियों में कुछ इस तरह चित्रित किया है:

रखिया ना दिल विच खौफ मरन दा,
सी ख्याल इक हिंद नु आजाद करन दा,
ते दामन शहादत दे नाल भरन दा,
इहा लै ख्याल होया तैयार भगत सिंह।
वाह जी वाह। सोहणे सरदार भगत सिंह।
घर छड़ जेहल नु खाना बणा लिया,
बलिहार तेरे हौंसले तो करभा वालिआ,
वतन लई फांसी दा गल रस्सा पर लिया,
हदो वद किता उपकार भगत सिंह।
वाह जी वाह सोहणे सरदार भगत सिंह
किता जो तु कम नहीं किसे तो लुकिया,
देश सेवा कर दिआं सरीर मुकिआ,
किहड़ा है उह सिर जो तैनु नहीं झुकिआ,
सिजदा तैनु कीता ऐ नर नार भगत सिंह।
वाह जी वाह सोहणे सरदार भगत सिंह।

[.] क्रमशः संख्या-54

यह भगत सिंह और जतिन के प्रयत्नों का ही फल था जिसके कारण जेलों में बाद में सुधार हुए। अब तक बहुत से लोग ज़ेलों में बंद पड़े थे कुछ लोग तो 1914-15 में गिरफ्तार किये गये थे। मगर सरकार जैसे उनके बारे में भूल सी गई थी। लेकिन अब उनकी रिहाई के लिए पंजाब में एक आन्दोलन उठ खड़ा हुआ जिसके फलस्वरूप कुछ लोगों को रिहा किया गया। इस संदर्भ में कविता **राजसी कैदी**[.] और **अैजीटेशन कर दिया बाबे छुड़वावो**[..] उल्लेखनीय है। कविता "अैजी टेशन कर दिया बाबे छुड़वावो" से कुछ पंक्तियां प्रस्तुत हैं:

उठो। उठो।। सजणो, हुण करो तियारे,
चौदहां वाले बाबिआ तो जावो वारे।
साढ़ी खातर छड़ गये, परिवार विचारे,
पिंजर हुण तां रह गये, जेहतांदे मारे।
क्यों नहीं पैंदी अणख तुसी हो गये नकारे,
भुले अपणे फर्ज नु निज मान बिसारे।
उठो! मारो!! हम्बला तूफान मचावो,
अैजी टेशन कर दिओ,बाबे छुड़वावो।

इसी दौरान एक तरफ गांधी जी का सविनय अवज्ञा आन्दोलन (1931-34) चला तो दूसरी तरफ किसान आन्दोलन से सारा देश हिल उठा। अब तक घटित बहुत सी घटनाओं ने राजनैतिक वातावरण को इतना गर्म कर दिया था कि किसी भी कीमत पर पूर्ण स्वतंत्रता से कम की मांग किसी को भी स्वीकार्य नहीं थी। इसकी प्रतिध्वनि यहां संकलित कुछ कविताओं जैसे : **"इंकलाब दा पैगाम", "पुट देणी जड असां शाही पूंजीदारी दीं" "वतन आजाद करौणा ए" "सुते जट नु हलुणा" "गीत आजादी", इंकलाब जिंदाबाद, इंकलाब आगिआ"**[...] इत्यादि में मिलती है।

[.] क्रमशः संख्या-56

[..] क्रमशः संख्या-57

[...] कृपया देखें क्रमशः संख्या-61, 62, 63, 65, 70 और 74

द्वितीय विश्व युद्ध के शुरू होने से पहले देश का वातावरण बहुत बदल चुका था क्योंकि सभी नौजवान, किसान, मजदूर और शिक्षित वर्ग के लोग एक साथ उठ खड़े हुए थे। उनके मन में अब स्वाधीनता प्राप्ति की आशा स्थिर हो चुकी थी। आजादी पाने के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देने के लिए सभी कटिबद्ध थे। उनकी इन भावनाओं को कवि "जी. सिंहनकोदरी" ने अपनी कविता **झुंण झुंण टुंब टुंब, देश नु जगा दिओ**[.] में इन पंक्तियों में कुछ इस तरह उजागर किया है:

उठो नौजवानों मारो हंबला दलेर होके,
पराधीनता दी जड़ पुट के वशा दिओ।
जलियां दे बाग साढा खून सांझा हो गिआ ऐ
"असी न टूटनवाले" उस नु जिता दिओ।

★★★★

भगत सिंह, राजगुरू, सुखदेव, ते सराबे तांई,
चौदहां-पंद्रहां दे फांसी चढ़े इन्हां नु गिना दिओ।

★★★★

सारे दुख दूर लोक राज बिना होवणे नहीं,
"इंकलाब" भार नाहरा बैरी नु कत्बां दिओं।
औंदी है आजादी वाहो दाही वधी तुसां वल,
झुंण झुंण, टुंब टुंब देश नु जगा दिओ।

इस संकलन की अंतिम कविता **अंत होवेगा वतन आज़ाद साढा**[...] में कवि "करतार सिंह करतार" ने देशवासियों के आजादी के संकल्प को कुछ इस तरह से वर्णित किया है:

[.] क्रमशः संख्या-79

[...] क्रमशः संख्या-80

साढा किसे दे नाल नहीं वैर बिल्कुल,
असी वतन आज़ाद करवावना है।
असी संगल गुलामी दे लाहण खातर,
जंग शांत मई खूब मचावना है।
हासल करने लई इक स्वतंत्रता नु,
रस्सा चूम के गल बिच पावना है।
असी जंग आजादी दा लड़ी जांगे,
अंत होवेगा वतन आज़ाद साढा।

उपरोक्त कविता में वर्णित देशवासियों का यह संकल्प 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ पूरा हुआ।

पूर्व संकलनों की भांति इस संकलन के प्रकाशन के पीछे भी हमारा उद्देश्य स्वतंत्रता आन्दोलन के बारे में देश की युवा पीढ़ी को पंजाबी भाषा में उपलब्ध उन कविताओं और ग़ज़लों से अवगत कराना है जिनसे उस दौरान देशवासियों को प्रेरणा मिली और जिन्हें गाते हुए अनेक स्वतंत्रता सेनानी हर जुल्म और सितम को हंसते हंसते सह कर बलिदान हो गये। इन में पंजाब की मिट्टी की गंध है और विशेष रूप से ये स्वतंत्रता आन्दोलन में पंजाब के योगदान की कहानी कहती हैं। देशभक्ति से ओत-प्रोत इन ग़ज़लों और कविताओं का महत्व जितना इनके रचे जाने के समय में था, आज भी इनको पढ़ना और जानना उतना ही प्रासंगिक है।

आज़ादी की स्वर्णिम जयंती के अवसर पर यह संग्रह ज्ञात एवं अज्ञात वीर शहीदों को एक श्रद्धांजलि के रूप में राष्ट्र की सेवा में प्रस्तुत है।

इस संकलन को तैयार करने में विशेष रूप से मैं कुमारी तजिन्द्र आहलुवालिया, अभिलेखाधिकारी और श्री जयन्ती

दास,सहायक निदेशक (सेवा निवृत्त) का आभारी हूं जिनके भरसक प्रयास और परिश्रम के फलस्वरूप ही यह प्रकाश में आ सका है। इस संदर्भ में मैं ऐसे सभी सुझावों का स्वागत करूंगा जो भावी प्रकाशनों के लिए उपयोगी होंगे।

नई दिल्ली
27 अक्टूबर 1997

सुकुमार सरकार
अभिलेख महानिदेशक,
भारत सरकार।

ਹਿੰਦੁਸਤਾਨ ਸਾਡਾ!

ਸਾਡਾ ਮਾਣ ਏਹੋ ਸਾਡਾ ਤਾਣ ਇਹੋ,
ਪਿਆਰਾ ਜਾਨ ਨਾਲੋਂ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨ ਸਾਡਾ!
ਏਹੋ ਮੱਕਾ ਮਦੀਨਾ ਤੇ ਹੱਜ ਕਾਬਾ,
ਇਹੋ ਮਜ਼ਹਬ ਤੇ ਇਹੋ ਈਮਾਨ ਸਾਡਾ!
ਅਸੀਂ ਇਸੇ ਦੀ ਗੋਦ ਵਿਚ ਪਲੇ ਖੇਡੇ,
ਇਹੋ ਬਾਗ ਤੇ ਇਹੋ ਮੈਦਾਨ ਸਾਡਾ!
ਖਾ ਖਾ ਅੰਨ ਜਲ ਪਲੇ ਹਾਂ ਅਸੀਂ ਇਸਦਾ,
ਦੇਨਦਾਰ ਹਰ ਇਕ ਨੌਜਵਾਨ ਸਾਡਾ!
ਜਾਂ ਤਾਂ ਇਸਦੀ ਗੁਲਾਮੀ ਦੇ ਸੰਗਲਾਂ ਨੂੰ,
ਤੋੜ ਤਾੜਕੇ ਅਸੀਂ ਵਿਖਾ ਦਿਆਂਗੇ!
ਨਹੀਂ ਤਾਂ ਸੀਸ ਦੀ ਭੇਟ ਚੜ੍ਹਾ ਦਿਆਂਗੇ,
ਕਰਜਾ ਦੇਸ਼ ਦਾ ਸਿਰੋਂ ਚੁਕਾ ਦਿਆਂਗੇ!

ਵਿਸ਼ਾ ਸੂਚੀ

ਲੜੀ: ਕਵਿਤਾ ਦਾ ਨਾਮ ਪੰਨਾ

੧. ਪੰਜਾਬ ਦਾ ਰਾਜ ੭
੨. ਜ਼ੁਲਮ ਨਾ ਕਰ ੯
੩. ਇਕ ਕਿਸਾਨ ਦੀ ਹਾਲਤ ੧੧
੪. ਕਿਰਤੀ ਖਰਚਾਂ ਦੇ ਭਾਰਾਂ ਦਬਾਏ ਹੋਏ ਨੇ ੧੪
੫. ਜਾਗ ਹੁਣ ਹਿੰਦੀਆ ਕਿਸਾਨਾ ਜਾਗ ਓਏ ੧੬
੬. ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਜਹਾਜ (ਕੋਮਾਂ ਗਾਟਾ ਮਾਰੂ) ੧੮
੭. ਸਿਆਸੀ ਕੈਦੀ ੨੮
੮. ਸਾਡਾ ਹਾਲ - ਕਾਲੇ ਪਾਣੀ ਵਾਲਿਆਂ ਦੀ ਸਿੱਕ ੩੦
੯. ਅਸਾਂ ਸਮਝਿਆ ਜਿਵੇਂ ਹੈ ਸ਼ਕਲ ਸੋਹਣੀ,
ਤਿਵੇਂ ਅੰਦਰੋਂ ਭੀ ਨੂਰੋ ਨੂਰ ਹੋਸੇਂ ੩੨
੧੦. ਗੋਰੇ ਰੰਗ ਦੀਆਂ ਚਾਲਾਂ ਦੀ ਅਜ ਸਾਨੂ ਹੈ ਸਾਰ ਹੋਈ ੩੪
੧੧. ਜਲ੍ਹਿਆਂ ਵਾਲੇ ਬਾਗ਼ ਦਾ ਹਾਲ ੩੫
੧੨. ਜਲ੍ਹਿਆਂ ਵਾਲਾ ਬਾਗ਼ ੩੭
੧੩. ਵਤਨ ਆਜ਼ਾਦ ੪੧
੧੪. ਰਲਿਆ ਖ਼ੂਨ ਹਿੰਦੂ ਮੁਸਲਮਾਨ ਏਥੇ ੪੩
੧੫. ਸੋਹਣਾ ਸੋਭਦਾ ਕਾਲਾ ਨਸ਼ਾਨ ਬਹੁਤਾ ੪੬
੧੬. ਗਦਰ ਪਾਰਟੀ ਦਾ ਜਨਮ ਦਿਨ ੪੯
੧੭. ਕਾਂਗ੍ਰਸ ਦਾ ਢੰਡੋਰਾ ੫੧
੧੮. ਹਿੰਦ ਦਾ ਤਾਜ ਚਰਖਾ ੫੫
੧੯. ਏਕਤਾ ਦਾ ਮੰਦਰ ਤੇ ਅਜ਼ਾਦੀ ਦੇਵੀ ੫੭
੨੦. ਸਾਨੂੰ ਲੋੜ ਪਤੰਗ ਬਣ ਜਾਵਣੇ ਦੀ ੬੧
੨੧. ਸਾਡੇ ਬੰਦੀਵਾਨ ਲੀਡਰ ਤੇ ਅਸੀ ੬੨
੨੨. ਅਜ਼ਾਦੀ ਦੇ ਦਾਨ ਦੀ ਮੰਗ ੬੪
੨੩. ਅਜੇ ਹੋਰ ਸ਼ਹੀਦੀਆਂ ਮੰਗਦਾ ਜੇ ੬੫
੨੪. ਦਰਦ ਦੇਸ ਦਾ ਲਗਾ ਸੀਨੇ, ਹੁਣ ਨਹੀਂ ਮਾਲ ਲੁਟਾਵਾਂਗੇ ੬੭
੨੫. ਵਤਨ ੬੮
੨੬. ਗ਼ਜ਼ਲ ੭੧
੨੭. ਹਾਇ! ਕੋਈ ਉਪਾ ਦਸੋ? ੭੩

੨੮. ਛਡਿਆ ਨਾ ਛੱਕਾ ਓਕਾ ਚੰਦਰੇ ਲੁਟੇਰੇ ਨੇ ੭੪
੨੯. ਹਿੰਦ ਲੁੱਟੀ ਜਾਂਦੇ ਨੇ ੭੫
੩੦. ਕਿਰਤੀ ਦਲ ਨੂੰ ਹਲੂਣਾ ੭੬
੩੧. 'ਕਿਰਤੀ' ਕਿਰਤੀ ਦੇ ਸਦਾ ਹਮਦਰਦ ਰਹਿਸਣ ੭੮
੩੨. ਹਿੰਦੁਸਤਾਨ ਜ਼ਿੰਦਾਨ ਆਜ਼ਾਦ ਕਰਨਾ ੮੦
੩੩. ਸਾਂਝਾ ਗੌਣ ੮੨
੩੪. ਅਸੀ ਅੱਗ ਅਸਮਾਨ ਨੂੰ ਲਾ ਦਿਆਂਗੇ ੮੩
੩੫. ਉਠ ੮੫
੩੬. ਪੂੰਜੀਦਾਰੀ ਦੇ ਮਹਿਲ ਸਭ ਢਾਦਿਆਂਗੇ ੮੬
੩੭. ਪਿਆਰਾ ਦਾਸ ੮੭
੩੮. ਮੁਸਲਿਮ, ਹਿੰਦੂ, ਸਿੱਖ ਨਹੀ ਅਸੀ,
ਸਾਡੀ ਕੌਮ ਹੁਣ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨੀਆਂ ਦੀ ੮੯
੩੯. ਅਸੀ ਹਿੰਦ ਆਜ਼ਾਦ ਕਰਾਵਾਂਗੇ ੯੧
੪੦. ਪੂੰਜੀਦਾਰੀ ਫੂਕਾਂ ਮਾਰ ਉਡਾਈਏ ੯੨
੪੧. ਭਾਂਬੜ ਮਚਾਈਦਾ ਤੇ ਰਾਜ ਉਲਟਾਈਦਾ ੯੩
੪੨. ਦੇਸ਼ ਤੇਰਾ ਡਾਢ੍ਹਾ ਮੰਦੇ ਹਾਲ ਏ। ੯੬
੪੩. ਤੇਰਾ ਸੀਨਾ ਸ਼ਹੀਦੀ ਨੇ ਸੱਲਿਆ ਨਾ ੯੭
੪੪. ਸਿਰ ਤਲੀ ਤੇ ਲੈ ਨੌਜਵਾਨ ਨਿਕਲੇ ੯੮
੪੫. ਉਠ ਪੱਗ ਦੇ ਪੇਚ ਸੰਭਾਲ ਜੱਟਾ ੧੦੦
੪੬. ਭਾਰਤ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਕਮਾਈ ਲੈ ਗਏ ਗੈਰ ਲੁਟਕੇ ੧੦੩
੪੭. ਝੰਡਾ ਹਥ ਲੈ ਕੇ ਸਵਾਧੀਨਤਾ ਦਾ,
ਕੋਈ ਕੈਦ ਫਾਂਸੀ ਭਲਾ ਪਾਏ ਕਿਉਂਨਾ? ੧੦੪
੪੮. ਯਾਂਤੇ ਹਿੰਦੀਓ ਰਹੁ ਗ਼ੁਲਾਮ ਬਣਕੇ,
ਯਾ ਫਿਰ ਪਊ ਇਸ ਢੰਗ ਨੂੰ ਭੰਨਣਾ ਜੇ ੧੦੫
੪੯. ਲੋਕ-ਰਾਏ ੧੦੭
੫੦. ਲੂਣ ੧੦੮
੫੧. ਆਜ਼ਾਦ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨ ਹੋ ਗਿਆ ੧੧੦
੫੨. ਕੇਹੀ ਰੁਤ ਸੁਹਾਵਣੀ ਫੇਰ ਆਈ, ਵਧ-ਵਧ ਸ਼ਹੀਦੀਆਂ ਪਾਵਣੇ ਨੂੰ.... ੧੧੨
੫੩. ਭਾਰਤ ਦੀ ਹਾਲਤ ੧੧੩
੫੪. ਵਾਹ ਜੀ ਵਾਹ! ਸੋਹਣੇ ਸ੍ਰਦਾਰ ਭਗਤ ਸਿੰਘ ੧੧੫
੫੫. ਗਜ਼ਲ ੧੧੮

੫੬. ਰਾਜਸੀ ਕੈਦੀ ੧੨੦
੫੭. ਐਜੀਟੇਸ਼ਨ ਕਰ ਦਿਓ ਬਾਬੇ ਛੁਡਵਾਵੋ ੧੨੨
੫੮. ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਗੀਤ ਗੌਂਦਾ ਹਾਂ ੧੨੩
੫੯. ਮਰਨੇ ਤੇ ਹੁਣ ਡਰਨਾ ਕੀ ੧੨੫
੬੦. ਗੱਭਰੂਆਂ ਨੂੰ ੧੨੬
੬੧. ਇਨਕਲਾਬ ਦਾ ਪੈਗ਼ਾਮ ੧੨੭
੬੨. ਪੁਟ ਦੇਣੀ ਜੜ੍ਹ ਅਸਾਂ ਸ਼ਾਹੀ ਪੂੰਜੀਦਾਰੀ ਦੀ ੧੨੯
੬੩. ਵਤਨ ਅਜ਼ਾਦ ਕਰੌਣਾ ਏ ੧੩੧
੬੪. ਜਾਨ ਦੀ ਬਾਜ਼ੀ ੧੩੩
੬੫. ਸੁੱਤੇ ਜੱਟ ਨੂੰ ਹਲੂਣਾ ੧੩੫
੬੬. ਮੁਜ਼ਾਹਰੇ ਦੀਆਂ ਬੋਲੀਆਂ ੧੩੭
੬੭. ਜਿਸ ਜੀਵਨ ਵਿਚ ਦੁਨੀਆਂ ਦੀ ਅਜ਼ਾਦੀ ਦੀ ਮਹਿਕਾਰ ਨਹੀਂ ੧੩੮
੬੮. ਸਾਂਝੀ ਕੋਇਲ ਕੂਕ ਸੁਣੌਂ। ਗੀਤ ਅਜ਼ਾਦੀ ਘਰ-ਘਰ ਗੌਂ ੧੩੯
੬੯. ਸ਼ਹੀਦਾਂ ਦੀ ਯਾਦ ੧੪੧
੭੦. ਗੀਤ ਅਜ਼ਾਦੀ ੧੪੨
੭੧. ਜੁਗ-ਜੁਗ ਜੀਵੇ ਜੁਗ ਪਲਟਾਊ ੧੪੩
੭੨. ਓਥੇ ਖ਼ੂਨ ਸ਼ਹੀਦਾਂ ਦਾ ਡੁਲ੍ਹਦਾ ਏ ੧੪੫
੭੩. ਬਨਾ ਦੋ ਭਿਖਾਰੀ, ਸਭੇ ਤਾਜ ਧਾਰੀ ੧੪੭
੭੪. ਇਨਕਲਾਬ ਜ਼ਿੰਦਾਬਾਦ, ਇਨਕਲਾਬ ਆ ਗਿਆ ੧੪੯
੭੫. ਉਠ ਮੱਲਾ! ਤੂੰ ਹੋਸ਼ ਸੰਭਾਲ ੧੫੦
੭੬. ਗੁਲਾਮਾਂ ਦੀਆਂ ਹੋਲੀਆਂ ੧੫੨
੭੭. ਇਨਕਲਾਬ ਤੂੰ ਛੇਤੀ ਆ, ਅਪਣਾ ਖ਼ੂੰਨੀ ਗੀਤ ਸੁਣਾ ੧੫੪
੭੮. ਅਸੀਂ ਅਗ ਅਸਮਾਨ ਨੂੰ ਲਾ ਦਿਆਂਗੇ ੧੫੬
੭੯. ਕੂੰਣ ਕੂੰਣ, ਟੂੰਬ ਟੂੰਬ, ਦੇਸ਼ ਨੂੰ ਜਗਾ ਦਿਓ ੧੫੭
੮੦. ਅੰਤ ਹੋਵੇਗਾ ਵਤਨ ਆਜ਼ਾਦ ਸਾਡਾ ੧੫੯

ਪੰਜਾਬ ਦਾ ਰਾਜ

ਜਦੋਂ ਰਾਜ ਪੰਜਾਬ ਦਾ ਸਾਂਭਿਆ ਸੀ,
ਤਦੋਂ ਕੀਤਾ ਸੀ ਕੀ ਇਕਰਾਰ ਆਕੇ।
ਮਹਾਰਾਜ ਨੂੰ ਆਪੇ ਹੀ ਆਖਿਆ ਸੀ,
ਬਾਲਗ ਹੋਣ ਤਕ ਹਾਂ ਸੇਵਾਦਾਰ ਆਕੇ।
ਪਿਛੋਂ ਦਿਓਗੇ ਰਾਜ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਨੂੰ,
ਨੌਕਰਸ਼ਾਹੀ ਕਰਨ ਹੈ ਬਪਾਰ ਆਕੇ।
ਰਾਜ ਰਾਜਿਆਂ ਦਾ ਮੁੜਕੇ ਪਰਤ ਦੇਣਾ,
ਮਾਲਕ ਬਨਣ ਮੁੜਕੇ ਹਕਦਾਰ ਆਕੇ।
ਕੀ ਰਜੇ ਨਾਂ ਤੁਸੀ ਬਪਾਰ ਕਰਕੇ,
ਅਜੇ ਤਕ ਬਾਲਗ ਨਾ ਮਹਾਰਾਜ ਹੋਇਆ?
ਗਬਨ ਕੀਤੀ ਅਮਾਨਤ ਪੰਜਾਬ ਸਾਡਾ,
ਸਚ ਆਖਿਆ ਤੂੰ ਨਰਾਜ਼ ਹੋਇਆ।

ਰਾਜ ਪਰਤਕੇ ਕਿਸ ਨੂੰ ਸੌਂਪਿਆ ਈ,
ਜਰਾ ਦਸ ਖਾਂ ਖੋਲ ਐਹਵਾਲ ਅੜਿਆ।
ਬਾਗੀ ਬਣ ਬੈਠੋਂ ਤੂੰ ਪੰਜਾਬ ਅੰਦਰ,
ਬਾਗੀ ਕੌਣ? ਇਹ ਸਾਡਾ ਸਵਾਲ ਅੜਿਆ।
ਮੁੜਕੇ ਰਾਜ ਦੇਣਾ ਰਾਜ ਵਾਲਿਆਂ ਨੂੰ,
ਜੇਕਰ ਹੋਵਣਾ ਚਾਹੇ ਬਹਾਲ ਅੜਿਆ।
ਨਹੀਂ ਤੇ ਯਾਦ ਰਖ ਛਿਕੇ ਛੁੜਾ ਦੇਸਾਂ,
ਸ਼ਾਤਮਈ ਦੀ ਖੜਗ ਉਠਾਲ ਅੜਿਆ।
ਪਿਛੋਂ ਕਹੀਂ ਨਾ ਕਿਸੇ ਨੇ ਦਸਿਆ ਨਹੀਂ,
ਤੈਨੂੰ ਅਗੋਂ ਹੀ ਪਏ ਵੰਗਾਰ ਦੇ ਹਾਂ।

3—254/Deptt. of Archives/ND/97

ਅਧੀ ਰਾਤ ਨੂੰ ਤੇਰੇ ਨਾ ਵਾਂਗ ਅੜਿਆ,

ਲੁਕ ਛਿਪ ਡਾਕੇ ਅਸੀਂ ਮਾਰਦੇ ਹਾਂ।

— ਭਾਈ ਰਤਨ ਸਿੰਘ "ਆਜ਼ਾਦ

(भाई रतन सिंह "आज़ाद")

"ਬਾਗ਼ੀ ਸਿਖ ਕਿ ਸਰਕਾਰ"?
ਕਰਤਾ ਤੇ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਕ : ਰਤਨ ਸਿੰਘ "ਆਜ਼ਾਦ"।
ਪੰਜਾਬ ਖਾਲਸਾ ਪ੍ਰੈਸ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।

"बाग़ी सिख कि सरकार"?
कर्त्ता और प्रकाशक : रतन सिंह "आज़ाद"।
पंजाब खालसा प्रैस, अमृतसर।

(अवाप्ति संख्या : 1964)

† ਸਿਖ ਕੌਮ ਦਾ ਅੰਤਮ ਸਿਖ ਬਾਦਸ਼ਾਹ ਅਰਥਾਤ ਮਹਾਰਾਜਾ ਦਲੀਪ ਸਿੰਘ ਜੀ।

ਜ਼ੁਲਮ ਨਾ ਕਰ

ਜ਼ਾਲਮ ਜ਼ੁਲਮ ਤੋਂ ਬਾਜ਼ ਆ ਜ਼ੁਲਮ ਨ ਕਰ,
ਤੈਨੂੰ ਕੱਈ ਇਹ ਰੰਗ ਵਿਖਾਏਗਾ ਜ਼ੁਲਮ।
ਤੇਰੀਆਂ ਜੜ੍ਹਾਂ ਜਹਾਨ ਤੋਂ ਪੁਟ ਦੇਗਾ,
ਤੇਰਾ ਨਾਮੋ ਨਿਸ਼ਾਨ ਮਿਟਾਇਗਾ ਜ਼ੁਲਮ।
ਆਸਮਾਨ ਨੇ ਖਾ ਲਿਆ ਗੇੜ ਜਿਸ ਦਿਨ,
ਤੈਥੇ ਸਮਾਂ ਅਜੀਬ ਬਨਾਇਗਾ ਜ਼ੁਲਮ।
ਤੇਰੀ ਮਿਟੀ ਦੀ ਮਿਟੀ ਮਿਟਾ ਦੇਗਾ,
ਤੇਰਾ ਕੀਤਾ ਤੇਰੇ ਅਗੇ ਆਇਗਾ ਜ਼ੁਲਮ।
ਹੱਥ ਧਰ ਮੱਥੇ ਉਤੇ ਰੋਏਂਗਾ ਫਿਰ,
ਕਾਹਨੂੰ ਐਤਨਾ ਜ਼ੁਲਮ ਕਮਾਇਆ ਸੀ ਮੈਂ।
ਫੜ ਫੜ ਕਈਆਂ ਭਾਰਤ ਵਾਸੀਆਂ ਨੂੰ,
ਐਵੇਂ ਫਾਸੀਆਂ ਉਤੇ ਚੜ੍ਹਾਇਆ ਸੀ ਮੈਂ।
ਬਸ, ਠਹਿਰ ਜਾ ਅਜੇ ਵੀ ਹਈ ਵੇਲਾ,
ਜੜ੍ਹਾਂ ਆਪਣੀਆਂ ਆਪ ਉਖੇੜ ਨਾ ਤੂੰ।
ਤੇਜ਼ ਛੁਰੀ ਫੜ ਕੇ ਹੱਥੀਂ ਜ਼ੁਲਮ ਵਾਲੀ,
ਹਿੰਦ ਜਿਸਮ ਦੀ ਖੱਲ ਉਧੇੜ ਨਾ ਤੂੰ।
ਨਿਤ ਕਰ ਹਮਲੇ ਜ਼ੋਰੋ ਜਬਰ ਵਾਲੇ,
ਦੇਸ਼ ਦਰਦੀਆਂ ਤਾਈਂ ਨਬੇੜ ਨਾ ਤੂੰ।
ਖ਼ੂਨ ਕੱਢ ਕੇ ਦੇਸ਼ ਦੁਲਾਰਿਆਂ ਦਾ,
ਮਹਿੰਦੀ ਸਮਝ ਕੇ ਹੱਥ ਲਬੇੜ ਨਾ ਤੂੰ।
ਏਸ ਖ਼ੂਨ ਦੀ ਪਏਗੀ ਓਹ ਕੀਮਤ,
ਖ਼ੂਨ ਹੋਣਗੇ ਕਈ ਇਕ ਖ਼ੂਨ ਉਤੇ।
ਜ਼ੁਲਮੋ ਸਿਤਮ ਦੀ ਬੰਦ ਦੁਕਾਨ ਹੋਸੀ,
ਹਿੰਦੀ ਆਏ ਜਦ ਆਪਨੇ ਕਾਨੂਨ ਉਤੇ।
ਘੁਟ ਸਬਰ ਦੇ ਵੀ ਭਰ ਭਰ ਵੇਖ ਲੈ ਨੇ,
ਕਸਰ ਛੱਡੀ ਨਹੀਂ ਕੋਈ ਸ਼ਾਂਤ ਮਈ ਦੇ ਵਿਚ।
ਹਿੰਦੀ ਕੌਮ ਉਤੇ ਜਬਰ ਹੋਇਆ ਗ਼ਾਲਬ,
ਰਹੀ ਜਾਨ ਨਹੀਂ ਜੀਉਂਦੀ ਪਈ ਦੇ ਵਿਚ।

ਸਾਲ ਕੈਦ ਕੀਤਾ 'ਭੁਖੇ ਮਰ ਗਏ ਹਾਂ',
ਸਿਰਫ ਗਲ ਏਨੀ ਮੂਹੋਂ ਕਹੀ ਦੇ ਵਿਚ।
ਪਿਛੋਂ ਸਿਰ ਇਹਸਾਨ ਇਹ ਚਾੜ੍ਹਿਆ ਏ,
ਤੁਹਾਨੂੰ ਰਖਿਆ ਜਿਹਲ ਨਈ ਦੇ ਵਿਚ।
ਜੇਕਰ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਸਮਝੀ ਏਹਸਾਨ ਬੈਠਾ,
ਕਿਰਪਾ ਕਰ ਤੇ ਐਹਜੇ ਇਹਸਾਨ ਨਾ ਕਰ।
ਮੂਹੋਂ ਰਾਮ ਤੇ ਬਗਲ ਵਿਚ ਛੁਰੀ ਲੈ ਕੇ,
ਹਿੰਦੀ ਵੀਰਾਂ ਨੂੰ ਲਹੂ ਲੁਹਾਨ ਨ ਕਰ।
ਤੇਜ਼ ਤੇਗ ਹੁਣ ਕਰ ਲੈ ਮਿਆਨ ਦੇ ਵਿਚ,
ਉਤੇ ਆਜਜ਼ਾਂ ਤੇਗ ਚਲਾਈ ਨਾ ਜਾ।
ਤੇਗ ਜ਼ੁਲਮ ਏ ਪਹੁੰਚਿਆ ਹਦ ਉਤੇ,
ਸੋਚ, ਸੰਭਲ ਹੁਣ ਜ਼ੁਲਮ ਕਮਾਈ ਨਾ ਜਾ।
ਹਿੰਦੀ ਵੀਰਾਂ ਦੀ ਕੀਤੀ ਸਫਾਈ ਨਾ ਜਾ,
ਹਿੰਦੀ ਖ਼ੂਨ ਦੇ ਵਿਚ ਨੁਹਾਈ ਨਾ ਜਾ।
ਜਿਹੜੇ ਦੇਸ਼ ਆਜ਼ਾਦੀ ਦੇ ਹੈਨ ਆਸ਼ਕ,
ਫੜ ਫੜ ਉਹਨਾਂ ਨੂੰ ਜੇਹਲਾਂ 'ਚ ਪਾਈ ਨਾ ਜਾ।
ਭੱਮਟ ਜ਼ੁਲਮ ਦੀ ਅਗ ਵਿਚ ਪੈ ਪੈ ਕੇ,
ਜਲ ਜਾਣਗੇ ਪਰ ਪਿਛਾਂ ਹਟਣਗੇ ਨ।
ਵੇਖੀਂ ਦਿਨੋ ਦਿਨ ਦੂਣ ਸਵਾਏ ਹੁੰਦੇ,
ਕਿਰਪਾ ਨਾਲ 'ਕਰਤਾਰ' ਦੀ ਘਟਣਗੇ ਨ।

— ਕਾਮਰੇਡ ਕਰਤਾਰ ਸਿੰਘ "ਕਰਤਾਰ"
(कामरेड करतार सिंह "करतार")

"ਦੁਖੀ ਦੁਨੀਆਂ"
ਕਵੀ ਤੇ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਕ :
ਕਾਮਰੇਡ ਕਰਤਾਰ ਸਿੰਘ "ਕਰਤਾਰ"
ਆਜ਼ਾਦ ਪ੍ਰੈਸ, ਮੇਰਠ।

"दुखी दुनियां"
कवि और प्रकाशक :
कामरेड करतार सिंह "करतार"।
आज़ाद प्रैस, मेरठ।

(अवाप्ति संख्या : 1956)

ਇਕ ਕਿਸਾਨ ਦੀ ਹਾਲਤ

ਇਕ ਦਿਨ ਨਾਲ ਇਤਫ਼ਾਕ ਮੈਂ ਗਿਆ ਬਾਹਿਰ,
ਇਕ ਆਦਮੀ ਬੜਾ ਹੈਰਾਨ ਡਿਠਾ।
ਧਾਹੀਂ ਮਾਰਦਾ ਤੇ ਕੁਰਲਾਂਵਦਾ ਸੀ,
ਅਖੋਂ ਓਹਦੀਓਂ ਪਾਣੀ ਰਵਾਨ ਡਿਠਾ।
ਵਾਲ ਖੁਲ੍ਹੇ ਤੇ ਸਿਰ ਵਿਚ ਪਈ ਮਿੱਟੀ,
ਹੱਥ ਵਿਚ ਕਾਸਾ ਫੜਿਆ ਜਾਨ ਡਿਠਾ।
ਸੱਜੇ ਹੱਥ ਦੇ ਵਿਚ ਸੀ ਛੁਰਾ ਉਹ ਦੇ,
ਖ਼ੁਦ ਮਰਨ ਲਈ ਵਿਚ ਮੈਦਾਨ ਡਿਠਾ।
ਛੇਤੀ ਪਹੁੰਚ ਕੇ ਪਾਸ ਉਸ ਮਰਦ ਦੇ ਮੈਂ,
ਕਿਹਾ ਐਡਾ ਕਿਉਂ ਹੋਇਆ ਲਾਚਾਰ ਹੈਂ ਤੂੰ।
ਕੇਹੜਾ ਦੁਖ, ਤਕਲੀਫ਼ ਆ ਬਣੀ ਤੈਨੂੰ,
ਕਿਉਂ ਮਰਨ ਦੇ ਲਈ ਤਿਆਰ ਹੈਂ ਤੂੰ।
ਅਗੋਂ ਰੋਇ ਕੇ ਕਿਹਾ ਉਸ ਆਦਮੀ ਨੇ,
ਮੇਰੇ ਫੋਲਣੇ ਬੀਬਾ ਕਿਓਂ ਫੋਲਨਾਂ ਏਂ।
ਲਗਾ ਜ਼ਖਮ ਹੈ ਵਿਚ ਕਲੇਜੜੇ ਦੇ,
ਲੂਣ ਛਿੜਕ ਕੇ ਹੋਰ ਕਿਉਂ ਘੋਲਨਾ ਏਂ।
ਗੱਲ ਕਰਨ ਨੂੰ ਮੂਲ ਨਹੀਂ ਚਿਤ ਕਰਦਾ,
ਹਾਲ ਸੁਣਨ ਨੂੰ ਕਿਉਂ ਪਿਆ ਬੋਲਨਾ ਏਂ।
ਹਾਇ! ਐਡੇ ਗਰੀਬ ਨਸੀਬ ਬਦ ਨੂੰ,
ਗੱਲਾਂ ਪੁਛਕੇ ਹੋਰ ਕਿਉਂ ਰੋਲਨਾ ਏਂ।
ਅੱਛਾ! ਕੰਨ ਲਾ ਸੁਣੀ ਤੂੰ ਹਾਲ ਮੇਰਾ,
ਜਿਸ ਵਾਸਤੇ ਹੋਇਆ ਹੈਰਾਨ ਹਾਂ ਮੈਂ।
ਔਸ ਪਿੰਡ ਦੇ ਵਿਚ ਸੀ ਘਰ ਮੇਰਾ,
ਚੰਗਾ ਪੁਜਦਾ ਇਕ ਕਿਰਸਾਨ ਸਾਂ ਮੈਂ।
ਪਹਿਲੇ ਸਾਲ ਵਿਚ ਫਸਲ ਨਾ ਹੋਈ ਕੋਈ,
ਕਰਜ਼ਾ ਚੁਕ ਕੇ ਮੁਆਮਲਾ ਤਾਰ ਦਿੱਤਾ।

ਅਗ੍ਹਾਂ ਹਾੜੀ ਦੀ ਲੈਕੇ ਆਸ ਦਿਲ ਵਿਚ,
ਨਾਮ ਰੱਬ ਦੇ ਬੀਜ ਖਲਾਰ ਦਿੱਤਾ।
ਹੈਸੀ ਖ਼ਿਆਲ ਕਿ ਹਾੜੀ ਦੀ ਫਸਲ ਵਿਚੋਂ,
ਜਾਸੀ ਸ਼ਾਹ ਦਾ ਕਰਜ਼ਾ ਉਤਾਰ ਦਿੱਤਾ।
ਦੋ ਮਾਹ ਦੀ ਬੰਦੀ ਦਾ ਹੁਕਮ ਯਕ-ਦਮ,
ਮੂੰਹੋਂ ਆਪਣੇ ਝੱਟ ਸਰਕਾਰ ਦਿੱਤਾ।
ਆਣ ਕਹਿਰ ਹੋਇਆ ਜ਼ਿਮੀਂਦਾਰ ਉਤੇ,
ਮੀਂਹ ਪੈਣ ਦੀ ਕੋਈ ਨ ਆਸ ਹੋਈ।
ਜਿੰਨੀ ਬੀਜੀ ਸੀ ਦੁੱਖਾਂ ਦੇ ਨਾਲ ਯਾਰੋ,
ਬਾਹਜ ਪਾਣੀਓਂ ਸਤਿਆ ਨਾਸ ਹੋਈ।
ਸ਼ਾਹੂਕਾਰ, ਨੰਬਰਦਾਰ ਰਲ ਦੋਵੇਂ,
ਲੈ ਗਏ ਸਿਪਾਹੀ ਦੋ ਚਾਰ ਛੇਤੀ।
ਦੇਹ ਮੁਆਮਲਾ ਤੇ ਕਰਜ਼ਾ ਲਾਹ ਸਿਰ ਤੋਂ,
ਮੈਂ ਆਖਿਆ, ਨਹੀ ਤਿਆਰ ਛੇਤੀ।
ਹਥੀਂ ਲਾ ਹਥਕੜੀ, ਤੇ ਪਾ ਬੇੜੀ,
ਸੈਂਟਰਲ ਜੇਹਲ ਨੂੰ ਮੋੜੀ ਮੁਹਾਰ ਛੇਤੀ।
ਘਰ ਕੁਰਕ, ਤੇ ਸਾਲ ਦੀ ਕੈਦ ਕਰ ਕੇ,
ਦਿੱਤਾ ਕੋਠੜੀ ਦਾ ਬੂਹਾ ਮਾਰ ਛੇਤੀ।
ਪਿਛੋਂ ਨਾਰ ਸੁਧਾਰ ਪਰਲੋਕ ਗਈ,
ਧੀਆਂ ਪੁਤ ਸਾਰੇ ਕੁਰਲਾਂਵਦੇ ਰਹੇ।
ਪੁਛੇ ਕੋਈ ਨਾ ਓਹਨਾਂ ਵਿਚਾਰਿਆਂ ਨੂੰ,
ਬਿਨਾ ਰੋਟੀਓਂ, ਹਾਇ! ਮਰ ਜਾਂਵਦੇ ਰਹੇ।
ਸਾਲ ਕੱਟਕੇ ਜਦੋਂ ਮੈਂ ਘਰ ਆਇਆ,
ਕੁਝ ਦਿਸਦਾ ਨਾ ਸੀ ਮਕਾਨ ਦੇ ਵਿਚ।
ਯਾਰ ਯਾਰ ਜਿਹੜੇ ਲੋਕੀ ਆਖਦੇ ਸਨ,
ਅਜ ਲਿਆਂਵਦੇ ਨਹੀਂ ਸਨ ਧਿਆਨ ਦੇ ਵਿਚ।
ਹਾਇ! ਮੇਰੇ ਨਾਦਾਨ, ਮਾਸੂਮ ਬੱਚੇ,
ਰੱਬਾ! ਖੇਡਦੇ ਨਹੀ ਦਾਲਾਨ ਦੇ ਵਿਚ।

ਖ਼ੁਦ-ਕੁਸ਼ੀ ਨੂੰ ਤਾਂਹੀਏਂ ਤਿਆਰ ਬੈਠਾ,
ਜੀ ਲੱਗਦਾ ਨਹੀਂ ਜਹਾਨ ਦੇ ਵਿਚ।
ਢਿੱਡ ਸਾਰਿਆਂ ਦਾ ਜਿਹੜਾ ਪਾਲਦਾ ਸਾਂ,
ਅੱਜ ਰੋਟੀਓਂ ਵੀ ਅਵਾਜ਼ਾਰ ਹਾਂ ਮੈ।
ਤੇਜ਼ ਲੈ ਕੇ ਛੁਰਾ 'ਕਰਤਾਰ' ਤਾਹੀਏਂ,
ਮਰ ਜਾਣ ਦੇ ਲਈ ਤਿਆਰ ਹਾਂ ਮੈਂ।

— ਕਾਮਰੇਡ ਕਰਤਾਰ ਸਿੰਘ "ਕਰਤਾਰ"
(कामरेड करतार सिंह ''करतार'')

"ਦੁਖੀ ਦੁਨੀਆਂ"
ਕਵੀ ਤੇ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਕ :
ਕਾਮਰੇਡ ਕਰਤਾਰ ਸਿੰਘ "ਕਰਤਾਰ"
ਆਜ਼ਾਦ ਪ੍ਰੈਸ, ਮੇਰਠ।

''दुखी दुनियां''
कवि और प्रकाशक :
कामरेड करतार सिंह ''करतार''।
आज़ाद प्रैस, मेरठ।

(अवाप्ति संख्या : 1956)

ਕਿਰਤੀ ਖਰਚਾਂ ਦੇ ਭਾਰਾਂ ਦਬਾਏ ਹੋਏ ਨੇ

ਐਸੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਤੋਂ ਮੌਤ ਬਹੁਤ ਚੰਗੀ,
ਆਵੇ ਸੁਖ ਦਾ ਇਕ ਸਾਹ ਵੀ ਨਾਂ।
ਦਿਨ ਤੇ ਸ਼ਾਮ ਤੀਕਰ ਹਾਏ ਖ਼ੂਨ ਡੋਹਲਾਂ,
ਫਿਰ ਅਫਸੋਸ ਕਿ ਹੁੰਦਾ ਨਿਬਾਹ ਵੀ ਨਾਂ।
ਕਿਸ਼ਤ ਬੈਂਕ ਦੀ ਓਧਰੋਂ ਸਿਰ ਆਈ,
ਗਲੋਂ ਮਾਮਲੇ ਦਾ ਲਥਾ ਫਾਹ ਵੀ ਨਾਂ।
ਹਾਏ ਅਫਸੋਸ ਕਿ ਨਹਿਰਾਂ ਵੀ ਬੰਦ ਹੋਇਆ,
ਪੈਦਾ ਖੇਤ ਵਿਚੋਂ ਹੁੰਦੀ ਸਵਾਹ ਵੀ ਨਾਂ।
ਇਕ ਡੰਗ ਦਾ ਵੀ ਘਰ ਖਾਨ ਨੂੰ ਨਹੀਂ,
ਸਾਹ ਨਕ ਤੇ ਅਸਾਂ ਦੇ ਆਏ ਹੋਏ ਨੇ।
ਕੀ ਕਰੀਏ ਨਹੀਂ ਕੋਈ ਪੇਸ਼ ਜਾਂਦੀ,
ਕਿਰਤੀ ਖਰਚਾਂ ਦੇ ਭਾਰਾਂ ਦਬਾਏ ਹੋਏ ਨੇ।
ਜ਼ਿਮੀਦਾਰ ਹੈ ਇਕ ਜੋ ਵਿਚ ਦੁਨੀਆਂ,
ਢਿਡ ਸਾਰਿਆਂ ਦਾ ਕਲਾ ਪਾਲਦਾ ਏ,
ਬਾਹਰ ਮਿਟੀ ਦੇ ਨਾਲ ਹੋ ਜਾਏ ਮਿਟੀ,
ਸਿਰ ਅਪਨੇ ਤੇ ਜਫਰ ਜਾਲਦਾ ਏ।
ਹਲ ਵਾਹਕੇ ਤੇ ਫੇਰ ਪਾਏ ਪਠੇ,
ਛਾਪੇ ਵਢਕੇ ਤੇ ਖਾਲ ਖਾਲਦਾ ਏ।
ਹੈ ਅਫਸੋਸ ਕਿ ਫੇਰ ਨਾ ਮਿਲੇ ਰੋਟੀ,
ਯਾਰੋ ਇਹ ਅਸੂਲ ਕਮਾਲਦਾ ਏ।
ਘਰ ਲੂਣ ਨੂੰ ਤਾਂ ਪੈਸਾ ਲਭਦਾ ਨਹੀਂ,
ਉਤੋਂ ਮੁਆਮਲੇ ਐਨੇ ਵਧਾਏ ਹੋਏ ਨੇ।
ਕੀਹ ਕਰੀਏ ਨਹੀਂ ਕੋਈ ਪੇਸ਼ ਜਾਂਦੀ,
ਕਿਰਤੀ ਖਰਚਾਂ ਦੇ ਭਾਰਾਂ ਦਬਾਏ ਹੋਏ ਨੇ।
ਚਟਨੀ ਗੰਢਿਆਂ ਦੀ ਮਿੱਸੀ ਖਾ ਗੁਲੀ,
ਘੁਟ ਲਸੀ ਦਾ ਭਰ ਗੁਜ਼ਰਾਨ ਕਰਨਾ।
ਬਿਨਾਂ ਲੂਣ ਤੋਂ ਮਿਲ ਜਾਏ ਸਾਗ ਜਿਸ ਦਿਨ,
ਬੜਾ ਆਪਣੀ ਕਿਸਮਤ ਦਾ ਮਾਨ ਕਰਨਾ।

ਨਾ ਉਮੀਦ ਹੋਵਾਂ ਜਦੋਂ ਸਭ ਵਲੋਂ,
ਛੋਲੇ ਚਬਕੇ ਝਟ ਲੰਘਾਨ ਕਰਨਾ।
ਬਿਲ ਫਰਜ਼ ਜੇ ਓਹ ਵੀ ਨਾ ਹਥ ਆਵਨ,
ਰਹਿਕੇ ਭੁਖਿਆਂ ਸ਼ੁਕਰ ਭਗਵਾਨ ਕਰਨਾ।
ਮੇਰੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦਾ ਪਰੋਗਰਾਮ ਹੈ ਇਹ,
ਲੈਨ ਮੁਆਮਲਾ ਪੁਲਸੀਏ ਆਏ ਹੋਏ ਨੇ।
ਕੀ ਕਰੀਏ ਨਹੀਂ ਕੋਈ ਪੇਸ਼ ਜਾਂਦੀ,
ਕਿਰਤੀ ਖਰਚਾਂ ਦੇ ਭਾਰਾਂ ਦਬਾਏ ਹੋਏ ਨੇ।
ਉਠੋ ਕਿਰਤੀਓ ਹੋਸ਼ ਨੂੰ ਹਥ ਮਾਰੋ,
ਏਸ ਨੀਂਦ ਤੋਂ ਹੁਨ ਤਾਂ ਬੇਦਾਰ ਹੋ ਜਾਓ।
ਕਰੋ ਆਪਨੇ ਦਿਲਾਂ ਵਿਚ ਅਣਖ ਪੈਦਾ,
ਬੀਰ ਬਾਂਕਿਓ ਜ਼ਰਾ ਹੁਸ਼ਿਆਰ ਹੋ ਜਾਓ।
ਗੈਰ ਦੇਸ਼ ਨੇ ਤੁਸਾਂ ਨੂੰ ਲੁਟ ਖਾਦਾ,
ਉਚੀ ਮਾਰ ਨਾਹਰਾ ਬੇ ਮੁਹਾਰ ਹੋ ਜਾਓ।
ਜੇਕਰ ਮੁਆਮਲਾ ਨਾ ਸਾਰਾ ਸਾਫ ਹੋਵੇ,
ਜੇਹਲ ਜਾਣ ਨੂੰ ਬਿਲਕੁਲ ਤਿਆਰ ਹੋ ਜਾਓ।
ਭਾਰਤ ਵਰਸ਼ ਦੇ ਹੋਕੇ ਰਹਿਨ ਵਾਲੇ,
ਕਿਓਂ ਭਾਰ ਗੁਲਾਮੀ ਦੇ ਚਾਏ ਹੋਏ ਨੇ।
ਮਾਰੋ ਹਮਲਾ ਆਸ "ਕਰਤਾਰ" ਦੀ ਤੇ,
ਕਿਰਤੀ ਖਰਚਾਂ ਤੇ ਭਾਰਾਂ ਦਬਾਏ ਹੋਏ ਨੇ।

— ਕਾਮਰੇਡ ਕਰਤਾਰ ਸਿੰਘ "ਕਰਤਾਰ"
(कामरेड करतार सिंह "करतार")

"ਦੁਖੀ ਦੁਨੀਆਂ"
ਕਵੀ ਤੇ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਕ :
ਕਾਮਰੇਡ ਕਰਤਾਰ ਸਿੰਘ "ਕਰਤਾਰ"
ਆਜ਼ਾਦ ਪ੍ਰੈਸ, ਮੇਰਠ।

"दुखी दुनियां"
कवि और प्रकाशक :
कामरेड करतार सिंह "करतार"।
आज़ाद प्रैस, मेरठ।

(अवाप्ति संख्या : 1956)

ਜਾਗ ਹੁਣ ਹਿੰਦੀਆ ਕਿਸਾਨਾ ਜਾਗ ਓਏ

ਖ਼ੂਨ ਡੋਲ੍ਹ ਕੇ ਤੂੰ ਕਰਨਾਏ ਕਮਾਈ ਜੋ,
ਰਲ ਮਿਲ ਗੈਰ ਇਹ ਨੂੰ ਜਾਂਦੇ ਖਾਈ ਓ,
ਲਭਦਾ ਨੀ ਤੈਨੂੰ ਹਾਏ ਅਲੂਣਾ ਸਾਗ ਓਏ।
ਜਾਗ ਹੁਣ ਹਿੰਦੀਆ ਕਿਸਾਨਾ ਜਾਗ ਓਏ।

ਛਤੀ ਨਿਹਮਤਾਂ ਤੂੰ ਜਟਾ ਪੈਦਾ ਕਰਨਾਏ,
ਅਫਸੋਸ ਭੁਖ ਨਾਲ ਫੇਰ ਤੂੰਹਿ ਹੀ ਮਰਨਾਏ,
ਰੁਖੀ ਰੋਟੀ ਲਿਖੀ ਨਾ ਵਿਚ ਤੇਰੇ ਭਾਗ ਓਏ।
ਜਾਗ ਹੁਣ ਹਿੰਦੀਆ ਕਿਸਾਨਾ ਜਾਗ ਓਏ।

ਭੁਖ ਵਾਲੇ ਬਦਲ ਰਹਿੰਦੇ ਨਿਤ ਬਰਸਦੇ,
ਭੁਜੇ ਦਾਣਿਆਂ ਨੂੰ ਤੇਰੇ ਬਾਲ ਤਰਸਦੇ,
ਨਿਤ ਤੂੰ ਮਕਈ ਤੋਂ ਉਡਾਵੇਂ ਕਾਗ ਓਏ।
ਜਾਗ ਹੁਣ ਹਿੰਦੀਆ ਕਿਸਾਨਾ ਜਾਗ ਓਏ।

ਤੂੰ ਕਰੇਂ ਕਿਰਤ ਗੈਰ ਮੌਜਾਂ ਮਾਣਦੇ,
ਪਲਣ ਤੇਰੇ ਸਿਰ ਵੇਹਲੜ ਜਹਾਨ ਦੇ,
ਵੇਖਣ ਡਾਨਸ ਸੈਨਮੇਂ ਸੁਣਣ ਰਾਗ ਓਏ।
ਜਾਗ ਹੁਣ ਹਿੰਦੀਆ ਕਿਸਾਨਾ ਜਾਗ ਓਏ।

ਜੇਹੜੇ ਬਾਹਰ ਕੋਠੀ ਚੋਂ ਨਾ ਝਾਤ ਪਾਂਵਦੇ,
ਸਾਬਣ ਤੇਲ ਵੈਸਲੀਨਾ ਲਾਕੇ ਨਹਾਂਵਦੇ,
ਤੈਨੂੰ ਸਿਰ ਨਹੌਣ ਨੂੰ ਲਭੇ ਨਾ ਲਾਗ ਓਏ।
ਜਾਗ ਹੁਣ ਹਿੰਦੀਆ ਕਿਸਾਨਾ ਜਾਗ ਓਏ।

ਤੂੰ ਗਲ ਪਾਵੇਂ ਨਿਤ ਬੁਕ ਲੀਰਾਂ ਦੇ,
ਨਵੇਂ ਸੂਰਜ ਬਦਲਨ ਕਪੜ ਅਮੀਰਾਂ ਦੇ,
ਸਿਟ ਦੇ ਨੇ ਲਾਹਕੇ ਜਦੋਂ ਲਗੇ ਦਾਗ ਓਏ।
ਜਾਗ ਹੁਣ ਹਿੰਦੀਆ ਕਿਸਾਨਾ ਜਾਗ ਓਏ।

ਤੇਰੇ ਲਈ ਜਟਾ ਕੁਲੀਆਂ ਨਕਾਰੀਆਂ,
ਗੈਰਾਂ ਆਕੇ ਕਿਤੋਂ ਹੈਨ ਮੱਲਾਂ ਮਾਰੀਆਂ,
ਬੰਗਲੇ ਪਵਾਏ ਲਾਹਮੀਂ ਲਾਏ ਬਾਗ ਓਏ।
ਜਾਗ ਹੁਣ ਹਿੰਦੀਆ ਕਿਸਾਨਾ ਜਾਗ ਓਏ।

ਮੁਆਮਲੇ ਦੇ ਹਥੋਂ ਜਦ ਤੰਗ ਔਨਾਏਂ,
ਧੀਆਂ ਭੈਣਾ ਵੇਚਕੇ ਝਟ ਲੰਘੌਨਾਏਂ,
ਓਸ ਵੇਲੇ ਲੜੇ ਕਾਲਜੇ ਨੂੰ ਨਾਗ ਓਏ।
ਜਾਗ ਹੁਣ ਹਿੰਦੀਆ ਕਿਸਾਨਾ ਜਾਗ ਓਏ।
ਰੋਹਬ ਗੈਰਾਂ ਦੇ ਹੁਣ ਮੈਥੋਂ ਨਹੀਂ ਉਠਾਈ ਦੇ,
ਠੁੱਡੇ ਵੇਹਲੜਾਂ ਦੇ ਨਿਤ ਨਹੀਂ ਖਾਈ ਦੇ,
ਆਖ ਗੈਰਾਂ ਤਾਈਂ ਐਥੋਂ ਜਾਣ ਭਾਗ ਓਏ।
ਜਾਗ ਹੁਣ ਹਿੰਦੀਆ ਕਿਸਾਨਾ ਜਾਗ ਓਏ।
ਐਥੋਂ "ਕਰਤਾਰ" ਗੈਰ ਕੂਚ ਕਰਨਗੇ,
ਹਥੀਂ ਜੋ ਕਮੌਣਗੇ ਓਹ ਢਿਡ ਭਰਨਗੇ,
ਕਿਸਾਨਾ ਵਿਹਲੜਾਂ ਨੂੰ ਗੋਲੀ ਨਾਲ ਦਾਗ਼ ਓਏ।
ਜਾਗ ਹੁਣ ਹਿੰਦੀਆ ਕਿਸਾਨਾ ਜਾਗ ਓਏ।

— ਕਾਮਰੇਡ ਕਰਤਾਰ ਸਿੰਘ "ਕਰਤਾਰ"
(कामरेड करतार सिंह "करतार")

"ਦੁਖੀ ਦੁਨੀਆਂ"
ਕਵੀ ਤੇ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਕ :
ਕਾਮਰੇਡ ਕਰਤਾਰ ਸਿੰਘ "ਕਰਤਾਰ"
ਆਜ਼ਾਦ ਪ੍ਰੈਸ, ਮੇਰਠ।

"दुखी दुनियां"
कवि और प्रकाशक :
कामरेड करतार सिंह "करतार"।
आज़ाद प्रैस, मेरठ।

(अवाप्ति संख्या : 1956)

ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਜਹਾਜ

(ਕੋਮਾਂਗਾਟਾ ਮਾਰੂ)

ਜਾਵੈ ਜਿਵੈ ਬਿਦੇਸੀ ਨੂੰ, ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਜਹਾਜ
ਆਵੈ ਮੁੜ ਕੇ ਹੋਇ ਜਿਉ, ਖੋਹਲ ਸਨਾਵਾਂ ਰਾਜ਼॥੧॥

ਪਉੜੀ

ਹਿੰਦੁਸਤਾਨੀ ਆਦਮੀ, ਚਲ ਜਾਂਦੇ ਦੂਰੀ।
ਅਮ੍ਰੀਕਾ ਅਫਰੀਕਿਓਂ, ਕੈਨੇਡਾ ਤੂਰੀ।
ਜਿਥੇ ਚੰਗੀ ਲਭਈ, ਹੈ ਖਾਸ ਮਜੂਰੀ।
ਹਿੰਦੂ ਮੁਸਲਮਾਨ ਦੇ, ਮਨ ਮਨਸਾ ਭੂਰੀ।
ਕਿਵੇਂ ਗਰੀਬੀ ਅਸਾਂਦੀ, ਹੋ ਜਾਵੇ ਪੂਰੀ।
ਵਿਚ ਕੈਨੇਡਾਂ ਵੜਨ ਦੀ, ਵੱਡੀ ਮਜਬੂਰੀ।
ਚਿਟੇ ਚਮੜੇ ਰੋਕਦੇ, ਡਾਢੇ ਮਗਰੂਰੀ।
ਆਖਨ ਸਾਡੇ ਵਾਸਤੇ, ਹੈ ਹੁਕਮ ਹਜ਼ੂਰੀ।
ਹਿੰਦੀ ਬੰਦੇ ਖਾਕਦੇ, ਹਨ ਗੋਰੇ ਨੂਰੀ।
ਏਥੇ ਵੜਨ ਨ ਦਿਆਂਗੇ, ਕੀਤੀ ਮਸ਼ਹੂਰੀ।
ਹਿੰਦ ਲੜੇਗਾ ਸੰਗ ਦਸਤੂਰੀ॥੨॥

ਪਉੜੀ

ਦੁਖ ਤਸੀਹੇ ਝਲਕੇ, ਹਿੰਦੀ ਸਮਦਾਈ।
ਮਸਾਂ ਮਸਾਂ ਸੀ ਓਨ੍ਹਾਂ ਨੇ, ਏਹ ਗਲ ਮਨਾਈ।
ਸਿਧਾ ਆਵੈ ਹਿੰਦ ਤੋਂ, ਬੇੜਾ ਜੇ ਕਾਈ।
ਉਸਦੇ ਉਤੇ ਬੈਠ ਕੇ, ਜੇ ਹਿੰਦੀ ਆਈ।
ਕਰੈ ਮਜ਼ੂਰੀ ਆਨ ਕੇ, ਹੈ ਸਚੀ ਗਾਈ।
ਸਿਧਾ ਟਿਕਟ ਨ ਹਿੰਦ ਤੋਂ, ਸੀ ਮਿਲਦਾ ਭਾਈ
ਜਾਂਦਾ ਕੋਈ ਜਹਾਜ ਨ, ਔਕੜ ਦਰਸਾਈ।
ਨਾਲ ਤਰੀਕੇ ਹਿੰਦੀਆਂ, ਦਿਤਾ ਅਟਿਕਾਈ।
ਓਨਾਂ ਨੇ ਚਿਤ ਆਪਣੇ, ਗਲ ਹੋਰ ਪਕਾਈ।
ਏਧਰ ਸਚੇ ਪਾਤਸ਼ਾਹ, ਚੁਕ ਹੋਰ ਬਨਾਈ।
ਝੂਠ ਸਚ ਲੈਣਾ ਬਖਸ਼ਾਈ॥੩॥

ਪਉੜੀ

ਸ੍ਰੀ ਮਾਨ ਗੁਰਦਿਤ ਸਿੰਘ, ਬਾਬਾ ਉਪਕਾਰੀ।

ਵਾਸੀ ਮਾਝੇ ਦੇਸ ਦਾ, ਕੌਮੀ ਹਿਤਕਾਰੀ।
ਕਰਦਾ ਸੀ ਵਿਚ ਟਾਪੂਆਂ, ਸੋ ਕਾਰ ਗੁਜ਼ਾਰੀ।
ਘਤੀ ਕੈਨੇਡਾ ਵਾਲਿਆਂ, ਇਹ ਗੁੰਝਲ ਭਾਰੀ।
ਗਲ ਨ ਰਹਿੰਦੀ ਹਿੰਦੀਆਂ, ਤਕ ਲਚਾਰੀ।
ਇਸ ਔਕੜ ਨੂੰ ਤੋੜਨਾ, ਹੈ ਹਿੰਮਤ ਧਾਰੀ।
ਨਜ਼ਰ ਚੁਫੇਰੇ ਮਾਰਦਾ, ਕਰਕੇ ਹੁਸ਼ਿਆਰੀ।
ਹਿੰਦੀ ਤੋੜ ਪੂਜਨ ਦੀ, ਇਹ ਜੁਗਤ ਵਿਚਾਰੀ।
ਰਖ ਆਸਰਾ ਗੁਰੂ ਦਾ, ਕਰ ਦਏ ਤਿਆਰੀ
ਸਤਿਗੁਰ ਸਚਾ ਪਾਰ ਉਤਾਰੀ।।੪।।

ਪਉੜੀ

ਅਗੇ ਓਥੇ ਗਏ ਸੀ, ਜੋ ਹਿੰਦੀ ਸਾਰੇ।
ਕਈ ਚਿਰਾਂ ਤੋਂ ਕਰ ਰਹੇ, ਸਨ ਕਾਰ ਵਿਹਾਰੇ।
ਚੰਗੇ ਪੈਸੇ ਖਟ ਕੇ, ਹੋ ਰਹੇ ਸੁਖਾਰੇ।
ਚਿਤ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਭਾਵਨਾਂ, ਇਹ ਠਾਠਾਂ ਮਾਰੇ।
ਆਵਨ ਵੀਰ ਅਸਾਡੜੇ, ਜੋ ਹੋਰ ਪਯਾਰੇ।
ਪਥਰ ਅਗੇ ਗੋਰਿਆਂ, ਹਨ ਡਾਢੇ ਡਾਰੇ।
ਇਸ ਕਰ ਪੇਸ਼ ਨ ਜਾਵੰਦੀ, ਕੀ ਕਰਨ ਵਿਚਾਰੇ।
ਰਲ ਮਿਲ ਕਰਨ ਕਮੇਟੀਆਂ, ਲਭੇ ਉਪਚਾਰੇ।
ਏਧਰ ਬਾਵ ਹੁਰਾਂ ਨੂੰ, ਸੀ ਫਿਕਰ ਅਪਾਰੇ।
ਕਾਰਜ ਸਿਰੇ ਚੜ੍ਹਾਨਗੇ, ਰਲ ਹਿੰਮਤ ਧਾਰੇ।
ਹਿੰਦ ਨਿਵਾਸੀ ਗੁਰੂ ਦੁਲਾਰੇ।।੫।।

ਪਉੜੀ

ਸ੍ਰੀਮਾਨ ਗੁਰਦਿਤ ਸਿੰਘ, ਜੀ ਕਰਮ ਕਮਾਏ।
ਵਲ ਕੈਨੇਡਾ ਖਾਲਸੇ, ਪੱਤਰ ਭਿਜਵਾਏ।
ਹਿੰਦੂ ਮੁਸਲਮਾਨ ਵੀ, ਸਬ ਨਾਲ ਜਨਾਏ।
ਮਿਲਕੇ ਸਾਰੇ ਸਜਨੋਂ, ਦਸੋਂ ਖਾਂ ਗਾਏ।
ਵਿਚ ਕੈਨੇਡਾ ਔਣ ਨੂੰ, ਹਿੰਦੀ ਤੜਫਾਏ।
ਸਾਰੀ ਗਲ ਸੁਨਾਉਣੀ, ਕੀ ਬਨੇ ਉਪਾਏ।
ਹੀਲਾ ਜੇ ਹੁਣ ਏਸਦਾ, ਕੁਝ ਕੀਤਾ ਜਾਏ।
ਕਰੋ ਸਹੈਤਾ ਤੁਸੀ ਬੀ, ਕੁਝ ਧਨ ਖਰਚਾਏ।
ਹਾਂ ਵਿਚ ਉਤਰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ, ਹੋ ਖੁਸ਼ੀ ਪਠਾਏ।

ਗਫੇ ਖੁਲੇ ਦਿਆਂਗੇ, ਜੋ ਕੁਝ ਬਨ ਆਏ।
ਸੁਨ ਬਾਬਾ ਜੀ ਮਨ ਹਰਖਾਏ।।੬।।

ਪਉੜੀ

ਥੋੜੇ ਚਿਰ ਦੇ ਵਿਚ ਹੀ, ਸਭ ਕਾਜ ਬਨਾਯਾ।
ਇਹ ਜਹਾਜ ਖਰੀਦਿਆਂ, ਲੋਕਾਂ ਦਰਸਾਯਾ।
ਕੌਮੀ ਝੰਡਾ ਓਸਦੇ, ਉਪਰ ਲਟਕਾਯਾ।
ਬੰਦੇ ਮਾਤ੍ਰਮ ਨਾਲ ਸ੍ਰੀ, ਅਕਾਲ ਲਿਖਾਯਾ।
ਅਲਾ ਅਕਬਰ ਤੀਸਰਾ, ਸੰਗ ਮੇਲ ਮਿਲਾਯਾ।
ਹਾਂਗ ਕਾਂਗ ਤੋਂ ਤੁਰਨ ਦਾ, ਸਾਮਾਨ ਕਰਾਯਾ।
ਹੈਸਨ ਕਈ ਉਡੀਕ ਦੇ, ਬੇਕਾਰ ਸਬਾਯਾ।
ਓਨ੍ਹਾਂ ਬਦਲੇ ਈਦ ਦਾ, ਏਹ ਚੰਦ ਦਿਸਾਯਾ।
ਚੜ੍ਹਦੇ ਖੁਸ਼ੀ ਮਨਾਇਕੈ, ਗੁਰ ਸਮਾਂ ਦਿਖਾਯਾ।
ਹੁਨ ਅਗੇ ਸਰਕਾਰ ਨੇ, ਰੋੜਾ ਅਟਿਕਾਯਾ।
ਨਹੀ ਸਕਦੀ ਏਹ ਤਕਾਯਾ।।੭।।

ਪਉੜੀ

ਗੌਰਮਿੰਟ ਸੌਦਾਗਰੀ, ਕਦ ਏਹ ਤਕਾਵੈ।
ਹਿੰਦੀ ਕਰਨ ਤਜਾਰਤਾਂ, ਤੰਗੀ ਨਿਕਲਾਵੈ।
ਫੇਰ ਨ ਏਥੇ ਅਸਾਂ ਦੀ, ਕੁਝ ਦਾਲ ਗਲਾਵੈ।
ਕਈ ਕਨੂਨੀ ਹੁਜਤਾਂ, ਘੜ ਕੇ ਅਟਕਾਵੈ।
ਸ਼ੇਰ ਬੁਢਾ ਵੀ ਗੁਰੂ ਦਾ, ਸਭ ਭੰਨ ਧਰਾਵੈ।
ਕੌਮੀ ਵਿਚ ਪਯਾਰ ਦੇ, ਦਿਨ ਰਾਤ ਬਿਤਾਵੈ।
ਦੌੜ ਭਜ ਤੇ ਖਰਚ ਤੋਂ, ਨਹੀਂ ਜ਼ਰਾ ਡਰਾਵੈ।
ਇਕੋ ਧੁਨ ਉਪਕਾਰ ਦੀ, ਵਿਚ ਰਿਦੇ ਵਸਾਵੈ।
ਦੂਰ ਕਰਾਈਆਂ ਔਕੜਾਂ, ਗੁਰ ਸ਼ੁਕਰ ਮਨਾਵੈ।
ਕਰੀ ਤਿਆਰੀ ਤੁਰਨ ਦੀ, ਅਰਦਾਸ ਸੁਧਾਵੈ।
ਗੁਰ ਸਚਾ ਹੁਨ ਪਾਰ ਚੜਾਵੈ।।੮।।

ਪਉੜੀ

ਸਾਰੇ ਹਿੰਦਸਤਾਨ ਦੇ, ਵਿਚ ਖਬਰ ਸੁਨਾਈ।
ਨਿਕੇ ਵਡੇ ਸਾਰਿਆਂ, ਬਹੁ ਖੁਸ਼ੀ ਮਨਾਈ।
ਸਭ ਅਖਬਾਰਾਂ ਕੀਰਤੀ, ਬਾਬੇ ਦੀ ਗਾਈ।
ਰਖੀ ਇਕੋ ਸਾਮਣੇ, ਹੈ ਦੇਸ ਭਲਾਈ।

ਖੁਦ ਗਰਜ਼ੀ ਨ ਆਪਣੀ, ਵਾਹ ਧੰਨ ਕਮਾਈ।
ਹਿੰਦੀ ਕਰਨ ਸੁਦਾਗਰੀ, ਏਹ ਨੀਤ ਪਕਾਈ।
ਜੁਧ ਕਨੂੰਨੀ ਜਿਤਿਆ, ਕੈਸੀ ਚਤਰਾਈ।
ਸਤਿਗੁਰ ਤੇਰੀ ਹਿੰਮਤਾਂ, ਨਿਤ ਕਰੈ ਸੁਵਾਈ।
ਜੋਤ ਅਕਾਲੀ ਟਪਕਦੀ, ਮਨ ਵਿਚ ਦਿਸਾਈ।
ਤੇਰੀ ਪਰ ਉਪਕਾਰੀਆਂ, ਕੀਕਰਾਂ ਵਡਾਈ।
ਸਤਿਗੁਰ ਤੈਨੂ ਫਤੇ ਦਵਾਈ।।੯।।

ਪਉੜੀ

ਲਏ ਮੁਸਾਫਰ ਹਿੰਦ ਤੋਂ, ਜਹਾਜ ਤੁਰਾਯਾ।
ਹੈਸਨ ਬਹੁਤੇ ਸਿੰਘ ਹੀ, ਅਕਾਲ ਗਜਾਯਾ।
ਹਿਸਾ ਹਿੰਦੂ ਮੋਮਨਾ, ਸੀ ਥੋੜਾ ਆਯਾ।
ਪੈਰ ਸਮੁਦ੍ਰ ਘਤਿਆ, ਸਤਿਗੁਰੂ ਮਨਾਯਾ।
ਝਖੜ ਕਈ ਤਪਾਨ ਦਾ, ਰਾਹ ਦੁਖ ਉਠਾਯਾ।
ਝਲੀ ਕਈ ਮੁਸੀਬਤਾਂ, ਗੁਰ ਭਾਣਾ ਭਾਯਾ।
ਸੋਈ ਜਾਨਣ ਵਿਚ ਜੋ, ਕੀ ਜਾਇ ਬਤਾਯਾ।
ਨੇੜੇ ਬੰਨੇ ਪੁਜਦੇ, ਰੰਗ ਹੋਰ ਦਿਸਾਯਾ।
ਪੁਲਸੀ ਇਕ ਜਹਾਜ ਨੇ, ਆ ਘੇਰਾ ਪਾਯਾ।
ਵਾਗ ਕੈਦੀਆਂ ਰੋਕਿਆ, ਹੈ ਪਹਿਰਾ ਲਾਯਾ।
ਏਹ ਕੀ ਕਰਤੇ ਰੰਗ ਬਨਾਯਾ।।੧੦।।

ਪਉੜੀ

ਹੈ ਸੀ ਖੁਸ਼ੀ ਮੁਸਾਫਰਾਂ, ਆ ਗਏ ਕਨਾਰੇ।
ਕਈ ਮਹੀਨੇ ਸਿੰਧ ਵਿਚ, ਸੀ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਗਜਾਰੇ।
ਆਸਾ ਕਰਦੇ ਸੁਖ ਦੀ, ਸਨ ਏਹ ਵਿਚਾਰੇ।
ਪਰ ਗੋਰੇ ਕੈਨੇਡੀਅਨ, ਡਾਢੇ ਹੰਕਾਰੇ।
ਓਨ੍ਹਾ ਨੇ ਚਿਤ ਆਪਨੇ, ਏਹ ਆਸੇ ਧਾਰੇ।
ਵੜਨ ਨ ਦੇਣਾ ਹਿੰਦੀਆਂ, ਹੈ ਕਿਸ ਪਰਕਾਰੇ।
ਸ੍ਰੀ ਮਾਨ ਗੁਰਦਿਤ ਸਿੰਘ, ਕਰ ਜਤਨ ਹਜ਼ਾਰੇ।
ਅਗਲੇ ਹਿੰਦੀ ਬਹੁਤ ਹੀ, ਕਰ ਰਹੇ ਪੁਕਾਰੇ।
ਸਾਰਾ ਕੰਮ ਹਥ ਆਪਨੇ, ਸੋ ਲੈਨ ਸੰਭਾਰੇ।
ਪੇਸ਼ ਨ ਕੋਈ ਜਾਵੰਦੀ, ਹੀਲੇ ਕਰ ਹਾਰੇ।

ਭੇਤ ਨਾ ਇਸਦੇ ਲਭਨ ਸਾਰੇ।।੧੧।।

ਪਉੜੀ

ਕੋਲਾ ਹੈਸੀ ਲਦਿਆ, ਵਿਚ ਬਹੁਤਾ ਸਾਰਾ।
ਓਥੇ ਜਾਕੇ ਵੇਚਣਾ, ਸੀ ਮਨਸਾ ਧਾਰਾ।
ਏਹ ਸੀ ਮੁਢ ਵਾਪਾਰ ਦਾ, ਸੁੰਦਰ ਵਰਤਾਰਾ।
ਸੋ ਬੀ ਮਿਲੈ ਨ ਸੁਟਣਾ, ਕੀ ਚਾਲੇ ਚਾਰਾ।
ਨੌਕਰਸ਼ਾਹੀ ਲੋੜਦੀ, ਕਦ ਏਹ ਵਿਹਾਰਾ।
ਹਿੰਦੀ ਕਰਨ ਸੁਦਾਗਰੀ, ਸਾਡੇ ਸਮਕਾਰਾ।
ਅਸਾਂ ਗੁਲਾਮੀ ਰਖਣਾ, ਹੈ ਹਿੰਦ ਗਵਾਰਾ।
ਜੇ ਹੋ ਗਏ ਖੁਸ਼ ਹਾਲ ਏਹ, ਕਰ ਜਾਨ ਕਨਾਰਾ।
ਸਾਥ ਆਕੀ ਹੋਨਗੇ, ਬਨ ਖੁਦ ਮੁਖਤਾਰਾ।
ਏਸੇ ਕਰਕੇ ਹੋ ਰਿਹਾ, ਸਭ ਏਹ ਨਜ਼ਾਰਾ।
ਨੌਕਰਸ਼ਾਹੀ ਵਡ ਹੁਸ਼ਿਆਰਾ।।੧੨।।

ਪਉੜੀ

ਛੇ ਮਹੀਨੇ ਸਿੰਧ ਦੇ, ਵਿਚੇ ਅਟਿਕਾਇਆ।
ਭੁਖੇ ਮਰਨ ਮਸਾਫਰਾਂ, ਨਹੀ ਤਰਸ ਕਮਾਇਆ।
ਅੰਦਰ ਬਾਹਰ ਜਾਨਤੋਂ, ਹੈ ਬੰਦ ਕਰਾਇਆ।
ਪਾਨੀ ਮਿਲੈ ਨ ਪੀਨ ਨੂੰ, ਬਹੁ ਕਸ਼ਟ ਉਠਾਇਆ।
ਤੋਪਾ ਨਾਲ ਉਡਾਨ ਦਾ, ਡਰ ਬਹੁਤ ਵਖਾਇਆ।
ਜੰਗੀ ਆਨ ਜਹਾਜ ਨੇ, ਜਦ ਸੀ ਧਮਕਾਇਆ।
ਤੰਗ ਆਨਕੇ ਖਾਲਸੇ, ਹੁਨ ਮਤਾ ਪਕਾਇਆ।
ਮਰਨ ਮਾਰਨ ਤੇ ਹੋ ਗਏ, ਨਹੀ ਚਿਤ ਡਰਾਇਆ।
ਤਾਂ ਜੰਗੀ ਜਰਨੈਲ ਦੇ, ਮਨ ਸੀਸਾ ਆਇਆ।
ਬਿਨ ਹਥਯਾਰੋਂ ਦਿਸਦੇ, ਕਿਉਂ ਬਨੇ ਖਪਾਇਆ।
ਰੰਗ ਸਮੇਂ ਨੇ ਹੋਰ ਵਟਾਇਆ।।੧੩।।

ਪਉੜੀ

ਅੰਤ ਕਨੇਡਾ ਵਾਲਿਆ, ਇਹ ਗਲ ਜਤਾਈ।
ਕਈ ਡਰਾਵੇ ਦੇ ਥਕੇ, ਪਰ ਬਣੀ ਨ ਕਾਈ।
ਓਥੋਂ ਵਾਲੇ ਹਿੰਦੀਆਂ, ਤਦ ਏਹ ਮਨਾਈ।
ਖਰਚ ਦੇ ਦਿਓ ਮੁੜਨ ਦਾ, ਏਹਨਾਂ ਨੂੰ ਪਾਈ।
ਆਟਾ ਦਾਣਾ ਨੀਰ ਲੌ, ਜੋ ਵਸਤ ਸਥਾਈ।

ਮੁੜ ਜਾਵਨਗੇ ਹਿੰਦ ਨੂ, ਨਹੀ ਸੰਕਾ ਰਾਈ।
ਏਹ ਸਭ ਓਨ੍ਹਾਂ ਮੰਨਿਆਂ, ਮਨ ਤੋਂ ਹਰਖਾਈ।
ਓਸੇ ਵੇਲੇ ਘੱਲਦੇ, ਸਭ ਚੀਜ਼ ਬਨਾਈ।
ਹੋਈ ਤਿਆਰੀ ਮੁੜਨ ਦੀ, ਏਹ ਖਬਰ ਧੁਮਾਈ।
ਹਿੰਦੀ ਅਗੇ ਵਸਦੇ, ਸੋ ਮਿਲਦੇ ਆਈ।
ਦੁਖੀ ਚਿਤ ਹੋ ਵਿਦਾ ਕਰਾਈ।।੧੪।।

ਪਉੜੀ

ਤੋਰਨ ਸਾਜਨ ਸਾਜਨਾਂ, ਰਿਦ ਬਹੁਤ ਦੁਖਾਲੇ।
ਰੋ ਰੋ ਕੇ ਹਨ ਵਿਛੜੇ, ਨਹੀ ਸੁਰਤ ਸੰਭਾਲੇ।
ਕੀ ਸੀ ਪਤਾ ਵਿਚਾਰਿਆਂ, ਜੋ ਭੋਲੇ ਭਾਲੇ।
ਕਹਿਰ ਕਮਾਯਾ ਗੋਰਿਆਂ, ਕੀ ਫੜੇ ਕੁਚਾਲੇ।
ਬਾਹਰੋਂ ਚਿਟੇ ਦਿਸਦੇ, ਹਨ ਅੰਦਰ ਕਾਲੇ।
ਮੁੜੇ ਪਛਾਹਾਂ ਤੋਰ ਕੈ, ਕਰ ਗੁਰੂ ਹਵਾਲੇ।
ਗਏ ਜਿਵੇਂ ਤਿਉਂ ਆਵੰਦੇ, ਕੁਦਰਤ ਦੇ ਚਾਲੇ।
ਧਕੇ ਧੋੜੇ ਖਾਵੰਦੇ, ਮੁੜ ਸਿੰਧ ਵਿਚਾਲੇ।
ਚਿਤ ਅਰਾਦੇ ਸਾਰਿਆਂ, ਹੁਨ ਹੋਰ ਉਠਾਲੇ।
ਮਿਹਰ ਕਰੈ ਕਰਤਾਰ ਜੇ, ਕੁਝ ਪੈ ਹੈ ਪਾਲੇ।
ਪਰ ਮਾਲਕ ਦੇ ਰਾਹ ਨਿਰਾਲੇ।।੧੫।।

ਪਉੜੀ

ਚਿਤ ਅਰਾਦੇ ਸਾਰਿਆਂ, ਹੈਸਨ ਇਹ ਧਾਰੇ।
ਰਸਤੇ ਵਿਚ ਹੀ ਰਹਾਂ ਗੇ, ਕਰਨੇ ਰੁਜ਼ਗਾਰੇ।
ਛੇ ਮਹੀਨੇ ਕਰੈ ਨਾ, ਕੁਝ ਕਾਰ ਵਿਹਾਰੇ।
ਖਰਚ ਹੋਏ ਨੇ ਪਲਿਓਂ, ਬਹੁਤੇ ਹੀ ਸਾਰੇ।
ਕੀ ਹੈ ਕਰਨਾ ਜਾਇ ਕੈ, ਹੁਨ ਘਰ ਵਿਚਕਾਰੇ।
ਖਾਲੀ ਹੱਥੀ ਜਾਵਨਾਂ, ਨਾਹੀ ਦਰਕਾਰੇ।
ਏਹ ਸਭ ਲਡ ਆਸ ਦੇ, ਖਾ ਰਹੇ ਵਿਚਾਰੇ।
ਪਰ ਨ ਕਿਤੇ ਜਹਾਜ਼ ਤੋਂ, ਰਾਹ ਵਿਚ ਉਤਾਰੇ।
ਨੌਕਰ ਸ਼ਾਹੀ ਹੋ ਰਹੀ, ਹੁਨ ਕਰਸੀ ਕਾਰੇ।
ਜਾਕੇ ਬੱਜ ਬੱਜ ਘਾਟ ਤੇ, ਦਿਸਨ ਕਰਤਾਰੇ।
ਦੰਗ ਰਹਿਨ ਗੇ ਵੇਖਨ ਹਾਰੇ।।੧੬।।

ਪਉੜੀ

4—254/Deptt. of Archives/ND/97

ਪੁਜੇ ਬੱਜ ਬੱਜ ਘਾਟ ਦੇ, ਜਦ ਨੇੜੇ ਜਾਕੇ।
ਆਰ ਕਾਟੀ ਦੇ ਪਾਸ ਹੀ, ਕੀ ਰਹੇ ਤਕਾ ਕੇ।
ਆਵਨ ਕਿਸ਼ਤੀ ਸਿੰਘ ਨੇ, ਝਟ ਤੇਜ ਦੁੜਾ ਕੇ।
ਅਗੋਂ ਫਤੇ ਗਜਾਂਵਦੇ, ਸਭ ਸਿੰਘ ਲਖਾ ਕੇ।
ਏਹ ਭੁਲੇ ਨੇ ਸ਼ਕਲ ਤੇ, ਭੋਲੇ ਭਰਮਾ ਕੇ।
ਸਿੰਘ ਨਹੀ ਇਹ ਕਾਇਰਾਂ, ਰਹਿ ਭੇਸ ਵੱਟਾਕੇ।
ਏਹ ਤਾਂ ਪੁਲਸੀ ਧਾੜ ਦੇ, ਰਹਿ ਚੁਪ ਕਰਾਕੇ।
ਮਹੁਰੀ ਸੁਖਾ ਸਿੰਘ ਸੀ, ਆਏ ਲਪਕਾ ਕੇ।
ਢਿਲ ਨ ਕੀਤੇ ਬੋਲਦੇ, ਚੰਗਾ ਧਮਕਾ ਕੇ।
ਨਾਮ ਲਿਖਾਵੋ ਆਪਣੇ, ਆਖਨ ਸਮਝਾ ਕੇ।
ਬੈਠੇ ਅਪਣਾ ਰੰਗ ਵਿਖਾ ਕੇ।।੧੭।।

ਪਉੜੀ

ਦਫਤਰ ਬਾਬੇ ਹੁਰਾਂ ਦਾ, ਸਭ ਲਿਆਦਥਾਈ।
ਫੇਰ ਤਲਾਸ਼ੀ ਸਾਰਿਆਂ, ਚੰਗੀ ਕਰਵਾਈ।
ਨਾਮ ਪਿੰਡ ਤੇ ਜ਼ਿਲੇ ਭੀ, ਲੈਂਦੇ ਲਿਖਵਾਈ।
ਜਿਤਨੇ ਹੈਸਨ ਆਦਮੀ, ਫੈਰਿਸਤ ਬਨਾਈ।
ਜੇ ਕੋਈ ਅੱਗੋਂ ਪੁਛਦਾ, ਏਹ ਦੇਣ ਸੁਨਾਈ।
ਤੁਸਾ ਉਤੇ ਸਰਕਾਰ ਨੇ, ਹੈ ਦਿਯਾ ਕਰਾਈ।
ਕਈ ਦਿਨਾਂ ਤੋਂ ਤੁਸਾਂ ਨੇ, ਤਕਲੀਫ ਉਠਾਈ।
ਖਰਚ ਤੁਸਾਂ ਦਾ ਬਹੁਤ ਹੀ, ਹੈ ਹੋਇਆ ਭਾਈ।
ਸੋ ਸਭ ਮਿਲਸੀ ਤੁਸਾਂ ਨੂੰ, ਗਿਨ ਗਿਨ ਪਾਈ।
ਏਸੇ ਕਰਕੇ ਅਸਾਂ ਨੇ, ਏਹ ਕ੍ਰਿਤ ਕਮਾਈ।
ਤੁਸੀ ਕਰੋ ਨ ਸੰਸਾ ਕਾਈ।।੧੮।।

ਪਉੜੀ

ਲਗਾ ਬੱਜ ਬੱਜ ਘਾਟ ਤੇ, ਜਹਾਜ਼ ਕਨਾਰੇ।
ਅਗੇ ਇਕ ਲੈਨ ਸੀ, ਜੋ ਖੜੀ ਤਿਆਰੇ।
ਭਖਿਆ ਇੰਜਨ ਓਸਦਾ, ਜੋ ਚੀਕਾਂ ਮਾਰੇ।
ਆਏ ਵਿਚ ਜਹਾਜ ਦੇ, ਪੁਲਸੀ ਬਹੁ ਸਾਰੇ।
ਆਖਨ ਸਿੰਘਾਂ ਸਾਰਿਆਂ, ਉਤਰੋ ਤਤਕਾਰੇ।
ਗੱਡੀ ਖੜੀ ਤਿਆਰ ਹੈ, ਨਹੀ ਬਣੋ ਅਵਾਰੇ।
ਇਕ ਜ਼ਬਾਨੇ ਸਿੰਘ ਤਾਂ, ਬੋਲੇ ਹੁਸ਼ਆਰੇ।

ਏਹ ਕਲਕੱਤਾ ਨਹੀ ਹੈ, ਕਿਉ ਰਹੇ ਉਤਾਰੇ।
ਅਸੀ ਨ ਏਥੇ ਉਤਰੇਂ, ਕਿਉ ਕਰੋ ਖੁਆਰੇ।
ਅਗੋਂ ਬੋਲੇ ਤੜ ਕੇ, ਪਾਪੀ ਹਤਿਆਰੇ।
ਤੁਸਾਂ ਚਲੇ ਨ ਕੋ ਇਨਕਾਰੇ।।੧੯।।

ਪਉੜੀ

ਬੱਸ ਆਖਿਆ ਤੁਸਾਂ ਨੂੰ, ਨਹੀ ਢਿਲ ਲਗਾਣੀ।
ਏਹੋ ਗਲ ਅਖੀਰ ਦੀ, ਹੁਨ ਅਸਾਂ ਕਰਾਣੀ।
ਫੜ ਫੜ ਕੇ ਲੈ ਜਾਵਨਾ, ਨਹੀ ਗੱਲ ਲੁਕਾਣੀ।
ਸਿੰਘ ਸੁਨਾਵਣ ਆਪਣੀ, ਸਭ ਦੁਖ ਕਹਾਣੀ।
ਪਾਣੀ ਥੋੜਾ ਦੇਵਣਾ, ਹੈ ਤਿੱਖਾ ਮਿਟਾਣੀ।
ਗਡੀ ਵਿਚ ਹੀ ਮਿਲੇਗਾ, ਪੀ ਲੈਣਾ ਪਾਣੀ।
ਫੜ ਫੜ ਲਗੇ ਕਢਨੇ, ਜਮ ਰੂਪ ਪਰਾਣੀ।
ਤਰਸ ਨ ਕਰਦੀ ਜ਼ਰਾਭੀ, ਏਹ ਪੁਲਸੀ ਢਾਣੀ।
ਓੜਕ ਸਾਰੇ ਉਤਰੇ, ਗਲ ਔਖੀ ਜਾਣੀ।
ਬੈਠੇ ਹੇਠਾਂ ਬਿਰਛ ਦੇ, ਕੁਝ ਛਾਂਉ ਲਖਾਣੀ।
ਹੁਣ ਸਿੰਘਾਂ ਕੀ ਮਰਜ਼ੀ ਠਾਨੀ।।੨੦।।

ਪਉੜੀ

ਨਾਲੇ ਗੁਰੂ ਗਰੰਥ ਸੀ, ਇਕ ਸਿੰਘਾਂ ਪਾਸੇ।
ਸਿੰਘ ਸਦਾ ਹੀ ਜੀਵੰਦੇ, ਜਿਸ ਦੇ ਭਰਵਾਸੇ।
ਰਖ ਅਗਾੜੀ ਬੈਠਦੇ, ਪਰ ਚਿਤ ਨਿਰਾਸੇ।
ਪਕੇ ਕੀਤੇ ਸਾਰਿਆਂ, ਆਗਦੇ ਖਾਸੇ।
ਗਡੀ ਥੋੜੇ ਬੈਠਦੇ, ਮਨ ਖਾਇ ਤਰਾਸੇ।
ਕਲਕੱਤੇ ਨੂੰ ਚਲਨਾ, ਸੋਧ ਅਰਦਾਸੇ।
ਚੁਕ ਸਵਾਰੀ ਗੁਰੂ ਦੀ, ਤੁਰਦੇ ਸੁਖ ਰਾਸੇ।
ਨਾਲ ਨਾਲ ਹੀ ਪਲਸੀਏ, ਹੋ ਤੁਰੇ ਹਰਾਸੇ।
ਤਿੰਨ ਮੀਲ ਤੇ ਹੋਰ ਹੀ, ਬਨ ਗਏ ਤਮਾਸ਼ੇ।
ਬਾਈ ਸਿਕਲ ਦੇ ਆਵੰਦਾ, ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ ਮਿਲਾਸੇ।
ਕੀ ਕਰਦਾ ਸੋ ਬਚਨ ਖਿਲਾਸੇ।।੨੧।।

ਪਉੜੀ

ਵੈਸਰਾਇ ਨੇ ਘਲਿਆ, ਮੈਨੂ ਅਗਵਾਈ।
ਪੁਛਾ ਦੁਖ ਸੁਖ ਤੁਸਾਂ ਦਾ, ਹੈ ਸਚ ਸੁਨਾਈ।

ਦੇ ਸਹੈਤਾ ਤੁਸਾਂ ਨੂੰ, ਸਰਕਾਰ ਬਨਾਈ।
ਦਸੋ ਇਕ ਥਾਂ ਬੈਠਕੇ, ਸਭ ਗਲ ਜਨਾਈ।
ਮੁੜਕੇ ਪਿਛੇ ਚਲਣਾਂ, ਇਸ ਵਿਚ ਭਲਾਈ।
ਅਜੇ ਵੀ ਸਿਖਾਂ ਭੋਲਿਆਂ, ਨਹੀਂ ਗਲ ਲਖਾਈ।
ਕੀਤੀ ਉਸ ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ ਨੇ, ਕੈਸੀ ਚਤਰਾਈ।
ਸਚ ਜਾਨ ਲਈ ਓਸਦੀ, ਝੂਠੀ ਏਹ ਰਾਈ।
ਮੁੜੇ ਪਿਛਾੜੀ ਤੁਰਤ ਹੀ, ਗੁਰ ਧੰਨ ਅਲਾਈ।
ਅਰਜ਼ ਸੁਣੀ ਸਰਕਾਰ ਨੇ, ਹੈ ਸਾਡੀ ਭਾਈ।
ਭਲੇ ਜਾਨ ਦੇ ਭਲੀ ਲੁਕਾਈ।।੨੨।।

ਪਉੜੀ

ਦੋਇ ਕੰਪਨੀ ਗੋਰਿਆਂ, ਚਲ ਮਗਰੋਂ ਆਈ।
ਅਜੇ ਨਾ ਲੰਘੇ ਮੀਲ ਵੀ, ਆ ਘੇਰੀ ਪਾਈ।
ਛੇਤੀ ਛੇਤੀ ਕੂਕਦੇ, ਮੂੰਹ ਗੰਦ ਬਕਾਈ।
ਸਿੰਘਾਂ ਠੂਡੇ ਮਾਰਦੇ, ਏਹ ਵਡ ਕਸਾਈ।
ਪਾਣੀ ਪੀਣ ਨ ਦੇਵੰਦੇ, ਅੱਤ ਭਾਰੀ ਚਾਈ।
ਅਸਟੇਸ਼ਨ ਤੇ ਪੁਜਦੇ, ਬਹੁ ਦੁਖ ਉਠਾਈ।
ਬੈਠੋ ਗਡੀ ਆਖਦੇ, ਨਹੀ ਢਿਲ ਲਗਾਈ।
ਲਭੱਨ ਓਸ ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ ਨੂੰ, ਪਰ ਕੌਨ ਬਤਾਈ।
ਧੋਖਾ ਦੇ ਲੈ ਆਵੰਦਾ, ਸੋ ਚਾਲ ਚਲਾਈ।
ਹੈ ਸੀ ਓਹ ਬਰੂਪੀਆਂ ਜੋ, ਗਿਆ ਠਗਾਈ।
ਫਾਥੇ ਆਕੇ ਸਿੰਘ ਕੁਦਾਈ।।੨੩।।

ਪਉੜੀ

ਝਗੜੇ ਝਾਂਜੇ ਵਿਚ ਹੀ, ਸੂਰਜ ਅਸਤਾਯਾ।
ਗਡੀ ਚੜ੍ਹਦੇ ਸਿੰਘ ਨੇ, ਹੈ ਦਾਈ ਆਲਾਯਾ।
ਚਾਰੇ ਪਾਸੇ ਫੌਜ ਨੇ, ਸੀ ਘੇਰਾ ਪਾਯਾ।
ਗੁਸੇ ਹੋ ਜਰਨੈਲ ਨੇ, ਤਾਂ ਹੁਕਮ ਚੜ੍ਹਾਯਾ।
ਦਾਗੋ ਗੋਲੀ ਤੁਰਤ ਹੀ, ਕਰ ਦਿਓ ਸਫਾਯਾ।
ਤੜ ਤੜ ਗੋਲੀ ਛੁਟਦੀ, ਤੜ ਥਲ ਮਚਾਯਾ।
ਬਹੁਤ ਮੋਏ ਕੁਝ ਨਸਦੇ, ਜਿਸ ਰਬ ਬਚਾਯਾ।
ਘਲੂ ਘਾਰਾ ਵਾਸਤੇ, ਸਿੰਘਾਂ ਦੇ ਆਯਾ।
ਪਤਾ ਨਹੀ ਗੁਰ ਗ੍ਰੰਥ ਦਾ, ਕੀ ਹਾਲ ਬਨਾਯਾ।

ਏਹ ਜ਼ਮਾਨਾਂ ਕਹਿਰ ਦਾ, ਕੀ ਰਬ ਵਖਾਯਾ।
ਸਿੰਘਾਂ ਤੇ ਭਾਣਾ ਵਰਤਾਯਾ।।੨੪।।

— ਭਾ: ਸੂਰਜ ਸਿੰਘ
(भाई सूरज सिंह)

"ਜਾਗ੍ਰਤਿ ਖਾਲਸਾ"
ਰਚਿਤ : ਭਾ: ਸੂਰਜ ਸਿੰਘ।
ਖਾਲਸਾ ਨੈਸ਼ਨਲ ਪ੍ਰੈਸ, ਜਲੰਧਰ।

"जागृति खालसा"
रचनाकार : भाई सूरज सिंह।
खालसा नेशनल प्रैस, जालंधर।

(अवाप्ति संख्या : 2195)

ਸਿਆਸੀ ਕੈਦੀ

ਦੇਸ਼ ਦੀ ਆਜ਼ਾਦੀ ਖਾਤਰ ਕਫਸ ਵਿਚ,
ਬੈਠੇ ਹੋਏ ਕਈ ਨੌਜਵਾਨ ਨੇ।
ਤੜਪ ਆਜ਼ਾਦੀ ਦੀ ਦਿਲ ਵਿਚ ਹੈ ਪਿਨਹਾਂ,
ਮੁਲਕ ਤੋਂ ਲੂੰ-ਲੂੰ ਹੋਏ ਕੁਰਬਾਨ ਨੇ।
ਕਾਸ਼ ਕਿ ਫਿਰਦੇ ਕਦੇ ਸਨ ਬਾਹਰ ਵੀ,
ਅਜ ਬੈਠੇ ਬਣੇ ਬੰਦੀਵਾਨ ਨੇ।
ਕੋਠੜੀ ਚੋਂ ਬਾਹਰ ਤਕਨ ਦਾ ਹੁਕਮ ਨਹੀਂ,
ਬਾਹਰ ਖਲੇ ਪਹਿਰੇ ਤੇ ਕਈ ਦੀਵਾਨ ਨੇ।
ਬੰਦ ਨੇ ਗੋ ਫਿਰ ਵੀ ਪੈਰੀਂ ਬੇੜੀਆਂ,
ਜਾਬਰਾਂ ਨੂੰ ਅਜੇ ਨਹੀਂ ਇਤਮੀਨਾਨ ਨੇ।
ਦਿਲ ਧੱਰਾ ਜਾਂਦਾਏ ਉਸ ਦਮ ਹਿੰਦੀਓ,
ਜਿਹਲ ਬਦਲਣ ਲਈ ਹੁੰਦੇ ਜਾਂ ਰਵਾਨ ਨੇ।
ਹਥ ਵਿਚ ਹਥਕੜੀਆਂ ਪੈਰੀਂ ਬੇੜੀਆਂ,
ਨਾਲ ਹੁੰਦੇ ਜਮ ਸੂਰਤ ਇਨਸਾਨ ਨੇ।
ਗਲ ਕਰਨੀ ਕੀ, ਦੇਖਣੇ ਦਾ ਹੁਕਮ ਨਹੀਂ,
ਐਡੇ ਹੁੰਦੇ ਸਖਤ ਹਾਏ! ਫਰਮਾਨ ਨੇ।
ਗਿਣਦੇ ਕਿਸਮਤ ਦੀਆਂ ਘੜੀਆਂ ਰਾਤ ਦਿਨ,
ਬਾਹਰ ਲਾਏ ਜੰਦਰੇ ਹੈਰਾਨ ਨੇ।
ਕਈਆਂ ਨੂੰ ਅਜ ਤੀਕ ਅਜੇ ਇਹ ਖਬਰ ਨਹੀ,
ਹੋ ਗਏ ਸਾਥੋਂ ਕੀ ਕੀ ਨੁਕਸਾਨ ਨੇ।
ਮਿਲਨ ਜਾਵਨ ਜੇ ਕਿਸੇ ਦੇ ਵਾਲਦੈਨ,
'ਉਸੇ ਨਹੀਂ ਮਿਲਸਕਦੇਂ' ਹੁੰਦੇ ਫਰਮਾਨ ਨੇ।

ਇਹ ਹਾਲਤ 'ਕਰਤਾਰ' ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਹੈ ਜਿਹਲ ਵਿਚ,

ਸਿਰ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਕੀਤੇ ਮੁਲਕ ਨੂੰ ਦਾਨ ਨੇ।

— ਕਾਮਰੇਡ ਕਰਤਾਰ ਸਿੰਘ "ਕਰਤਾਰ"
(कामरेड करतार सिंह "करतार")

"ਦੁਖੀ ਦੁਨੀਆਂ"
ਕਵੀ ਤੇ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਕ :
ਕਾਮਰੇਡ ਕਰਤਾਰ ਸਿੰਘ "ਕਰਤਾਰ"
ਆਜ਼ਾਦ ਪ੍ਰੈਸ, ਮੇਰਠ।

"दुखी दुनियां"
कवि और प्रकाशक :
कामरेड करतार सिंह "करतार"।
आज़ाद प्रैस, मेरठ।

(अवाप्ति संख्या : 1956)

ਸਾਡਾ ਹਾਲ

ਕਾਲੇ ਪਾਣੀ ਵਾਲਿਆਂ ਦੀ ਸਿੱਕ

ਹਾਲ ਆਪਣਾ ਦਸੀਏ ਜਾ ਕਿਥੇ,
ਮੇਹਰਬਾਨ ਸਾਰੇ ਮੂੰਹ ਮੋੜ ਬੈਠੇ।
ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਵਾਸਤੇ ਅਸਾਂ ਨੇ ਦੁਖ ਝਲੇ,
ਓਹਤਾਂ ਨਾਲ ਹੋਰਾਂ ਦਿਲ ਜੋੜ ਬੈਠੇ।
ਛਡੇ ਭੈਣ ਭਾਈ ਨਾਲੇ ਬਾਪ ਮਾਈ,
ਤੁਸਾਂ ਵਾਸਤੇ ਸਭ ਕੁਝ ਛੋੜ ਬੈਠੇ।
ਤੁਸੀ ਸੁਖਾਂ ਦੇ ਵਿਚ ਹੀ ਮੌਜ ਲੁਟੋ,
ਅਸੀਂ ਦਿਲ ਦੇ ਲਹੂ ਨਿਚੋੜ ਬੈਠੇ।

ਕੀਕਰ ਘਰਾਂ ਵਿਚ ਤੁਸੀ ਅਰਾਮ ਕਰਦੇ,
ਸਾਡਾ ਛੱਡ ਖਿਆਲ ਪੰਜਾਬੀਓ ਵੇ।
ਸਾਡੇ ਦੁਖ ਤੇ ਦਰਦ ਨੂੰ ਵੇਖਕੇ ਤੇ,
ਹੋਵੇ ਕਦੀ ਦਿਆਲ ਪੰਜਾਬੀਓ ਵੇ।
ਹੋਵੇ ਕੋਲ ਤੇ ਦਸੀਏ ਖੋਲ੍ਹ ਯਾਰੋ,
ਜੋਹੜਾ ਅਸਾਂ ਦਾ ਹਾਲ ਪੰਜਾਬੀਓ ਵੇ।
ਤੁਹਾਡੇ ਮਿਲਨ ਦੀ ਅਸਾ ਨੂੰ ਤੜਪ ਲਗੀ,
ਨਹੀ ਛੱਡਦਾ ਜਾਲ ਪੰਜਾਬੀਓ ਵੇ।

ਤੁਸੀ ਪੀਵਦੇ ਠੰਡੜੇ ਠਾਰ ਪਾਣੀ,
ਸਾਨੂੰ ਕਢਕੇ ਕਾਲਿਆਂ ਪਾਨੀਆਂ ਨੂੰ।
ਆਪ ਟਬਰਾਂ ਦੇ ਵਿਚ ਸੁਖੀ ਵਸੋ,
ਸਾਨੂੰ ਖੋਭਕੇ ਬਿਰਹੁੰਦੀਆਂ ਕਾਨੀਆਂਨੂੰ।
ਸਦ ਲਵੋ ਜੇ ਅਸਾਂ ਨੂੰ ਹਿੰਦ ਅੰਦਰ,
ਮਿਲ ਜਾਵੀਏ ਅਪਨੇ ਜਾਨੀਆਂ ਨੂੰ।

ਹੋਕੇ ਪ੍ਰੇਮ ਦੀਵਾਨੜੇ ਵਿਚ ਜੇਹਲਾਂ,
ਕਰਦੇ ਯਾਦ ਹਾਂ ਗੁਰੂ ਦੀ ਬਾਨੀਆਂ ਨੂੰ।

— ਭਾਈ ਮੋਹਣ ਲਾਲ
(भाई मोहन लाल)

"ਅਕਾਲੀ ਭਬਕ"
ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਕ : ਭਾਈ ਨਿਹਾਲ ਸਿੰਘ।
ਪੰਜਾਬ ਖਾਲਸਾ ਪ੍ਰੈਸ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।

"अकाली भबक"
प्रकाशक : भाई निहाल सिंह।
पंजाब खालसा प्रैस, अमृतसर।

(अवाप्ति संख्या : 2237)

ਅਸਾਂ ਸਮਝਿਆ ਜਿਵੇਂ ਹੈ ਸ਼ਕਲ ਸੋਹਣੀ, ਤਿਵੇਂ ਅੰਦਰੋਂ ਭੀ ਨੂਰੋ ਨੂਰ ਹੋਸੇਂ!

ਡਾਢਾ ਫਸਦੋਂ ਵਿਚ ਮੁਸੀਬਤਾਂ ਦੇ,
ਵੇਲੇ ਸਿਰ ਜੇ ਤੈਨੂੰ ਬਚਾਵਦੇ ਨਾ।
ਬੇੜਾ ਗਰਕ ਹੁੰਦਾ ਤੂੰਬੀ ਡੁਬ ਜਾਂਦੋਂ,
ਮੋਢਾ ਡਾਹ ਜੇ ਪਾਰ ਲੰਘਾਂਵਦੇ ਨਾ।
ਨਾਨੀ ਯਾਦ ਆ ਜਾਂਵਦੀ ਤੁਝਤਾਈ,
ਜਰਮਨ ਕੋਲੋਂ ਜੇਅਸੀ ਛੁਡਾਂਵਦੇ ਨਾ।
ਆਕੜ ਯਾਰ ਤੇਰੀ ਸਾਰੀ ਦਿਸ ਪੈਂਦੀ,
ਖਾਤਰ ਤੇਰੀ ਜੇ ਵੀਰ ਕੁਹਾਂਵਦੇ ਨਾ।
ਸਾਨੂੰ ਪਤਾ ਕੀ ਸੀ ਤੈਂਹੈ ਦਗਾ ਦੇਣਾ,
ਵਿਚੋਂ ਜ਼ੈਹਰ ਦੇ ਨਾਲ ਭਰਪੂਰ ਹੋਸੇਂ।
ਅਸਾਂ ਸਮਝਿਆ ਜਿਵੇਂ ਹੈ ਸ਼ਕਲ ਸੋਹਣੀ,
ਤਿਵੇਂ ਅੰਦਰੋਂ ਭੀ ਨੂਰੋ ਨੂਰ ਹੋਸੇਂ।
ਖੂਬ ਕੀਤੀ ਅਸਾਡੜੇ ਨਾਲ ਹੈ ਤੂੰ,
ਘਾਲਾਂ ਸਾਡੀਆਂ ਸਭੇ ਭੁਲਾ ਬੈਠੋਂ।
ਹਥ ਫੇਰ ਕੇ ਸਾਡੜੀ ਪਿਠ ਉਤੇ,
ਕੰਮ ਆਪਣੇ ਸਾਰੇ ਕਢਾ ਬੈਠੋਂ।
ਹੋ ਕੇ ਮਸਤ ਵਿਚ ਨਸ਼ੇ ਹਕੂਮਤਾਂ ਦੇ,
ਹਕ ਦੂਜਿਆਂ ਦੇ ਜਾ ਦਬਾ ਬੈਠੋਂ।
ਖਰੀਆਂ ਤੁਝ ਨੂੰ ਜੇਹੜੇ ਸੁਣਾਵਦੇ ਸੀ,
ਫੜ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਪਿੰਜਰੇ ਪਾ ਬੈਠੋਂ।
ਐਪਰ ਅਜੇ ਵੀ ਤਜੇਂ ਨਾ ਤੂੰ ਖੈਹੜਾ,
ਨਿਤ ਨਵੀਆਂ ਕਲਾਂ ਜਗਾਈ ਜਾਵੇਂ।

ਦੁਖੀ ਵੇਖ ਸਾਨੂੰ ਤੈਨੂ ਖੁਸ਼ੀ ਆਵੇ,
ਐਂਵੇ ਪਾਪੀਆ ਕਾਨੂੰ ਤਪਾਈ ਜਾਵੇਂ।

— ਤਰਲੋਕ ਸਿੰਘ 'ਸੀਤਲ'
(तरलोक सिंह 'सीतल')

"ਅਕਾਲੀ ਭਬਕ"
ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਕ : ਭਾਈ ਨਿਹਾਲ ਸਿੰਘ।
ਪੰਜਾਬ ਖਾਲਸਾ ਪ੍ਰੈਸ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।

"अकाली भबक"
प्रकाशक : भाई निहाल सिंह।
पंजाब खालसा प्रैस, अमृतसर।

(अवाप्ति संख्या : 2237)

ਗੋਰੇ ਰੰਗ ਦੀਆਂ ਚਾਲਾਂ ਦੀ ਅਜ ਸਾਨੂ ਹੈ ਸਾਰ ਹੋਈ

(ਤਰਜ਼) ਪ੍ਰੀਤਮ ਤੇਰੀਆਂ ਗਲੀਆਂ ਅੰਦਰ ਲੋਥਾਂ ਦੀ ਭਰਮਾਰ ਹੋਈ।

ਚੇਤੇ ਕਰ ਉਹ ਵੇਲਾ ਜਦ ਕਿ ਘਟਾ ਜਰਮਨੀ ਛਾਈ ਸੀ।
ਬਦਲ ਕੜਕੇ ਬਿਜਲੀ ਚਮਕੇ ਤੇਰੀ ਜਾਨ ਕੰਬਾਈ ਸੀ।
ਕੀਕੂੰ ਵਾਰ ਖਾਲਸੇ ਜਾਨਾਂ ਤੇਰੀ ਜਾਨ ਬਚਾਈ ਸੀ।
ਜਾਕੇ ਵਿਚ ਮੈਦਾਨ ਜੰਗ ਦੇ ਲਹੂਦੀ ਨਦੀ ਵਹਾਈ ਸੀ।
ਮਿੱਠੀਆਂ ਤੇਰੀਆਂ ਗਲਾਂ ਉਤੇ ਸਾਰੀ ਕੌਮ ਨਸਾਰ ਹੋਈ।
ਗੋਰੇ ਰੰਗ ਦੀਆਂ ਚਾਲਾਂ ਦੀ ਅੱਜ ਸਾਨੂ ਹੈ ਸਾਰ ਹੋਈ।
ਮਤਲਬ ਜਦ ਕਿ ਹੋਯਾ ਪੂਰਾ ਵੈਹਦੇ ਸਾਰੇ ਤੋੜ ਦਿਤੇ।
ਭਾਰਤ ਦੇ ਇਸ ਖਿੜੇ ਚਮਨ 'ਚੋਂ ਖਿੜਦੇ ਫੁਲ ਮੋੜ ਦਿਤੇ।
ਪਾਲੇ ਨਾਲ ਲਾਡ ਦੇ ਬੇਟੇ ਮਾਈਆਂ ਪਾਸੋਂ ਤੋਰ ਦਿਤੇ।
ਪਾਕੇ ਵਿਚ ਕਾਨੂਨ ਸਕੰਜੇ ਗੋਡੇ ਹਡ ਮਰੋੜ ਦਿਤੇ।
ਸਾਹ ਨਕ ਵਿਚ ਕੀਤਾ ਸਾਡੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਵੀ ਦੁਸ਼ਵਾਰ ਹੋਈ।
ਗੋਰੇ ਰੰਗ.... ....
ਬਾਗ ਜਲਿਆਂ ਦੇ ਵਿਚ ਹਾਏ ਖੂਨ ਸੰਦੜੀ ਧਾਰ ਚਲੀ।
ਹਾਏ ਨਿਹੱਥੇ ਹਿੰਦੀਆਂ ਉਤੇ ਗੁਸੇ ਭਰੀ ਕਟਾਰ ਚਲੀ।
ਲਾਂਹਦੀ ਗਈ ਧੜਾਂ ਤੋਂ ਸਿਰ ਜਦ ਡਾਇਰ ਦੀ ਤਲਵਾਰ ਚਲੀ।
ਛਡਕਿ ਰੂਹ ਗੁਲਾਮ ਪਿੰਜਰਾ ਵਲ ਅਕਾਸ਼ ਸਧਾਰ ਚਲੀ।
ਦਿਤਾ ਰੌਲਟ ਬਿੱਲ ਜਦੋਂ ਕਿ ਮੇਹਰਬਾਨ ਸਰਕਾਰ ਹੋਈ।
ਗੋਰੇ ਰੰਗ.... ....

— ਸ: ਦਰਸ਼ਨ ਸਿੰਘ 'ਦਲਜੀਤ'
(सरदार दर्शन सिंह 'दलजीत')

"ਬਿਜਲੀ ਦੀ ਕੜਕ"
ਰਚਿਤ : ਸ: ਦਰਸ਼ਨ ਸਿੰਘ 'ਦਲਜੀਤ'।
ਖਾਲਸਾ ਆਜ਼ਾਦ ਏਜੰਸੀ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।

"बिजली दी कड़क"
रचित : सरदार दर्शन सिंह 'दलजीत'।
खालसा आज़ाद ऐजंसी, अमृतसर।

(अवाप्ति संख्या : 1979)

ਜਲ੍ਹਿਆਂ ਵਾਲੇ ਬਾਗ਼ ਦਾ ਹਾਲ*

ਕਲਗੀ ਵਾਲਿਆ! ਦੇਸ਼ ਪੰਜਾਬ ਤਾਈਂ,
ਜ਼ਾਲਮ ਮਾਰਕੇ ਵੇਖ ਮੁਕਾਨ ਲੱਗ ਪੈ।
ਵਿੱਚ ਜਲ੍ਹਿਆਂ ਬਾਗ਼ ਦੇ ਆਨ ਕਰਕੇ,
ਵੇਖੋ ਜ਼ੁਲਮ ਦੇ ਤੀਰ ਚਲਾਨ ਲੱਗ ਪੈ।
ਗੋਲੀ ਮਾਰਕੇ ਕਾਲਜੇ ਵਿੱਚ ਜ਼ਾਲਮ,
ਅਤੇ ਭੁੱਖਿਆਂ ਤਾਈ ਸਤਾਨ ਲੱਗ ਪੈ।
ਜੇਹੜਾ ਜ਼ੁਲਮ ਦੀ ਕਰੇ ਹਿਮੈਤ ਬਹੁਤੀ,
ਓਹੂੰ ਆਪਣਾ ਯਾਰ ਬਣਾਨ ਲੱਗ ਪੈ। ।੧। ।
ਭਾਰ ਢਿੱਡਾਂ ਦੇ ਸਾਨੂੰ ਚਲਾਣ ਲੱਗ ਪੈ,
ਇੱਜ਼ਤ ਸਾਡੀ ਨੂੰ ਖਾਕ ਮਲਾਨ ਲੱਗ ਪੈ।
ਡਾਇਰ ਕਾਤਲ ਨੂੰ ਮਿਲੇ ਅਨਾਮ ਭਾਰਾ,
ਸਮਿਥ ਜਹੇ ਭੀ ਕੈਹਰ ਕਮਾਨ ਲੱਗ ਪੈ।
ਮੀਆਂ ਵਾਲੜੀ ਨਗਰ ਦੇ ਵਿੱਚ ਜਾਕੇ,
ਘੁੰਡ ਚੁੱਕਕੇ ਥੁੱਕ ਥੁਕਾਨ ਲੱਗ ਪੈ।
ਧੀਆਂ ਭੈਣਾਂ ਦੇ ਘੁੰਡ ਲੁਹਾ ਜ਼ਾਲਮ,
ਫੋਟੋ ਲੈ ਇੰਗਲੈਂਡ ਪੁਚਾਨ ਲੱਗ ਪੈ। ।੨। ।
ਏਸ ਦੇਸ ਤੋਂ ਪਕੜਕੇ ਧਰਮੀਆਂ ਨੂੰ,
ਵਿੱਚ ਜੇਹਲ ਦੇ ਕਿਵੇਂ ਧਕਾਨ ਲੱਗ ਪੈ।
ਬੇਗੁਨਾਹ ਨੂੰ ਫਾਂਸੀ ਚੜ੍ਹਾਨ ਲੱਗ ਪੈ,
ਅਤੇ ਪਾਪੀਆਂ ਗਲੇ ਲਗਾਨ ਲੱਗ ਪੈ।
ਡਾਕਟਰ ਕਿਚਲੂ ਸਤਿਆਪਾਲ ਫੜਕੇ,
ਮਦਨ ਮੋਹਨ ਤੇ ਗੋਲੀ ਚਲਾਨ ਲੱਗ ਪੈ।

*੧੩-੪-੧੯੧੯ ਦੀ ਝਾਕੀ

ਪੰਛੀ ਚੈਹਕਦੇ ਪਕੜਕੇ ਬਾਗ ਵਿੱਚੋਂ,

ਜ਼ਾਲਮ ਪਿੰਜਰੇ ਵਿੱਚ ਨੇ ਪਾਨ ਲੱਗ ਪੈ। ।੩। ।

— ਹਰਨਾਮ ਸਿੰਘ 'ਮਸਤ ਪੰਛੀ

(हरनाम सिंह 'मस्त पंछी')

''ਜ਼ੁਲਮ ਦੇ ਬਾਣ''
ਕਰਤਾ ਤੇ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਕ :
ਹਰਨਾਮ ਸਿੰਘ 'ਮਸਤ ਪੰਛੀ'।
ਸੂਦ ਪ੍ਰਿੰਟਿੰਗ ਪ੍ਰੈਸ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।

''जुल्म दे बाण''
कर्त्ता और प्रकाशक :
हरनाम सिंह 'मस्त पंछी'
सूद प्रिंटिंग प्रैस, अमृतसर।

(अवाप्ति संख्या : 1965)

ਜਲ੍ਹਿਆਂ ਵਾਲਾ ਬਾਗ਼

ਲਿਖਾਂ ਕੀ, ਮੈਂ ਕਲਮ ਨਾ ਲਿਖਦੀ ਏ,
ਜੋ ਜੋ ਜ਼ੁਲਮ ਦਾ ਹੋਇਆ ਸਾਮਾਨ ਏਥੇ।
ਮਲਕੁਲ ਮੌਤ ਦਾ ਰੂਹ ਵੀ ਕੰਬਦਾ ਏ,
ਕਰਦਾ ਜਦੋਂ ਵੀ ਕਦੀ ਧਿਆਨ ਏਥੇ।
ਮਿਸਲ ਕਣਕ ਦੇ ਸੀਨੇ ਵਿਚ ਫੱਟ ਹੋਇਆ,
ਵਾਂਗ ਜਵਾਂ ਦੇ ਭੁਜੇ ਇਨਸਾਨ ਏਥੇ।
ਸਰਬਤ ਅਜਲ ਦਾ ਪੀ ਗਏ, ਸਮਝ ਅੰਮ੍ਰਿਤ,
ਖਾ ਖਾ ਗੋਲੀਆਂ ਮੋਏ ਜਵਾਨ ਏਥੇ।
ਜਦੋਂ ਤੀਕ ਹੈ ਇਹ ਜ਼ਮੀਨ, ਅੰਦਰ,
ਕਹਿੰਦਾ ਰਹੇਗਾ ਇਹ ਅਸਮਾਨ ਏਥੇ।
'ਭਾਰਤ ਮਾਤਾ' ਦੇ ਸਚੇ ਸਪੂਤ ਪਿਆਰੇ,
ਕੌਮ ਵਾਸਤੇ ਹੋ ਗਏ ਕੁਰਬਾਨ ਏਥੇ।

'ਨੌਨਿਹਾਲ' ਕਈ ਜੜ੍ਹਾਂ ਤੋਂ ਪੁਟ ਸੁਟੇ,
ਜੇਹੀਆਂ ਸਖਤ ਅੰਧੇਰੀਆਂ ਛੁਟੀਆਂ ਸਨ।
ਇਹ ਉਹ 'ਬਾਗ਼' ਏ, ਜੀਹਦੇ ਵਿਚ 'ਹਾਏ' '੨',
ਮਦਨ ਮੋਹਨ ਜੇਹੀ ਆਕਲੀਆਂ ਟੁਟੀਆਂ ਸਨ।
'ਰਤਨ ਦਈ' ਨੇ 'ਲਾਲ' 'ਨੌਰਤਨ' ਬਦਲੇ,
ਬੈਹਕੇ ਰਾਤ ਭਰ ਮੀਢੀਆਂ ਪੁਟੀਆਂ ਸਨ।
ਕਈਆਂ 'ਨਥਾਂ' ਦੇ ਲਾਲ ਗਵਾਚ ਗਏ ਸਨ,
ਗਈਆਂ ਕਈ 'ਸੁਹਾਗਨਾਂ' ਲੁਟੀਆਂ ਸਨ।
'ਨਾਮ ਲੇਵਾ' ਨਾ ਕਈਆਂ ਦਾ ਰਿਹਾ ਕੋਈ,
ਹੋ ਗਏ ਔਤਰੇ ਕਈ ਖਾਨਦਾਂਨ ਏਥੇ।
'ਭਾਰਤ ਮਾਤਾ' ਦੇ ਸਚੇ ਸਪੂਤ ਪਿਆਰੇ,
ਕੌਮ ਵਾਸਤੇ ਹੋ ਗਏ ਕੁਰਬਾਨ ਏਥੇ।
ਨੌਕਰਸ਼ਾਹੀ ਨੇ ਪਾਇਆ ਹਨੇਰ ਐਸਾ,
ਐਥੇ ਕਈ 'ਖਾਨੇ' 'ਬੇਚਿਰਾਗ' ਹੋ ਗਏ।

*"ਕਵੀ ਦਰਬਾਰ" (ਜਲ੍ਹਿਆਂ ਵਾਲਾ ਬਾਗ) ਦੀ ਪੈਹਲੇ ਨੰਬਰ ਦੀ ਇਨਾਮੀ ਕਵਿਤਾ (ਜੂਨ ੧੯੨੩)

ਵਾਂਗ ਬੁਲਬੁਲਾਂ ਦੇ ਕਰਨ ਵੈਨ ਮਾਪੇ,
ਕਈ 'ਫੁਲ' ਵੈਰਾਨ ਇਸ 'ਬਾਗ' ਹੋ ਗਏ।
ਇਥੇ 'ਚੰਦ' ਜਹੇ 'ਵੀਰ' ਕਈ ਗੁਮ ਹੋਏ,
'ਭੈਣਾਂ' ਪਿਟਦੀਆਂ ਦੇ ਸੀਨੇ ਦਾਗ ਹੋ ਗਏ।
ਕਈਆਂ ਨਾਰਾਂ ਨੇ ਖੂਨ ਦੀ ਝੜੀ ਲਾਈ,
ਨਾਲ ਟਕਰਾਂ ਪਾਸ਼ ਦਮਾਗ ਹੋ ਗਏ।
ਖੁਲੇ ਕੇਸ 'ਪਰਾਂਦੜਾਂ' ਹਥ ਫੜਿਆ,
ਆਵਨ 'ਡਾਇਰ' ਦੀ ਲੈਂਹਨ 'ਮਕਾਨ' ਏਥੇ।
'ਭਾਰਤ ਮਾਤਾ' ਦੇ ਸਰੇ ਸਪੂਤ ਪਿਆਰੇ,
ਕੌਮ ਵਾਸਤੇ ਹੋ ਗਏ ਕੁਰਬਾਨ ਏਥੇ।

ਇਹ ਅਜ ਰੂਹ 'ਸ਼ਹੀਦਾਂ' ਦੇ ਆਖਦੇ ਸਨ,
'ਡਾਇਰ' ਕੀਤੀਆਂ ਏਥੇ ਨਲੱਜੀਆਂ ਸਨ।
ਏਥੇ ਵਾਂਗ ਕਬੂਤਰਾਂ ਤੜਫਦੇ ਸਾਂ,
ਸਾਨੂੰ ਏਸ 'ਥਾਂ' ਗੋਲੀਆਂ ਵਜੀਆਂ ਸਨ।
'ਲੀਰਾਂਲੀਰਾਂ' ਸੀ ਹਸਤੀ ਦਾ ਹੋਇਆ ਜਾਮਾ,
ਲੜਫਾਂ ਲਥੀਆਂ, ਉਡੀਆਂ ਧਜੀਆਂ ਸਨ।
ਰੁਲਦੇ ਰਹੇ ਸਾਂ, ਰਾਤ ਭਰ 'ਕਫਨ' ਬਾਝੋਂ,
ਲਾਸ਼ਾਂ ਕਿਸੇ ਨਾ ਸਾਡੀਆਂ ਕਜੀਆਂ ਸਨ।
ਕਿਤੇ 'ਤਸਬੀਆਂ' ਕਿਤੇ 'ਜਨੇਊ' ਟੁਟੇ,
ਰੁਲੇ ਮਿੱਟੀ ਵਿਚ 'ਕੰਘੇ' ਕ੍ਰਿਪਾਨ ਏਥੇ।
'ਭਾਰਤ ਮਾਤਾ' ਦੇ ਸਰੇ ਸਪੂਤ ਪਿਆਰੇ,
ਕੌਮ ਵਾਸਤੇ ਹੋ ਗਏ ਕੁਰਬਾਨ ਏਥੇ।

ਸ਼ੈਹਰ ਵਿੱਚ ਉਹ ਢਿੱਡ ਦੇ ਭਾਰ ਚੱਲੇ,
ਅੱਗੇ ਕਿਸੇ ਦੇ ਜੇਹੜੇ ਨ ਝੁਕਦੇ ਸਨ।
ਕਿਤੇ ਗਜ਼ਬ! ਬੱਧੀ ਹੋਈ 'ਟਿੱਕ ਟਿੱਕੀ' ਸੀ,
ਤਾਜ਼ੀ ਆਨੇ ਪਏ ਕਈਆਂ ਨੂੰ ਠੁਕਦੇ ਸਨ।
ਲਾਹ ਲਾਹ ਕੇ ਘੁੰਡ ਜਨਾਨੀਆਂ ਦੇ,
ਕਿਤੇ 'ਮੂੰਹਾਂ' ਉਤੇ ਜ਼ਾਲਮ ਥੁਕਦੇ ਸਨ।

'ਗੁੰਚੇ' ਮੁਖ ਵਾਲੇ 'ਨੌਨਿਹਾਲ' ਕਿਧਰੇ,
ਵਾਂਙ ਦਾਨਿਆਂ ਦੇ ਧੁੱਪੇ ਸੁਕਦੇ ਸਨ।
'ਬੇੜੀ' ਵਾਂਗ ਪਿਆ 'ਅੰਬਰ' ਡੋਲਦਾ ਸੀ,
ਆਇਆ ਜ਼ੁਲਮ ਦਾ ਜੇਹਾ ਤੂਫਾਨ ਏਥੇ।
'ਭਾਰਤ ਮਾਤਾ' ਦੇ ਸੱਚੇ ਸਪੂਤ ਪਿਆਰੇ,
ਕੌਮ ਵਾਸਤੇ ਹੋ ਗਏ ਕੁਰਬਾਨ ਏਥੇ।

ਇਕ ਦਰ ਕਹਵੇ ਇਤਫਾਕ ਹੁਣ ਸ਼ਾਮ ਪੈ ਗਈ,
ਘਰ ਨੂੰ ਆਓ ਜੇ ਭੁਲੇ ਸਵੇਰ ਦੇ ਓ।
ਖ਼ਾਰ ਖਾ ਖਾ 'ਗਲਾਂ' ਨਿਕਾਰਿਆ ਤੋਂ,
ਕਿਓਂ ਪਏ ਰਾਹ ਵਿੱਚ ਕੰਡੇ ਖਿਲੇਰਦੇ ਓ।
ਐਵੇਂ ਸੂਤ ਦੀ ਛੱਲੀ ਉਘੇਰਦੇ ਹੋ,
ਐਵੇ ਮੱਕੀ ਦੀ ਛੱਲੀ ਉਰੇਰਦੇ ਓ।
ਪਾਣੀ ਪੀ-ਪੀ ਇਕੋ ਗਲਾਸ ਅੰਦਰ,
ਕੀਤੇ ਕੱਤਰੇ ਤੇ ਪਾਣੀ ਫੇਰਦੇ ਓ।
ਰਖੋ ਓਹਦੀ ਤੇ 'ਆਬਰੂ' ਕੁਝ, ਜੇਹੜਾ,
ਰੁਲਿਆ ਖ਼ੂਨ ਹਿੰਦੂ ਮੁਸਲਮਾਨ ਏਥੇ।
'ਭਾਰਤ ਮਾਤਾ' ਦੇ ਸਚੇ ਸਪੂਤ ਪਿਯਾਰੇ,
ਕੌਮ ਵਾਸਤੇ ਹੋ ਗਏ ਕੁਰਬਾਨ ਏਥੇ।

'ਦੀਪਕ' ਵਿੱਚ ਸਵਰਾਜ ਇਹ ਸੁਰਾਂ ਲਾਵੇ,
ਕੋਲੇ ਹੋ ਕੇ ਮੈਂ ਸੜ ਬਲਕੇ ਤੇ।
ਦੁੱਧ ਵਾਂਗ ਉਬਾਲ ਹੋ ਗਿਆ ਠੰਡਾ,
ਲੀਡਰ ਜੇਹਲ ਅੰਦਰ ਘੱਲ ਘੱਲ ਕੇ ਤੇ।
ਚੰਗੀ 'ਸ਼ੌਕਤ' ਤੇ ਗਾਂਧੀ ਦੀ 'ਲਾਜ' ਰੱਖੀ,
ਬੈਹ ਗਏ ਮੰਦਰ ਮਸੀਤਾਂ ਹੁਣ ਮੱਲਕੇ ਤੇ।
ਚੰਗੀ ਤਰਾਂ ਪੰਜਾਬ ਨੂੰ ਦਾਗ਼ ਲਾਇਆ,
ਕਾਲਖ ਝੱਗੜਿਆ ਦੀ ਮੂੰਹ ਤੇ ਮਲਕੇ ਤੇ।
ਲਾ ਲਾ 'ਤਿਲਕ' 'ਮੈਹਰਾਬ' ਕੀ ਦੱਸਦੇ ਹੋ,
ਲੱਥੀ ਹੋਈ ਏ ਇੱਜ਼ਤ ਤੇ ਆਨ ਏਥੇ।

5—254/Deptt. of Archives/ND/97

'ਭਾਰਤ ਮਾਤਾ' ਦੇ ਸਚੇ ਸਪੂਤ ਪਿਯਾਰੇ,
ਕੌਮ ਵਾਸਤੇ ਹੋਏ ਕੁਰਬਾਨ ਏਥੇ।

ਇਕ ਦਰ 'ਮਾਦਰੇ ਹਿੰਦ' ਪੁਕਾਰਦੀ ਏ,
ਕਦੋਂ ਹੋਣਗੇ ਪੂਤ ਸਪੂਤ ਮੇਰੇ।
ਲੱਛੇ ਕਾਲੀਆਂ ਜ਼ੁਲਫਾਂ ਦੇ ਰੇਸ਼ਮੀ ਹੁਣ,
ਹੋ ਗਏ ਗਮ ਅੰਦ੍ਰ ਚਿੱਟਾ ਸੂਤ ਮੇਰੇ।
ਡਾਕੇ ਮਾਰ ਕੇ 'ਪਾਰ ਦੇ ਡਾਕੂਆਂ ਨੇ,
ਲੁਟ ਖੜੇ ਨੇ 'ਲਾਲ ਯਾਕੂਤ' ਮੇਰੇ।
ਗੰਢੀ ਜਾਇਗੀ ਕਦੋਂ ਇਹ ਤੰਦ ਤਾਨੀ,
ਕਦੋਂ ਹੋਣਗੇ ਕਾਰਜ ਸਭ ਸੂਤ ਮੇਰੇ।
"ਸ਼ਰਫ" 'ਕਾਫ਼ਲੇ' ਵਾਲੇ ਤੇ ਕੂਚ ਕਰਗਏ,
ਬਾਕੀ ਛੱਡ ਗਏ ਨੇ ਦਾਸਤਾਨ ਏਥੇ।
'ਭਾਰਤ ਮਾਤਾ' ਦੇ ਸਚੇ ਸਪੂਤ ਪਿਯਾਰੇ,
ਕੌਮ ਵਾਸਤੇ ਹੋਏ ਕੁਰਬਾਨ ਏਥੇ।

— ਫੀਰੋਜ਼ਦੀਨ "ਸ਼ਰਫ"
(फिरोज़दीन "शरफ")

"ਦੁਖਾਂ ਦੇ ਕੀਰਨੇ"
ਰਚਿਤ ਤੇ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਕ : ਫੀਰੋਜਦੀਨ 'ਸ਼ਰਫ'।
ਪੰਜਾਬ ਖਾਲਸਾ ਪ੍ਰੈਸ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।

"दुखां दे कीरने"
रचित और प्रकाशक : फिरोज़दीन 'शरफ'।
पंजाब खालसा प्रैस, अमृतसर।

(अवाप्ति संख्या : 1976)

ਵਤਨ ਆਜ਼ਾਦ

ਵਤਨ ਆਜ਼ਾਦ ਕਰਾਨ ਦੀ ਖਾਤਰ,
ਸਿਰ ਆਪਣਾ ਚਾ ਕਟਵਾਵਾਂਗੇ।
ਜਿਹਲ ਖਾਨੇ ਤਾਂ ਨੇ ਗਲ ਮਾਮੂਲੀ,
ਫਾਂਸੀਆਂ ਤੇ ਚੜ੍ਹ ਜਾਵਾਂਗੇ।

ਵਤਨ ਹੈ ਆਪਨਾ ਆਜ਼ਾਦ ਕਰਾਨਾ,
ਦੇਸ਼ ਦੀ ਖਾਤਰ ਕਸ਼ਟ ਉਠਾਨਾ,
ਗੈਰ ਦੇ ਅਗੇ ਨਾ ਸੀਸ ਝੁਕਾਨਾ,
ਸਭਨਾਂ ਨੂੰ ਸਮਝਾਵਾਂਗੇ—ਵਤਨ ਆਜ਼ਾਦ.......
ਨਹੀਂ ਹੁਣ ਗੁਲਾਮੀ ਦੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਭਾਂਦੀ,
ਅਗ ਜ਼ੁਲਮ ਦੀ ਨਿਤ ਜਲਾਂਦੀ,
ਖੂਨ ਅਸਾਡਾ ਏ ਚੂਸਦੀ ਜਾਂਦੀ,
ਗਲੋਂ ਗੁਲਾਮੀ ਨੂੰ ਲਾਹਵਾਂਗੇ—ਵਤਨ.........
ਘਰ ਸਾਡਾ ਆਕੇ ਗੈਰਾਂ ਨੇ ਖੋਹਿਆ,
ਬੀਜ ਹਕੂਮਤ ਦਾ ਸਾਡੇ ਸਿਰ ਬੋਇਆ,
ਸਾਨੂੰ ਹੈ ਫੜ ਬਕਰੇ ਵਾਂਗ ਕੋਹਿਆ,
ਉਲਟੀ ਇਹ ਰੀਤ ਮਿਟਾਵਾਂਗੇ—ਵਤਨ...........
ਆਇਆ ਏ ਵੇਖੋ ਇਹ ਉਲਟਾ ਜ਼ਮਾਨਾ,
ਸਾਨੂੰ ਤਾਂ ਸਮਝੇ ਇਹ ਪਾਗਲ ਦੀਵਾਨਾ,
ਆਪੇ ਈ ਬਣਦਾ ਏ ਚਾਤਰ ਸਿਆਣਾ,
ਭਰਮ ਇਹਦਾ ਇਹ ਹਟਾਵਾਂਗੇ—ਵਤਨ...........
ਚੰਗਾ ਤੂੰ ਸਾਥੇ ਇਹਸਾਨ ਕਮਾਇਆ,
ਕੀਤੇ ਕਈ ਫਾਂਸੀ ਤੇ ਜੇਹਲਾਂ ਚਿ ਪਾਇਆ,
ਕਈਆਂ ਨੂੰ ਸਤਲੁਜ ਤੇ ਜਾਕੇ ਜਲਾਇਆ,
ਨਹੀਂ ਤੇਰਾ ਇਹਸਾਨ, ਭੁਲਾਵਾਂਗੇ—ਵਤਨ...........
ਕਈ ਵਤਨ ਵਿਚੋਂ ਕੀਤੇ ਚਾ ਬਾਹਿਰ,
ਗੋਲੀ ਚਲਾਇਓ ਈ ਬਨ ਬਨਕੇ ਡਾਇਰ,
ਜਲਿਆਂ ਵਾਲੇ ਵਿਚ ਕੀਤੇ ਜੋ ਫਾਇਰ,
ਕੀ ਉਹਨਾਂ ਤਾਂਈ ਭੁਲ ਜਾਵਾਂਗੇ—ਵਤਨ...........
ਐ, ਜੇ ਤੂੰ ਨਵੇਂ ਬਨਾਵੇਂ ਕਾਨੂੰਨ,

ਜਿਸ ਨਾਲ ਹਿੰਦੀਆਂ ਦਾ ਹੋ ਜਾਏ ਖੂਨ,
ਫਿਰ ਲਾਵੇਂ ਦਫਾ ਜਿਸ ਨਾਲ ਸਕਨ ਨ ਕੂਨ,
ਹੜ ਜ਼ੁਲਮ ਦੇ ਨੂੰ ਠਲ ਪਾਵਾਂਗੇ—ਵਤਨ...........
ਕੀ ਤੇਰਾ ਅਸਾਂ ਬੁਰਾ ਤਕਾਇਆ,
ਜਰਮਨ ਚਿ ਜਾ ਕੇ ਸੀ ਤੈਨੂੰ ਛੁੜਾਇਆ,
ਤੇਰੇ ਪਿਛੇ ਆਪਣਾ ਖੂਨ ਵਗਾਇਆ,
ਨਹੀਂ ਹੁਣ ਇਮਦਾਦ ਤੇ ਆਵਾਂਗੇ—ਵਤਨ...........
ਜ਼ਾਲਮ ਤੂੰ ਇਹਦੀ ਕੀ ਕਦਰ ਹੈ ਜਾਨੀ,
ਤੇਰੇ ਲਈ ਦਿਤੀ ਜੋ ਕੁਰਬਾਨੀ,
ਤੂੰ ਸਾਡੀਹੀਖਲ ਉਲਟਾ ਲੌਹਣੀ ਹੈ ਠਾਨੀ,
ਤੇਗ ਤੇਰੀ ਨੂੰ ਹੁਣ ਚਾ ਰੁਕਾਵਾਂਗੇ—ਵਤਨ...........
ਹਾਂ ਭਾਈਓ ਆਪਾਂ ਸਾਰੇ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨੀ,
ਵਤਨ ਦੇ ਪਿਛੇ ਲਾ ਦਿਓ ਜ਼ਿੰਦਗਾਨੀ,
ਕਰ ਜਾਓ ਦੁਨੀਆਂ ਤੇ ਕਾਇਮ ਨਸ਼ਾਨੀ,
ਤਾਂ ਫਿਰ ਸਵਰਗ ਨੂੰ ਪਾਵਾਂਗੇ—ਵਤਨ...........
ਹੋਵੇ ਜਥੇਬੰਦ ਲਈਏ ਆਜ਼ਾਦੀ,
ਨਾ ਹੁੰਦੀ ਰਹੇ ਸਾਡੀ ਨਿਤ ਬਰਬਾਦੀ,
ਉਠੋ 'ਕਰਤਾਰ' ਕਰੋ ਇਹ ਮੁਨਾਦੀ,
ਕਿ ਗੀਤ ਵਤਨ ਦੇ ਗਾਵਾਂਗੇ—ਵਤਨ...........

—ਕਾਮਰੇਡ ਕਰਤਾਰ ਸਿੰਘ 'ਕਰਤਾ

(कामरेड करतार सिंह ''करतार''

''ਦੁਖੀ ਦੁਨੀਆਂ''
ਕਵੀ ਤੇ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਕ :
ਕਾਮਰੇਡ ਕਰਤਾਰ ਸਿੰਘ ''ਕਰਤਾਰ''
ਆਜ਼ਾਦ ਪ੍ਰੈਸ, ਮੇਰਠ।

''दुखी दुनियां''
कवि और प्रकाशक :
कामरेड करतार सिंह ''करतार''।
आज़ाद प्रैस, मेरठ।

(अवाप्ति संख्या : 1956)

ਰਲਿਆ ਖ਼ੂਨ ਹਿੰਦੂ ਮੁਸਲਮਾਨ ਏਥੇ

ਦਿਲਾ ਵੇਖ ਕਰਤਾਰ ਦੇ ਰੰਗ ਅੜਿਆ,
ਧਰਤੀ ਅਜ ਜੋ ਖ਼ੂਬ ਮੋਹਾਂਵ ਦੀ ਪਈ।
ਹਾਲਤ ਯਾਦ ਕਰਕੇ ਜ਼ਾਰੋ ਜ਼ਾਰ ਇਸ ਦੀ,
ਖ਼ਲਕਤ ਸਾਈਂ ਦੀ ਨੀਰ ਵਹਾਂਵਦੀ ਪਈ।
ਦਰਦੀ ਦਿਲਾਂ ਤੋਂ ਨਿਕਲ ਦੀ ਆਹ ਡਾਢੀ,
ਦੁਨੀਆਂ ਯਾਦ ਕਰਕੇ ਗਸ਼ਾ ਖਾਂਵਦੀ ਪਈ।
ਹਾਏ ਲਿਖਣ ਲਗਿਆਂ ਤਵਾਰੀਖ ਇਸਦੀ,
ਕਲਮ ਰੋਂਵਦੀ ਵਾਸਤੇ ਪਾਂਵਦੀ ਪਈ।
ਚਾਉਂ ਜਿਨਾਂ ਨੂੰ ਸੀ ਸੇਵਦੇਸ ਦੀਦਾ,
ਓਹਨਾ ਧਰਮੀਆਂ ਦੇ ਲਥੇ ਘਾਣ ਏਥੇ।
ਗਲੇ ਪਾ ਗਲ ਵਕੜੀਆਂ ਚੜ੍ਹੇ ਬਲੀਆਂ,
ਰਲਿਆ ਖ਼ੂਨ ਹਿੰਦੂ ਮੁਸਲਮਾਨ ਏਥੇ।

ਹੋਇ ਬਕਰਿਆਂ ਵਾਂਗ ਹਲਾਲ ਹਾਏ,
ਅਨਖ ਆਨ ਵਾਲੇ ਧਰਮ ਬੀਰ ਕਿਤਨੇ।
ਪਿਤਾ ਬਚਿਆਂ ਦੇ, ਬਚੇ ਮਾਈਆਂ ਦੇ,
ਭੈਣਾਂ ਰੋਂਦੀਆਂ ਦੇ ਪਯਾਰੇ ਵੀਰ ਕਿਤਨੇ।
ਯਾਰ ਮਿਤਰਾਂ ਦੇ ਕੰਤ ਨਾਰੀਆਂ ਦੇ,
ਸੇਵਾ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਬੇ ਨਜ਼ੀਰ ਕਿਤਨੇ।
ਆਪਣੀ ਆਨ ਖ਼ਾਤਰ ਜਿੰਦਾ ਦਾਨ ਕਰ ਗਏ,
ਖਾਧਾ ਜ਼ਾਬਰਾਂ ਦੇ ਤਿਖੇ 'ਤੀਰ' ਕਿਤਨੇ।
ਕਠੇ ਹੋਕੇ ਗੋਲੀਆਂ ਖਾਧੀਆਂ ਨੇ,
ਆਏ ਵਿਛੜੇ ਵੀਰ ਮਿਲਾਨ ਏਥੇ।
ਬੀਜ ਏਕਤਾ ਦਾ ਹਥੀਂ ਬੀਜਓ ਨੇ,
ਰਲਿਆ ਖ਼ੂਨ ਹਿੰਦੂ ਮੁਸਲਮਾਨ ਏਥੇ।

ਮਦਨ ਮੋਹਨ ਵਰਗੇ ਲਾਲਾਂ ਸੂਰਿਆਂ ਨੇ,
ਖ਼ਾਤਰ ਕੋਮ ਦੀ ਦਿਤੀਆਂ ਬਲੀਆਂ ਨੇ।
ਅਗੋ ਜ਼ਾਬਰਾਂ ਦੇ ਸਬਰ ਸ਼ਾਂਤ ਰਹਿਕੇ,

ਤਾਂਣ ਛਾਤੀਆਂ ਗੋਲੀਆਂ ਝਲੀਆਂ ਨੇ।
ਜ਼ਰੇ ਜ਼ਰੇ ਤੋਂ ਟਪਕਦੇ ਹਾਏ ਹੰਝੂ,
ਨਾਲ ਖੂਨ ਦੇ ਰੰਗੀਆਂ ਗਲੀਆਂ ਨੇ।
ਹੋਈ ਜੁਲਮ ਬੇਦਾਦ ਦੀ ਹਦ ਏਥੇ,
ਭਰਨ ਹਾਮੀਆ ਗੁਲਸ਼ਨਾ ਕਲੀਆਂ ਨੇ।
ਬੂਟੇ ਬ੍ਰਿਛ ਪਏ ਅਜੇ ਫਰਿਆਦ ਕਰਦੇ,
ਧਾਈ ਮਾਰਦਾ ਪਿਆ ਮੈਦਾਨ ਏਥੇ।
ਵਰ੍ਹੇ 'ਤੀਰ' ਬੇਦੋਸਿਆਂ ਆਜ਼ਜਾਂ ਤੇ,
ਰਲਿਆ ਖ਼ੂਨ ਹਿੰਦੂ ਮੁਸਲਮਾਨ ਏਥੇ।

ਏਸ ਧਰਤ ਤੇ ਮਾਤਮੀ ਰੁਤ ਛਾਈ,
ਲੀਨ ਗਮਾ ਅੰਦਰ ਕਾਲੀ ਸਾਹ ਦਿਸਦੀ।
ਜੀਵ ਜੰਤੂ ਪੰਛੀ ਸ਼ੋਕ ਸ਼ੋਕ ਕਰਦੇ,
ਦੁਖੀ ਦਿਲਾਂ ਤੋਂ ਨਿਕਲਦੀ ਆਹ ਦਿਸਦੀ।
ਨੈਲੇ ਡੁਲਦਿਆ ਰਤਾ ਨ ਦੇਰ ਲਗਦੀ,
ਸੜਦੇ ਜਿਗਰ ਹਾਜੇ ਬਲਦੀ ਭਾਹ ਦਿਸਦੀ।
ਖਾਕ ਏਸ ਥਾਂ ਦੀ ਮਥੇ ਲਾ ਲਈਏ,
ਦਰਦਾਂ ਵਾਲਿਆਂ ਦੇ ਅੰਦਰ ਚਾਹ ਦਿਸਦੀ।
ਗੀਤ ਗਾਂਦਿਆਂ ਧਰਮੀਆਂ ਬੰਦਿਆਂ ਤੇ,
ਡਾਇਰ ਆਯਾ ਸੀ 'ਤੀਰ' ਚਲਾਨ ਏਥੇ।
ਭਾਣਾ ਸਾਈਂ ਦਾ ਮੰਨ ਸ਼ਹੀਦ ਹੋਇ,
ਰਲਿਆ ਖੂਨ ਹਿੰਦੂ ਮੁਸਲਮਾਨ ਏਥੇ।

ਜਿਥੇ ਅਜ ਹੈ ਖਿੜੀ ਗੁਲਜਾਰ ਦਿਸਦੀ,
ਕਦੇ ਏਸ ਥਾਂ ਗੋਲੀਆਂ ਵਰ੍ਹਦੀਆਂ ਸਨ।
ਵਾਰ ਹੋਂਵਦੇ ਸੀ ਹਾਏ ਬੁਲ ਬੁਲਾਂ ਤੇ,
ਤੜਫ ਤੜਫ ਵੇਚਾਰੀਆਂ ਸੜਦੀਆਂ ਸਨ।
ਘਾਇਲ ਹੋਈਆਂ ਵਿਛੜੀਆਂ ਆਲ੍ਹਣੇ ਤੋਂ,
ਦੁਖੀ ਹੋ ਹੋ ਕਿ ਆਹਾਂ ਭਰਦੀਆਂ ਸਨ।
ਸਾਰੇ ਦੇਸ ਅੰਦਰ ਥ੍ਰ ਥ੍ਰਾਟ ਮਚਿਆ,
ਫਿਰੀਆ ਮੁਲਕ ਅੰਦਰ ਨਾਦਰ ਗਰਦੀਆਂ ਸਨ।

ਜ਼ੁਲਮ ਡਾਇਰ ਦਾ ਹਾਂ ਹਿੰਦਸਤਾਨੀਆਂ ਲਈ,
ਬਣ ਕੇ ਕਹਿਰ ਦਾ ਆਇਆ ਤੂਫਾਨ ਏਥੇ।
ਬੂਟਾਂ ਫੁਟ ਦਾ ਜਿਸਨੇ ਪੁਟਿਆਏ,
ਰਲਿਆ ਖੂਨ ਹਿੰਦੂ ਮੁਸਲਮਾਨ ਏਥੇ।

— ਭਾਈ ਵਿਧਾਤਾ ਸਿੰਘ "ਤੀਰ"
(भाई विधाता सिंह "तीर")

"ਤੀਰ ਤੁੰਗ"
ਰਚਿਤ ਤੇ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਕ :
ਭਾਈ ਵਿਧਾਤਾ ਸਿੰਘ "ਤੀਰ"।
ਕਾਰੋਨੇਸ਼ਨ ਪ੍ਰਿੰਟਿੰਗ ਵਰਕਸ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।

"तीर तरंग"
रचित और प्रकाशक :
भाई विधाता सिंह "तीर"।
कारोनेशन प्रिंटिंग वर्क्स, अमृतसर।

(अवाप्ति संख्या : 1957)

ਸੋਹਣਾ ਸੋਭਦਾ ਕਾਲਾ ਨਸ਼ਾਨ ਬਹੁਤਾ

ਸੁਣ ਵੇ ਚਿਟਿਆ! ਜਗਤ ਤੇ ਕਾਲਿਆਂਦਾ,
ਸਦਾ ਹੋਂਵਦਾ ਹੈ ਯਾਰ ਮਾਨ ਬਹੁਤਾ।
ਸਦਾ ਵਸਦਾ ਏ ਅੰਦਰ ਕਾਲਿਆਂ ਦੇ,
ਬਾਹੂ ਬਲ ਹਿਮਤ ਜੋਰ ਤਾਨ ਬਹੁਤਾ।
ਅਖਾਂ ਵਿਚ ਹਨ ਧੀਰੀਆਂ ਕਾਲੀਆਂ ਵੇ,
ਜਗਤ ਵਿਚ ਹੈ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਸ਼ਾਨ ਬਹੁਤਾ।
ਜੁਲਫਾਂ ਕਾਲੀਆਂ ਹੋਣ ਮਤਵਾਲੀਆਂ ਵੇ,
ਇਸ਼ਕ ਪ੍ਰੇਮ ਦੇ "ਤੀਰ" ਚਲਾਣ ਬਹੁਤਾ।
ਜਦੋਂ ਹੋਣ ਚਿਟੇ ਮਾਰੇ ਹਥ ਪਿਟੇ,
ਢੇਰੀ ਢਾਹ ਸਿਟੇ ਘਰ ਨ ਕਦਰ ਮਾਸਾ।
ਕਾਲਾ ਹੋਵਣੇ ਦੀ ਯਾਰ ਦਸ ਤੈਨੂੰ,
ਕਿਉਂ ਨਹੀਂ ਆਵੰਦੀ ਕਦੇ ਬੀ ਸਦਰ ਮਾਸਾ।

ਗੋਰੇ ਮਥਿਆਂ ਤੇ ਵੇਖ ਤਾਜ ਬਣਕੇ,
ਸੋਹਣਾ ਸੋਭਦਾ ਕਾਲਾ ਨਸਾਨ ਬਹੁਤਾ।
ਕਾਲਾ ਕਜਲਾ ਨੇਤਰਾਂ ਵਿਚ ਪੈਕੇ,
ਕਰਦਾ ਅਖੀਆਂ ਮਸਤ ਮਸਤਾਨ ਬਹੁਤਾ।
ਕਾਲਾ ਰੰਗ ਸਭ ਰੰਗਾਂ ਨੂੰ ਮਾਤ ਕਰਕੇ,
ਦੇਂਦਾ ਰਹਿਣ ਨਹੀਂ ਨਾਮੋ ਨਿਸਾਨ ਬਹੁਤਾ।
ਚਿਟੀ ਵੇਖ ਤਲਵਾਰ ਦੇ ਢਕਣੇ ਨੂੰ,
ਲੋੜ ਪੈਂਵਦਾ ਕਾਲਾ ਮਿਆਨ ਬਹੁਤਾ।
ਬਿਨਾ ਕਾਲਿਆਂ ਦੇ ਵੇਖ ਚਿਟਿਆਂ ਨੇ,
ਜਾਕੇ ਜਿਤਿਆ ਨ ਜੰਗ ਗਦਰ ਮਾਸਾ।
ਕਾਲਾ ਹੋਵਣੇ ਦੀ ਯਾਰ ਦਸ ਤੈਨੂੰ,
ਕਿਉਂ ਨਹੀਂ ਆਂਵਦੀ ਕਦੇਬੀ ਸਦਰ ਮਾਸਾ।

ਕਾਲਾ ਨਾਗ ਜਦ ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਡੰਗਦਾ ਏ,
ਵੇਖ ਤੜਫਦਾ ਏ ਨੀਮ ਜਾਨ ਬਹੁਤਾ।
ਕਾਲਾ ਕੋਇਲਾ ਜਦੋਂ ਅੰਗਿਆਰ ਹੋਵੇ,
ਲਖਾਂ ਸਾੜਦਾ ਬਣਕੇ ਤੂਫਾਨ ਬਹੁਤਾ।
ਲੋਹਾ ਵੇਖ ਕਾਲਾ ਹੋਂਦਾ ਬਲ ਵਾਲਾ,
ਜਿਨੂੰ ਚਾਹੁੰਦਾ ਸਾਰਾ ਜਹਾਨ ਬਹੁਤਾ।
ਕਾਲਾ ਕਾਲ ਦਾ ਰੂਪ ਸੁਣੀਂਵਦਾ ਏ,
ਸੁਣਕੇ ਜੀਵ ਜਿਸਨੂੰ ਭੈ ਖਾਨ ਬਹੁਤਾ।
ਕਾਲੇ ਰੰਗ ਦੀ ਵੇਖ ਲੈ ਹੋਰ ਖੂਬੀ,
ਰੰਗ ਦੇਂਵਦਾ ਏ ਇਕ ਚਦ ਮਾਸਾ।
ਕਾਲਾ ਹੋਵਣੇ ਦੀ ਯਾਰ ਦਸ ਤੈਨੂੰ,
ਕਿਉਂ ਨਹੀਂ ਆਂਵਦੀ ਕਦੇ ਬੀ ਸਦਰ ਮਾਸਾ।

ਕਾਲੀ ਬੈਠ ਕੋਇਲ ਜਿਥੇ ਕੂਕਦੀ ਏ,
ਹੋਂਦਾ ਖੁਸ਼ਨੁਮਾ ਉਹ ਗੁਲਿਸਤਾਨ ਬਹੁਤਾ।
ਕਾਲੇ ਕ੍ਰਿਸ਼ਨ ਨੂੰ ਪੂਜਦੇ ਪਏ ਲੋਕ,
ਆਖਣ ਗੋਪੀਆਂ ਦਾ ਸੁੰਦਰ ਕਾਹਨ ਬਹੁਤਾ।
ਤਿਤਰ ਵੇਖ ਕਾਲਾ ਹੋਂਦਾ ਬਲ ਵਾਲਾ,
ਕਿਉਂ ਕਿ "ਬੋਲਦਾ ਕੁਦਰਤ ਸੁਭਾਨ" ਬਹੁਤਾ।
ਕਾਲੀ ਬਦਲੀ ਖਿਜ਼ਾਂ ਦੀ ਕਰੇ ਬਦਲੀ,
ਜਦੋਂ ਵਰੇ ਰੁੰਚੇ ਲਹਿਲਹਾਨ ਬਹੁਤਾ।
ਅਖਾਂ ਕਾਲੀਆਂ ਜਦੋਂ ਸਫ਼ੈਦ ਹੋਵਣ,
ਅੰਧਾ ਧੁੰਦ ਨ ਆਂਵਦਾ ਨਦਰ ਮਾਸਾ।
ਕਾਲਾ ਹੋਵਣੇ ਦੀ ਯਾਰ ਦਸ ਤੈਨੂੰ,
ਕਿਉਂ ਨਹੀਂ ਆਂਵਦੀ ਕਦੇ ਬੀ ਸਦਰ ਮਾਸਾ।

ਕਾਲਾ ਹੋਣ ਬਾਝੋਂ ਤੇਰੀ ਗਤੀ ਨਾਹੀਂ,

ਯਾਰ ਛਡ ਦੇ ਕੰਮ ਤੂੰ ਜਾਬਰੀ ਦਾ।

ਨਾਲ ਕਾਲਿਆਂ ਦੇ ਪਾਲ ਲਗੀਆਂ ਨੂੰ,

'ਹੌਕਾ' ਫੇਰ ਦੇਹ ਸਾਰੇ ਬਰਾਬ਼ੀ ਦਾ।

— ਭਾਈ ਵਿਧਾਤਾ ਸਿੰਘ "ਤੀਰ"
(भाई विधाता सिंह "तीर")

"ਤੀਰ ਤ੍ਰੰਗ"
ਰਚਿਤ ਤੇ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਕ :
ਭਾਈ ਵਿਧਾਤਾ ਸਿੰਘ "ਤੀਰ"।
ਕਾਰੋਨੇਸ਼ਨ ਪ੍ਰਿੰਟਿੰਗ ਵਰਕਸ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।

"तीर तरंग"
रचित और प्रकाशक :
भाई विधाता सिंह "तीर"।
कारोनेशन प्रिंटिंग वर्क्स, अमृतसर।

(अवाप्ति संख्या : 1957)

ਗਦਰ ਪਾਰਟੀ ਦਾ ਜਨਮ ਦਿਨ

ਆਓ ਅਜ ਪਰੇਮੀਓ ਹੋ ਅਕਠੇ,
ਜਨਮ ਪਾਰਟੀ ਦਿਨ ਮਨਾ ਲਈਏ।
ਯਕਮ ਨਵੰਬਰ ਨੂੰ ਰਖੀ ਬਨਯਾਦ ਇਸਦੀ,
ਬਈ ਹਿੰਦ ਆਜਾਦ ਕਰਾ ਲਈਏ।
ਸਤ ਸਾਲ ਹੋਏ ਪਾਰਟੀ ਕਾਇਮ ਹੋਇਆਂ,
ਪੈਰ ਅੱਠਵੇਂ ਸਾਲ ਰਖਾ ਲਈਏ।
ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਮੈਂਬਰਾਂ ਦੇਸ ਹਿਤ ਜਾਨ ਵਾਰੀ,
ਇਜ਼ੱਤ ਓਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਦਿਲ ਵਧਾ ਲਈਏ।
ਕਾਲੇ ਪਾਨੀ ਜੋ ਦੁਖ ਸਹਾਰ ਹਰੇ,
ਫਖਰੇ ਕੌਮ ਓਹ ਗਾਲੇ ਲਗਾ ਲਈਏ।
ਜੇਲਖਾਨੇਆਂ ਵਿਚ ਹਨ ਕਈ ਰੁਲਦੇ,
ਭੁਲੇ ਵੀਰ ਸੋ ਯਾਦ ਕਰਾ ਲਈਏ।
ਗਦਰ ਪਾਰਟੀ ਫਰਜ਼ ਅਦਾ ਕੀਤਾ,
ਜੋ ਕੁਛ ਕੀਤਾ ਹੈ ਸਬ ਬਤਾ ਲਈਏ।
ਜ਼ੁਲਮ ਹੋ ਰਿਹਾ ਸੀ ਬਹੁਤ ਦੇਸ ਅੰਦਰ,
ਅਖਾਂ ਖੋਲੀਆਂ ਨਾ ਹਿੰਦੋਸਤਾਨੀਆਂ ਨੇ।
ਜਾ ਹਿੰਦ ਫਰੰਗੀਆਂ ਲੁਟ ਚਾਈ,
ਸਾਡੀ ਬਹੁਤ ਹੀ ਦੁਖ ਕਹਾਨੀਆਂ ਨੇ।
ਪੈਸਾ ਕਢ ਵਲੈਤ ਪੁਚਾ ਦਿੱਤਾ,
ਸਾਨੂੰ ਨੰਗ ਕੀਤਾ ਦਗੇ ਦਾਨੀਆਂ ਨੇ।
ਲਗੇ ਜੋਂਕ ਵਾਂਗੂ ਪੀਨੇ ਰਤ ਸਾਡੇ,
ਕੀਤਾ ਤੰਗ ਹੈ ਦੁਸ਼ਮਨਾਂ ਜਾਨੀਆਂ ਨੇ।
ਜ਼ੁਲਮ ਕਰਨ ਤਾਂ ਹਥ ਨਾ ਕੋਈ ਪਕੜੇ,
ਮਾਰ ਗੋਲੀਆਂ ਜਾਨ ਮਕਾਨੀਆਂ ਨੇ।
ਬੱਚੇ ਤੜਪਦੇ ਭੁਖ ਦੇ ਨਾਲ ਸਾਡੇ,
ਕਨਕ ਚੌਲ ਵਲੈਤ ਪੁਚਾਨੀਆ ਨੇ।
ਕੰਮ ਅਸੀ ਕਰਦੇ ਦਿਨੇ ਰਾਤ ਮਰਦੇ,
ਸਾਡੇ ਸਿਰਾਂ ਤੇ ਮੌਜਾਂ ਇਹ ਮਾਨੀਆਂ ਨੇ।

ਦੁਖ ਹਨ ਅਨੇਕ ਨਹੀਂ ਗਿਣੇ ਜਾਂਦੇ,
ਕੀਤੇ ਅਸਾਂ ਤੇ ਫਰੰਗਸਤਾਨੀਆਂ ਨੇ।
ਕਈ ਜ਼ੁਲਮ ਤੋਂ ਹੋ ਕੇ ਤੰਗ ਬਹੁਤੇ,
ਛੋਡ ਦੇਸ ਅਮਰੀਕਾ ਰਵਾਨ ਹੋਏ।
ਏਥੇ ਆ ਆਜ਼ਾਦੀ ਦੀ ਹਵਾ ਲਗੀ,
ਸਾਡੇ ਦਿਲਾ ਨੂੰ ਕੁਛ ਅਰਮਾਨ ਹੋਏ।
ਕੁਛ ਹੋਸ਼ ਆਈ ਕੁਛ ਸੋਚ ਆਈ,
ਅਸੀ ਰਹੇ ਸੀ ਦੁਖ ਨਸ਼ਾਨ ਹੋਏ।
ਦੁਨਯਾ ਮੌਜ ਬਹਾਰ ਅਨੰਦ ਕਰਦੀ,
ਦੁਖ ਸਬ ਰਵਾਨ ਹਿੰਦੋਸਤਾਨ ਹੋਏ।
ਦੁਨਯਾ ਵੱਸੇ ਖੁਸ਼ੀ ਹਿੰਦ ਬਹੁਤ ਦੁਖੀ,
ਅਸੀ ਦੇਖ ਕੇ ਬਹੁਤ ਹੈਰਾਨ ਹੋਏ।
ਅਮਰੀਕਾ ਨਾਲ ਮਕਾਬਲਾ ਕਰ ਅਪਨਾ,
ਚਿੱਤ ਅਸਾਂ ਦੇ ਸਨ ਪਰੇਸ਼ਾਨ ਹੋਏ।
ਏਸ ਦੇਸ ਵਿਚ ਲੋਕ ਬਹਾਰ ਲੈਂਦੇ,
ਨਜ਼ਰ ਆਂਵਦੇ ਹਿੰਦੀ ਬੇਜਾਨ ਹੋਏ।

—''ਗਦਰ'' ੧ ਨਵੰਬਰ, ੧੯੨੦ ਦੇ ਅੰਕ ਵਿਚੋਂ।
(''गदर'' 1 नवम्बर, 1920 के अंक से)।

(अवाप्ति संख्या : 3002)

ਕਾਂਗ੍ਰਸ ਦਾ ਢੰਡੋਰਾ!*

ਏਸ ''ਚਮਨ'' ਦੇ ਵਿੱਚ ਕੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦਾ,
ਮੈਨੂੰ ਰਹਿਣ ਦਾ ਦਸੋ ਸਵਾਦ ਹੋਵੇ।
ਏਸੇ ਤਾੜ ਵਿੱਚ ਰਹਵੇ ''ਗੁਲਚੀਨ'' ਜਿਥੇ,
ਖਿੜੇ ਕੱਲੀ ਨਾ ਗੁਲ ਆਬਾਦ ਹੋਵੇ।
ਚੱਪੇ ਚੱਪੇ ਤੇ ਦਾਮ ਖਲਾਰ ਨਾਲੇ,
ਕਦਮ ਕਦਮ ਤੇ ਬੈਠਾ ਸੱਯਾਦ ਹੋਵੇ।
ਅੱਸਾਂ ''ਤੋਤਿਆਂ'' ''ਬੁਲਬੁਲਾਂ'' ''ਕੁਮਰੀਆਂ'' ਦੀ,
ਪੂਰੀ ਦਿੱਲ ਦੀ ਤਾਈਏਂ ਮੁਰਾਦ ਹੋਵੇ।
''ਬਾਗ਼ ਆਪਣਾ ਹੋਏ, ਤੇ ਫੁਲ ਅਪਣੇ,
ਮਾਲੀ ਆਪਣਾ ਤਦੇ ਦਿੱਲਸ਼ਾਦ ਹੋਵੇ''।
''ਕਰੋ ਹਿੰਦੀਓ ਰੱਲਕੇ ਹੁਣ ਕੰਮ ਐਸਾ,
ਸਾਡੀ ਮਾਦਰੇ ਹਿੰਦ ਆਜ਼ਾਦ ਹੋਵੇ''।
ਹੋ ਗਏ ਪ੍ਰੇਸਾਂ ਗੇਸੂਆਂ ਵਾਂਗ ਕਾਲੇ,
ਅਸੀਂ ਬਿਗੜੇ ਤੇ ਸਾਡੀ ਸੂਕਾਰ ਬਨ ਗਈ।
ਜੀਹਦੇ ਸਿਰ ਤੇ ''ਯੂਰਪ'' ਅਮੀਰ ਹੋਇਆ,
ਹਾਇ ਧਰਤੀ ਉਹ ਆਪ ਨਾਦਾਰ ਬਨ ਗਈ।
ਕੀ, ਕੀ ਦਸੀਏ ਸੱੜ ਗਿਆ ਜਿਗਰ ਸਾਡਾ,
ਸਾਡੇ ਨਾਲ ਮਸਾਲ ਇਹ ਯਾਰ ਬਨ ਗਈ।
''ਬੱਲਦੀ ਦੇਖਕੇ ਲੈਨ ਸੀ ਅੱਗ ਆਈ,
ਘਰ ਬਾਰ ਦੀ ਮਾਲਕ ਹਣ ਨਾਰ ਬਨ ਗਈ।
ਲੁਟੇ ਗਏ ''ਤੈਹਜ਼ੀਬ'' ਦੇ ਪਰਦਿਆਂ ਵਿੱਚ,
''ਸ਼ਾਲਾ'' ਇੰਵ ਨਾ ਕੋਈ ਬਰਬਾਦ ਹੋਵੇ।
ਕਰੋ ਹਿੰਦੀਓ ਹੁਣ ਰੱਲਕੇ ਕੰਮ ਐਸਾ,
ਸਾਡੀ ਮਾਦਰੇ ਹਿੰਦ ਆਜ਼ਾਦ ਹੋਵੇ।
ਮੀਟੀ ਰਵੇਗੀ, ਮੁੱਠ ਇਹ ਕਦੋਂ ਤੀਕਰ,
ਰੰਗੋ ਖੂੰਨ ਸ਼ਹੀਦਾਂ ਕੱਦ ਖੁਲਣਾ ਏਂ।
''ਪੱਤਝੜ'' ਹਿੰਦ ਵਿੱਚ ਰਵੇਗੀ ਕਦੋਂ ਤੀਕਰ,
ਕਿਸ ਦਿਨ ਬਾਗ਼ ਸਾਡਾ ਫਲਣਾ ਫੁਲਣਾ ਏਂ।

*ਇਹ ਕਵਿਤਾ ਕਾਂਗ੍ਰਸ ਤੇ ਕਵੀ ਦਰਬਾਰ ''ਬੈਂਡ ਲਾਹ'' ਹਾਲ ਲਾਹੌਰ ਵਿਖੇ ੧੧ ਦਸੰਬਰ ੧੯੨੧ ਨੂੰ ਪੜੀ ਗਈ, ਅਤੇ ਪੈਹਲੇ ਨੰਬਰ ਤੇ ਰਹੀ।

"ਖਾਕਸਾਰੀਆਂ" ਕਰੋਗੇ ਕਦੋਂ ਤੀਕਰ,
ਕੱਦ ਤੱਕ ਲਾਲਾਂ ਨੇ ਮਿੱਟੀ ਵਿੱਚ ਰੁਲਣਾ ਏਂ।
"ਸ਼ਾਹੀ" ਆਪਣੀ ਆਵੇਗੀ ਯਾਦ ਕਿਸ ਦਿਨ,
ਤੁਸਾਂ ਕਦੋਂ ਗੁਲਾਮੀ ਨੂੰ ਭੁਲਣਾ ਏਂ।
ਰੱਜ ਗਏਓ ਡੇਢ ਸੌ ਸਾਲ ਸੌਂ ਸੌਂ,
ਹੁਣ ਤੇ ਅਪਣੀ ਹੱਸਤੀ ਵੀ ਯਾਦ ਹੋਵੇ।
ਕਰੋ ਹਿੰਦੀਓ ਰਲਕੇ ਹੁਣ ਕੰਮ ਐਸਾ,
ਸਾਡੀ ਮਾਦਰੇ ਹਿੰਦ ਆਜ਼ਾਦ ਹੋਵੇ।

ਹਾਂ ਉਹ "ਹਿੰਦੀਏ" ਜਿਨਾਂ ਨੇ ਸੀਸ ਦਿਤੇ,
ਕੀਤਾ ਜੰਗ ਜੱਦ ਜਰਮਨਾਂ ਤੁਰਕੀਆਂ ਨੇ।
ਗੱਲਾ ਹਿੰਦ ਦਾ ਘਲਿਆ ਵਿਚ "ਯੂਰਪ",
ਮੂੰਹੋਂ ਕੱਢ ਕੱਢ ਦਿੱਤੀਆਂ ਬੁਰਕੀਆਂ ਨੇ।
ਸਾਡੇ ਸਿਰਾਂ ਤੇ ਫਤੇ ਸ੍ਰਕਾਰ ਪਾਈ,
ਤਾਹੀਏਂ ਮੂੰਹਾਂ ਤੇ ਲਾਲੀਆਂ ਸੁਰਕੀਆਂ ਨੇ।
ਅੱਸਾਂ ਹੱਕ ਜੱਦ ਮੰਗਿਆ ਆਪਨਾ ਏਂ,
"ਰੋਲਟ ਬਿੱਲ" ਦੀਆਂ ਦਿੱਤੀਆਂ ਘੁਰਕੀਆਂ ਨੇ।
ਐਸ ਜ਼ੁਲਮ ਤੇ ਉਹ ਵੀ ਅੱਜ ਕਰੇ ਤੋਬਾ,
ਜੇਕਰ ਜ਼ਿੰਦਾ ਫਰਊਣ ਸ਼ਦਾਦ ਹੋਵੇ।
ਕਰੋ ਹਿੰਦੀਓ ਰਲਕੇ ਹੁਣ ਕੰਮ ਐਸਾ,
ਸਾਡੀ ਮਾਦਰੇ ਹਿੰਦ ਆਜ਼ਾਦ ਹੋਵੇ।

ਹਸ਼ਰ ਤੀਕ ਕਹਾਨੀਆਂ ਪੈਣੀਆਂ ਨੇ,
ਜੇਹੜੇ "ਡਾਇਰ" "ਉਡਵਾਇਰ" ਨੇ ਵੈਰ ਕੀਤੇ।
ਭੁੰਨ ਸੁਟਿਆ ਬਚਿਆਂ ਬੁਢਿਆਂ ਨੂੰ,
ਦਿੱਲ ਖੋਹਲ ਬੰਦੂਕਾਂ ਦੇ ਫੈਰ ਕੀਤੇ।
ਖੂਨੇ "ਬੁਲਬੁਲਾਂ" ਥੀਂ ਲਾਲਾਜ਼ਾਰ ਕਰਕੇ,
"ਬਾਗ਼ "ਜ਼ਲ੍ਹਿਆਂ ਵਾਲੇ" ਦੇ ਸੈਰ ਕੀਤੇ।
ਦਿੱਤਾ ਫੈਜ਼ ਇਹ "ਹਿੰਦੂਆਂ" "ਮੁਸਲਮਾਂ" ਨੂੰ,
ਕੱਠੇ ਇਕ ਥਾਂ "ਕਾਹਬਾ" ਤੇ "ਦੇਰ" ਕੀਤੇ।

ਏਸ ਜ਼ੁਲਮ ਬੇਹੱਦ ਤੇ ਕੈਹਣ ਜ਼ਾਲਮ,
ਖਬਰ ਦਾਰ ਨ ਕਦੀ ਫਰਿਯਾਦ ਹੋਵੇ।
ਕਰੋ ਹਿੰਦੀਓ ਰਲਕੇ ਹੁਨ ਕੰਮ ਐਸਾ,
ਸਾਡੀ ਮਾਦਰੇ ਹਿੰਦ ਆਜ਼ਾਦ ਹੋਵੇ।

ਆਗਏ "ਖ਼ੈਰਖਾਹ" ਜਦੋਂ ਦੇ ਹਿੰਦ ਅੰਦਰ,
ਇੱਕ ਤੇ "ਕਾਲ" ਨੇ ਦਿੱਤਾ ਮੂੰਹ ਮੋੜ ਸਾਡਾ।
ਦੂਜੇ ਲੁਟਕੇ ਨਾਲ ਬਹਾਨਿਆਂ ਦੇ,
ਖੋਹੰਦੇ ਸਾਲ ਅੰਦਰ ਕਈ ਕ੍ਰੋੜ ਸਾਡਾ।
ਤੀਜੇ ਨਿੱਤ-੨ ਨਵੇਂ ਜਲੂਸ ਕੱਢਣ,
ਦਿੱਤਾ ਲੱਕ ਉਚਾਟੀਆਂ ਤੋੜ ਸਾਡਾ।
ਪੁੱਟ ਛਡਿਆ "ਇਨ੍ਹਾਂ" ਦੇ "ਫੈਸ਼ਨਾ" ਨੇ,
ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਾਲ ਨਾ ਨਿੱਭਦਾਏ ਜੋੜ ਸਾਡਾ।
ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨ੍ਹਾਤੇ ਹਾਂ, ਉਨਾਂ ਹੀ ਪੁੰਨ ਜਾਨੋ,
"ਨਾਮਿਲਵਰਤਨ" ਦਾ ਅਗੋਂ ਜਹਾਦ ਹੋਵੇ।
ਕਰੋ ਹਿੰਦੀਓ ਰਲਕੇ ਹੁਣ ਕੰਮ ਐਸਾ,
ਸਾਡੀ ਮਾਦਰੇ ਹਿੰਦ ਆਜ਼ਾਦ ਹੋਵੇ।

ਤੁਸੀਂ ਵਡਿਆਂ ਵੱਲ ਧਿਆਨ ਮਾਰੋ,
ਰਾਜੇ ਸਨ, ਨ ਚੂਹੜੇ ਨ ਚਪੜੇ ਸਨ।
ਡਾਗਾਂ ਕੋਲੋਂ ਹੀ ਲੈਂਦੇ ਸਨ ਕੰਮ ਸਾਰੇ,
ਉਨ੍ਹਾਂ ਹੰਟਰ ਵਲੈਤੀ ਕੱਦ ਪਕੜੇ ਸਨ।
ਟਾਈਆਂ, ਫਾਹੀਆਂ ਕੱਦ ਉਨਾਂ ਨੇ ਗਲੇ ਪਾਈਆਂ,
ਰੇਸ਼ਮ ਸਿਲਕ ਤੱਕ ਉਹ ਕਦੋਂ ਅਪੜੇ ਸਨ।
ਨਾਜ਼ਕ ਬਦਨ ਸੀ, ਮਖਮਲਾਂ ਦੇ ਵਾਂਗ ਸਾਰੇ,
ਐਪਰ ਪਹਿਨਦੇ ਖੱਦੜ ਦੇ ਕੱਪੜੇ ਸਨ।
ਤੋੜੋ, ਤੁਸੀਂ ਵੀ ਜਾਲ ਬਰੀਕੀਆਂ ਦੇ,
ਹੁਣ ਤੇ ਅਪਣਾ ਮੁਲਕ ਆਬਾਦ ਹੋਵੇ।
ਕਰੋ ਹਿੰਦੀਓ ਰੱਲਕੇ ਹੁਣ ਕੰਮ ਐਸਾ,
ਸਾਡੀ ਮਾਦਰੇ ਹਿੰਦ ਆਜ਼ਾਦ ਹੋਵੇ।

ਘਰ, ਘਰ ਚਰਖਿਆਂ ਦੀ ਕਰੋ ਰਸਮ ਜਾਰੀ,
ਜੇਕਰ ਸਾਹਿਬੋ ਤੁਸੀਂ ਨਹੀਂ ਤੰਗ ਹੋਣਾ।
''ਖ਼ਫਨ'' ਲਈ ਮੁਹਤਾਜ ਹਾਂ, ਦੂਜਿਆਂ ਦੇ,
ਏਦੋਂ ਵੱਧ ਕੀ ਹੋਰ ਹੈ ਨੰਗ ਹੋਣਾ।
ਘੂਕਰ ਪਹੁੰਚੀ, ਜੱਦ ਸਾਡਿਆਂ ਚਰਖਿਆਂ ਦੀ,
ਗਰਦਸ਼ ਹੇਠ ਹੈ ਐਹਲ ਫਰੰਗ ਹੋਣਾ।
ਡਿੱਠਾ ''ਜੂਤ'' ਜਦ ਸਾਡਾ ''ਬ੍ਰਤਾਨੀਆਂ'' ਨੇ,
''ਪੂਣੀ'' ਵਾਂਗ ਹੈ, ਓਸਦਾ ਰੰਗ ਹੋਣਾ।
''ਮਾਨਚੈਸਟ੍ਰ'' ਦੇ ''ਮਾਨ'' ਵੀ ਟੁੱਟ ਜਾਸਨ,
''ਲੰਕਾ ਸ਼ਾਇਰ'' ਵੀ ਨਾਲੇ ਬ੍ਰਬਾਦ ਹੋਵੇ।
ਰੱਲਕੇ ਹਿੰਦੀਓ ਕਰੋ ਹੁਣ ਕੰਮ ਐਸਾ,
ਸਾਡੀ ਮਾਦਰੇ ਹਿੰਦ ਆਜ਼ਾਦ ਹੋਵੇ।
ਸਾਨੂੰ ਮਾਰਿਆ ਬੇਇਤਫਾਕੀਆਂ ਨੇ,
ਤਦੇ ਬਿਗੜਿਆ ਕੰਮ ਤੇ ਕਾਜ ਸਾਡਾ।
ਸ਼ਾਨ ਰਬਦੀ, ਕਰਨ ਹਕੂਮਤਾਂ ਓਹ,
ਜੇਹੜੇ ਭਰਦੇ ਸਨ, ਕਲ ਖ਼ਰਾਜ ਸਾਡਾ।
ਸੈਹ, ਸੈਹ, ਜ਼ੁਲਮ ਹੁਣ ਨਕ ਤੇ ਦਮ ਆਯਾ,
ਏਹਦੇ ਬਿਨਾਂ ਨਹੀਂ ਹੋਰ ਇਲਾਜ ਸਾਡਾ।
ਲੈਕੇ ਰਹੀਏ, ਹੁਣ ਦੋਸਤੋ, ਛਡੀਏ ਨਾ,
ਹੈ ਪੈਦਾਇਸ਼ੀ ਹੱਕ ''ਸਵੈਰਾਜ'' ਸਾਡਾ।
''ਖੜਕਸਿੰਘ'' ਤੇ ''ਗਾਂਧੀ'' ਵੀ ''ਸ਼ਰਫ਼'' ਕਹਿੰਦੇ,
''ਮੁਹੰਮਦਅੱਲੀ'' ਦਾ ਨਾਲ ਅਰਸ਼ਾਦ ਹੋਵੇ।
ਕਰੋ ਹਿੰਦੀਓ ਰਲਕੇ ਹੁਣ ਕੰਮ ਐਸਾ,
ਸਾਡੀ ਮਾਦਰੇ ਹਿੰਦ ਆਜ਼ਾਦ ਹੋਵੇ।

— ਫੀਰੋਜ਼ ਦੀਨ ''ਸ਼ਰਫ''
(फिरोज़ दीन ''शरफ'')

''ਦੁਖਾਂ ਦੇ ਕੀਰਨੇ''
ਰਚਿਤ ਤੇ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਕ : ਫੀਰੋਜਦੀਨ 'ਸ਼ਰਫ'।
ਪੰਜਾਬ ਖਾਲਸਾ ਪ੍ਰੈਸ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।

''दुखां दे कीरने''
रचित और प्रकाशक : फिरोज़दीन 'शरफ'।
पंजाब खालसा प्रैस, अमृतसर।

(अवाप्ति संख्या : 1976)

ਹਿੰਦ ਦਾ ਤਾਜ ਚਰਖਾ

ਪਿਆਰੇ ਹਿੰਦੀਓ ਤੁਸਾਂ ਦੇ ਯੁਧ ਖਾਤਰ,
ਦਿਤਾ ਭੇਜ ਦਰਗਾਹ ਤੋਂ ਸਾਜ ਚਰਖਾ।
ਨਾਲ ਜਾਲਮਾਂ ਦੇ ਖੂਬ ਜੂਝ ਸੀ ਏਹ,
ਦੇਸੀ ਦੁਸ਼ਮਨਾਂ ਦੇ ਤਾਈ ਕਾਜ ਚਰਖਾ।
ਇਸਦੀ ਤੰਦ ਜ਼ੰਜੀਰ ਬਲਬੀਰ ਬਣਾਈ,
ਜਕੜ ਵੈਰੀਆਂ ਕਰਸੀ ਮੁਥਾਜ ਚਰਖਾ।
ਸ਼ਹਿਨ ਸ਼ਾਹ ਜਹਾਨ ਦਾ ਥਾਪ ਦਿਤਾ,
ਕਰਕੇ ਟੋਰਿਆ ਹਿੰਦ ਦਾ ਤਾਜ ਚਰਖਾ।

ਮੁਲਕ ਦੇਸ਼ ਆਜ਼ਾਦ ਕਰਾਣ ਖਾਤਰ,
ਆਪ ਕਤਿਆ ਗਾਂਧੀ ਮਹਾਰਾਜ ਚਰਖਾ।
ਕਢ ਦੇਵਸੀ ਕਫ਼ਸ, ਚੋਂ ਕੈਦੀਆਂ ਨੂੰ,
ਖੋਹਲ ਦੇਵਸੀ ਜ਼ੁਲਮ ਦੇ ਪਾਜ ਚਰਖਾ।
ਦੇਸ ਸੇਵਕਾਂ ਦੀ ਹੋਸੀ ਚਾਹ ਪੂਰੀ,
ਗਾਂਧੀ, ਦਾਸ ਦੀ ਰਖਸੀ ਲਾਜ ਚਰਖਾ।
ਸ਼ਾਹਿਨ ਸ਼ਾਹ ਜਹਾਨ ਦਾ ਥਾਪ ਦਿਤਾ,
ਕਰਕੇ ਟੋਰਿਆ ਹਿੰਦ ਦਾ ਤਾਜ ਚਰਖਾ।

ਕਰਸੀ ਨਾਸ "ਬਟੇਰਿਆਂ" ਜਾਬਰਾਂ ਦਾ,
ਝਪਟ ਮਾਰਸੀ ਹੋਇਕੇ ਬਾਜ ਚਰਖਾ।
ਕਢਸੀ ਮੁਲਕ ਗੁਲਾਮੀ ਦੀ ਲਹਿਰ ਵਿਚੋਂ,
ਲਾਸੀ ਪੇਤ ਹੋ 'ਤੀਰ, ਸਵਰਾਜ ਚਰਖਾ।
ਬਾਣ ਮਾਰਸੀ ਸਬਰ ਦੇ ਤੇਜ ਡਾਢੇ,
ਜੀਦੀ ਰਖੇਗਾ ਹਿੰਦ ਦੀ ਲਾਜ ਚਰਖਾ।
ਸਾਹਿਨ ਸਾਹ ਜਹਾਨ ਦਾ ਥਾਪ ਦਿਤਾ,
ਕਰਕੇ ਤੋਰਿਆਂ ਹਿੰਦ ਦਾ ਤਾਜ ਚਰਖਾ।
ਕਤੇ ਸੂਤ ਤੇ ਦਿਉ ਖੜਕਾ ਖਡੀਆਂ,
ਪੂਰਨ ਕਰੇਗਾ ਆਪਦੇ ਕਾਜ ਚਰਖਾ।

6—254/Deptt. of Archives/ND/97

ਖਦੜ ਤਨ ਤੇ ਪਾਣਾ ਜਾਣ ਮਖ਼ਮਲ,
ਘਰ ਘਰ ਅੰਦਰੋਂ ਦੇਵੇ ਆਵਾਜ ਚਰਖਾ।
ਸਜਨ ਆਜਜ਼ੀ ਦਾ ਕਫ਼ਨ ਮੁਰਦਿਆਂ ਦਾ,
ਵਿਆਹੀਆਂ ਬੀਬੀਆਂ ਦੇ ਕੜੇ ਦਾਜ ਚਰਖਾ।
ਸ਼ਹਿਨ ਸ਼ਾਹ ਜਹਾਨ ਦਾ ਖਾਪ ਦਿਤਾ,
ਕਰਕੇ ਤੋਰਿਆ ਹਿੰਦ ਦਾ ਤਾਜ ਚਰਖਾ।

— ਭਾਈ ਵਿਧਾਤਾ ਸਿੰਘ "ਤੀਰ"
(भाई विधाता सिंह "तीर")

"ਤੀਰ ਤ੍ਰੰਗ"
ਰਚਿਤ ਤੇ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਕ :
ਭਾਈ ਵਿਧਾਤਾ ਸਿੰਘ "ਤੀਰ"।
ਕਾਰੋਨੇਸ਼ਨ ਪ੍ਰਿੰਟਿੰਗ ਵਰਕਸ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।

"तीर तरंग"
रचित और प्रकाशक :
भाई विधाता सिंह "तीर"।
कारोनेशन प्रिंटिंग वर्क्स, अमृतसर।

(अवाप्ति संख्या : 1957)

ਏਕਤਾ ਦਾ ਮੰਦਰ ਤੇ ਅਜ਼ਾਦੀ ਦੇਵੀ

ਹੁੰਦੇ ਕੌਮ ਨੂੰ ਕਦਾਂ ਵਗਾੜੀਏ ਨਾ
ਵਿਗੜੇ ਹੋਏ ਨੂੰ ਸਗੋਂ ਸਵਾਰ ਦੇਈਏ।
ਜੇਕਰ ਦੁਸ਼ਮਨ ਨੂੰ ਮਾਰਨਾ ਕਦੀ ਹੋਵੇ,
ਪਹਿਲਾਂ ਅਪਨੇ ਆਪ ਨੂੰ ਮਾਰ ਦੇਈਏ।
ਚੜ੍ਹ ਜਾਈਏ "ਫਕੀਰੇ" ਵਾਂਗ ਫਾਂਸੀ,
ਸਿਰੋਂ ਮੁਲਕ ਦਾ ਫਰਜ਼ ਉਤਾਰ ਦੇਈਏ।

ਏਸ "ਕਾਂਗ ਤੂਫਾਨ" ਦਾ ਫਿਕਰ ਕਰੀਏ,
ਬੇੜਾ ਡੋਬ ਨ ਕਿਤੇ ਵਿਚਕਾਰ ਦੇਈਏ।
ਰਿਸ਼ਤਾ ਹਿੰਦੂ ਤੇ ਮੁਸਲਮ ਦਾ ਹੋਵੇ ਪੱਕਾ,
ਤਸਬੀ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰੋ ਜ਼ੁੱਨਾਰ ਦੇਈਏ।
ਘੁੱਮਨ ਘੇਰ ਵਿੱਚ ਕੌਮ ਦੀ ਫਸੀ ਬੇੜੀ,
ਰਲਕੇ ਏਸ ਨੂੰ ਪਾਰ ਉਤਾਰ ਦੇਈਏ।

ਮਗਰ ਲਗਕੇ ਮੁਢ ਦੇ ਵੈਰੀਆਂ ਦੇ,
ਅਸੀਂ ਝਲੀਏ ਮੁਫਤ ਬਦਨਾਮੀਆਂ ਨੂੰ।
ਹਲਵਾ ਮੰਡਾ ਇਹ ਅਪਣਾ ਤੋਰਦੇ ਨੇ,
ਪਏ ਲੜਾ ਲੜਾ ਅਸਾਮੀਆਂ ਨੂੰ।
ਖਾਹਸ਼ ਮੰਦ ਜੇ ਤੁਸੀਂ ਸਵੈਰਾਜ ਦੇ ਹੋ,
ਜੇ ਹੈ, ਤੋੜਨਾ ਤੁਸਾਂ ਗੁਲਾਮੀਆਂ ਨੂੰ।
ਦੂਰੋਂ ਕਰੀਏ ਸਲਾਮ "ਮੁਲਾਨਿਆਂ" ਨੂੰ
ਮਥਾ ਟੇਕੀਏ ਦੂਰੋਂ "ਸਵਾਮੀਆਂ" ਨੂੰ।
"ਭਾਰਤ ਮਾਤਾ" ਦਾ ਗਲਾ ਕਟੌਣ ਬਦਲੇ,
ਕਾਹਨੂੰ ਇਹਨਾਂ ਦੇ ਹਥੀਂ ਤਲਵਾਰ ਦੇਈਏ।
ਘੁਮਣ ਘੇਰ ਵਿਚ ਕੌਮ ਦੀ ਫਸੀ ਬੇੜੀ,
ਰਲਕੇ ਏਸ ਨੂੰ ਪਾਰ ਉਤਾਰ ਦੇਈਏ।
ਲਾਲਾ ਤਿਲਕ ਮੈਹਰਾਬ ਇਹ ਕਹਿਣ ਸਾਨੂੰ,
ਮਥੇ ਗੈਰ ਦਰਵਾਜੇ ਤੇ ਮਾਰਦੇ ਰਹੋ।

ਆਬੇ ਜ਼ਮ ਜ਼ਮ ਤੇ ਗੰਗਾ ਦੇ ਪਾ ਝਗੜੇ,
ਵਿਚੇ ਡੁਬੇ, ਨ ਪਾਰ ਉਰਾਰ ਦੇ ਰਹੇ।
ਕਿਸੇ ਛੇੜ "ਮੁਲਤਾਨ" ਤੇ "ਮੋਪਲਾ" ਦੇ,
ਸ਼ੋਸ਼ੇ "ਸ਼ੁਧੀ" ਦੇ ਕਦੀ ਵਚਾਰਦੇ ਰਹੇ।
"ਭਾਰਤ ਮਾਤਾ" ਦੇ ਫੱਟਾਂ ਤੇ ਲੂਣ ਪਾ ਪਾ,
ਏਸੇ ਤਰਾਂ ਹੀ ਉਮਰ ਗੁਜ਼ਾਰਦੇ ਰਹੇ।
ਤਿੰਨ, ਪੰਜ, ਨ ਇਹਨਾਂ ਦੀ ਕਦੀ ਸੁਣੀਏ,
ਲਈਏ ਦੋ ਨਾ ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਚਾਰ ਦੇਈਏ।
ਘੁੱਮਣ ਘੇਰ ਵਿਚ ਕੌਮ ਦੀ ਫਸੀ ਬੇੜੀ,
ਰਲਕੇ ਏਸ ਨੂੰ ਪਾਰ ਉਤਾਰ ਦੇਈਏ।

ਸ਼ਾਹੀ ਗੌਰ ਦੀ ਵਿੱਚ ਕੀ ਮਜ਼ਹਬ ਚਮਕੇ,
ਬੱਦਲ ਹੇਠਾਂ ਕੀ ਰੋਸ਼ਨੀ ਤਾਰਿਆਂ ਦੀ।
ਵੇਖ ਬੈਠੇ ਹੋ, ਮਾਰਸ਼ਲ, ਲਾ, ਅੰਦਰ,
ਹਾਲਤ ਮਸਜ਼ਦਾਂ ਤੇ ਗੁਰਦਵਾਰਿਆਂ ਦੀ।
ਰੁੜ੍ਹੇ ਜਾਣੇ ਹਾਂ ਅੱਜੇ ਦਰਿਆ ਅੰਦਰ,
ਮੰਜਲ ਦੂਰ ਹੈ, ਸਾਡੀ ਵਿਚਾਰਿਆਂ ਦੀ।
ਕੰਢੇ ਲੱਗ ਕੇ ਅੱਗ ਬੁਝਾ ਲੈਣੀ,
ਭਖੀ ਹੋਈ ਏਹ ਦਿਲੀ ਅੰਗਆਰਿਆਂ ਦੀ।
ਪਾਣੀ ਮਾਰੀਆਂ ਗਲਾਂ ਤੇ ਅਮਲ ਕਰ ਕਰ,
ਕਾਹਨੂੰ ਅਪਨਾ ਆਪ ਨਿਘਾਰ ਦਈਏ।
ਘੁਮਣ ਘੇਰ ਵਿਚ ਕੌਮ ਦੀ ਫਸੀ ਬੇੜੀ,
ਰਲਕੇ ਏਸ ਨੂ ਪਾਰ ਉਤਾਰ ਦੇਈਏ।
ਨੀਹ ਵੈਰ ਵਿਰੋਧ ਦੀ ਪੁਟ ਦੇਈਏ,
ਤਦੋ ਫ਼ੈਸਲਾ ਸਾਰਾ ਬੇਬਾਕ ਹੋਵੇ।
ਪਾਣੀ ਆਬਰੂ ਦਾ ਪਾ ਬਨਾਈਏ ਗਾਰਾ,
ਖਾਕਸਾਰੀ ਵਾਲਾ ਚੂਨਾ ਖਾਕ ਹੋਵੇ।
ਖਾਹਸ਼ਮੰਦ, ਸਵੈਰਾਜ ਦੇ ਰਾਜ ਲਈਏ,
ਹਰ ਇਕ ਇਟ ਮੁਹਬਤ ਦੀ ਪਾਕ ਹੋਵੇ।
ਕਾਰੀਗਰੀ, ਉਸਤਾਰੀ ਵਿੱਚ ਜੇਹੀ ਕਰੀਏ,
ਸਾਰੇ ਯੂਰਪ ਅੰਦਰ ਪੈਗਈ ਧਾਕ ਹੋਵੇ।

ਰੰਗ, ਨਸਲ, ਕੌਮੀਜਤ ਦਾ ਮੈਹਲ ਢਾਹ ਕੇ,
ਮਸਾਵਾਤ ਦਾ ਮੰਦਰ ਉਸਾਰ ਦੇਈਏ।
ਘੁਮਣ ਘੇਰ ਵਿਚ ਕੌਮ ਦੀ ਫਸੀ ਬੇੜੀ,
ਰਲਕੇ ਏਸ ਨੂੰ ਪਾਰ ਉਤਾਰ ਦੇਈਏ।

"ਸ਼ਾਂਤਮਈ" ਦੀਆਂਕੜੀਆਂ, ਸ਼ਤੀਰ ਲੈਕੇ,
ਚੰਗੀ ਤਰਾਂ ਫੇਰ ਓਸਨੂੰ ਛੱਤ ਦੇਵੇ।
"ਨਾਮਿਲਵਰਤਨ" ਵਾਲੀ ਓਸਤੇ ਟੀਪ ਕਰਕੇ,
ਤੋੜ ਦੁਸ਼ਮਨਾਂ ਦਾ ਜੱਤ ਸੱਤ ਦੇਵੇ।
"ਸਿਵਲ ਨਾ ਫੁਰਮਾਨੀ" ਦੇ ਪਾ ਬੂਟੇ,
ਨੌਕਰਸ਼ਾਹੀ ਦੀ ਮਾਰ ਚਾ ਮਤ ਦੇਵੇ।
"ਜਲ੍ਹਿਆਂ ਵਾਲੇ" ਸ਼ਹੀਦਾਂ ਦਾ ਖੂਨ ਲੈਕੇ,
ਕਰ ਫੁਲ ਸਾਰੇ ਰੱਤੋ ਰੱਤ ਦੇਵੇ।
ਦੇਖ ਦੇਖ "ਬਰਤਾਨੀਆਂ" ਖਾਰ ਖਾਵੇ,
ਐਸੀ ਗਾਮਾ ਦੀ ਲਿਖ ਗੁਲਜ਼ਾਰ ਦੇਈਏ।
ਘੁਮਣ ਘੇਰ ਵਿਚ ਕੌਮ ਦੀ ਫਸੀ ਬੇੜੀ,
ਰਲਕੇ ਏਸ ਨੂ ਪਾਰ ਉਤਾਰ ਦੇਈਏ।

ਓਸ ਮੰਦਰ ਅੰਦਰ ਹੋਵੇ ਮੂਰਤੀ ਜੋ,
ਰਖੇ ਪ੍ਰੇਮ ਹਰਦਮ ਖਾਸੋ ਆਮ ਉਹਦਾ।
ਭੁਲ ਜਾਨ ਸਿਆਹ, ਸੁਫੈਦ ਸਾਰੇ,
ਐਸਾ ਧਿਆਨ ਹੋਵੇ, ਸੁਬਾ ਸ਼ਾਮ ਉਹਦਾ।
ਸਿਰ ਨੂੰ ਤਲੀ 'ਤੇ ਰੱਖਕੇ ਰਿਵੇ ਫਿਰਦਾ,
ਭੇਟ ਵਾਸਤੇ ਹਰ ਇਕ ਗੁਲਾਮ ਉਹਦਾ।
ਹੋਵੇ ਗਲੇ ਜਨੇਊ, ਤੇ ਹੱਥ ਤਸਬੀਹ,
ਹੋਵੇ "ਦੇਵੀ ਅਜ਼ਾਦੀ" ਦੀ ਨਾਮ ਉਹਦਾ।

ਜ਼ਿੰਦਾ ਕੌਮ ਬਣਕੇ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨ ਅੰਦਰ,
ਸਾਰੇ ਜੱਗ ਤੇ ਖੋਲ੍ਹ ਅਸਰਾਰ ਦੇਈਏ।
ਘੁੱਮਣ ਘੇਰ ਵਿੱਚ ਕੌਮ ਦੀ ਫਸੀ ਬੇੜੀ,
ਰਲਕੇ ਏਸ ਨੂੰ ਪਾਰ ਉਤਾਰ ਦੇਈਏ।

ਜਾਏ ਦਾਗ ਨ ਲੱਖ ਇਲਾਜ ਕਰੀਏ,
ਲੱਗਾ ਕਾਰੀ ਜੋ ਜ਼ਖਮ ਤਲਵਾਰ ਹੋਵੇ।
ਰਹੀਏ ਬਾਜ਼ ਓਸ ਯਾਰ ਦੀ ਦੋਸਤੀ ਤੋਂ,
ਦਿੱਤਾ ਤੋੜ ਜਿਸ ਕੌਲ ਕਰਾਰ ਹੋਵੇ।
ਫੁਲ ਓਸੇ ਫੁਲਵਾੜੀ ਚੋਂ ਟੁਟਦੇ ਨੇ,
ਆਈ ਮੌਸਮੀ ਜਿਸਤੇ ਬਹਾਰ ਹੋਵੇ।
ਆਪਾ ਵਾਰ ਮੁਸੀਬਤਾਂ ਝਲਦਾ ਜੋ,
ਉਹੋ ਕੌਮ ਦਾ ਮੁਖੀ ਸਰਦਾਰ ਹੋਵੇ।
"ਮਖਣ ਸਿੰਘ" ਜ਼ਰ ਦੌਲਤਾਂ ਚੀਜ਼ ਕੀ ਨੇ,
ਆਓ ਸੀਸ ਸਵੈਰਾਜ ਤੋਂ ਵਾਰ ਦੇਦੀਏ।
ਘੁੰਮਣ ਘੇਰ ਵਿੱਚ ਕੌਮ ਦੀ ਫਸੀ ਬੇੜੀ,
ਰਲਕੇ ਏਸ ਨੂੰ ਪਾਰ ਉਤਾਰ ਦੇਈਏ।

— ਸ੍ਰ: ਮਖਣ ਸਿੰਘ
(सरदार मखन सिंह)

"ਦੁਖਾਂ ਦੇ ਕੀਰਨੇ"
ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਕ : ਫੀਰੋਜ਼ਦੀਨ 'ਸ਼ਰਫ'।
ਪੰਜਾਬ ਖਾਲਸਾ ਪ੍ਰੈਸ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।

"दुखां दे कीरने"
प्रकाशक : फिरोज़दीन 'शरफ'।
पंजाब खालसा प्रैस, अमृतसर।

(अवाप्ति संख्या : 1976)

ਸਾਨੂੰ ਲੋੜ ਪਤੰਗ ਬਣ ਜਾਵਣੇ ਦੀ।

ਸਮਾਂ ਬਦਲਿਆ ਆਣ ਕੇ ਹਿੰਦ ਉਤੇ,
ਆਈ ਰੁਤ ਸ਼ਹੀਦੀਆਂ ਪਾਵਣੇ ਦੀ।
ਦੀਵਾ ਜ਼ਾਲਮਾਂ ਜ਼ੁਲਮ ਜਗਾਇਆ ਹੈ,
ਸਾਨੂੰ ਲੋੜ ਪਤੰਗ ਬਣ ਜਾਵਣੇ ਦੀ।
ਜਿੰਦ ਵਾਰ ਕੇ ਦੇਸ਼ ਤੇ ਕੌਮ ਉਤੋਂ,
ਲੋੜ ਹਿੰਦ ਆਜ਼ਾਦ ਕਰਾਵਣੇ ਦੀ।
ਗਲੀ ਅਸਾਂ ਪਿਆਰੇ ਦੀ ਜਾਵਣਾ ਹੈ,
ਲੋੜ ਤਲੀ ਤੇ ਸੀਸ ਟਕਾਵਣੇ ਦੀ।
ਜਿੰਦ ਜਾਨ ਨੂੰ ਵਾਰ ਸਵਰਾਜ ਲੈਣਾ,
ਲੋੜ ਨਹੀਂ ਹੈ ਕੁਲੀ ਕਹਾਵਣੇ ਦੀ।
ਡੇਮ ਫੂਲ ਕਾਲਾ ਲੋਕ ਕੀ ਹੁੰਦਾ?
ਲੋੜ ਕੀ ਸਾਨੂੰ ਠੁੱਡੇ ਖਾਵਣੇ ਦੀ।
ਲੋੜ ਹੈ ਤਾਂ ਇਕ ਸਵਰਾਜ ਸੰਦੀ,
ਤਦੋਂ ਲੋੜ ਹੈ ਖਦੜ ਹੰਢਾਵਣੇ ਦੀ।
ਸੂਰਤ ਸਿੰਘ ਸ਼ਾਂਤੀ ਹੂਪ ਮਾਰ ਗੋਲਾ,
ਲੋੜ ਪਈ ਹੈ ਜ਼ੁਲਮ ਉਡਾਵਣੇ ਦੀ।

"ਅਕਾਲੀ ਭਬਕ"
ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਕ : ਭਾਈ ਨਿਹਾਲ ਸਿੰਘ।
ਪੰਜਾਬ ਖਾਲਸਾ ਪ੍ਰੈਸ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।

"अकाली भबक"
प्रकाशक : भाई निहाल सिंह।
पंजाब खालसा प्रैस, अमृतसर।

(अवाप्ति संख्या : 2237)

ਸਾਡੇ ਬੰਦੀਵਾਨ ਲੀਡਰ ਤੇ ਅਸੀ

ਆਵੇ ਯਾਦ ਜਦੋਂ ਹਾਵੇ ਲੈਂਦਿਆਂ ਨੂੰ,
ਡਾਢੀ ਲਗੇ ਕਾਤੀ ਛਾਤੀ ਚੀਰ ਨਿਕਲੇ।
ਆਵੇ ਚੈਨ ਨਾਹੀ ਨੈਨ ਰੋਂਦਿਆਂ ਨੂੰ,
ਸੜੇ ਜਿਗਰ ਧੂੰਆ ਬਣਕੇ ਨੀਰ ਨਿਕਲੇ।
ਭਾਵੇ ਖਾਵਣਾ ਪੀਵਣਾ ਜੀਵਣਾਨ,
ਸੀਨਾ ਪਾੜਕੇ ਬ੍ਰਿਹੋਂ ਦਾ 'ਤੀਰ', ਨਿਕਲੇ।
ਬਲੇ ਭਾਹ ਡਾਢੀ ਨਿਕਲੇ ਆਹ ਜਿਗਰੋ,
ਕੈਦ ਕਫਸ ਅੰਦਰ ਨਾਹੀ ਵੀਰ ਨਿਕਲੇ।
ਖੜਕ, ਅਮਰ, ਮ੍ਰਿਦੂਲ, ਜਸਵੰਤ, ਹੀਰੇ,
'ਲਾਜ, ਦਾਸ, ਗਾਂਧੀ, ਬਾਬਾ, ਲਾਲ ਕਿਤਨੇ।'
ਜਬਰ ਜਾਬਰਾ ਦੇ ਸਹਿੰਦੇ ਛਾਤੀਆਂ ਤੇ,
ਦੁਖੀ ਕੌਮ ਸੰਦੇ ਨੌਂ ਨਿਹਾਲ ਕਿਤਨੇ।
ਛਡੇ ਮਖਮਲਾਂ ਅਤਲਸਾਂ ਕੀਮ ਖਾਬਾਂ,
ਸੇਜਾਂ ਸੋਹਣੀਆਂ ਅਤੇ ਰੰਗ ਰਲੀਆਂ ਨੇ।
ਦੇਸ ਕੌਮ ਤੋਂ ਹੋ ਕੁਰਬਾਨ ਬੈਠੇ,
ਕਾਲ ਕੋਠੀਆਂ ਜਿਹਲ ਵਿਚ ਮਲੀਆਂ ਨੇ।
ਨਾਹਰਾ ਸ੍ਰੀ ਅਕਾਲ ਦਾ ਲਾਣ ਬਦਲੇ,
ਸਿਰ ਤੇ ਲਖ ਮੁਸੀਬਤਾਂ ਝਲੀਆਂ ਨੇ।
ਧਰੀ ਧਰਮ ਲਈ ਤਲੀ ਤੇ ਜਿੰਦੜੀਏ,
ਦਿਤੀਆਂ ਸਖਾਂ ਤਾਈ ਤਿਲੰ ਜਲੀਆਂ ਨੇ।
ਨੰਗੇ ਰਹਿੰਦਿਆਂ ਤੇ ਕਸਟ ਸਹਿੰਦਿਆਂ ਬੀ,
ਮਾਰਾਂ ਪੈਂਦਿਆਂ ਬਚਨ ਤੋਂ ਹਾਰਦੇ ਨਹੀਂ।
ਸਬਰ ਵੇਖ ਅਨੋਖੜਾ ਯਾਰਿਆਂ ਨੇ,
ਮਾਰਾਂ ਖਾਂਵਦੇ ਤੇ ਅਗੋਂ ਮਾਰਦੇ ਨਹੀ।
ਕੌਮ ਵਾਸਤੇ ਦੁਖ ਨੂੰ ਸੁਖ ਜਾਨਣ,
ਬੰਦੀ ਵਾਨ ਹੋਇ ਜਿਹਲ ਖਾਨਿਆਦੇ।
ਹਤਕ ਹੋਂਵਦੀ ਤਦੋਂ ਬੀਸ਼ਾਂਤ ਰਹਿੰਦੇ,
'ਤੀਰ', ਖਾਂਵਦੇ ਮਿਹਣਿਆਂ ਤਾਹਨਿਆਂ ਦੇ।

ਜਲੀ ਸ਼ਮਾ ਅਜ਼ਾਦੀ ਦੀ ਵੇਖਣੇ ਲਈ,
ਆਪਾ ਵਾਰਦੇ ਵਾਂਗ ਪ੍ਰਵਾਨਿਆਂ ਦੇ।
ਪੁਟਨ ਦਾੜੀਆਂ ਤੇ ਦੇਵਣ ਦੁਖ ਜਾਬਰ,
ਝਲਨ ਹਸ ਕੇ ਵਾਂਗ ਮਸਤਾਨਿਆਂ ਦੇ।
ਕੌਮੀ ਆਨ ਬਦਲੇ ਅਪਣੀ ਸ਼ਾਨ ਬਦਲੇ,
ਹਿੰਦਸਤਾਨ ਬਦਲੇ ਤੇ ਕ੍ਰਿਪਾਨ ਬਦਲੇ।
ਚਕੀ ਵਾਹੁੰਦੇ ਕੋਹਲ ਭੁਆਂਵਦੇ ਪਏ,
ਦੇਸ ਧਰਮਦੀ ਸੇਵਾ ਕਮਾਨ ਬਦਲੇ।
ਪਾਸਾ ਫੇਰ ਖਾਂ ਗਾਫਲਾ ਸੇਵ ਖਾਤਰ,
ਵਾਂਗ ਆਪਣੀ ਮੋੜ ਖਾਂ ਦਿਲ ਅੜਿਆ।
ਕਮਰ ਕਸਕੇ ਛੇਤੀ ਤਿਆਰ ਹੋਜਾ,
ਕਾਰਜ ਏਸ ਵਿਚ ਕਰੀਂ ਨ ਢਿਲ ਅੜਿਆ।
ਕਡਦੇ ਬਾਹਰ ਕਦਾ ਚਾ ਭਾਈਆਂ ਨੂੰ,
ਆਪ ਚਲ ਜਾਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਮਿਲ ਅੜਿਆ।
ਬੰਦੀ ਵਾਨ ਰਹਿਕੇ ਜਰਬਰ ਤੀਰ ਸਹਿਕੇ,
ਚਲਕੇ ਚਟ ਅਲੂਣੀ ਸਿਲ ਅੜਿਆ।
ਸਾਂਈ ਮਿਹਰ ਕਰਸੀ ਤਰਸੀ ਹਿੰਦ ਬੇੜਾ,
ਬੇੜਾ ਜ਼ੁਲਮ ਦਾ ਆਖਰ ਤਬਾਹ ਹੋਸੀ।
ਜਲਦੀ ਆਹ ਮਜਲੂਮ ਦੀ ਜਦੋਂ ਨਿਕਲੀ,
ਜਾਬਰ ਸੜ ਮਰਸੀ ਤੇ ਸਵਾਹ ਹੋਸੀ।

— ਭਾਈ ਵਿਧਾਤਾ ਸਿੰਘ "ਤੀਰ"
(भाई विधाता सिंह "तीर")

"ਤੀਰ ਤ੍ਰੰਗ"
ਰਚਿਤ ਤੇ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਕ :
ਭਾਈ ਵਿਧਾਤਾ ਸਿੰਘ "ਤੀਰ"।
ਕਾਰੋਨੇਸ਼ਨ ਪ੍ਰਿੰਟਿੰਗ ਵਰਕਸ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।

"तीर तरंग"
रचित और प्रकाशक :
भाई विधाता सिंह "तीर"।
कारोनेशन प्रिंटिंग वर्क्स, अमृतसर।

(अवाप्ति संख्या : 1957)

ਅਜ਼ਾਦੀ ਦੇ ਦਾਨ ਦੀ ਮੰਗ!

ਕੇਹੜੇ ਹਾਲ ਵਿਚ ਤੁਸੀ ਹੋ ਮਸਤ ਬੈਠੇ,
ਸੁਨੋ ਵੀਰ ਮੇਰੇ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨ ਵਾਲੇ।
ਸਾਡੇ ਦੇਸ਼ ਵਿਚ ਦੁਖਾਂ ਨੇ ਲਾਏ ਡੇਰੇ,
ਕਰਦੇ ਖੁਸ਼ੀਆਂ ਬੈਠੇ ਈਰਾਨ ਵਾਲੇ।
ਜਰਮਨ ਅਤੇ ਅਮ੍ਰੀਕਾ-ਅਜ਼ਾਦ ਸਾਰੇ,
ਰੰਗ ਰਲੀਆਂ ਕਰਨ ਜਪਾਨ ਵਾਲੇ।
ਸਾਡਾ ਹਿੰਦ ਸੁਤਾ ਅਜੇ ਜਾਗਦਾ ਨਹੀਂ,
ਕਿਉਂ ਨਹੀ ਹਕਲੈਂਦਾ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨ ਵਾਲੇ।
ਪਾਰੇ ਜਾਬਰਾਂ ਨੇ ਦੇਣਾ ਹਕ ਕੀਦੇ?
ਸਾਰੇ ਮੰਗੀਏ ਉਸ ਕਰਤਾਰ ਪਾਸੋਂ।
ਹਿੰਦੁਸਤਾਨ ਨੂੰ ਕਰੀ ਅਜ਼ਾਦ ਰੱਬਾ,
ਮੰਗਦੇ ਹੱਕ ਹਾਂ ਸਚੀ ਸਰਕਾਰ ਪਾਸੋਂ।

— ਮੁਕੰਦ ਸਿੰਘ 'ਦਰਦੀ'
(मुकंद सिंह 'दरदी')

"ਅਕਾਲੀ ਤੇ ਪ੍ਰਦੇਸੀ" (ਰੋਜ਼ਾਨਾ ਅਖਬਾਰ)
ਜਿਲਦ : ੧, ਨੰ: ੧੮੫, ੧੧ ਮਾਰਚ, ੧੯੨੩
ਓਅੰਕਾਰ ਪ੍ਰੈਸ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।

"अकाली ते परदेसी" (रोजाना अखबार)
जिल्द : 1, नं. 185, 11 मार्च, 1923
ओंकार प्रैस, अमृतसर।

(अवाप्ति संख्या : 2141)

ਅਜੇ ਹੋਰ ਸ਼ਹੀਦੀਆਂ ਮੰਗਦਾ ਜੇ!

ਭੌਰ ਵਾਸਨਾ ਫੁਲਾਂ ਦੀ ਲੈਨ ਖਾਤਰ,
ਦੁਖ ਝਲਦਾ ਸਾਰਿਆ ਅੰਗਦਾ ਜੇ।
ਮਛੀ ਜਲ ਬਾਸੋਂ ਨਾਹੀ ਪਲ ਜੀਵੇ,
ਸਚਾ ਸ਼ਮਹ ਸੰਗ ਪ੍ਰੇਮ ਪਤੰਗ ਦਾ ਜੇ।
ਮਿਰਗ ਨਾਦ ਵਿਸਮਾਦ ਤੇ ਮਸਤ ਹੋਵੇ,
ਕਾਫਰ ਕੁਫਰ ਤੋਂ ਕਦੇ ਨਾਂ ਸੰਗਦਾ ਜੇ।
ਸੱਤਰ ਸਾਲ ਦਾ ਇਸ਼ਕ ਨਿਭਾਨ ਖਾਤਰ,
ਅਜੇ ਹੋਰ ਸ਼ਹੀਦੀਆਂ ਮੰਗਦਾ ਜੇ।
ਹੱਥ ਕੰਙਗੇ ਨੂੰ ਦਸੋ ਆਰਸੀ ਕੀ?
ਅਜ਼ਮਾਏ ਨੂੰ ਹੋਰ ਅਜ਼ਮਾਉਣਾ ਕੀ।
ਇਕੋ ਵਾਰ ਕਰ ਗਲ ਜੇਹੜੀ ਜੀ ਚਾਹੇ,
ਘੜੀ ਮੁੜੀ ਦਾ ਰੋੜਕਾ ਪਾਉਣਾ ਕੀ।

ਤੈਨੂੰ ਪਤਾ ਇਹ ਤ੍ਰਮ ਪ੍ਰਵਾਨਿਆਂ ਦੀ,
ਜੀਵਨ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਹੋਰ ਹੀ ਢੰਗ ਦੇ ਜੇ।
ਜੇਹੜੀ ਆਵਦੇ ਉਹਾਂ ਕਰ ਦਸਨ,
ਜਿੰਦ ਧਰਮ ਖਾਤਰ ਸੂਲੀ ਟੰਗਦੇ ਜੇ।
ਪੁਰਬੀ ਲਗੀ ਨੂੰ ਵੇਖਕੇ ਚਾ ਚੜ੍ਹਦਾ,
ਤ੍ਰਿਖਾ ਵੰਤ ਰਹਿੰਦੇ ਸਦਾ ਜੰਗ ਦੇ ਜੇ।
ਹੱਥੀ ਵਰਤ ਕੇ ਅਜੇ ਨਾਂ ਸ਼ਰਮ ਆਵੇ,
ਵੇਖੋ ਹੋਰ ਸ਼ਹੀਦੀਆਂ ਮੰਗਦੇ ਜੇ।
ਜਬਰ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਰਾਜੇ ਰਾਣਿਆਂ ਦੇ,
ਘਾਣ ਅਸਾਂ ਦੇ ਸਬਰ ਨੇ ਲਾਹੇ ਬਹੁਤੇ।
ਹੁਣ ਕਰੋ ਤਿਆਰੀਆਂ ਤੁਸੀ ਇਥੋਂ,
ਵਲ ਛਲ ਕਰ ਦਿਨ ਲੰਘਾਏ ਬਹੁਤੇ।

ਦੁਧ ਦੇ ਕੇ ਪਾਲੀਏ ਸੱਪ ਜ਼ੇਹਰੀ,
ਡੰਗ ਮਾਰਨੋ ਕਦੇ ਨ ਸੰਗਦਾ ਜੇ।

ਕਰਨ ਵਣਜ ਵਪਾਰ ਸੀ ਆਏ ਇਥੇ,

ਪਤਾ ਨਹੀਂ ਸੀ ਰਾਜ ਦੇ ਢੰਗ ਦਾ ਜੇ।

ਪਾੜ ਪਾੜ ਕੇ ਰਾਜ ਕਮਾਨ ਲਗੇ,

ਪੜਦਾ ਕਜ ਕੇ ਆਪਣੇ ਨੰਗ ਦਾ ਜੇ।

ਟੁਰਦੀ ਵੇਰ! ਨਾ ਅਜੇ ਵੀ ਸ਼ਰਮ ਆਵੇ,

ਵੇਖੋ ਹੋਰ ਸ਼ਹੀਦੀਆਂ ਮੰਗਦਾ ਜੇ।

ਜਿਸਦਾ ਜੀ ਚਾਹੇ ਇਨਾਂ ਨਾਲ ਵਰਤੇ,

ਪਿਛਾਂ ਛੋੜਿਆ ਅਸਾਂ ਨੇ ਯਾਰੀਆਂ ਦਾ।

ਰੱਬਾ ਦੂਰ ਕਰ ਅਸਾਂ ਦੇ ਸਿਰਾਂ ਉਤੋਂ,

ਜਾਬਰ ਰਾਜ! ਇਹ ਜਬਰ ਵਪਾਰੀਆਂ ਦਾ।

— ਭਾ: ਕਰਤਾਰ ਸਿੰਘ
(भाई करतार सिंह)

''ਅਕਾਲੀ ਤੇ ਪ੍ਰਦੇਸੀ'' (ਰੋਜਾਨਾ ਅਖਬਾਰ)
ਜਿਲਦ : ੧, ਨੰ: ੧੮੫, ੧੧ ਮਾਰਚ, ੧੯੨੩.
ਓਅੰਕਾਰ ਪ੍ਰੈਸ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।

''अकाली ते परदेसी'' (रोजाना अखबार)
जिल्द : 1, नं. 185, 11 मार्च, 1923.
ओंकार प्रैस, अमृतसर।

(अवाप्ति संख्या : 2141)

ਦਰਦ ਦੇਸ ਦਾ ਲਗਾ ਸੀਨੇ, ਹੁਣ ਨਹੀਂ ਮਾਲ ਲੁਟਾਵਾਂਗੇ!

ਮੋਟਾ ਗਾੜ੍ਹਾ ਖਦਰ ਪਾਕੇ, ਗੀਤ ਅਜ਼ਾਦੀ ਗਾਵਾਂ ਗੇ।
ਮਲਮਲ ਲੱਠਾ ਮੱਲ ਮੱਲ ਕਰਕੇ, ਹਿੰਦ ਚੋਂ ਦੂਰ ਕਰਾਵਾਂ ਗੇ।

ਮਿੱਟੀ ਰੰਗਾ ਖਦਰ ਚੰਗਾ, ਲੋੜ ਨ ਗੋਰੇ ਧਨ ਦੀ ਏ।
ਕਾਲਾ ਤਿਲ ਚੰਗੇਰਾ ਲਗੇ, ਚਿਟਾ ਕੋਹੜ ਹਟਾਵਾਂ ਗੇ।

ਗਾਂਧੀ, ਸੌਕਤ, ਖੜਕ ਸਿੰਘ ਜੀ, ਲੀਡਰ ਬਣ ਗਏ ਖਦਰ ਪਾ।
ਮਲਮਲ ਮਲਮਲ ਅਤਲਸ ਪਾ, ਨਹੀਂ ਝੋਲੀ ਚੁਕ ਅਖਵਾਵਾਂਗੇ।

ਛਡਕੇ ਐਸ਼ ਇਸ਼ਰਤਾ ਸਾਰੇ, ਲਾਹ ਭੜਕੀਲੇ ਚੀਰ ਸਭੇ।
ਗਾੜ੍ਹਾ ਪਾਕੇ ਬਿਖਰੇ ਬਿਖਰੇ, ਮਿਲ ਗਾੜ੍ਹੇ ਹੋ ਜ਼ਾਵਾਂ ਗੇ।

ਚਰਖੇ ਨੂੰ ਜਦ ਦਿਤੀ ਫੇਰੀ, ਚਰਖਾ ਇਉਂ ਫਿਰ ਕਹਿਣ ਲਗਾ।
ਇਹ ਫੇਰੀ ਹੈ ਕਿਸਮਤ ਕੇਰੀ, ਦੌਰ ਹੁਣ ਪਲਟਾਵਾਂ ਗੇ।

ਝਾਰ-ਪੇਡੂ ਜਦ ਛਲੀਆਂ ਵਾਲੇ, ਚਲੇ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨ ਅੰਦਰ।
ਕੁਲ ਜਹਾਜ ਬਦੇਸ਼ੀ ਸੌਦੇ, ਪਲ ਵਿਚ ਗਰਕ ਕਰਾਵਾਂ ਗੇ।

ਚਰਖਾ ਇਸ ਨੂੰ ਮੂਲ ਨ ਕਹੀਓ, ਗਨ ਮਸ਼ੀਨ ਇਹ ਹਿੰਦੀਆਂ ਦੀ।
ਮਨਚਿਸਟਰ ਕੀ ਇਹਦੇ ਅਗੇ, ਐਂਟਵਰਪ ਨੂੰ ਢਾਹਵਾਂ ਗੇ।

ਭੰਦ ਬਦੇਸ਼ੀ ਵਿਚ ਸਭ ਹਿੰਦੀ, ਬਧੇ ਰਾਜ ਗੁਲਾਮੀ ਨੇ।
ਤਾਰ ਖਦਰ ਦੀ ਤੰਦ ਨੂੰ ਕਟਸੀ, ਫਿਰ ਸਵਰਾਜ ਲਿਆਵਾਂ ਗੇ।

ਕੁੰਕੜੂੰ ਘੂੰ ਹੁਣ ਹੋਈ ਸਮਝੋ, "ਭਾਨ" ਅਜ਼ਾਦੀ ਚਮਕੇ ਗਾ।
ਤਪਤ ਜੁਲਮ ਦੀ ਦੂਰ ਹਟਾਕੇ, ਸ਼ਾਂਤ ਠੰਡ ਵਰਤਾਵਾਂ ਗੇ।

— ਮਾਸਟਰ ਨਰਾਇਣ ਸਿੰਘ "ਭਾਨ"
(मास्टर नरायण सिंह "भान")

"ਅਕਾਲੀ ਤੇ ਪ੍ਰਦੇਸੀ" (ਰੋਜ਼ਾਨਾ ਅਖਬਾਰ)
ਜਿਲਦ : ੧, ਨੰ: ੧੮੮, ੧੫ ਮਾਰਚ, ੧੯੨੩.
ਓਅੰਕਾਰ ਪ੍ਰੈਸ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।

"अकाली ते परदेसी" (रोजाना अखबार)
जिल्द : 1, नं. 188, 15 मार्च, 1923.
ओंकार प्रैस, अमृतसर।

(अवाप्ति संख्या : 2136)

ਵਤਨ!

ਪਿਆਰੇ ਵਤਨ ਵੇ ਕਦੀ 'ਆਜ਼ਾਦ' ਸੈਂ ਤੂੰ,
ਰਸ਼ਕ ਸਵਰਗ ਦੇ ਤਾਈਂ ਦਵਾਵੰਦਾ ਸੈਂ।
ਬਨਕੇ ਵਿੱਚ ਸ੍ਰੋਵਰ ਦੇ ਕੌਲ ਫੁਲੜਾ,
ਕਈਆਂ ਭੌਰਿਆਂ ਦਿੱਲ ਪ੍ਰਚਾਵੰਦਾ ਸੈਂ।
ਏਸ ਦੁਨੀਆਂ ਦੇ ਸੋਹਣੇ ਬਾਗ਼ ਅੰਦਰ,
ਵਿੱਚ ਤਾਰਿਆਂ ਚੰਨ ਸੁਹਾਵੰਦਾ ਸੈਂ।
ਜੋਬਨ ਕੜਕਿਆ ਤੇਰੀ ਬਹਾਰ ਦਾ ਸੀ,
ਬੁਲਬੁਲ ਕੋਕਲਾਂ ਤਾਈਂ ਰਿਝਾਵੰਦਾ ਸੈਂ।
ਚਿੜੀ ਸੋਨੇ ਦੀ ਤੈਨੂੰ ਸਭ ਆਖਦੇ ਸਨ,
ਵਿੱਚ ਤੁਧ ਦੇ ਬਰਕਤਾਂ ਸਾਰੀਆਂ ਸਨ।
ਤੇਰੀ ਮੈਹਕਦੀ ਖਿੜੀ ਗੁਲਜ਼ਾਰ ਵਿੱਚੋਂ,
ਸੁੰਦਰ ਔਂਦੀਆਂ ਵਾਸ਼ਨਾਂ ਭਾਰੀਆਂ ਸਨ।

ਧਰਮੀ ਬੀਰ ਜੋਧੇ ਤੇਰੇ ਸੀਗ ਪੁਤ੍ਰ,
ਵਗਦੀ ਪ੍ਰੇਮ ਦੀ ਸੀ ਵਿਚਦੀ ਨੈਹਰ ਸੋਹਣੀ।
ਪਈ ਉਛਲਦੀ ਸੀ ਪਿਆਰੇ ਖੁਸ਼ੀ ਅੰਦਰ,
ਅਪਨੇ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰੇਮ ਦੀ ਲੈਹਰ ਸੋਹਣੀ।
ਸੱਕੇ ਵੀਰ ਸੀ ਸਮਝਦੇ ਆਪ ਵਿੱਚਦੀ,
ਵਗਦੀ ਨਾਲ ਠਾਠਾਂ ਪ੍ਰੀਤ ਬੈਹਰ ਸੋਹਣੀ।
ਬਝੇ ਪ੍ਰੇਮ ਦੀ ਤਾਰ ਦੇ ਵਿੱਚ ਹੈਸਨ,
ਲੈਹਰ ਵੱਗਦੀ ਸੀ ਪਿੰਡ ਸ਼ੈਹਰ ਸੋਹਣੀ।
ਜੇਹੜਾ ਵੇਖਦਾ ਸੀ ਐਧਰ ਅੱਖ ਕਰਕੇ,
ਅੱਖ ਓਸਦੀ ਕੱਢਦੇ ਲਾਲ ਤੇਰੇ।
ਥਰ ਥਰ ਕੰਬਦੇ ਸੀ ਹਰਦਮ ਨਾਮ ਸੁਣਕੇ,
ਸੁਖੀ ਉਦੋਂ ਹੈਸੀ ਵਾਲ ਵਾਲ ਤੇਰੇ।
ਨਹੀਂ! ਏਸ ਸੰਸਾਰ ਦਾ ਜ਼ਿਕਰ ਕਾਹਦਾ,
ਦਾਨੂੰ ਦੇਵਤੇ ਵੀ ਭੈ ਖਾਵੰਦੇ ਸਨ।
ਜਦੋਂ ਹਾਕ ਸੁਣਦੇ ਤੇਰੇ ਪੁਤ੍ਰਾਂ ਦੀ,
ਕੰਨੀ ਪਿਆਂ ਹੀ ਦੁਮ ਦਬਾਵੰਦੇ ਸਨ।

ਲੋਕ ਲੋਕ ਦੇ ਆਣਕੇ ਕੁਲ ਯੋਧੇ,
ਤੇਰੇ ਦਰ ਆ ਸੀਸ ਝੁਕਾਵੰਦੇ ਸਨ।
ਉਚੀ ਬੋਲ ਨਾ ਸਕਦੇ ਸੀਗ ਦੁਸ਼ਮਨ,
ਟੇਢੀ ਅੱਖ ਕਰਕੇ ਨਾ ਤਕਾਵੰਦੇ ਸਨ।
ਜੇਹੜੇ ਅੱਜ ਆਕੇ ਛਾਤੀ ਮੂੰਗ ਦੱਲ ਰਹੇ,
ਪੱਖੇ ਫੇਰਦੇ ਤੇ ਪਾਣੀ ਢੋਵੰਦੇ ਸੀ।
ਸੀਗਾ ਵਿਚ ਸ਼ੁਮਾਰ ਬਣਮਾਣਸਾਂ ਦੇ,
ਤੇਰੇ ਚਰਨ ਆ ਆ ਓਦੋਂ ਧੋਵੰਦੇ ਸੀ।
ਐਪਰ ਅੱਜ ਗੁਲਾਮੀਆਂ ਵਿਚ ਫਸਕੇ,
ਵਾਕਰ ਮੱਛਲੀ ਪਿਆ ਤੜਫਾਵੰਦਾ ਏਂ।
ਤੱਪੀ ਜ਼ੁਲਮ ਦੀ ਭੜਕਦੀ ਭੱਠ ਅੰਦਰ,
ਵਾਂਗ ਭਲਿਆਂ ਪਿਆ ਤਲੀਵੰਦਾ ਏਂ।
ਫਸਕੇ ਜਾਲ ਅੰਦਰ ਬਿੱਟਰ ਬਿੱਟਰ ਤੱਕੇਂ,
ਅੱਗ ਜਬਰ ਦੀ ਨਾਲ ਜਲੀਵੰਦਾ ਏਂ।
ਤੇਰੇ ਹਾਲ ਨੂੰ ਤੱਕਕੇ ਰੋਣ ਆਵੇ,
ਨਾ ਤੂੰ ਮੋਇਆਂ ਅੰਦਰ ਨਾ ਤੂੰ ਜੀਵੰਦਾ ਏਂ।
ਤੇਰੇ ਹਾਲ ਤਾਈਂ ਜੇਹੜਾ ਆਨ ਤਕੇ,
ਨੀਰ ਅਖੀਆਂ ਸੰਦਾ ਨਚੋੜ ਦੇਵੇ।
ਨਾਲ ਦਰਦ ਦੇ ਆਪਾ ਜਲਾ ਕਰਕੇ,
ਵਿੱਚ ਅਗਨ ਦੇ ਠੀਕ ਨਘੋੜ ਦੇਵੇ।
ਪਈਆਂ ਨਿਕਲਦੀਆਂ ਹੈਨ ਚਾਰ ਤਰਫੋਂ,
ਦੁਖੀ ਅਤੇ ਮਜ਼ਲੂਮਾਂ ਦੀਆਂ ਹਾਈਆਂ ਨੇ।
ਜ਼ਖ਼ਮ ਆਨ ਲਾਏ ਉਤੋਂ ਲੂਣ ਪਾਇਆ,
ਇਨ੍ਹਾਂ ਪਾਰ ਸੰਦੇ ਆਏ ਰਾਹੀਆਂ ਨੇ।
ਛੁਰੀ ਆਨ ਸ਼ਾਹ ਰੱਗ ਤੇ ਮਾਰੀਆ ਨੇ,
ਮੂਜ਼ੀ ਜ਼ਾਲਮਾਂ ਹਾਇ! ਕਸਾਈਆਂ ਨੇ।
ਕੇਹੜਾ ਆਨਕੇ ਦੇ ਬੁਝਾ ਯਾਰੋ,
ਭਠਾਂ ਜੇਹੜੀਆਂ ਜ਼ਾਲਮਾਂ ਤਾਈਆਂ ਨੇ।
ਕੋਈ ਅੱਜ ਆਵੇ ਦਸਮ ਗੁਰੂ ਵਰਗਾ,
ਵਾਰ ਵਤਨ ਖਾਤਰ ਪਿਆਰੇ ਲਾਲ ਦੇਵੇ।

ਵੰਡੇ ਦਰਦ ਆਕੇ ਦੁਖੀ ਦਰਦੀਆਂ ਦਾ,
ਕਰ ਉਜੜਿਆਂ ਨੂ ਮਾਲਾ ਮਾਲ ਦੇਵੇ।
ਕੋਈ ਅੱਜ ਤਕੇ ਸੇਵਾ ਜੀ ਵਰਗਾ,
ਪਿਆਰੇ ਵਤਨ ਬਦਲੇ ਵਾਰ ਜਾਨ ਦੇਵੇ।
ਸ਼ਮਾਂ ਸਮਝਕੇ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਸੇਵ ਕਰਨੀ,
ਕੋਈ ਵਾਂਗ ਪਤੰਗ ਆ ਪ੍ਰਾਨ ਦੇਵੇ।
ਸਰਵਨ ਪੁਤ ਹੋਵੇ ਅੱਜ ਕੋਈ ਪੈਦਾ,
ਜਾਨ ਸ਼ਾਨ ਤੋਂ ਕਰ ਕੁਰਬਾਨ ਦੇਵੇ।
ਸਾਡੇ ਦੁਖਾਂ ਦਾ ਕਰੇ ਇਲਾਜ ਕੋਈ,
ਮਾਣ ਵਾਲਿਆਂ ਦਾ ਤੋੜ ਮਾਣ ਦੇਵੇ।
'ਸ਼ਾਂਤਮਈਂ' ਦੀ ਹਥ ਤਲਵਾਰ ਫੜਕੇ,
ਗੁਰੂ ਪੰਚਮ ਦੇ ਵਾਂਗ ਨਸਾਰ ਹੋ ਕੇ।
ਫਸੀ ਮਾਤਾ ਨੂੰ ਕਰੇ ਆਜ਼ਾਦ ਛੇਤੀ,
ਧਰਮ ਦੇਸ਼ ਬਦਲੇ ਬਲਿਹਾਰ ਹੋਕੇ।

— ਸ੍ਰ: ਅਵਤਾਰ ਸਿੰਘ "ਆਜ਼ਾਦ"
(सरदार अवतार सिंह "आज़ाद")

"ਕੈਦੀ ਬੀਰ"
ਰਚਿਤ : ਸ੍ਰ: ਅਵਤਾਰ ਸਿੰਘ "ਆਜ਼ਾਦ"।
ਪੰਜਾਬ ਖਾਲਸਾ ਪ੍ਰੈਸ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ, ੧੯੨੪.

"कैदी बीर"
रचित : सरदार अवतार सिंह "आज़ाद"।
पंजाब खालसा प्रैस, अमृतसर, 1924

(अवाप्ति संख्या : 1967)

ਗ਼ਜ਼ਲ!

ਕਿ ਭਾਰਤ ਵਰਸ਼ ਹੁਣ ਤੂੰ ਵੀ, ਤਾਂ ਕੁਛ ਸਮਜਾਨ ਪੈਦਾ ਕਰ।
ਜ਼ੁਲਮ ਦੇ ਬੰਦ ਕਰਨ ਦਾ, ਕੋਈ ਦਿਰਮਾਨ ਪੈਦਾ ਕਰ।
ਕਿਥੇ ਓਹ ਬੀਰ ਤੇਰੇ ਨੇ, ਜਿਨਾਂ ਦੀ ਧਾਕ ਸੁਣ ਸੁਣਕੇ,
ਅਰਸ਼ ਬੁਢਾ ਵੀ ਕੰਬਦਾ ਸੀ, ਉਹਾ ਬਲਵਾਨ ਪੈਦਾ ਕਰ।
ਸਣੇ ਜ਼ਾਲਮ ਜ਼ੁਲਮ ਤਾਈਂ, ਜਿਨਾਂ ਨੇ ਗਰਕ ਸੀ ਕੀਤਾ,
ਓਹੀ ਇਨਸਾਨ ਪੈਦਾ ਕਰ, ਓਹੀ ਜਿੰਦ ਜਾਨ ਪੈਦਾ ਕਰ।
ਕਿ ਰਾਵਣ ਜਹੇ ਪਾਪੀ ਫੜ, ਸਣੇ ਕੁੰਭ ਕਾਨ ਜਿਨਾਂ ਨੇ,
ਪਛਾੜੇ ਵਿਚ ਅਖਾੜੇ ਦੇ, ਓਹ ਰਾਮ ਹਨੂਮਾਨ ਪੈਦਾ ਕਰ।
ਹਰੀ ਚੰਦ ਜਹੇ, ਸਤਯਾਵਾਦੀ, ਕਿ ਭਾਰਤ ਲੋਪ ਨੇ ਕਿਥੇ?
ਜਗਾ ਦੇ ਧਰਮੀਆਂ ਤਾਈਂ, ਕਿ ਹੁਣ ਕੁਛ ਸ਼ਾਨ ਪੈਦਾ ਕਰ।
ਕਿ ਭੀਸ਼ਮ ਸੇ ਸਤੀ ਜੋਧੇ, ਕਿ 'ਅਰਜਨ' ਸੇ ਧਨਸ਼ ਧਾਰੀ,
ਕਿ ਜਾਏ ਆਪਣੇ ਹੁਣ ਭੀਮ, ਸੇ ਇਨਸਾਨ ਪੈਦਾ ਕਰ।
ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਜੀ ਸੇ ਕਿ ਦਰਦੀ ਦੇਸ਼ ਕਰ ਪੈਦਾ,
ਕਿ ਵਾਰਨ ਤਨ ਤੇ ਮਨ ਜੇਹੜੇ ਓਹ ਅਣਖ-ਵਾਨ ਪੈਦਾ ਕਰ।
ਕਿ ਚਾਰੇ ਲਾਲ ਵੀ ਵਾਰੇ ਸਹੇ ਸਨ ਕਸ਼ਟ ਵੀ ਭਾਰੀ,
ਆਹ! ਆਪਾ ਵਾਰ ਵੀ ਦਿਤਾ ਓਹੀ ਸੰਤਾਨ ਪੈਦਾ ਕਰ।
ਹਨ ਤੇਤੀ ਕ੍ਰੋੜ ਜਾਨਾਂ ਇਹ ਨਿਰੀਆਂ ਜਾਨਾਂ ਹੀ ਜਾਨਾਂ,
ਇਨਾਂ ਵਿਚ ਅਣਖ ਤੂੰ ਪਾਕੇ ਕਿ ਧਰਮੀ ਜਾਨ ਪੈਦਾ ਕਰ।
ਕਿ ਬਣ ਕਾਇਰ ਨਾ ਭਜ ਨਿਕਲਨ ਆਜ਼ਾਦੀ ਵਾਲੇ ਜੰਗ ਵਿਚੋਂ,
ਕਿ ਧੀਰਜ ਅਣਖ ਪੈਦਾ ਕਰ ਕਿ ਕੌਮੀ ਆਨ ਪੈਦਾ ਕਰ।
ਆਹ! ਜ਼ਾਲਮ ਲੁਟ ਰਹੇ ਤੈਨੂੰ ਉਠਾ ਹੁਣ ਆਪਣੇ ਪੁਤਰਾਂ ਨੂੰ,
ਕਿ ਆਪਣੇ ਬਾਗ ਦਾ ਰਾਖਾ ਕੋਈ ਨਿਗਾਹਵਾਨ ਪੈਦਾ ਕਰ।
ਤੇਰੇ ਇਸ ਟੇਹਕਦੇ ਗੁੰਚੇ ਦੇ ਤੋੜੇ ਫਲ ਗੁਲਜੀ ਚੀਨੇ,
ਕਿ ਪੈਹਰੇ ਵਾਸਤੇ ਮਾਤਾ ਕੋਈ ਬਲਵਾਨ ਪੈਦਾ ਕਰ।

254/Deptt. of Archives/ND/97

ਏਹੋ "ਆਜ਼ਾਦ" ਦੀ ਖਾਹਸ਼ ਕਿ ਤੂੰ ਆਜ਼ਾਦ ਹੋ ਜਾਏਂ,
ਬਹਾਦਰ ਬੀਰ ਪੈਦਾ ਕਰ, ਕਈ ਬਲਵਾਨ ਪੈਦਾ ਕਰ।

— ਸ: ਅਵਤਾਰ ਸਿੰਘ "ਆਜ਼ਾਦ"
(सरदार अवतार सिंह "आज़ाद")

"ਕੈਦੀ ਬੀਰ"
ਰਚਿਤ : ਸ: ਅਵਤਾਰ ਸਿੰਘ "ਆਜ਼ਾਦ"।
ਪੰਜਾਬ ਖਾਲਸਾ ਪ੍ਰੈਸ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ, ੧੯੨੪.

"कैदी बीर"
रचित : सरदार अवतार सिंह "आज़ाद"।
पंजाब खालसा प्रैस, अमृतसर, 1924

(अवाप्ति संख्या : 1967)

ਹਾਇ! ਕੋਈ ਉਪਾ ਦਸੋ?

ਲੋਕੋ ਦਸਿਓ ਵੇ ਸਾਨੂੰ ਢੰਗ ਕੋਈ,
ਜਿਵੇਂ ਸਾਡੜੀ ਪੀੜ ਕਾਫੂਰ ਹੋਵੇ।
ਵਗਦਾ ਅਖੀਆਂ ਚੋਂ ਬੰਦ ਨੀਰ ਹੋਵੇ,
ਜਲਨ ਬ੍ਰਿਹੋਂ ਫਿਰਾਕ ਦੀ ਦੂਰ ਹੋਵੇ।
ਕੇਰਾਂ ਵਤਨ ਦੀ ਜਾਇਕੇ ਦੀਦ ਕਰੀਏ,
ਜਲਦੇ ਦਿਲਾਂ ਦੀ ਅਗਨ ਠਰੂਰ ਹੋਵੇ।
ਸਾਂਈ ਵਾਲਿਓ ਕਰੋ ਮੁਰਾਦ ਪੂਰੀ,
ਤਪਦਾ ਜ਼ੁਲਮ ਦਾ ਬੰਦ ਤਨੂਰ ਹੋਵੇ।

ਦੁਨੀਆਂ ਵਾਲਿਓ ਪੁਛਦੇ ਕੀ ਸਾਥੋਂ,
ਮੁਦਤ ਹੋਗਈ ਵਿਚ ਗੁਲਾਮੀਆਂ ਦੇ।
ਧਕੇ ਖਾਂਦਿਆਂ ਸੈਂਕੜੇ ਬਰਸ ਹੋ ਗਏ,
ਠੇਕੇਦਾਰ ਬਣ ਗਏ ਬਦਨਾਮੀਆਂ ਦੇ।
ਚਿਰ ਹੋਗਿਆ ਅਸਾਂ ਨੂੰ ਦੁਖ ਝਲਦੇ,
ਵਧਦੇ ਜਾਂਵਦੇ ਜ਼ੁਲਮ ਹਰਾਮੀਆਂ ਦੇ।
ਕਦੇ ਅਸਾਂ ਦਾ ਵਤਨ 'ਆਜ਼ਾਦ' ਹੋਸੀ,
ਹੋਸਨ ਸਮੇ ਏਹ ਦੂਰ ਨੀਲਾਮੀਆਂ ਦੇ।

— ਸ੍ਰ: ਅਵਤਾਰ ਸਿੰਘ ''ਆਜ਼ਾਦ''
(सरदार अवतार सिंह ''आज़ाद'')

''ਕੈਦੀ ਬੀਰ''
ਰਚਿਤ : ਸ੍ਰ: ਅਵਤਾਰ ਸਿੰਘ ''ਆਜ਼ਾਦ''।
ਪੰਜਾਬ ਖਾਲਸਾ ਪ੍ਰੈਸ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ, ੧੯੨੪.

''कैदी बीर''
रचित : सरदार अवतार सिंह ''आज़ाद''।
पंजाब खालसा प्रैस, अमृतसर, 1924

(अवाप्ति संख्या : 1967)

ਛਡਿਆ ਨਾ ਫੱਕਾ ਓਕਾ ਚੰਦਰੇ ਲੁਟੇਰੇ ਨੇ!

ਦੁਖਾਂ ਤੇ ਮੁਸੀਬਤਾਂ ਚੁਫੇਰਿਓਂ ਆ ਘੇਰੇ ਪਾਏ,
ਲਾਏ ਇਥੇ ਦੀਨਤਾ ਕੰਗਾਲਤਾ ਨੇ ਡੇਰੇ ਨੇ।
ਮਾਲੀਏ ਤੇ ਮਾਮਲੇ ਮਸੂਲਾਂ ਲੱਕ ਤੋੜ ਦਿੱਤਾ,
ਛਡਿਆ ਨਾ ਫੱਕਾ ਉਕਾ ਚੰਦਰੇ ਲੁਟੇਰੇ ਨੇ।
ਰਹਿੰਦੀ ਹੈ ਵਗਾਰ ਸਾਡੇ ਸਿਰਾਂ ਤੇ ਸਵਾਰ ਹੋਈ,
ਗ਼ਮਾਂ ਵਾਲੇ ਝੱਖੜ ਪਏ ਝੁਲਦੇ ਚੁਫੇਰੇ ਨੇ।
ਪਏ ਨੇ ਜ਼ੰਜੀਰ ਪੈਰੀਂ ਹੋਏ ਹਾਂ ਅਸੀਰ ਡਾਢ੍ਹੇ,
ਤਾਜ਼ੀਰਾਤ ਹਿੰਦ ਹਿੰਦ-ਵਾਸੀ ਹੋਏ ਘੇਰੇ ਨੇ।

ਸਕੀਏ ਨਾ ਬੋਲ ਲਗੇ ਜੰਦਰੇ ਜ਼ਬਾਨਾਂ ਤਾਈਂ,
ਹਾਇ! ਇਨਸਾਨਾਂ ਨੂੰ ਤਾਂ ਬੋਲਣਾ ਵੀ ਬੰਦ ਹੈ।
ਜਿਸ ਕੌਮੀ ਚੰਦ ਵਾਜ ਜ਼ਰਾ ਵੀ ਬਲੰਦ ਕੀਤੀ,
ਧਕੜ ਅਨੀਤੀ ਕੀਤੀ ਜੀਭ ਓਹ ਦੀ ਬੰਦ ਹੈ।
ਮਾਰਕੇ ਹਲੂਣੇ ਦੇਸ਼ ਜਿਸ ਭੀ ਜਗੌਣਾ ਚਾਹਿਆ,
ਪਕੜ ਜਕੜ ਕੀਤਾ ਜੇਹਲ ਵਿਚ ਬੰਦ ਹੈ।
ਫਸੇ ਹੋਏ 'ਪੰਛੀ' ਹਿੰਦੀ ਗ਼ੈਰਾਂ ਸੰਦੇ ਪਿੰਜਰੇ 'ਚ,
ਤੜਫ ਤੜਫ ਦਸ਼ਾ ਹੋਈ ਬਹੁਤ ਮੰਦ ਹੈ।

— "ਪੰਛੀ
("पंछी"

"ਕਿਰਤੀ" ਮਾਸਕ ਪੱਤਰ
ਸੰਪਾਦਕ : ਅਮਰ ਸਿੰਘ "ਤੇਗ"।
ਜਿਲਦ ਨੰ. ੪, ਅੰਕ : ੬, ਜੂਨ ੧੯੨੯
ਓਅੰਕਾਰ ਪ੍ਰੈਸ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।

"किरती" मासिक पत्र
संपादक : अमर सिंह "तेग"।
जिल्द नं. 4, अंक : 6, जून 1929
ओंकार प्रैस, अमृतसर।

(अवाप्ति संख्या : 2162)

ਹਿੰਦ ਲੁੱਟੀ ਜਾਂਦੇ ਨੇ!

ਹਿੰਦੀਓ! ਸੁਰਤ ਕਰੋ, ਸੁੱਤੇ ਹੋ ਪਸਾਰ ਲੱਤਾਂ,
ਛਲੀਏ ਚਲਾਕ ਡਾਕੂ ਹਿੰਦ ਲੁੱਟੀ ਜਾਂਦੇ ਨਿ।
ਦੇਸ਼ ਦੇ ਪਿਆਰਿਆਂ ਆਜ਼ਾਦੀ ਦੇ ਦੁਲਾਰਿਆਂ ਨੂੰ,
ਪਕੜ ਪਕੜ ਜੇਲ੍ਹ ਖ਼ਾਨੀ ਸੁੱਟੀ ਜਾਂਦੇ ਨਿ।
ਭਾਰਤ ਬਗ਼ੀਚਾ ਕਰੀ ਜਾਂਦੇ ਨੇ ਵਿਰਾਨ ਦੇਖੋ,
ਸੁਹਣੇ ਸੁਹਣੇ ਬੂਟੇ ਚਾ ਜੜ੍ਹਾਂ ਥੀ ਪੁੱਟੀ ਜਾਂਦੇ ਨਿ।
ਲੁੱਟੀ ਪੁੱਟੀ ਕੁੱਟੀ ਜਾਂਦੇ ਘੁੱਟੀ ਜਾਂਦੇ ਗਲ ਸਾਡੇ,
ਪੈਸਾ ਟਕਾ ਖਿੱਚੀ ਇੰਗਲੈਂਡ ਸੁੱਟੀ ਜਾਂਦੇ ਨਿ।

— ਪ੍ਰੇਮ
(प्रेम)

"ਕਿਰਤੀ" ਮਾਸਕ ਪੱਤਰ
ਸੰਪਾਦਕ : ਅਮਰ ਸਿੰਘ "ਤੇਗ"।
ਜਿਲਦ ਨੰ. ੪, ਅੰਕ : ੬, ਜੂਨ ੧੯੨੯
ਓਅੰਕਾਰ ਪ੍ਰੈਸ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।

"किरती" मासिक पत्र
संपादक : अमर सिंह "तेग"।
जिल्द नं. 4, अंक : 6, जून 1929
ओंकार प्रैस, अमृतसर।

(अवाप्ति संख्या : 2162)

ਕਿਰਤੀ ਦਲ ਨੂੰ ਹਲੂਣਾ!

ਉਠੋ ਕਿਰਤੀਓ ਹੋਸ਼ ਵਿਚ ਆਓ ਰਤੀ, ਕਾਹਨੂੰ ਸੋਚਾਂ ਦੇ ਵਹਿਣ ਵਿਚ ਵਹਿ ਰਹੇ ਹੋ।
ਬਲ ਹੁੰਦਿਆਂ ਵੀ ਆਪਣੀ ਬਾਂਹ ਅੰਦਰ, ਕਾਹਨੂੰ ਧੌਂਸ ਗ਼ੁਲਾਮੀ ਵੀ ਸਹਿ ਰਹੇ ਹੋ।
ਜੇਕਰ ਰਬ ਨੇ ਦਿਤੀ ਹੈ ਜੀਭ ਤੁਹਾਨੂੰ, ਕਿਉਂ ਫਿਰ ਬੋਲਕੇ ਮੁਖੋਂ ਨਹੀ ਕਹਿ ਰਹੇ ਹੋ।
ਆਓ ਵਿਚ ਮੈਦਾਨ ਦੇ ਉਤਰ ਆਓ, ਕਾਹਨੂੰ ਹੱਥ ਤੇ ਹੱਥ ਰਖ ਬਹਿ ਰਹੇ ਹੋ।
ਕਹਿਕੇ 'ਜੀ' 'ਜੀ' ਤੁਸਾਂ ਹੈ ਬਹੁਤ ਖਟਿਆ, ਆਪੇ ਆਪਣੀ ਇਜ਼ਤ ਗੁਵਾ ਬੈਠੇ।
ਹੁਣ ਜੇ ਸਿਰ ਤੇ ਆਣਕੇ ਬਣੀ ਥੋੜੇ, ਕਾਹਨੂੰ ਹੱਟਕੇ ਪਰ੍ਹਾਂ ਫਿਰ ਜਾ ਬੈਠੇ।

ਬੰਦੇ ਉਹ ਤੇ ਅਸੀਂ ਵੀ ਹਾਂ ਬੰਦੇ, ਐਪਰ ਰਬ ਨੇ ਫ਼ਰਕ ਕਿਉਂ ਪਾ ਦਿਤਾ?
ਇਕਨਾਂ ਨਰਮ ਗਦੇਲੇ ਵਿਛਾ ਦਿਤੇ, ਸਾਨੂੰ ਕੰਡਿਆਂ ਓਪਰ ਲਿਟਾ ਦਿਤਾ।
ਪੀਂਦੇ ਖ਼ੂਨ ਗ਼ਰੀਬਾਂ ਦਾ ਉਹ ਰੱਜ ਰੱਜ, ਐਵੇਂ ਸਾਨੂੰ ਕਿਉਂ ਮੁਜਰਮ ਬਣਾ ਦਿਤਾ।
'ਦੁਖੜੇ ਝਾਗਦੇ ਰਹੋ ਅਨੇਕ ਤੁਸੀਂ', ਖ਼ਬਰੇ ਰਬ ਇਹ ਹੁਕਮ ਸੁਣਾ ਦਿਤਾ।
ਜੇਕਰ ਦੋਵੇਂ ਹੀ ਰਬ ਦੇ ਹਾਂ ਬੰਦੇ, ਤਾਂ ਫਿਰ ਅਸਾਂ ਤੇ ਉਹਨਾਂ ਵਿਚ ਫ਼ਰਕ ਕਿਉਂ ਹੈ?
ਜੇਕਰ ਦੋਵਾਂ ਦੇ ਹੱਕ ਹਕੂਕ ਸਾਂਝੇ, ਸਵਰਗ ਉਨ੍ਹਾਂ ਤੇ ਅਸਾਂ ਲਈ ਨਰਕ ਕਿਉਂ ਹੈ?

ਜੇਕਰ ਦੋਹਾਂ ਨੂੰ ਮੰਬੜੀ ਜਾਇਆ ਹੈ, ਇਕ ਪਸ਼ੂ ਕਿਉਂ ਦੂਜਾ ਮਨੁਖ ਹੋਵੇ?
ਇਕੋ ਘਰ ਵਿਚ ਦੋਹਾਂ ਦਾ ਵਾਸ ਹੋਵੇ, ਤਾਂ ਫਿਰ ਦੁਖ ਤਾਂ ਦੋਹਾਂ ਲਈ ਦੁਖ ਹੋਵੇ।
ਇਕੋ ਨੂਰ ਜੇ ਚਮਕਦਾ ਸਭ ਥਾਈਂ, ਜੇਕਰ ਸੁਖ ਤਾਂ ਦੋਹਾਂ ਲਈ ਸੁਖ ਹੋਵੇ।
ਐਪਰ ਦਸੋ ਖਾਂ ਇਹ ਇਨਸਾਫ਼ ਕਿਹੜਾ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਰਜ ਤੇ ਅਸਾਂ ਘਰ ਭੁਖ ਹੋਵੇ?
ਜੇਕਰ ਅਸੀਂ ਹਾਂ ਮਰਨ ਮੁਕਾਣ ਆਏ, ਤਾਂ ਫਿਰ ਉਹ ਕੋਈ ਡੋਲੀ ਦੇ ਵੀਰ ਤਾਂ ਨਹੀਂ।
ਜੇਕਰ ਅਸੀਂ ਜ਼ਮੀਨ ਤੇ ਹੋਏ ਪੈਦਾ, ਡਿਗੇ ਉਹ ਕੋਈ ਅਰਸ਼ਾਂ ਨੂੰ ਚੀਰ ਤਾਂ ਨਹੀਂ।

ਕਰ ਕਰ ਕੰਮ ਮੁਸ਼ਕਤਾਂ ਉਮਰ ਗੁਜ਼ਰੀ, ਪੈਸਾ ਇਕ ਪੱਕਾ ਅਸਾਂ ਜੋੜਿਆਂ ਨਹੀਂ।
ਅਸਾਂ ਸਮਝਿਆ ਕੀਤੇ ਦਾ ਫਲ ਮਿਲਸੀ, ਕਦੇ ਟਹਿਲ ਤੋਂ ਮੁਖੜਾ ਮੋੜਿਆ ਨਹੀਂ।
ਅਸਾਂ ਜਾਣਿਆ ਭਲੇ ਦਾ ਭਲਾ ਹੋਸੀ, ਤਾਹੀਓਂ ਗੰਢ ਪਾਈ ਲੜ ਛੋੜਿਆ ਨਹੀਂ।
ਏਥੋਂ ਆਸ ਸੀ ਹੋਵੇਗਾ ਪਾਰ ਬੇੜਾ, ਤਦੇ ਹੋਰ ਦਰਵਾਜ਼ਾ ਕੋਈ ਲੋੜਿਆ ਨਹੀਂ।
ਸਾਡਾ ਖੋਸੜਾ ਸਾਡੇ ਹੀ ਸਿਰ ਉਪਰ, ਚੰਗਾ ਫਲ ਇਹ ਕੀਤੇ ਦਾ ਮਿਲ ਗਿਆ ਹੈ।
ਪਾਕੇ ਅਸਾਂ ਦੀ ਪਿਠ ਤੇ ਉਹ ਕਾਠੀ, ਚੜ੍ਹਨਾਂ ਘੋੜਿਆਂ ਵਾਂਗੂੰ ਉਹ ਹਿਲ ਗਿਆ ਹੈ।
ਆਓ 'ਪਾਰਟੀ ਲੇਬਰ' ਬਣਾਓ ਤੁਸੀਂ, ਤਦੇ ਹੱਕ ਦੇ ਤੁਸੀਂ ਹੱਕਦਾਰ ਹੋਸੋ।
ਅਜੇ ਹੈ ਵੇਲਾ ਕੁਝ ਕਰੋ ਹੀਲਾ, ਨਹੀਂ ਤੇ ਰੱਜਕੇ ਤੁਸੀਂ ਖੁਵਾਰ ਹੋਸੋ।

ਦਰ ਦਰ ਮਿਨਤਾਂ ਕਰਦੇ ਫਿਰੋਗੇ ਫਿਰ, ਕਿਸੇ ਪੁਛਣਾ ਨਹੀਂ ਲਾਚਾਰ ਹੋਸੋਂ।
ਇਕ ਮੁੱਠ ਹੋਕੇ ਇਤਫ਼ਾਕ ਕਰ ਲੋ, ਵਡੇ ਮਾਣ ਵਾਲੇ ਇਜ਼ਤਦਾਰ ਹੋਸੋਂ।
ਛਡੋ ਕੰਮ ਕਰਨਾ ਪੂੰਜੀਦਾਰ ਖ਼ਾਤਰ, ਬਿਉਪਾਰ ਸਾਰੇ ਜਦੋਂ ਰੁਕ ਜਾਸਨ।
ਭੁਖੇ ਮਰਨਗੇ ਮਿਲਸੀ ਨਾ ਖਾਣ ਜੋਗਾ, ਆਪੇ ਆਕੇ ਪੈਰਾਂ ਤੇ ਝੁਕ ਜਾਸਨ।

— "ਦਿਲਗੀਰ"
("दिलगीर")

"ਕਿਰਤੀ" ਮਾਸਕ ਪੱਤਰ
ਸੰਪਾਦਕ : ਅਮਰ ਸਿੰਘ "ਤੇਗ"।
ਜਿਲਦ ਨੰ. ੪, ਅੰਕ : ੬, ਜੂਨ ੧੯੨੯
ਓਅੰਕਾਰ ਪ੍ਰੈਸ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।

"किरती" मासिक पत्र
संपादक : अमर सिंह "तेग"।
जिल्द नं. 4, अंक : 6, जून 1929
ओंकार प्रैस, अमृतसर।

(अवाप्ति संख्या : 2162)

'ਕਿਰਤੀ' ਕਿਰਤੀ ਦੇ ਸਦਾ ਹਮਦਰਦ ਰਹਿਸਣ

ਉਠ ਜਾਗ ਦੇਸਾ ਕਿਉਂ ਘੂਕ ਸੁਤਾ, ਲੀਡਰ ਡੱਕ ਦਿਤੇ ਜੇਹਲੀਂ ਫੜ ਫੜਕੇ।
ਘਰ ਘਰ ਤਲਾਸ਼ੀਆਂ ਕਰੇ ਜ਼ਾਲਮ, ਅਜੇ ਤਕ ਨਹੀਂ ਰਜਿਆ ਕਰ ਕਰਕੇ।
ਗੀਦੀ ਲਾਹ ਬੁਰਕਾ ਧਾਰ ਸ਼ੇਰ ਬਾਣਾ, ਕਦ ਤਕ ਝਟ ਲੰਘਸੀ ਤੇਰਾ ਡਰ ਡਰਕੇ।
ਆਜ਼ਾਦੀ ਨੇੜੇ ਨਾਮਰਦ ਦੇ ਢੁਕਦੀ ਨਹੀਂ, ਮਿਲੀ ਰਾਂਝੇ ਨੂੰ ਹੀਰ ਸੀ ਮਰ ਮਰਕੇ।
ਲੱਖ ਮਾਰ ਛਾਪੇ ਕਿਰਤੀ ਜ਼ਬਤ ਕਰ ਲੈ, ਕਿਰਤੀ ਗੱਜਦੇ ਵਾਂਗਰਾਂ ਮਰਦ ਰਹਿਸਨ।
ਸਾਡਾ ਧਰਮ ਕਿਰਤੀ ਸਾਡਾ ਸ਼ਰਮ ਕਿਰਤੀ ਕਿਰਤੀ ਦੇ ਸਦਾ ਹਮਦਰਦ ਰਹਿਸਨ।

ਬਾਗ਼ ਜਲ੍ਹਿਆਂ ਵਾਲਾ ਨਾ ਲੱਭ ਛਡੀ, ਹੁਣ ਤਾਂ ਸਮੇਂ ਹੀ ਹੋਰ ਦੇ ਹੋਰੀਏ ਨੀ।
ਥਾਪੜ ਥਾਪੜਕੇ ਕਿੰਨਾ ਸਵਾ ਸਾਨੂੰ, ਭਾਵੇਂ ਕਿੰਨੀਆਂ ਦੇਹ ਤੂੰ ਲੋਰੀਏ ਨੀ।
ਅੱਸੀ ਸਾਲ ਹੋਏ ਆਈ ਸੌਹਰਿਆਂ ਦੇ, ਹੁਣ ਪੇਕਿਆਂ ਦੇ ਤੈਨੂੰ ਤੋਰੀਏ ਨੀ।
ਰੋ ਰੋ ਯਾਦ ਕਰਸੈਂ ਬਿਸਕੁਟ ਪੋਲਿਆਂ ਨੂੰ, ਜਦੋਂ ਪਏ ਖਾਣੇ ਆਲੂ ਗੋਰੀਏ ਨੀ।
ਬਜ ਬਜ ਘਾਟ ਦੇ ਭੁਲੇ ਸ਼ਹੀਦ ਨਾਹੀਂ, ਸਦਾ ਰੜਕਦੇ ਵਾਂਗਰਾਂ ਕਰਦ ਰਹਿਸਨ।
ਜ਼ਾਲਮ ਆਪਣਾ ਟਿਲ ਲਗਾ ਲੈ ਤੂੰ, ਕਿਰਤੀ ਕਿਰਤੀ ਦੇ ਸਦਾ ਹਮਦਰਦ ਰਹਿਸਨ।

ਰਾਜ ਕਰਾਂਗੇ ਹਿੰਦ ਵਿਚ ਕਿਰਤੀਆਂ ਦਾ ਵਿਹਲੇ ਢਿਡਲਾਂ ਦੇ ਲੜ ਛੋੜਾਂਗੇ ਹੁਣ।
ਜੇਕਰ ਕਰੇਂਗੀ ਸਖ਼ਤੀਆਂ ਅਸਾਂ ਉਤੇ, ਅਗੋਂ ਅਸੀਂ ਵੀ ਮੁਖ ਨ ਮੋੜਾਂਗੇ ਹੁਣ।
ਸਾਡਾ ਖ਼ੂੰਨ ਪੀਤਾ ਜ਼ਾਲਮ ਜੋਕ ਬਣਕੇ, ਅਸੀ ਜ਼ੁਲਮ ਦਾ ਖ਼ੂੰਨ ਨਚੋੜਾਂਗੇ ਹੁਣ।
ਤਬ ਤਕ ਆਰਾਮ ਹਰਾਮ ਸਾਨੂੰ, ਜਬ ਤਕ ਤੈਨੂੰ ਵਲਾਇਤ ਨਾ ਮੋੜਾਂਗੇ ਹੁਣ।
ਪਿੱਟਣੇ ਪੈਣਗੇ ਵਿਚ ਮੁਖ਼ਤ ਖ਼ੋਰਿਆਂ ਦੇ, ਸਦਾ ਵੈਰੀਆਂ ਦੇ ਰੰਗ ਜ਼ਰਦ ਰਹਿਸਨ।
ਫੁਲੇ ਸਦਾ ਗ਼ੁਲਾਬ ਵਾਂਗ ਰਹਿਣ ਕਿਰਤੀ, ਕਿਰਤੀ ਕਿਰਤੀ ਦੇ ਸਦਾ ਹਮਦਰਦ ਰਹਿਸਨ।

ਇਕ ਮਾਰ ਹੱਲਾ ਜੱਟਾ ਕਿਰਤੀਆ ਓਇ, ਹੁਣ ਤਾਂ ਗੱਲ ਅਖ਼ੀਰ ਤੇ ਮੁਕੀ ਪਈ ਏ।
ਉਤੋਂ ਉਤੋਂ ਦਬਕਾਉਂਦੀ ਘੂਰਦੀ ਏ, ਵਿਚੋਂ ਏਸ ਦੀ ਜਾਨ ਹੁਣ ਸੁਕੀ ਪਈ ਏ।
ਫੜ ਫੜਕੇ ਕੰਨੋਂ ਨਿਕਾਲ ਬਾਹਰ, ਜੇੜ੍ਹੀ ਬੰਗਲਿਆਂ ਦੇ ਵਿਚ ਲੁਕੀ ਪਈ ਏ।
ਹੱਲਾ ਬੋਲ ਦੇ ਇਕ ਬਹਾਦਰਾ ਓਇ, ਤੇਰੇ ਅਗੇ ਸ੍ਰਕਾਰ ਹੁਣ ਝੁਕੀ ਪਈ ਏ।

ਜ਼ਾਲਮ ਭਜ ਲੈ ਜਿਥੋਂ ਤਕ ਵਾਹ ਲਗੇ, ਕਿਰਤੀ ਚੰਬੜੇ ਵਾਂਗਰਾਂ ਗਰਦ ਰਹਿਸਨ।
ਸਾਡੇ ਪ੍ਰਾਣ ਕਿਰਤੀ ਜਿੰਦ ਜਾਨ ਕਿਰਤੀ, ਕਿਰਤੀ ਕਿਰਤੀ ਦੇ ਸਦਾ ਹਮਦਰਦ ਰਹਿਸਨ।

— "ਦਰਵੇਸ਼"
(''दरवेश'')

"ਕਿਰਤੀ" ਮਾਸਕ ਪੱਤਰ
ਸੰਪਾਦਕ : ਅਮਰ ਸਿੰਘ "ਤੇਗ"।
ਜਿਲਦ ਨੰ. ੪, ਅੰਕ : ੭, ਜੂਨ ੧੯੨੯.
ਓਅੰਕਾਰ ਪ੍ਰੈਸ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।

''किरती'' मासिक पत्र
संपादक : अमर सिंह ''तेग''।
जिल्द नं. 4, अंक : 7, जुलाई 1929.
ओंकार प्रैस, अमृतसर।

(अवाप्ति संख्या : 2173)

ਹਿੰਦੁਸਤਾਨ ਜ਼ਿੰਦਾਨ ਆਜ਼ਾਦ ਕਰਨਾ

ਸੈਆਂ ਕੋਹਾਂ ਥੀਂ ਚੰਬੜੀ ਆਣ ਭੈੜੀ, ਮੁਹਲਕ ਮਰਜ਼ ਤਪਦਿਕ ਸਰਕਾਰ ਸਾਨੂੰ।
ਵਿਚੇ ਵਿਚ ਹੀ ਸੈਂਕੜੇ ਸਾਲ ਤੋਂ ਇਹ, ਰਹੀ ਲੂਣ ਦੇ ਵਾਂਗਰਾਂ ਖਾਰ ਸਾਨੂੰ।
ਕੌੜੀ ਵੇਲ ਵਾਂਗੂੰ ਵਧੀ ਜਾਉਂਦੀ ਏ, ਵਲੀ ਜਾਉਂਦੀ ਵਾਂਗ ਪ੍ਰਵਾਰ ਸਾਨੂੰ।
ਇਸੇ ਚਾਲ ਦੇ ਨਾਲ ਜੇ ਗਈ ਚਲੀ, ਥੋੜੇ ਦਿਨਾਂ ਦੇ ਵਿਚ ਲਊ ਮਾਰ ਸਾਨੂੰ।
ਸਾਡੇ ਸਿਰਾਂ ਤੇ ਪਈ ਜੋ ਚਿਰਾਂ ਦੀ ਏ, ਇਹਦੀ ਛੱਟ ਦੇ ਮਾਰਿਆ ਭਾਰ ਸਾਨੂੰ।
ਪਵੇ ਕਦੇ ਹੀਆ ਖੜੇ ਹੋਣ ਦਾ ਨਾ, ਅਤੇ ਸੁਟਿਆ ਕਰ ਮੁਰਦਾਰ ਸਾਨੂੰ।
ਭੁਲ ਚੁਕਕੇ ਜੇ ਦਿਲੋਂ ਉਠਦਾ ਏ, ਖੜੇ ਹੋਣ ਦੀ ਕਦੇ ਵਿਚਾਰ ਸਾਨੂੰ।
ਜਬਰ ਜ਼ੋਰ ਦੇ ਕੜੇ ਕਾਨੂੰਨ ਘੜਕੇ, ਜੇਲ੍ਹੀਂ ਸੁਟ ਦੇਂਦੀ ਫਾਹੇ ਚਾੜ੍ਹ ਸਾਨੂੰ।
ਅੱਡੀ ਚੋਟੀਓਂ ਲਾਇਕੇ ਜ਼ੋਰ ਸਾਰਾ, ਕਰੇ ਤੰਗ ਇਹ ਪਈ ਬੁਰਿਆਰ ਸਾਨੂੰ।
ਕਾਰੀ ਏਸ ਨੇ ਠੋਕਰਾਂ ਮਾਰੀਆਂ ਨੇ, ਇਕ ਵਾਰ ਨਾਹੀਂ ਕਈ ਵਾਰ ਸਾਨੂੰ।
ਕਈ ਵੇਰ ਢਠੇ ਖੜੇ ਫੇਰ ਹੋਏ, ਸਮੇਂ ਯਾਦ ਨੇ ਬੇਸ਼ੁਮਾਰ ਸਾਨੂੰ।
ਚੌਦਾਂ ਪੰਦਰਾਂ ਵਿਚ ਪ੍ਰਦੇਸੀਆਂ ਨੇ, ਖੜੇ ਹੋਣ ਲਈ ਕਿਹਾ ਲਲਕਾਰ ਸਾਨੂੰ।
ਹੀਰੇ ਹਿੰਦ ਦੇ ਕੌਮ ਦੇ ਦਰਦ ਵਾਲੇ; ਨਹੀਓਂ ਭੁਲਣੇ ਓਹ ਸਰਦਾਰ ਸਾਨੂੰ।
ਗਾਂਧਾ ਸਿੰਘ, ਬਲਵੰਤ, ਹਰਿਭਾਗ ਜਿਹੇ, ਰੰਗਾ ਸਿੰਘ ਤੇ ਬੀਰ ਕਰਤਾਰ ਸਾਨੂੰ।
ਇਹਨੇ ਫੜਕੇ ਫਾਂਸੀ ਤੇ ਚਾੜ੍ਹ ਦਿਤੇ, ਆਏ ਕਰਨ ਸੀ ਜੇਹੜੇ ਬੇਦਾਰ ਸਾਨੂੰ।
ਉਮਰ ਕੈਦ ਲਈ ਸੁਟਕੇ ਜੇਲ੍ਹ ਅੰਦਰ, ਕੀਤਾ ਹੱਦ ਥੀਂ ਵਧ ਬੇਜ਼ਾਰ ਸਾਨੂੰ।
ਰੌਲਟ ਐਕਟ ਵੇਲੇ ਜਦੋਂ ਫੇਰ ਉਠੇ, ਘੇਰਾ ਘਤਿਆ ਬਾਗ਼ ਵਿਚਕਾਰ ਸਾਨੂੰ।
ਡਾਇਰ ਹੈਸਿਆਰੇ ਨੇ ਸੀ ਭੁੰਨ ਦਿਤਾ, ਮਾਰ ਗੋਲੀਆਂ ਦੀ ਹਾਇ ਬਾੜ ਸਾਨੂੰ।
ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਬਦਕਿਸਮਤੀ ਗਲੀ ਅੰਦਰ, ਇਨ੍ਹਾਂ ਤੋਰਿਆਂ ਢਿਡਾਂ ਦੇ ਭਾਰ ਸਾਨੂੰ।
ਪਿੱਠਾਂ ਸਾਡੀਆਂ ਤੇ ਗਏ ਬੈਂਤ ਮਾਰੇ, ਡਾਢੇ ਜਾਣਕੇ ਤੇ ਗੁਨਾਹਗਾਰ ਸਾਨੂੰ।
ਨਾ-ਮਿਲਵਰਤਨੀ ਜਦੋਂ ਸੀ ਲਹਿਰ ਚਲੀ, ਹੋਇਆ ਆਣ ਸੀ ਕੁਝ ਆਧਾਰ ਸਾਨੂੰ।
ਭਾਰਤ ਵਰਸ਼ ਹੁਣ ਝਟ ਆਜ਼ਾਦ ਹੋਸੀ, ਲਗੇ ਔਣ ਸੀ ਨਜ਼ਰ ਆਸਾਰ ਸਾਨੂੰ।
ਸ਼ੁਧੀ ਅਤੇ ਤਬਲੀਗ਼ ਦੀ ਲਹਿਰ ਨੇ ਫਿਰ, ਪਟਕ ਸੁਟਿਆ ਮੂੰਹ ਦੇ ਭਾਰ ਸਾਨੂੰ।
ਰਹੀ ਆਸ ਨਾ ਸੀ ਕੋਈ ਉਠਣੇ ਦੀ, ਕਰਕੇ ਗਈ ਓਹ ਅਤੀ ਲਾਚਾਰ ਸਾਨੂੰ।
ਸਾਈਮਨ ਸਾਹਿਬ ਤਾਈਂ ਫੇਰ ਭੇਜਿਆ ਏ, ਦੇਖੋ ਪਰਖਣੇ ਲਈ ਬਲਕਾਰ ਸਾਨੂੰ।
ਹਿੰਦੁਸਤਾਨ ਅੰਦਰ ਓਹਦੀ ਠਗ ਫੇਰੀ, ਝੱਟ ਪੱਟ ਕਰ ਗਈ ਹੁਸ਼ਿਆਰ ਸਾਨੂੰ।
ਪਿਆਰਾ ਦੇਸ਼ ਆਜ਼ਾਦ ਕਰਵਾਉਣੇ ਦਾ, ਮੁੜਕੇ ਉਠਿਆ ਫੇਰ ਪਿਆਰ ਸਾਨੂੰ।
ਹਿੰਦੂ, ਮੁਸਲਮਾਂ ਰਲ ਗਏ ਸਿਖ ਮੁੰਡੇ, ਵੇਖ ਵੇਖ ਸੜ ਰਹੀ ਇਹ ਛੜਾਰ ਸਾਨੂੰ।
ਲੁਟ ਪੁਟਕੇ ਦੇ ਆਪ ਖਾਣ ਵਾਲੀ, ਬਾਗ਼ੀ ਦਸਦੀ ਪਈ ਸ਼ਰਾਰ ਸਾਨੂੰ।

ਫਿਰੇ ਭੁੜਕਦੀ ਸਾਡੀਆਂ ਛਾਤੀਆਂ ਤੇ, ਹਾਇ ਕਰਕੇ ਬੇ-ਹਥਿਆਰ ਸਾਨੂੰ।
ਪਈ ਫਾੜੀਆਂ ਦੇ ਵਾਂਗ ਚੀਰਦੀ ਏ, ਇਹਦੀ ਤੇਜ਼ ਤਲਵਾਰ ਦੀ ਧਾਰ ਸਾਨੂੰ।
ਫੜ ਫੜਕੇ ਤੇ ਸਾਡੇ ਹਾਣੀਆਂ ਨੂੰ, ਕੌਮੀ ਜੰਗ ਲਈ ਰਹੀ ਵੰਗਾਰ ਸਾਨੂੰ।
ਵੇਖ ਵੇਖਕੇ ਤੇ ਇਹਦੇ ਚਾਲਿਆਂ ਨੂੰ, ਦਿਲੋਂ ਉਠਦੀ ਪਈ ਏ ਖਾਰ ਸਾਨੂੰ।
ਤਾਂਹੀਂ ਰਲ ਗਏ ਨੌਜਵਾਨ ਸਾਰੇ, ਰਹੀ ਬੁਢਿਆਂ ਦੀ ਨਹੀਂ ਆਰ ਸਾਨੂੰ।
ਇਨ੍ਹਾਂ ਹਰਕਤਾਂ ਥੀਂ ਆਈ ਬਾਜ਼ ਨਾ ਜੇ, ਇਹਦਾ ਤੋੜਨਾ ਪਊ ਹੰਕਾਰ ਸਾਨੂੰ।
ਜਾਨ ਮਾਲ ਦੀ ਨਹੀਂ ਪ੍ਰਵਾਹ ਕੋਈ, ਭਾਵੇਂ ਔਕੜਾਂ ਪੈਣ ਹਜ਼ਾਰ ਸਾਨੂੰ।
ਹਿੰਦੁਸਤਾਨ ਜ਼ਿੰਦਾਨ ਆਜ਼ਾਦ ਕਰਨਾ, ਭਾਵੇਂ ਛਡਣਾ ਪਏ ਘਰ ਬਾਰ ਸਾਨੂੰ।

— "ਸਾਥੀ" ਲੁਧਿਆਨਵੀ
(''साथी'' लुधियानवी)

"ਕਿਰਤੀ" ਮਾਸਕ ਪੱਤਰ
ਸੰਪਾਦਕ : ਅਮਰ ਸਿੰਘ "ਤੇਗ"।
ਜਿਲਦ ਨੰ. ੪, ਅੰਕ : ੭, ਜੁਲਾਈ ੧੯੨੯
ਓਅੰਕਾਰ ਪ੍ਰੈਸ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।

''किरती'' मासिक पत्र
संपादक : अमर सिंह ''तेग''।
जिल्द नं. 4, अंक : 7, जुलाई 1929.
ओंकार प्रैस, अमृतसर।

(अवाप्ति संख्या : 2173)

ਸਾਂਝਾ ਗੌਣ

ਹੇ ਢਿੱਡ ਦੇ ਗੁਲਾਮੋ, ਉਠੋ ਕਿ ਵੇਲਾ ਆਇਆ।
ਦੁਨੀਆਂ ਦੇ ਬੇਨਸੀਬੋ, ਉਠੋ ਕਿ ਵੇਲਾ ਆਇਆ।
ਰੀਤਾਂ ਰਿਵਾਜਾਂ ਤੋੜੋ, ਭੈੜੇ ਜਹਾਨ ਦੇ ਜੋ।
ਉਠੋ ਗੁਲਾਮੀ ਛੱਡੋ, ਨਵਾਂ ਸੁਨੇਹਾ ਆਇਆ।
ਹੈ ਗੱਜਦਾ ਨਿਆਉਂ, "ਛੱਡਾਂਗਾ ਲੈਕੇ ਬਦਲਾ"।
ਦੁਨੀਆਂ ਨਵੀਂ ਵਸੇਗੀ, ਸੁਨ ਲੋ ਹੈ ਇਹ ਸੁਨਾਇਆ।
ਫਿਰ ਹੋ ਰਿਹਾ ਏ ਪੈਦਾ, ਹੁਣ ਤੋਂ ਨਵਾਂ ਜ਼ਮਾਨਾਂ।
ਸਭ ਕੁਝ ਹੋਊ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਹੈ ਕਮਾਇਆ।
ਉਠੋ ਭਰਾ ਗਰੀਬੋ, ਨਿਕਲੋ ਖਾਂ ਕੱਸ ਕਮਰਾਂ।
ਅੰਤਲੀ ਲੜਾਈ ਲੜੋ, ਇਹ ਹੁਕਮ ਆਇਆ।
ਜ਼ੁਲਮ ਤੇ ਉਪੱਦਰ ਸਾਰੇ ਮਿਟਾਕੇ ਇਕ ਦਮ।
ਵੱਸੋ ਅਨੰਦ ਕਿਰਤੀ, ਇਹ ਗੌਣ ਹਾ ਸੁਣਾਇਆ।

"ਕਿਰਤੀ" ਮਾਸਕ ਪੱਤਰ
ਸੰਪਾਦਕ : ਅਮਰ ਸਿੰਘ "ਤੇਗ"।
ਜਿਲਦ ਨੰ. ੪, ਅੰਕ : ੭, ਜੁਲਾਈ ੧੯੨੯
ਓਅੰਕਾਰ ਪ੍ਰੈਸ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।

"किरती" मासिक पत्र
संपादक : अमर सिंह "तेग"।
जिल्द नं. 4, अंक : 7, जुलाई 1929.
ओंकार प्रैस, अमृतसर।

(अवाप्ति संख्या : 2173)

† ਇਹ ਗੀਤ ਓਹ ਹੈ ਜਿਸ ਨੂੰ ਗਾਉਂਦੇ ਹੋਏ ਮੁਕੱਦਮਾ ਸਾਜ਼ਸ਼ ਮੇਰਠ ਦੇ ਕਿਰਤੀ ਲੀਡਰ ਅਦਾਲਤ ਦੇ ਕਮਰੇ ਵਿਚ ਦਾਖ਼ਲ ਹੋਏ ਸਨ।

ਅਸੀਂ ਅੱਗ ਅਸਮਾਨ ਨੂੰ ਲਾ ਦਿਆਂਗੇ

ਹਾਏ ਕੀ ਕਰੀਏ ਦੁਖਾਂ ਚੂਰ ਕੀਤਾ, ਦੁਖ ਜਾਂਵਦੇ ਵਧਦੇ ਵਧਦੇ ਨੇ।
ਖ਼ਬਰੇ ਅਸਾਂ ਦੀ ਮੌਤ ਨਜ਼ਦੀਕ ਆਈ, ਖ਼ਬਰੇ ਇਹ ਨੂੰ ਫ਼ਰੇਸ਼ਤੇ ਸਦਦੇ ਨੇ।
ਦਿਨੋਂ ਦਿਨ ਕੰਗਾਲ ਬਣਾਈ ਜਾਂਦੇ, ਗੋਰੇ ਮੂੰਹ ਵਾਲੇ ਆਏ ਜਦਦੇ ਨੇ।
ਅਸੀ ਪਿਛਲਿਆਂ ਦੁਖਾ ਨੂੰ ਰੋਂਵਦੇ ਹਾਂ, ਦੁਖ ਵਧ ਗਏ ਹੋਰ ਬੇ ਹੱਦ ਦੇ ਨੇ।
ਹੱਥਾਂ ਬਾਝ ਕਰਾਰਿਆਂ ਮਿਤ ਨਾਂ ਹੋਏ ਵੈਰੀ, ਹੁਣ ਆਪਣੇ ਹੱਥ ਵਖਾ ਦਿਆਂਗੇ।
ਸਚ ਮੁਚ ਝੂਠ ਨਹੀ ਨਾਲ ਯਕੀਨ ਜਾਣੀ, ਅਸੀ ਅੱਗ ਅਸਮਾਨ ਨੂੰ ਲਾ ਦਿਆਂਗੇ।

ਹਾਏ ਕੀ ਕਰੀਏ ਰੱਬਾ ਪਿਆ ਲੋੜ੍ਹਾ, ਜ਼ਾਲਮ ਜਾਂਦੇ ਵਧਾਈ ਖਰਾਜ ਤਾਂਈ।
ਸਾਡੇ ਕੂਕਦਿਆਂ ਦੇ ਗਲੇ ਸੁਕ ਗਏ ਨੇ, ਕੋਈ ਸੁਣਦਾ ਨਹੀ ਅਵਾਜ਼ ਤਾਂਈ।
ਹੁਣ ਜਾਗ ਜੱਟਾ ਕਿਉਂ ਘੂਕ ਸੁੱਤਾ, ਸੰਭਲ ਆਪਣੇ ਹੁਣ ਅਫ਼ਰਾਜ਼ ਤਾਂਈ।
ਜੇੜ੍ਹਾ ਜ਼ੁਲਮ ਤੇਰੇ ਉਤੇ ਹੋ ਰਿਹਾ ਹੈ, ਅਸਾਂ ਵੇਖਿਆ ਨਹੀਂ ਪਿਛੇ ਆਜ ਤਾਂਈ।
ਬਾਰਦੋਲੀ ਨੂੰ ਭੁਲ ਸਰਕਾਰ ਬੈਠੀ, ਅਸੀਂ ਯਾਦ ਹੁਣ ਫੇਰ ਕਰਾ ਦਿਆਂਗੇ।
ਖੋਤੇ ਵਾਲੀ ਨ ਛਡੇਗੀ ਅੜੀ ਜੇਕਰ, ਅਸੀਂ ਅੱਗ ਅਸਮਾਨ ਨੂੰ ਲਾ ਦਿਆਂਗੇ।

ਕਿਡੇ ਢਿਡ ਵਧਾ ਲੇ ਪੂੰਜੀਦਾਰਾਂ, ਸਾਡੇ ਰੱਜੇ ਨਹੀ ਪੀ ਪੀ ਖੂੰਨ ਤਾਂਈ।
ਸਾਨੂੰ ਸਦਾ ਗ਼ੁਲਾਮੀ 'ਚਿ ਰਖਣੇ ਨੂੰ, ਨਿੱਤ ਘੜਦੇ ਨਵੇਂ ਕਾਨੂੰਨ ਤਾਂਈ।
ਜੇਕਰ ਬੋਲੀਏ ਤਾਂ ਇਕ ਸੌ ਇਕੀ, ਝਟ ਭੇਜ ਦਿੰਦੇ ਡੇਹਰਾਦੂਨ ਤਾਂਈ।
ਕੀਤਾ ਪਿੰਗਲੇ ਫਟਾਂ ਗ਼ੁਲਾਮੀ ਦਿਆਂ, ਉਤੇ ਛਿਣਕਦੇ ਜਬਰ ਦੇ ਲੂਣ ਤਾਂਈ।
ਦਾਰੇ ਵਾਲੀਆਂ ਐਪਰ ਗਈਆਂ ਲੁਟਾਂ, ਜ਼ਾਰ ਰੂਸ ਦਾ ਹਾਲ ਸੁਣਾ ਦਿਆਂਗੇ।
ਮੈਨੂੰ ਕਸਮ ਖ਼ੁਦਾ ਮੈਂ ਸਚ ਆਖਾਂ, ਅਸੀ ਅੱਗ ਅਸਮਾਨ ਨੂੰ ਲਾ ਦਿਆਂਗੇ।

ਹੁਣ ਉਠ ਜੱਟਾ, ਤੇਰੇ ਸਿਰ ਘੱਟਾ, ਸਿਰੋਂ ਛੱਟ ਗ਼ੁਲਾਮੀ ਦੀ ਲਾਹ ਜੱਟਾ।
ਅੱਖਾਂ ਮੀਟਦਿਆਂ ਵੇਲਾ ਲੰਘ ਗਿਆ, ਵਾਂਗ ਪੂਰਬੀਆਂ ਖੋਤੇਂਗਾ ਘਾਹ ਜੱਟਾ।
ਬਣ ਮਰਦ ਤੇ ਆ ਮੈਦਾਨ ਅੰਦਰ, ਨਹੀਂ ਵੈਰੀ ਦਾ ਕੁਛ ਵਸਾਹ ਜੱਟਾ।
ਜਾਂ ਤਾਂ ਖੱਟ ਲਿਆ ਕੁਛ ਲਾਹ ਤਾਂਈ, ਜਾਂ ਫਿਰ ਆਹ ਰਸਤਾ ਜਾਂ ਆਹ ਜੱਟਾ।

ਭੀਮਸੈਨ ਵਾਂਗੂ ਲਤੋਂ ਫੜ ਹਾਥੀ, ਅਸੀਂ ਵਿਚ ਆਕਾਸ਼ ਉੜਾ ਦਿਆਂਗੇ।
ਅਮਾਨੁੱਲਾ ਵਾਂਗੂ ਤਖਤੋਂ ਲਾਹਕੇ ਤੇ, ਬੱਚੇ ਸੱਕੇ ਵਾਂਗ ਧੂੜ ਧੁਮਾ ਦਿਆਂਗੇ।

— "ਦਰਵੇਸ਼"
("दरवेश")

"ਕਿਰਤੀ" ਮਾਸਕ ਪੱਤਰ
ਸੰਪਾਦਕ : ਅਮਰ ਸਿੰਘ "ਤੇਗ"।
ਜਿਲਦ ਨੰ. ੪, ਅੰਕ : ੭, ਜੁਲਾਈ ੧੯੨੯
ਓਅੰਕਾਰ ਪ੍ਰੈਸ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।

"किरती" मासिक पत्र
संपादक : अमर सिंह "तेग"।
जिल्द नं. 4, अंक : 7, जुलाई 1929.
ओंकार प्रैस, अमृतसर।

(अवाप्ति संख्या : 2173)

ਉਠ

ਉਠ! ਉਠ! ਗਭਰੂ ਗ਼ੁਲਾਮੀ ਵਿਚ ਫੱਸਿਆ ਓ,
ਵੇਖਦਾ ਨਹੀਂ? ਦੇਸ਼ ਤੇਰਾ ਡਾਢ੍ਹਾ ਮੰਦੇ ਹਾਲ ਏ।
ਦੁਖਾਂ ਤੇ ਮੁਸੀਬਤਾਂ ਦੇ ਝੱਖੜਾਂ ਦੇ ਨਾਲ ਕਿਵੇਂ,
ਫੱਲ ਫੁੱਲ ਟੁੱਟੇ ਅਤੇ ਸੁੱਕ ਗਿਆ ਡਾਲ ਏ।
ਭੁੱਖ ਵਾਲੇ ਦੁੱਖ ਨਾਲ ਕੋਈ ਪਿਆ ਲੁੱਛਦਾ ਏ,
ਡਾਢ੍ਹਿਆਂ ਦੇ ਹੱਥੋਂ ਕੋਈ ਹੋ ਰਿਹਾ ਨਿਢਾਲ ਏ।
ਪੂੰਜੀਦਾਰਾਂ ਵੇਖ ਕਿਵੇਂ ਕਿਰਤੀਆਂ ਦੇ ਫਾਹਵਨੇ ਨੂੰ,
ਤਾਣਿਆਂ ਚੌਫੇਰਿਉਂ ਫ਼ਰੇਬ ਵਾਲਾ ਜਾਲ ਏ।

ਗੱਲਾਂ ਗੱਲਾਂ ਨਾਲ ਇਹ ਹੋਵਣੀ ਨਹੀਂ ਕਾਰ ਯਾਰ,
ਹੋਕੇ ਹੁਸ਼ਿਆਰ ਲਲਕਾਰਾ ਇਕ ਮਾਰ ਦੇ।
ਟੱਪਕੇ ਦਲੀਲਾਂ ਤੇ ਫ਼ਿਲੌਸਫ਼ੀ ਦੀ ਕੰਧ ਤਾਈਂ,
ਖੁਲ੍ਹੇ ਰਣ ਤੱਤੇ ਵਿਚ ਝੰਡਾ ਖਲ੍ਹਾਰ ਦੇ।
ਸੂਰਿਆਂ ਦੇ ਵਾਂਗ ਮਰ ਜਾਹ ਯਾ ਆਜ਼ਾਦ ਹੋ,
ਦੇਸ਼ ਕੌਮ ਉਤੋਂ ਕਰ ਜਾਨ ਵੀ ਨਿਸਾਰ ਦੇ।
ਰੋਜ਼ ਰੋਜ਼ ਵਾਲੇ ਇਹ ਪੁਆੜੇ ਮੁਕ ਜਾਣ ਸਾਰੇ,
ਹਿੰਦ ਦੀ ਗ਼ੁਲਾਮੀ ਵਾਲੇ ਸੰਗਲ ਉਤਾਰ ਦੇ।

— 'ਨਾਦਾਨ' ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰੀ
('नादान' अमृतसरी)

"ਕਿਰਤੀ" ਮਾਸਕ ਪੱਤਰ
ਸੰਪਾਦਕ : ਬਚਿੱਤਰ ਸਿੰਘ।
ਜਿਲਦ ਨੰ. ੪, ਅੰਕ : ੧੨, ਦਸੰਬਰ ੧੯੨੯
ਓਅੰਕਾਰ ਪ੍ਰੈਸ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।

"किरती" मासिक पत्र
संपादक : बचित्तर सिंह।
जिल्द नं. 4, अंक : 12, दिसम्बर 1929.
ओंकार प्रैस, अमृतसर।

(अवाप्ति संख्या : 2166)

ਪੂੰਜੀਦਾਰੀ ਦੇ ਮਹਿਲ ਸਭ ਢਾਦਿਆਂਗੇ

ਸਾਡੀ ਚੁਪ ਨੂੰ ਦੇਖਕੇ ਹੋਰ ਸਗੋਂ,
ਲਗ ਗਿਆ ਤੂੰ ਕਹਿਰ ਕਮਾਉਣ ਜ਼ਾਲਮ।
ਖਾਲੀ ਹੱਥ ਨਿਦੋਸ਼ਿਆਂ ਹਿੰਦੀਆਂ ਤੇ,
ਚੜ੍ਹ ਪਿਆ ਏਂ ਗੋਲੀ ਵਰਸਾਉਣ ਜ਼ਾਲਮ।
ਅਲਫ਼ ਨੰਗੇ ਬਜ਼ਾਰਾਂ 'ਚਿ ਬੰਨ੍ਹ ਸਾਨੂੰ,
ਉਤੋਂ ਲਗਿਓਂ ਬੈਂਤ ਲਗਾਉਣ ਜ਼ਾਲਮ।
ਭਾਰਤ ਮਾਤਾ ਦੇ ਸਚੇ ਸਪੁਤਰਾਂ ਨੂੰ,
ਫੜਕੇ ਲਗਿਓਂ ਫਾਹੇ ਲਟਕਾਉਣ ਜ਼ਾਲਮ।
ਉਠ ਖੜੇ ਹੁਣ ਕਿਰਤੀ ਕਿਸਾਨ ਅਸੀ,
ਬਦਲੇ ਲੈਕੇ ਸਾਰੇ ਦਿਖਾ ਦਿਆਂਗੇ।
ਇਕਮਈ ਦੀ ਤੋਪ ਦਾ ਮਾਰ ਗੋਲਾ,
ਪੂੰਜੀਦਾਰੀ ਦੇ ਮਹਿਲ ਸਭ ਢਾ ਦਿਆਂਗੇ।

— ਸ਼ਾਹੀ ਬੰਦੀਵਾਨ ਲੁਧਿਆਣਵੀ
(शाही बंदीवान लुधियानवी)

"ਕਿਰਤੀ" ਮਾਸਕ ਪੱਤਰ
ਸੰਪਾਦਕ : ਬਚਿੱਤਰ ਸਿੰਘ।
ਜਿਲਦ ਨੰ. ੪, ਅੰਕ : ੧੨, ਦਸੰਬਰ ੧੯੨੯
ਓਅੰਕਾਰ ਪ੍ਰੈਸ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।

"किरती" मासिक पत्र
संपादक : बचित्तर सिंह।
जिल्द नं. 4, अंक : 12, दिसम्बर 1929.
ओंकार प्रैस, अमृतसर।

(अवाप्ति संख्या : 2166)

ਪਿਆਰਾ ਦਾਸ

ਆਹਾ ਦਾਸ ਪਿਆਰਾ ਦਾਸ਼ ਦਾਸ ਹੋਵੇ, ਹਿੰਦ ਵਾਸੀਆਂ ਦੇ ਦਿਲੀਂ ਵੱਸ ਗਿਆ।
ਆਨ ਸ਼ਾਨ ਰਖੀ ਸਿਦਕ ਸਾਬਰੀ ਦੀ, ਮੌਤ ਦੇਖ ਦੇਖਾਉਂਦਿਆਂ ਹੱਸ ਗਿਆ।
ਰੱਸੇ ਰਹੇ ਸਰਕਾਰ ਦੇ ਕੜੇ ਕੀਤੇ, ਸੌਂਹੇ ਵੇਂਹਦਿਆਂ ਵੇਂਹਦਿਆਂ ਨੱਸ ਗਿਆ।
ਬਾਣ ਸਬਰ ਦਾ ਮਾਰਿਆ ਖਿੱਚ ਛਾਤੀ, ਨੌਕਰਸ਼ਾਹੀ ਦੀ ਰਗਾਂ ਵਿਚ ਧਸ ਗਿਆ।
ਪੜਦਾ ਚੁਕਕੇ ਜ਼ੁਲਮ ਅੰਧੇਰੀਆਂ ਦਾ, ਨੌਕਰਸ਼ਾਹੀ ਦੀ ਕਰੀ ਤਸਵੀਰ ਨੰਗੀ।
ਜੇਹੜੀ ਕੂਕਦੀ ਕਹੇ ਇਨਸਾਫ਼ ਕਰੀਏ, ਖੜੀ ਆਪਨੀ ਕਰੀ ਤਸਵੀਰ ਨੰਗੀ।
ਜ਼ਾਲਮ ਅਜੇ ਨਾ ਰਜਿਆ ਜ਼ੁਲਮ ਕਰ ਕਰ, ਵਿਚ ਕੋਟ ਦੇ ਪੁਲਸਦਾ ਰਾਜ ਹੋਇਆ।
ਮਿਟੀ ਆਪਨੀ ਹਥੀਂ ਪਲੀਤ ਕਰਦੇ, ਜਿਹਨਾਂ ਸਦਾ ਕਾਨੂੰਨ ਤੇ ਨਾਜ਼ ਹੋਇਆ।
ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਤੇ ਦੱਤ ਸਮੇਤ ਸਾਥੀ, ਕੁਟ ਕੁਟਕੇ ਕਹਿਣ ਸਵਰਾਜ ਹੋਇਆ।
ਫੇਰ ਆਖਦੇ ਅਸਾਂ ਇਨਸਾਫ਼ ਕਰਨਾ, ਪਹਿਲੇ ਦਿਤਾ ਇਨਸਾਫ਼ ਦਾ ਬਿਆਜ ਹੋਇਆ।
ਹਾਏ ਅਜੇ ਨਾ ਜ਼ਾਲਮਾਂ ਸ਼ਰਮ ਆਵੇ, ਇਕ ਮਾਰਿਆ ਦੂਜਿਆਂ ਮਾਰਨਾਂ ਏਂ।
ਤੈਨੂ ਤੇਰਿਆਂ ਲਛਣਾ ਕਢ ਦੇਸੋਂ, ਵਿਚ ਖਾਰੇ ਸਮੁੰਦਰ ਦੇ ਗਾਰਨਾਂ ਏਂ।
ਸੜੇ ਦਿਲਾਂ ਦੀ ਬੁਰੀ ਭੜਾਸ ਹੁੰਦੀ, ਤਖ਼ਤਾ ਜ਼ੁਲਮ ਦਾ ਉਲਟ ਪਲਟਾ ਦੇਵੇ।
ਜਿਹੜੇ ਆਪਣੀ ਹਿੱਕ ਦਾ ਕਰਨ ਧਕਾ, ਸਿਰ ਓਹਨਾਂ ਦੇ ਪਾ ਸੁਵਾਹ ਦੇਵੇ।
ਓਹਨਾਂ ਜੰਮਿਆਂ ਕੌਣ ਹੈ ਜਿਤ ਸਕੇ, ਸਿਰਾਂ ਧੜਾਂ ਜੋ ਬਾਜ਼ੀਆਂ ਲਾ ਦੇਵੇ।
ਜਿਹਨਾਂ ਸੀਸ ਨੂੰ ਵਾਰਿਆ ਦੇਸ਼ ਖ਼ਾਤਰ, ਵਾਰਾਂ ਓਹਨਾਂ ਜਹਾਨ ਸਭ ਗਾ ਦੇਵੇ।
ਤੇਰੇ ਜ਼ੁਲਮ ਦੀ ਜ਼ਾਲਮਾਂ ਬਸ ਹੋ ਗਈ, ਸਦਾ ਬੁਰੀ ਨ ਦੋਸਿਆਂ ਆਹ ਹੁੰਦੀ।
ਜਿਹੜੀ ਤੁਲ ਜਾਏ ਜ਼ੁਲਮ ਸਰਕਾਰ ਕਰਨੇ, ਅੰਤ ਓਸਦੀ ਡਿੱਠੀ ਸਵਾਹ ਹੁੰਦੀ।
ਕੀ ਹੋਇਆ ਜੇ ਦਾਸ ਸ਼ਹੀਦ ਹੋਇਆ, ਜਾਨ ਪਾ ਗਿਆ ਹਿੰਦੋਸਤਾਨ ਦੇ ਵਿਚ।
ਖਾਤਰ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਹੋਣ ਸ਼ਹੀਦ ਹੋਕੇ, ਦਸ ਗਿਆ ਹੈ ਠੀਕ ਬਿਆਨ ਦੇ ਵਿਚ।
ਭਾਂਡਾ ਭੰਨਿਆਂ ਸੀਸ ਤੇ ਜ਼ਾਲਮਾਂ ਦੇ, ਨੇਕੀ ਖਟ ਲਈ ਕੁਲ ਜਹਾਨ ਦੇ ਵਿਚ।
ਨੌਕਰਸ਼ਾਹੀ ਤੇ ਲਾਹਨਤਾਂ ਪੈਣ ਸਾਰੇ, ਕੀਤਾ ਜ਼ੁਲਮ ਜੋ ਦਾਸ ਮਰਵਾਨ ਦੇ ਵਿਚ।
ਜੜ੍ਹਾਂ ਕਰ ਗਿਆ ਪੋਲੀਆਂ ਰਾਜ ਦੀਆਂ, ਗਿਆ ਖੇਲ ਪਿਆਰੀ ਆਪਨੀ ਜਾਨ ਉਤੇ।
ਜ਼ਿੰਦਾ ਰਹੇਗਾ ਰਹੇਗਾ ਜਗ ਤੋੜੀ, ਹਰ ਇਕ ਦੀ ਦਾਸ ਜ਼ਬਾਨ ਉਤੇ।
ਵਰਤ ਰਖਿਆ ਰਾਜਸੀ ਕੈਦੀਆਂ ਨੇ, ਦਬੇ ਹੋਏ ਜੋ ਹੱਕ ਦਵਾਨ ਬਦਲੇ।

—254/Deptt. of Archives/ND/97

ਨੌਕਰਸ਼ਾਹੀ ਨੇ ਜਰਾ ਨਾ ਤਰਸ ਕੀਤਾ, ਭੁਖੇ ਰਖਕੇ ਮਰਨ ਮਰਾਨ ਬਦਲੇ।
ਏਥੇ ਦਾਸ ਤੇ ਬਰਮਾਂ 'ਚ ਸੰਤ ਗੁਜ਼ਰੇ, ਕੈਦੀ ਰਾਜਸੀ ਉਚੇ ਕਰਾਨ ਬਦਲੇ।
ਖ਼ਾਤਰ ਹਿੰਦ ਦੀ ਜਿੰਦ ਭੀ ਵਾਰ ਦਿਤੀ, ਹਿੰਦੋਸਤਾਨੀਆਂ ਦੀ ਆਨ ਸ਼ਾਨ ਬਦਲੇ।
ਜੀਊਣਾ ਬੁਰਾ ਗ਼ੁਲਾਮੀ ਦੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦਾ, ਸੈਹਣਾ ਲਾਹਨਤਾਂ ਤੋਂ ਮਰ ਜਾਨ ਚੰਗਾ।
ਢੀਠ ਹੋਕੇ ਰਹਿਣਾ ਬੈਕੁੰਠ ਭੈੜਾ, ਖ਼ਾਤਰ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਹੋਣ ਕੁਰਬਾਨ ਚੰਗਾ।

— "ਕੈਨੇਡੀਅਨ"
("कैनेडीयन")

"ਕਿਰਤੀ" ਮਾਸਕ ਪੱਤਰ
ਸੰਪਾਦਕ : ਬਚਿੱਤਰ ਸਿੰਘ।
ਜਿਲਦ ਨੰ. ੪, ਅੰਕ : ੧੨, ਦਸੰਬਰ ੧੯੨੯
ਓਅੰਕਾਰ ਪ੍ਰੈਸ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।

"किरती" मासिक पत्र
संपादक : बचित्तर सिंह।
जिल्द नं. 4, अंक : 12, दिसम्बर 1929.
ओंकार प्रैस, अमृतसर।

(अवाप्ति संख्या : 2166)

ਮੁਸਲਿਮ, ਹਿੰਦੂ, ਸਿੱਖ ਨਹੀ ਅਸੀ, ਸਾਡੀ ਕੌਮ ਹੁਣ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨੀਆਂ ਦੀ

ਆਈ ਸੁਰਤ ਹੁਣ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਕਿਰਤੀਆਂ ਨੂੰ, ਜੜ੍ਹੋਂ ਪੁੱਟ ਗ਼ੁਲਾਮੀ ਵਿਖਾਵਾਂਗੇ ਹੁਣ।
ਦਰਸ਼ ਦੇਵੀ ਆਜ਼ਾਦੀ ਦਾ ਕਰਨ ਖ਼ਾਤਰ, ਅਸੀਂ ਆਪਣਾ ਤਾਣ ਲਗਾਵਾਂਗੇ ਹੁਣ।
ਤੇਰੇ ਜ਼ੁਲਮ ਦੇ ਪਾਪੀਆ ਭਾਂਬੜਾਂ ਤੇ, ਆਪਾ ਵਾਂਗ ਪਤੰਗ ਜਲਾਵਾਂਗੇ ਹੁਣ।
ਸ਼ਹਿਨਸ਼ਾਹੀ ਦੇ ਮਹਿਲ ਨੂੰ ਸੁੱਟ ਥੱਲੇ, ਸੋਸ਼ਲਿਜ਼ਮ ਦੇ ਮਹਿਲ ਬਣਾਵਾਂਗੇ ਹੁਣ।
ਅਸੀ ਤਲੀ ਤੇ ਜਾਨਾਂ ਟਿਕਾ ਨਿਕਲੇ, ਹੋਈ ਤਿਆਰ ਫ਼ਹਿਰਿਸਤ ਹੈ ਦਾਨੀਆਂ ਦੀ।
ਮੁਸਲਿਮ, ਹਿੰਦੂ, ਸਿੱਖ ਨਹੀਂ ਅਸੀਂ, ਸਾਡੀ ਕੌਮ ਹੈ ਹਿਦੁਸਤਾਨੀਆਂ ਦੀ।

ਰਖ ਆਸ ਨਾ ਅਸਾਂ ਤੋਂ ਖ਼ਿਦਮਤਾਂ ਦੀ, ਆਪਣੇ ਦੇਸ਼ ਲਈ ਮਰਾਂ ਮਰਾਵਾਂਗੇ ਹੁਣ।
ਕਰੇਂ ਵਾਰ ਹਰ ਰੋਜ਼ ਨਿਹੱਥਿਆਂ ਤੇ, ਤੈਨੂੰ ਇਸ ਦਾ ਪਤਾ ਵਿਖਾਵਾਂਗੇ ਹੁਣ।
ਅਸਾਂ ਸਮਝ ਲਈ ਇਹ ਗਲ ਬਾਤ ਸਾਰੀ, ਸ਼ਹਿਨਸ਼ਾਹੀ ਦਾ ਖੁਰਾ ਮਿਟਾਵਾਂਗੇ ਹੁਣ।
ਤੇਰੇ ਜਬਰ ਦੇ ਕੜੇ ਕਾਨੂੰਨ ਜ਼ਾਲਮ, ਨਾਲ ਠੁਡਿਆਂ ਵੇਖੀਂ ਠੁਕਰਾਵਾਂਗੇ ਹੁਣ।
ਕਿਰਤੀ ਗਭਰੂ ਰਲਕੇਂ ਇਕ ਹੋਏ, ਝੜੀ ਲਗਸੀ ਹੁਣ ਕੁਰਬਾਨੀਆਂ ਦੀ।
ਮੁਸਲਿਮ, ਹਿੰਦੂ, ਸਿੱਖ ਨਹੀਂ ਅਸੀਂ, ਸਾਡੀ ਕੌਮ ਹੁਣ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨੀਆਂ ਦੀ।

ਨੌ-ਆਬਾਦੀ ਬਰਬਾਦੀਆਂ ਛਡਕੇ ਤੇ, ਪਹੁੰਚ ਪੂਰਨ ਆਜ਼ਾਦੀ ਦਿਖਾਵਾਂਗੇ ਹੁਣ।
ਜਾਂ ਤੇ ਮਿੱਟ ਜਾਂਗੇ ਖ਼ੁਦ ਹਿੰਦ ਵਿਚੋਂ, ਨਹੀਂ ਤੇਰਾ ਹੀ ਫਸਤਾ ਮੁਕਾਵਾਂਗੇ ਹੁਣ।
ਹੁਣ ਤੇ ਵਿਚ ਵਿਚਾਲੜੇ ਨਹੀ ਰਹਿਣਾ, ਕਰਕੇ ਇਕ ਦੂੰ ਇਕ ਵਿਖਾਵਾਂਗੇ ਹੁਣ।
ਮਜ਼੍ਹਬੀ ਝਗੜਿਆਂ ਤੇ 'ਸਾਥੀ' ਵਖ ਰਹਿਕੇ, ਕਮਯੂਨਿਜ਼ਮ ਦਾ ਝੰਡਾ ਝੁਲਾਵਾਂਗੇ ਹੁਣ।
ਹਿੰਦੀ ਹਿੰਦ ਨੂੰ ਹੁਣ ਆਜ਼ਾਦ ਕਰਸਨ, ਸਫਾ ਉਠਸੀ ਇਥੋਂ ਸ਼ੈਤਾਨੀਆਂ ਦੀ।
ਮੁਸਲਿਮ, ਹਿੰਦੂ, ਸਿੱਖ ਨਹੀਂ ਅਸੀਂ, ਸਾਡੀ ਕੌਮ ਹੈ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨੀਆਂ ਦੀ।

ਬੁੱਢੇ ਲੀਡਰਾਂ ਦੇ ਪਿੱਛੇ ਲਗ ਐਵੇਂ, ਸਮਾਂ ਵਾਧੂ ਨਾ ਹੋਰ ਗਵਾਵਾਂਗੇ ਹੁਣ।
ਬਕ ਬਕਕੇ ਅਸੀਂ ਹਾਂ ਅੱਕ ਥੱਕੇ, ਜਿਵੇਂ ਸੁਣੋਗੇ ਤਿਵੇਂ ਸੁਣਾਵਾਂਗੇ ਹੁਣ।
ਸੱਚ ਮੁਚ ਹੰਕਾਰੀਓ, ਵੇਖ ਲੈਣਾ, ਛੇਤੀ ਹੇਠਲੀ ਉਤੇ ਲਿਆਵਾਂਗੇ ਹੁਣ।

ਹੁਣ ਤਾਂ ਜੀਵਣੇ ਦੀ 'ਸਾਥੀ' ਆਸ ਛੱਡੀ, ਢੰਗ ਢੰਗ ਦੇ ਜੰਗ ਰਚਾਵਾਂਗੇ ਹੁਣ।
ਅੜੀ ਆਸ ਉਮੈਦ ਹੈ ਦੂਰ ਕੀਤੀ, ਕੀਤੀ ਤਿਆਰੀ ਹੁਣ ਨਾ ਫੁਰਮਾਨੀਆਂ ਦੀ।
ਮੁਸਲਿਮ, ਹਿੰਦੂ, ਸਿੱਖ ਨਹੀਂ ਅਸੀਂ, ਸਾਡੀ ਕੌਮ ਹੁਣ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨੀਆਂ ਦੀ।

— "ਸਾਥੀ" ਈਸੜ
("साथी" ईसढ़)

"ਕਿਰਤੀ" ਮਾਸਕ ਪੱਤਰ
ਸੰਪਾਦਕ : ਬਚਿੱਤਰ ਸਿੰਘ।
ਜਿਲਦ ਨੰ. ੪, ਅੰਕ : ੧੨, ਦਸੰਬਰ ੧੯੨੯
ਓਅੰਕਾਰ ਪ੍ਰੈਸ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।

"किरती" मासिक पत्र
संपादक : बचित्तर सिंह।
जिल्द नं. 4, अंक : 12, दिसम्बर 1929.
ओंकार प्रैस, अमृतसर।

(अवाप्ति संख्या : 2166)

ਅਸੀਂ ਹਿੰਦ ਆਜ਼ਾਦ ਕਰਾਵਾਂਗੇ

ਅਸੀਂ ਹਿੰਦ ਆਜ਼ਾਦ ਕਰਾਵਾਂਗੇ, ਜੇ ਗੋਰੇ ਕੱਢ ਵਖਾਏ ਨਾਂ,
'ਜੁਗ-ਗਰਦੀ' ਦੀ ਡੰਕ ਵਜਾਵਾਂਗੇ, ਸਮੁੰਦ੍ਰੋਂ ਪਾਰ ਭਜਏ ਨਾਂ,
ਜਿੰਦਾਂ ਫਿਰਦੇ ਹੋਰ ਆਜ਼ਾਦੀ ਮੇਂ, ਏਨ੍ਹਾਂ ਦਾਣੇਂ ਖ਼ੂਬ ਚਬਾਵਾਂਗੇ,
ਇੰਵ ਹੋਵਾਂਗੇ ਆਬਾਦੀ ਮੇਂ, ਅਸੀਂ ਹਿੰਦ ਆਜ਼ਾਦ ਕਰਾਵਾਂਗੇ।
ਇਨ੍ਹਾਂ ਛੱਡਾਂਗੇ ਬਰਬਾਦੀ ਮੇਂ, ਨਹੀਂ ਦੁਖੜੇ ਹੋਰ ਸਹਾਰੀ ਦੇ,
ਤਾਂ ਸਬਰ ਦੀ ਰੋਟੀ ਖਾਵਾਂਗੇ, 'ਰਾਹੀ' ਬਨੇ ਜੋ ਹਿੰਦ ਪਿਆਰੀ ਦੇ,
ਅਸੀਂ ਹਿੰਦ ਆਜ਼ਾਦ ਕਰਵਾਂਗੇ, ਪੁਤ ਭੁਖੇ ਮਰਨ ਵਿਚਾਰੀ ਦੇ,
ਜੇਹੜੇ ਆਂਹਦੇ ਸਾਨੂੰ ਕਾਲੇ ਨੇਂ, ਇਹ ਬਚਨ ਅਖ਼ੀਰ ਪੁਕਾਰੀ ਦੇ,
ਉਹ ਅਸੀਂ ਹੀ ਖ਼ੁੱਦ ਪਾਲੇ ਨੇਂ, ਨਹੀਂ ਆਪਣੇ ਹੱਕ ਗਵਾਵਾਂਗੇ,
ਤਾਂਹੀ ਪਕੜੇ ਭੈੜੇ ਚਾਲੇ ਨੇਂ, ਅਸੀਂ ਹਿੰਦ ਆਜ਼ਾਦ ਕਰਾਵਾਂਗੇ।
ਬਣ ਬੈਠੇ ਭਾਰਤ ਵਾਲੇ ਨੇਂ, ਸਾਡਾ ਬਾਗ਼ ਹਿੰਦਾਲੀ ਪੁੱਟਿਆ ਏ,
ਭੈੜੇ ਭਰਦੇ ਸਾਥੋਂ ਹਾਲੇ ਨੇਂ, ਏਨ੍ਹਾਂ ਸਾਥ ਆਪਣੇਂ ਲੁੱਟਿਆ ਏ,
ਉਹ ਆਕੜ ਕੱਢ ਵਖਾਵਾਂਗੇ, ਜੋ ਬੋਲਿਆ ਉਸ ਨੂੰ ਕੁੱਟਿਆ ਏ,
ਅਸੀਂ ਹਿੰਦ ਆਜ਼ਾਦ ਕਰਾਵਾਂਗੇ। ਉਹ ਗ਼ੁੱਸਾ ਕੱਢ ਵਿਖਾਵਾਂਗੇ,
ਰੱਬ ਕਸਮ ਤਾਂ ਹੋਰ ਖਵਾਏ ਨਾਂ, ਅਸੀਂ ਹਿੰਦ ਆਜ਼ਾਦ ਕਰਾਵਾਂਗੇ।
ਅਸੀਂ ਮਾਤਾ ਹਿੰਦ ਦੇ ਜਾਏ ਨਾਂ।

— ਭਾ: ਗੁਰਬਖ਼ਸ਼ ਸਿੰਘ "ਰਾਹੀ"
(भाई गुरबख्श सिंह "राही")

"ਕਿਰਤੀ" ਮਾਸਕ ਪੱਤਰ
ਸੰਪਾਦਕ : ਬਚਿੱਤਰ ਸਿੰਘ।
ਜਿਲਦ ਨੰ. ੪, ਅੰਕ : ੧੨, ਦਸੰਬਰ ੧੯੨੯
ਓਅੰਕਾਰ ਪ੍ਰੈਸ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।

"किरती" मासिक पत्र
संपादक : बचित्तर सिंह।
जिल्द नं. 4, अंक : 12, दिसम्बर 1929.
ओंकार प्रैस, अमृतसर।

(अवाप्ति संख्या : 2166)

ਪੂੰਜੀਦਾਰੀ ਫੂਕਾਂ ਮਾਰ ਉਡਾਈਏ

ਆ ਕਿਰਤੀਆ ਰਲ ਕੇ ਦੋਵੇਂ, ਗੁਣ ਏਕੇ ਦੇ ਗਾਈਏ।
ਦੂਈ ਦਿਲੋਂ ਮਿਟਾਈਏ ਦੋਵੇਂ, ਘੁਟ-ਘੁਟ ਜਫੀਆਂ ਪਾਈਏ।
ਏਕੇ ਦੇ ਵਿਚ ਬਰਕਤ ਬਾਹਲੀ, ਏਕਾ ਸਭ ਕੁਝ ਕਰਦਾ।
ਏਕਾ ਕਰੇਂ ਤਾਂ ਪੂੰਜੀਦਾਰੀ, ਫੂਕਾਂ ਮਾਰ ਉਡਾਈਏ।

ਸੰਗਲ ਤੋੜ ਗ਼ੁਲਾਮੀ ਵਾਲੇ, ਖੁਲ੍ਹੇ-ਖੁਲ੍ਹੇ ਵਸੀਏ।
ਪੂੰਜੀਦਾਰਾਂ ਦੀ ਫਾਹੀ ਵਿਚ, ਫੇਰ ਕਦੇ ਨਾ ਫਸੀਏ।
ਆਖ ਗ਼ੁਲਾਮੋਂ ਜਾਗੋ, ਜਾਗੇ ਭਾਗ਼ ਤੁਹਾਡੇ ਸੁਤੇ।
ਆਓ ਰਾਹ ਆਜ਼ਾਦੀ ਵਾਲਾ ਸਾਰੇ ਹਿੰਦ ਨੂੰ ਦਸੀਏ।

ਏਕਾ ਕਰੋਂ ਤਾਂ ਤੈਨੂੰ ਮੈਨੂੰ, ਮੂੰਹ ਮੰਗੀਆਂ ਮਿਲ ਜਾਵਣ।
ਸਿਰ ਉਪਰ ਚੜ੍ਹ ਗਏ ਨੇ ਜਿਹੜੇ, ਪੈਰਾਂ ਨੂੰ ਹਥ ਲਾਵਣ।
ਉਹ ਨਾਂ ਖੁਲ੍ਹੇ ਬੁਲੇ ਲੁਟਣ, ਅਸੀਂ ਨਾ ਭੁੱਖੇ ਮਰੀਏ।
"ਹਿੰਦ ਮਾਤ ਸੀਤਾ" ਦੀ ਪਤਵਲ, ਵੇਖੇ ਫੇਰ ਨਾ ਰਾਵਣ।

ਰੁਲਣ ਨਾ ਫਿਰ ਹਿੰਦ ਦੇ ਵਾਸੀ, ਹੋ ਹੋ ਦਰਦ ਰੰਵਾਣੇ।
ਵਿਲਕਣ ਮੂਲ ਨਾ ਬਲ ਅਸਾਡੇ, ਦਰ-ਦਰ ਭੁਖੇ ਭਾਣੇ।
ਇਕ ਮਈ ਦੀ ਬਰਖਾ ਹੋਵੇ, ਸਾਰੀ ਦੁਨੀਆਂ ਉਤੇ।
ਇਕ ਮਈ ਕਰ ਦੇਈਏ ਰਲ ਕੇ, ਹਿੰਦ ਨੂੰ ਪੇਟੇ ਤਾਣੇ।

ਆਜਾ ਕਰਲੈ ਪ੍ਰਣਇਹ ਅਜਤੋਂ, ਵਿਛੜੇ ਵੀਰ ਮਿਲਾਈਏ।
ਏਕਾ ਕਰਕੇ ਨੁੱਕ ਬੰਨ੍ਹ ਕੇ, ਪਲ ਵਿਚ ਜੁਗ ਪਲਟਾਈਏ।
ਰਹੇ ਨਾ ਪੂੰਜੀਦਾਰੀ ਡਾਇਣ, ਨਾਮ ਲੈਣ ਨੂੰ ਕਿਧਰੇ।
ਉਜੜਿਆ ਘਰ 'ਹਾਲੀ ਦਾ', ਮੁੜ ਏਕੇ ਨਾਲ ਵਸਾਈਏ।

— 'ਹਾਲੀ'

(''हाली'')

"ਕਿਰਤੀ" ਮਾਸਕ ਪੱਤਰ
ਸੰਪਾਦਕ : ਬਚਿੱਤਰ ਸਿੰਘ।
ਜਿਲਦ ਨੰ. ੪, ਅੰਕ : ੧੨, ਦਸੰਬਰ ੧੯੨੯
ਓਅੰਕਾਰ ਪ੍ਰੈਸ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।

''किरती'' मासिक पत्र
संपादक : बचित्तर सिंह।
जिल्द नं. 4, अंक : 12, दिसम्बर 1929.
ओंकार प्रैस, अमृतसर।

ਭਾਂਬੜ ਮਚਾਈਦਾ ਤੇ ਰਾਜ ਉਲਟਾਈਦਾ

ਅਸਾਂ ਮਾਤ ਹਿੰਦ ਲਈ ਨਾਂ ਕਰਨੀ ਪਿਆਰੀ ਜਿੰਦ,
ਹੁਣ ਛਿੰਦ ਪੁਣੇ ਵਿਚ ਝਟ ਨਹੀਂ ਲੰਘਾਈਦਾ।
ਦੇਸ਼ ਦੀ ਆਜ਼ਾਦੀ ਹਿਤ ਨਿੱਤ ਦੇ ਮੁਕਾਣੇ ਝੇੜੇ,
ਆਪਣੇ ਹੀ ਵਿਹੜੇ ਸਾਥੋਂ ਗ਼ੈਰ ਨਹੀਂ ਵਸਾਈਦਾ।
ਬਾਦਸ਼ਾਹ ਬਪਾਰੀਓਂ ਬਣਾਏ ਤੇ ਖੁਹਾਏ ਦੇਸ਼,
ਹੁਣ ਸਾਥੋਂ ਭਾਰ ਨਾ ਗ਼ੁਲਾਮੀ ਦਾ ਉਠਾਈਦਾ।
ਵਿਤੋਂ ਵਧ ਨੇਕੀਆਂ ਜੁ ਕੀਤੀਆਂ ਜਹਾਨ ਜਾਣੇ,
ਰਖਿਆ ਖ਼ਿਆਲ ਨਾ ਫ਼ਰੰਗੀਆਂ ਭਲਾਈ ਦਾ।
ਬਣਕੇ ਗ਼ੁਲਾਮ ਦੇਸ਼ ਹੋਰ ਵੀ ਗ਼ੁਲਾਮ ਕੀਤੇ,
ਕਿਉਂ ਜੁ ਪਤਾ ਨਾ ਸੀ ਇਹਦੀ ਚੜ੍ਹੀ ਚਤਰਾਈ ਦਾ।
ਸੋਚਦੇ ਵਿਉਂਤ ਰਹਿਣ ਸਾਡੇ ਖ਼ੂਨ ਚੂਸਣੇ ਦੀ,
ਪਾਕੇ ਫੁਟ ਭਾਈ ਤੋਂ ਕਟਾਂਦੇ ਸੀਸ ਭਾਈ ਦਾ।
ਵਧ ਗਏ ਲਗਾਨ ਪਰੇਸ਼ਾਨ ਨੇ ਕਿਸਾਨ ਲੱਖਾਂ,
ਕਿਰਤੀ ਦਾ ਖ਼ੂਨ ਨਾਲ ਫ਼ਾਕਿਆਂ ਸੁਕਾਈਦਾ।
ਮੰਗੀਏ ਮਜ਼ੂਰੀ ਘੂਰੀ ਵੱਟਦੇ ਨੇ ਮਾਲਦਾਰ,
ਫੱਡੀਏ ਜੇ ਕਾਰ ਨਾਲ ਗੋਲੀਆਂ ਡਰਾਈਦਾ।
ਕੀਤਾ ਹੁਣ ਏਕਾ ਅਸਾਂ ਸਾਰੇ ਹਿੰਦ ਵਾਸੀਆਂ ਨੇ,
ਭੰਨਣਾ ਜ਼ਰੂਰ ਹੈ ਬੁਥਾੜ ਧੱਕੇਸ਼ਾਹੀ ਦਾ।
ਮਜ਼ੁਬੀ ਝਮੇਲਿਆਂ ਦੇ ਕਾਰੇ ਲੋਕਾਂ ਵਿਹਲਿਆਂ ਦੇ,
ਫ਼ਰਕ ਮਿਟਾਣਾ ਅਸਾਂ ਊਚ ਨੀਚ ਤਾਈਂ ਦਾ।
ਹੋਣਾ ਨਾ ਆਜ਼ਾਦ ਦੇਸ਼ ਅਸਾਂ ਦਾ ਦਲੀਲਾਂ ਵਿਚ,
ਮਿੰਨਤਾਂ ਦੇ ਨਾਲ ਸਾਥੋਂ ਹੱਕ ਨਹੀਂ ਮਨਾਈਦਾ।
ਕਿਹਾ ਏ ਸਿਆਣਿਆਂ ਨੇ ਇੱਟ ਦੇ ਜਵਾਬ ਲਈ,
ਹੋਕੇ ਸਨਮੁਖ ਅੱਗੋਂ ਪੱਥਰ ਵਖਾਈਦਾ।
ਜਿੰਨਾਂ ਚਿਰ ਗ਼ੈਰ ਏਥੇ ਕਰਦੇ ਹਕੂਮਤਾਂ ਨੇ,
ਓਨਾਂ ਚਿਰ ਸੁਖ ਕੀ ਏ ਕਾਲਜੀਂ ਪੜ੍ਹਾਈ ਦਾ।
ਭੱਠ ਪਏ ਫ਼ੈਸ਼ਨ ਤਿ ਮਹਿਲ ਭੈੜੇ ਝੁਗੀਆਂ ਤੋਂ,
ਮੋਟਰਾਂ ਤੇ ਬੱਘੀਆਂ ਨੂੰ ਲੰਬੂ ਕਿਉਂ ਨਹੀਂ ਲਾਈਦਾ?

ਆਕੜ ਗ਼ੁਲਾਮਾਂ ਦੀ ਕੀ ਆਖਦੀ ਵਲੈਤ ਸੈਰ,
ਫਿਟੇ ਮੂੰਹ ਪਰਾਧੀਨਤਾ ਦੇ ਸੂਟ ਬੂਟ ਟਾਈ ਦਾ।
ਦੁਧ ਤੇ ਮਲਾਈ, ਸੋਡੇ ਕੇਕ ਤਿ ਖਤਾਈ ਨਾਲੋਂ,
ਲੈਕੇ ਤੋਲਾ ਸੰਖੀਆ ਬਾਜ਼ਾਰੋਂ ਕਿਉਂ ਨਹੀ ਖਾਈਦਾ।
ਖੰਘ, ਤਾਪ, ਹੈਜ਼ੇ ਤੇ ਪਲੇਗ ਨਾਲ ਮੰਜੀਆਂ ਤੇ,
ਨਾਲ ਜੁ ਨਿਮੋਨੀਏਂ ਦੇ ਘਰੀ ਮਰ ਜਾਈਦਾ।
ਹੋਕੇ ਤਪਦਿਕ ਨਾਲ ਜਿੱਚ ਹੱਡ ਰੋਲਣੇ ਤੋਂ,
ਗੀਠੀਏ ਮਰੋੜਾਂ ਨਾਲ ਦੁਖ ਸੈ ਉਠਾਈਦਾ।
ਕਿਤੇ ਖਾਲ ਬੰਨਿਆਂ ਤੋਂ ਲੜਕੇ ਸ਼ਰੀਕਾਂ ਨਾਲ,
ਜੇਲ੍ਹਖ਼ਾਨੇ ਜਾਈਦਾ ਤਿ ਸਿਰ ਪੜਵਾਈਦਾ।
ਤਾਂਤਿ ਭਲਾ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਆਜ਼ਾਦੀ ਹਿਤ ਸੀਸ ਦੇਣਾ,
ਮਰਕੇ ਸ਼ਹੀਦੀ ਅਤੇ ਜੀਊ ਕੇ ਮਾਣ ਪਾਈਦਾ।
ਮਾਰਦੇ ਨੇ ਮਿਹਣੇ ਸਾਨੂੰ ਦੂਸਰੇ ਆਜ਼ਾਦ ਦੇਸ਼,
ਵੇਖਦੇ ਨੇ ਹਾਲ ਜਦੋਂ ਸਾਡੀ ਢੀਠਤਾਈ ਦਾ।
ਆਖਦੇ ਬੇਸ਼ਰਮ ਬੇਗ਼ੈਰਤੀ ਨਿਕੰਮੇ ਜੰਮੇ,
ਲਜਿਆ ਦੇ ਮਾਰੇ ਮੂੰਹ ਹੇਠ ਨੂੰ ਛਪਾਈਦਾ।
ਨਿਮੋਝਾਣ ਹੋਈਏ ਮੂੰਹੋਂ ਅਹੁੜਦੀ ਨਾ ਗੱਲ ਕੋਈ,
ਗਲਾਂ ਵਿਚ ਗਲਾਂ ਪਾਕੇ ਪਾਸਾ ਪਰਤਾਈਦਾ।
ਧੱਕੇ ਪਰਦੇਸ ਦੇਸ਼ ਫ਼ਾਕੇ ਨੇ ਫ਼ਕੀਰ ਕੀਤਾ,
ਪਸ਼ੂਆਂ ਸਮਾਨ ਸੱਚੀਂ ਜੀਵਨ ਖਿਤਾਈਦਾ।
ਬੰਬ ਤੇ ਮਸ਼ੀਨੋਂ ਡਰ ਕਾਹਦਾ ਸਾਨੂੰ ਗੋਲੀਆਂ ਦਾ,
ਭੋਰਾ ਜਿੰਨਾਂ ਭੈ ਨਾ ਜਹਾਜ਼ ਜੁ ਹਵਾਈ ਦਾ।
ਜੇਲ੍ਹ ਤਾਂ ਬਣਾਈ ਖੇਲ੍ਹ ਅਸਾਂ ਜਿਵੇਂ ਬੱਚਿਆਂ ਦੀ,
ਜਿਥੇ ਸਾਨੂੰ ਸਬਕ ਆਜ਼ਾਦੀ ਦਾ ਸਿਖਾਈਦਾ।
ਆਤਮਾਂ ਅਮਰ ਏਨ ਮੂਲ ਮਰ ਜਾਵਣਾ ਨਾ,
ਰਹਿਣਾ ਨਾ ਸਰੀਰ ਸੁ ਕਿਉਂ ਨਹੀ ਕਾਰੇ ਲਾਈਦਾ।
ਮਜ਼੍ਹਬਾਂ ਦੇ ਪੱਖ ਰਖ ਛਡਿਉ ਸੰਦੂਕ ਵਿਚ,
ਦੇਸ਼ 'ਚਿ ਵਜਾ ਦਿਉ ਨਗਾਰਾ ਏਕਤਾਈ ਦਾ।
ਆਖਿਉ ਵੰਗਾਰਕੇ ਨਾ ਰਖਿਉ ਲਿਹਾਜ਼ ਕੋਈ,
ਹੁਣ ਸਾਨੂੰ ਰਾਜ ਧੱਕੇਸ਼ਾਹੀ ਦਾ ਨਹੀਂ ਚਾਹੀਦਾ।

ਹਿੰਦ ਹੈ ਬੇਦਾਰ ਭਾਰ ਚੁਕੇ ਨਾ ਗ਼ੁਲਾਮੀਆਂ ਦਾ,
ਲੋਰੀਆਂ ਦੇ ਨਾਲ ਨਾ ਤੁਹਾਡੇ ਤੋਂ ਸਲਾਈਦਾ।
ਸਬਰ ਬਥੇਰਾ ਕੀਤਾ ਜਬਰ ਕਟਾਰੀ ਸਹਿਕੇ,
ਹੁਣ ਫੱਟੀ ਅਲ੍ਹਿਆਂ ਤੇ ਲੂਣ ਨਹੀਂ ਮਿਟਾਈਦਾ।
ਸੜੀ ਸ਼ਾਂਤ-ਮਈ ਪਈ ਢੱਠੇ ਖੂਹ ਖਾਤਿਆਂ 'ਚਿ,
ਅੱਗੇ ਲੰਮੇ ਪੈਕੇ ਸਾਥੋਂ ਲੱਕ ਨਹੀਂ ਤੁੜਾਈਦਾ।
ਮਿਲੀ ਨਾ ਆਜ਼ਾਦੀ, ਬਰਬਾਦੀ ਤਾਂ ਬਥੇਰੀ ਹੋਊ,
ਫਸਤਾ ਮੁਕਾਣਾਂ ਅਸਾਂ ਚੌਧਰ ਪਰਾਈ ਦਾ।
ਜਾਂ ਸੈ ਸਦੀਆਂ ਦੇ ਲਈ ਹੀ ਗ਼ੁਲਾਮ ਰਹੇ,
ਜਾਂ ਫਲ ਮਿਲੇ ਨਹਿਰ ਰੱਤ ਦੀ ਵਗਾਈ ਦਾ।
ਜ਼ੁਲਮ ਤੁਹਾਡੇ ਸਾਡੇ ਸੀਨਿਆਂ ਤੇ ਉਕਰੇ ਨੇ,
ਲੈਣਾਂ ਏਂ ਹਿਸਾਬ ਅਸਾਂ ਗਿਣ ਪਾਈ ਪਾਈ ਦਾ।
ਵੇਖ ਸੀ ਤਮਾਸ਼ਾ "ਪਰਤਾਪ" ਨਾਲ ਏਕਤਾ ਦੇ,
ਭਾਂਬੜ ਮਚਾਈਦਾ ਤੇ ਰਾਜ ਉਲਟਾਈਦਾ।

— ਭਾ: ਪਰਤਾਪ ਸਿੰਘ ਲਾਇਲ ਪੁਰੀ
(भाई प्रताप सिंह लायलपुरी)

"ਕਿਰਤੀ" ਮਾਸਕ ਪੱਤਰ
ਸੰਪਾਦਕ : ਬਚਿੱਤਰ ਸਿੰਘ।
ਜਿਲਦ ਨੰ. ੫, ਅੰਕ : ੧, ਜਨਵਰੀ ੧੯੩੦
ਓਅੰਕਾਰ ਪ੍ਰੈਸ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।

"किरती" मासिक पत्र
संपादक : बचित्तर सिंह।
जिल्द नं. 5, अंक : 1, जनवरी 1930.
ओंकार प्रैस, अमृतसर।

(अवाप्ति संख्या : 2168)

ਉਠ! ਉਠ!! ਗਭਰੂ ਗ਼ੁਲਾਮੀ ਵਿਚ ਫਸਿਆ ਓ, ਵੇਖਦਾ ਨਹੀਂ? ਦੇਸ਼ ਤੇਰਾ ਡਾਢ੍ਹਾ ਮੰਦੇ ਹਾਲ ਏ।

ਉਠ! ਉਠ!! ਗਭਰੂ ਗ਼ੁਲਾਮੀ ਵਿਚ ਫਸਿਆ ਓ,
ਵੇਖਦਾ ਨਹੀਂ? ਦੇਸ਼ ਤੇਰਾ ਡਾਢ੍ਹਾ ਮੰਦੇ ਹਾਲ ਏ।
ਦੁਖਾਂ ਤੇ ਮੁਸੀਬਤਾਂ ਦੇ ਝੱਖੜਾਂ ਦੇ ਨਾਲ ਕਿਵੇਂ,
ਫਲ ਫੁਲ ਟੁਟੇ ਅਤੇ ਸੁਕ ਗਿਆ ਡਾਲ ਏ।
ਭੁੱਖ ਵਾਲੇ ਦੁਖ ਨਾਲ ਕੋਈ ਪਿਆ ਲੁਛਦਾ ਏ,
ਡਾਢ੍ਹਿਆਂ ਦੇ ਹੱਥੋਂ ਕੋਈ ਹੋ ਰਿਹਾ ਨਿਢਾਲ ਏ।
ਪੂੰਜੀਦਾਰਾਂ ਵੇਖ ਕਿਵੇਂ ਕਿਰਤੀਆਂ ਦੇ ਫਾਹਵਣੇ ਨੂੰ,
ਤਾਣਿਆਂ ਚੌਫੇਰਿਉਂ ਫ਼ਰੇਬ ਵਾਲਾ ਜਾਲ ਏ।
ਗੱਲਾਂ ਗੱਲਾਂ ਨਾਲ ਇਹ ਹੋਵਣੀ ਨਹੀ ਕਾਰ ਯਾਰ,
ਹੋਕੇ ਹੁਸ਼ਿਆਰ ਲਲਕਾਰਾ ਇਕ ਮਾਰ ਦੇ।
ਟੱਪਕੇ ਦਲੀਲਾਂ ਦੇ ਫ਼ਲੌਸਫ਼ੀ ਦੀ ਕੰਧ ਤਾਂਈ,
ਖੁਲ੍ਹੇ ਰਣ ਤੱਤੇ ਵਿਚ ਝੰਡਾ ਖਲ੍ਹਿਆਰ ਦੇ।
ਸੂਰਿਆਂ ਦੇ ਵਾਂਙ ਮਰ ਜਾਹ ਯਾ ਆਜ਼ਾਦ ਹੋ,
ਦੇਸ਼ ਕੌਮ ਉਤੋਂ ਕਰ ਜਾਨ ਵੀ ਨਸਾਰ ਦੇ।
ਰੋਜ਼ ਰੋਜ਼ ਵਾਲੇ ਇਹ ਪੁਆੜੇ ਮੁਕ ਜਾਣ ਸਾਰੇ,
ਹਿੰਦ ਦੀ ਗ਼ੁਲਾਮੀ ਵਾਲੇ ਸੰਗਲ ਉਤਾਰ ਦੇ।

— "ਨਾਦਾਨ"
("नादान")

"ਕਿਰਤੀ" ਮਾਸਕ ਪੱਤਰ
ਸੰਪਾਦਕ : ਬਚਿੱਤਰ ਸਿੰਘ।
ਜਿਲਦ ਨੰ. ੫, ਅੰਕ : ੧, ਜਨਵਰੀ ੧੯੩੦
ਓਅੰਕਾਰ ਪ੍ਰੈਸ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।

"किरती" मासिक पत्र
संपादक : बचित्तर सिंह।
जिल्द नं. 5, अंक : 1, जनवरी 1930.
ओंकार प्रैस, अमृतसर।

(अवाप्ति संख्या : 2168)

ਤੇਰਾ ਸੀਨਾ ਸ਼ਹੀਦੀ ਨੇ ਸੱਲਿਆ ਨਾ

ਧੰਨ ਭਾਗ ਸਾਡੇ ਜੋਧੇ ਵੀਰ ਜਾਗੇ, ਤੁਸੀਂ ਵੀਰਨੋ ਪਿਛਾਂ ਨੂੰ ਹੱਟਦੇ ਕਿਉਂ।
ਬੂਟਾ ਚੰਨਣ ਦਾ ਬੂਹੇ ਦੇ ਵਿਚ ਹੋਇਆ, ਆਰਾ ਧਰਕੇ ਜੜ੍ਹਾਂ ਤੋਂ ਕੱਟਦੇ ਕਿਉਂ।
ਇਸ ਮਾਇਆ ਨੇ ਸਦਾ ਨਹੀਂ ਨਾਲ ਜਾਣਾ, ਜਾਣ ਬੁਝਕੇ ਸੰਖੀਆ ਚੱਟਦੇ ਕਿਉਂ।
ਡਾਇਰੀ ਬਾਜ ਬਣਕੇ ਵਿਛੜੇ ਭਾਈਆਂ ਤੋਂ, ਜੜ੍ਹ ਆਪਣੇ ਆਪਦੀ ਪੱਟਦੇ ਕਿਉਂ।

ਸਦਾ ਕੈਦ ਨਾ ਕੱਟਣੀ ਜ਼ਾਲਮਾਂ ਦੀ, ਸਦਾ ਨਹੀਂ ਤਕਲੀਫ਼ ਤਿਆਰ ਰਹਿਣੀ।
ਸਦਾ ਨਹੀਂ ਦਰਿਆ ਦਾ ਵਹਿਲ ਇਕੋ, ਨਹੀਂ ਗੁਡੀ ਅਸਮਾਨ ਉਡਾਰ ਰਹਿਣੀ।
ਸਦਾ ਅਸੀਂ ਨਾ ਸਬਰ ਦੀ ਢਾਲ ਕਰਨੀ, ਸਦਾ ਤੇਰੀ ਨਾ ਤੇਜ਼ ਤਲਵਾਰ ਰਹਿਣੀ।
ਸਦਾ ਤੇਰਾ ਨਾ ਜੱਗ ਤੇ ਰਾਜ ਰਹਿਣਾ, ਇਹ ਸਦਾ ਨਾ ਗਾਈ ਦੀ ਵਾਰ ਰਹਿਣੀ।

ਬੰਦੇ ਵਿਚ ਸੰਸਾਰ ਦੇ ਆਇਆ ਤੂੰ, ਕਰਕੇ ਕੰਮ ਕਿਹੜਾ ਦਿਖਲਾਇਆ ਤੂੰ।
ਡੂੰਘੀ ਨੀਂਦ ਦੇ ਵਿਚ ਤੂੰ ਪਿਆ ਸੁੱਤਾ, ਇਕ ਵਾਰ ਨਾ ਪਾਸਾ ਪਰਤਾਇਆ ਤੂੰ।
ਕਿਹੜੇ ਪਾਸ ਉਸਤਾਦ ਦੇ ਪਿਆ ਪੜ੍ਹਨੇ, ਸੁੱਤੇ ਰਹਿਣ ਦਾ ਸਬਕ ਪਕਾਇਆ ਤੂੰ।
ਕਦੇ ਨਹੀਂ ਗ਼ੁਲਾਮੀ ਤੋਂ ਕਰੀ ਨਫ਼ਰਤ, ਨਾਂਹੀ ਕੌਮ ਲਈ ਸੀਸ ਲਗਾਇਆ ਤੂੰ।
ਬੀਤ਼ੀ ਰੈਨ ਤੇ ਸੁਬ੍ਹਾ ਦਾ ਵਕਤ ਹੋਇਆ, ਸੁੱਤਾ ਪਿਆ ਤੂੰ ਗ਼ਾਫ਼ਲਾ ਹੱਲਿਆ ਨਾ।
ਲੁੱਟ ਪਈ ਕੁਰਬਾਨੀ ਦੀ ਜੱਗ ਅੰਦਰ, ਤੇਰਾ ਸੀਨਾ ਸ਼ਹੀਦੀ ਨੇ ਸੱਲਿਆ ਨਾ।

ਹੱਥੀਂ ਆਪਣੇ ਜਿਉਂਦੇ ਦਾਨ ਕਰੀਏ, ਦਾਨ ਸੋ ਜੋ ਪਿਤਾ ਨੂੰ ਭਾ ਜਾਵੇ।
ਦਾਨ ਕਰੇ ਹੰਕਾਰ ਨਾ ਕਰੇ ਕੋਈ, ਜੱਗ ਵਿਚ ਇਨਸਾਨ ਕਹਾ ਜਾਵੇ।
ਅਸਲੀ ਦਾਨ ਇਹ ਕਰੇ ਸੰਸਾਰ ਅੰਦਰ, ਰੱਤ ਧਰਮ ਦੀ ਥਾਂ ਬਹਾ ਜਾਵੇ।
ਜਿਸਮ ਆਪਣੇ ਨੂੰ ਲੀਰੋ ਲੀਰ ਕਰਦੇ, ਸੁੱਤੀ ਕੌਮ ਨੂੰ ਪਕੜ ਉਠਾ ਜਾਵੇ।
ਖ਼ਾਤਰ ਕੌਮ ਦੀ ਲਟਕ ਗਏ ਫਾਂਸੀਆਂ ਤੇ, ਰਾਹ ਤੂੰ ਕੁਰਬਾਨੀ ਦਾ ਮੱਲਿਆ ਨਾ।
ਤੇਰੇ ਵੀਰਾਂ ਨੂੰ ਜਾਲਮਾਂ ਕੈਦ ਕੀਤਾ, ਤੇਰਾ ਸੀਨਾ ਸ਼ਹੀਦੀ ਨੇ ਸੱਲਿਆ ਨਾ।

— "ਪਤੰਗ"

("पतंग")

"ਕਿਰਤੀ" ਮਾਸਕ ਪੱਤਰ
ਸੰਪਾਦਕ : ਬਚਿੱਤਰ ਸਿੰਘ।
ਜਿਲਦ ਨੰ. ੫, ਅੰਕ : ੨, ਫ਼ਰਵਰੀ ੧੯੩੦
ਓਅੰਕਾਰ ਪ੍ਰੈਸ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।

"किरती" मासिक पत्र
संपादक : बचित्तर सिंह।
जिल्द नं. 5, अंक : 2, फरवरी 1930.
ओंकार प्रैस, अमृतसर।

(अवाप्ति संख्या : 2022)

ਸਿਰ ਤਲੀ ਤੇ ਲੈ ਨੌਜਵਾਨ ਨਿਕਲੇ
ਹੱਸ ਹੱਸ ਸ਼ਹੀਦੀਆਂ ਪੌਣ ਵਾਲੇ

ਦੇਸ਼ ਵਾਸਤੇ ਮਰਨ ਸਖੌਣ ਬਦਲੇ, ਹੱਸ ਹੱਸ ਸ਼ਹੀਦੀਆਂ ਪੌਣ ਵਾਲੇ।
ਗਲੋਂ ਜੂਆ ਗ਼ੁਲਾਮੀ ਦਾ ਲੌਣ੍ਹ ਬਦਲੇ, ਬਦਲੇ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਜਿੰਦਾਂ ਘਮੌਣ ਵਾਲੇ।
ਰੁੱਠੀ ਹੀਰ ਆਜ਼ਾਦੀ ਮਨੌਣ ਬਦਲੇ, ਦਰ ਦਰ ਅਲੱਖ ਕੁਰਬਾਨੀ ਜਗੌਣ ਵਾਲੇ।
ਸਿਰ ਧਰ ਤਲੀ ਦੂਲੇ ਨੌਜਵਾਨ ਨਿਕਲੇ, ਹਿੰਦੁਸਤਾਨ ਆਜ਼ਾਦ ਕਰੌਣ ਵਾਲੇ।
ਯਾਦਗਾਰ ਸ਼ਹੀਦਾਂ ਮਨੌਣ ਬਦਲੇ, ਉਤੇ ਸਿੜ੍ਹੀਆਂ ਦੇ ਮੇਲੇ ਲਗੌਣ ਵਾਲੇ।
ਜੀ ਹਾਂ ਸ਼ਮ੍ਹਾਂ ਆਜ਼ਾਦੀ ਜਗੌਣ ਬਦਲੇ, ਕੁਰਬਾਨੀਆਂ ਦਾ ਤੇਲ ਪੌਣ ਵਾਲੇ।
ਬੂਟੀ ਧੂੜ ਸੰਜੀਵਨੀ ਫਾਂਸੀਆਂ ਦੀ, ਮੁਰਦਾ ਕੌਮ ਅੰਦਰ ਜਾਨ ਪੌਣ ਵਾਲੇ।
ਸਿਰ ਧਰ ਤਲੀ ਤੇ ਲੈ ਨੌਜਵਾਨ ਨਿਕਲੇ, ਭਾਰਤ ਵਰਸ਼ ਆਜ਼ਾਦ ਕਰੌਣ ਵਾਲੇ।
ਹਿੰਦੀ ਅਣਖ ਵਾਲੇ ਅਖਵੌਣ ਬਦਲੇ, ਭਾਰਤ ਮਾਤਾ ਦੀ ਸ਼ਾਨ ਵਧੌਣ ਵਾਲੇ।
ਭੁੱਲੇ ਹਿੰਦੀਆਂ ਨੂੰ ਰਾਹੇ ਪੌਣ ਬਦਲੇ, ਵਿਛੜ ਗਿਆਂ ਨੂੰ ਫੇਰ ਮਲੌਣ ਵਾਲੇ।
ਭੈੜੀ ਫੁੱਟ ਸੰਦੀ ਕਾਣ ਲਾਹੁਣ ਬਦਲੇ, ਸੁੰਦਰ ਗੀਤ ਮਿਲਾਪ ਦੇ ਗੌਣ ਵਾਲੇ।
ਸਿਰ ਧਰ ਤਲੀ ਦੂਲੇ ਨੌਜਵਾਨ ਨਿਕਲੇ, ਹਿੰਦੁਸਤਾਨ ਆਜ਼ਾਦ ਕਰੌਣ ਵਾਲੇ।
ਦੇਸ਼ ਘਾਤਕਾਂ ਨੂੰ ਸਮਝੌਣ ਬਦਲੇ, ਮਿੰਨਤਾਂ ਤਰਲਿਆਂ ਨਾਲ ਮਨੌਣ ਵਾਲੇ।
ਨਹੀਂ ਤਾਂ ਮਜ਼ਾ ਗ਼ਦਾਰੀ ਚਖੌਣ ਵਾਲੇ, ਅਜ਼ਰਾਈਲ ਦੀ ਭੇਟ ਚੜ੍ਹੌਣ ਵਾਲੇ।
ਜ਼ਾਲਮ ਜਾਬਰਾਂ ਹੱਥ ਵਖੌਣ ਬਦਲੇ, ਬੱਗੜ ਬਿੱਲੇ ਇੰਗਲੈਂਡ ਪਹੁੰਚਾਣ ਵਾਲੇ।
ਸਿਰ ਧਰ ਤਲੀ "ਕਮਲੇ" ਨੌਜਵਾਨ ਨਿਕਲੇ, ਭਾਰਤ ਵਰਸ਼ ਆਜ਼ਾਦ ਕਰੌਣ ਵਾਲੇ।
ਵਿਚ ਪਿੰਡਾਂ ਦੇ ਧੁੱਮ ਧਮੌਣ ਬਦਲੇ, ਸੁੱਤੇ ਕਿਰਤੀਆਂ ਤਾਂਈਂ ਜਗੌਣ ਵਾਲੇ।
ਨੌਕਰਸ਼ਾਹੀ ਨੂੰ ਹੋਸ਼ ਚਿ ਲਿਔਣ ਬਦਲੇ, ਬੋਲੇ ਕੰਨਾਂ ਦੇ ਵਿੱਚ ਸੁਣੌਨ ਵਾਲੇ।
ਉਜੜੇ ਦੇਸ਼ ਭਾਰਤ ਗੁਲਿਸਤਾਨ ਉਤੇ, ਮੀਂਹ ਏਕਤਾ ਦਾ ਵਰਸੌਣ ਵਾਲੇ।
ਸਿਰ ਧਰ ਤਲੀ ਦੂਲੇ ਨੌਜਵਾਨ ਨਿਕਲੇ, ਹਿੰਦੁਸਤਾਨ ਆਜ਼ਾਦ ਕਰੌਣ ਵਾਲੇ।
ਵਿਹਲੜ ਢਿੱਡਲਾਂ ਨੂੰ ਧੰਧੇ ਲੌਣ ਵਾਲੇ, ਤਖ਼ਤ ਕਿਰਤੀਆਂ ਤਾਈਂ ਬਹੌਣ ਵਾਲੇ।
ਮਰ ਮਰ ਜੀਊਣ ਦਾ ਭੇਦ ਸਮਝੌਣ ਬਦਲੇ, ਤੱਤੀ ਬੁਜ਼ਦਿਲੀ ਦੀ ਭੰਨਣ ਧੌਣ ਵਾਲੇ।
ਲੱਖਾਂ ਨੰਗਿਆਂ ਭੁੱਖਿਆਂ ਹਿੰਦੀਆਂ ਨੂੰ, ਨੰਗ ਭੁੱਖ ਦੇ ਹੱਥੋਂ ਛਡੌਣ ਵਾਲੇ।
ਸਿਰ ਧਰ ਤਲੀ ਦੂਲੇ ਨੌਜਵਾਨ ਨਿਕਲੇ, ਭਾਰਤ ਵਰਸ਼ ਆਜ਼ਾਦ ਕਰੌਣ ਵਾਲੇ।

ਪੂੰਜੀਦਾਰਾਂ ਦੀ ਅਲਖਿ ਮਕੌਣ ਵਾਲੇ, 'ਸਾਂਝੀਵਾਲ' ਸਤਜੁਗੀ ਵਰਤੌਣ ਵਾਲੇ।
ਇਮਪੀਅਰਲਿਜ਼ਮ ਦਾ ਬੇੜਾ ਡਬੌਣ ਬਦਲੇ, ਇਕੋ ਹੇਠਲੀ ਉਤੇ ਲਿਔਣ ਵਾਲੇ।
ਜੁਗ-ਗਰਦੀ ਦੀ 'ਜੈ' ਗਜੌਣ ਬਦਲੇ, ਝੰਡਾ ਜੱਗ ਤੇ 'ਲਾਲ' ਝਲੌਣ ਵਾਲੇ।
ਸਿਰ ਧਰ ਤਲੀ "ਕਮਲੇ" ਨੌਜਵਾਨ ਨਿਕਲੇ, ਹਿੰਦੁਸਤਾਨ ਆਜ਼ਾਦ ਕਰੌਣ ਵਾਲੇ।

— ਹਰਨਾਮ ਸਿੰਘ "ਕਮਲਾ"
(हरनाम सिंह "कमला")

"ਕਿਰਤੀ" ਮਾਸਕ ਪੱਤਰ
ਸੰਪਾਦਕ : ਬਚਿੱਤਰ ਸਿੰਘ।
ਜਿਲਦ ਨੰ. ੫, ਅੰਕ : ੨, ਫ਼ਰਵਰੀ ੧੯੩੦
ਓਅੰਕਾਰ ਪ੍ਰੈਸ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।

"किरती" मासिक पत्र
संपादक : बचित्तर सिंह।
जिल्द नं. 5, अंक : 2, फरवरी 1930.
ओंकार प्रैस, अमृतसर।

(अवाप्ति संख्या : 2022)

ਉਠ ਪੱਗ ਦੇ ਪੇਚ ਸੰਭਾਲ ਜੱਟਾ

(੧) ਉਠ! ਉਠ! ਮੱਲਾ ਖ਼ਬਰਦਾਰ ਹੋ ਜਾ।
ਛਡਦੇ ਨੀਂਦ ਭੈੜੀ ਹੋਸ਼ਿਆਰ ਹੋ ਜਾ।
ਡਾਕੂ ਪਏ ਘਰ ਤੇਰੇ, ਬੇਦਾਰ ਹੋ ਜਾ।
ਅੱਖਾਂ ਖੋਲ੍ਹ ਤੇ ਪੱਗ ਸੰਭਾਲ ਜੱਟਾ।
ਉਠ! ਪੱਗ ਦੇ ਪੇਚ ਸੰਭਾਲ ਜੱਟਾ।

(੨) ਦਿਨ ਦੀਵੀਂ ਨੇ ਸਨ੍ਹ ਲਗਾਈ ਜਾਂਦੇ।
ਕੱਠਾ ਮਾਲ ਕਰ ਗੰਢਾਂ ਬਣਾਈ ਜਾਂਦੇ।
ਚੁਕ ਚੁਕ ਵਲਾਇਤ ਪੁਚਾਈ ਜਾਂਦੇ।
ਕਰ ਖਾਂ ਦਿਲ ਵਿਚ ਕੁਛ ਖ਼ਿਆਲ ਜੱਟਾ।
ਉਠ! ਪੱਗ ਦੇ ਪੇਚ ਸੰਭਾਲ ਜੱਟਾ।

(੩) ਹਿੰਦ ਬਾਗ਼ ਤੇਰਾ ਦੇਖ, ਸੜ ਗਿਆ ਏ।
ਕਿਵੇਂ ਰੰਗ ਖ਼ਿਜ਼ਾਂ ਦਾ ਚੜ੍ਹ ਗਿਆ ਏ।
ਪੱਤਾ ਪੱਤਾ ਸਭ ਏਸ ਦਾ ਝੜ ਗਿਆ ਏ।
ਨਜ਼ਰ ਮਾਰ ਕੇ ਤੇ ਦੇਖ ਭਾਲ ਜੱਟਾ।
ਉਠ! ਪੱਗ ਦੇ ਪੇਚ ਸੰਭਾਲ ਜੱਟਾ।

(੪) ਆਪਣੇ ਆਪ ਦਾ ਕੁਛ ਖ਼ਿਆਲ ਤਾਂ ਕਰ।
ਜ਼ਾਲਮ ਲੁਟ ਕੇ ਲੈ ਗਏ ਨੀ ਤੇਰਾ ਸਭ ਜ਼ਰ।
ਤੈਨੂੰ ਕੱਢ ਕੇ ਕੀਤਾ ਨੇ ਘਰੋਂ ਬੇ ਘਰ।
ਜ਼ਰਾ ਸਿਰ ਤਾਂ ਉਚ ਉਠਾਲ ਜੱਟਾ।
ਉਠ! ਪੱਗ ਦੇ ਪੇਚ ਸੰਭਾਲ ਜੱਟਾ।

(੫) ਦੇਖ ਰੂਸ ਦੀ ਕਿਵੇਂ ਸਫ਼ਾਈ ਹੋ ਗਈ।
ਜ਼ੁਲਮੀ ਜ਼ਾਰ ਦੀ ਕਿਵੇਂ ਤਬਾਹੀ ਹੋ ਗਈ।
ਸੁਫਲ ਲੈਨਨ ਦੀ ਦੇਖ ਕਮਾਈ ਹੋ ਗਈ।
ਡਾਹਢੀ ਸੋਹਣੀ ਹੈ ਪੇਸ਼ ਮਿਸਾਲ ਜੱਟਾ।
ਉਠ! ਪੱਗ ਦੇ ਪੇਚ ਸੰਭਾਲ ਜੱਟਾ।

(੬) ਕਿਵੇਂ ਰੂਸ ਆਜ਼ਾਦੀ ਦੀ ਜੰਗ ਕੀਤੀ।
ਸੇਵਾ ਮੁਲਕ ਦੀ ਹੋ ਕੇ ਨਿਸ਼ੰਗ ਕੀਤੀ।
ਖ਼ੂਬ ਜਾਬਰਾਂ ਦੀ ਢਿੰਬਰੀ ਤੰਗ ਕੀਤੀ।

ਮੁਖ ਰਖ ਲੈ ਇਹੋ ਸਵਾਲ ਜੱਟਾ।
ਉਠ! ਪੱਗ ਦੇ ਪੇਚ ਸੰਭਾਲ ਜੱਟਾ।

(੭) ਰਾਜ ਵਿਚ ਜਾਪਾਨ ਜਾਪਾਨੀਆਂ ਦਾ।
ਤੁਰਕੀ ਰਾਜ ਹੈ ਵੇ ਤੁਰਕਿਸਤਾਨੀਆਂ ਦਾ।
ਹੈ ਆਜ਼ਾਦ ਅਫ਼ਗਾਨ ਅਫ਼ਗਾਨੀਆਂ ਦਾ।
ਇਕੋ ਇਕ ਤੇਰਾ ਮੰਦਾ ਹਾਲ ਜੱਟਾ।
ਉਠ! ਪੱਗ ਦੇ ਪੇਚ ਸੰਭਾਲ ਜੱਟਾ।

(੮) ਹੋਰਾਂ ਦੇਸ਼ਾਂ ਦੇ ਜੱਟਾ ਖਿਆਲ ਤਾਂ ਦੇਖ।
ਕਿਵੇਂ ਕਰਨ ਤਰੱਕੀ ਕਮਾਲ ਤਾਂ ਦੇਖ।
ਅਪਣਾ ਦਿਨੋ ਦਿਨ ਹੁੰਦਾ ਜ਼ਵਾਲ ਤਾਂ ਦੇਖ।
ਤੂੰ ਬੀ ਕਰ ਕੁਛ ਹੁਨਰ ਦੀ ਭਾਲ ਜੱਟਾ।
ਉਠ! ਪੱਗ ਦੇ ਪੇਚ ਸੰਭਾਲ ਜੱਟਾ।

(੯) ਹੁਣ ਬੀਰ ਹਿੰਦੀ ਸੁਸਤੀ ਛਡ ਦੇ ਤੂੰ।
ਮਾਰ ਆਲਸ ਨੂੰ ਅੰਦਰੋਂ ਕੱਢ ਦੇ ਤੂੰ।
ਗਲੋਂ ਤੋਕ ਗੁਲਾਮੀ ਦਾ ਵੱਢ ਦੇ ਤੂੰ।
ਛੇਤੀ ਕਰ ਆਜ਼ਾਦ ਖਿਆਲ ਜੱਟਾ।
ਉਠ! ਪੱਗ ਦੇ ਪੇਚ ਸੰਭਾਲ ਜੱਟਾ।

(੧੦) ਹੋਰਾਂ ਕੌਮਾਂ ਦੇ ਦੇਖ ਲੈ ਚਾਲ ਬਦਲੇ।
ਨਾਲ ਚਾਲ ਦੇ ਅਪਨੇ ਖਿਆਲ ਬਦਲੇ।
ਸਮੇਂ ਸਮੇਂ ਹੁਨਾਲ ਸਿਆਲ ਬਦਲੇ।
ਤੂੰ ਬੀ ਬਦਲ ਖਾਂ ਆਪਣੀ ਚਾਲ ਜੱਟਾ।
ਉਠ! ਪੱਗ ਦੇ ਪੇਚ ਸੰਭਾਲ ਜੱਟਾ।

(੧੧) ਉਚੀ ਕੌਮ ਕਮਜ਼ੋਰ ਅਖਵਾਨ ਵਾਲੀ।
ਮਾਵੇ ਡੁੰਗਕੇ ਤੇ ਝੋਕਾ ਲਾਉਨ ਵਾਲੀ।
ਪੀਨਕ ਅਮਲ ਦੀ ਵਿਚ ਉਘਲਾਉਣ ਵਾਲੀ।
ਸੁਤੀ ਕੌਮ ਨੂੰ ਦਿਤਾ ਉਠਾਲ ਜੱਟਾ।
ਉਠ! ਪੱਗ ਦੇ ਪੇਚ ਸੰਭਾਲ ਜੱਟਾ।

(੧੨) ਇਕ ਤਾਂ ਤੈਨੂੰ ਫ਼ਰੰਗੀਆਂ ਲੁਟਿਆ ਏ।
ਦੂਜਾ ਪੂੰਜੀ-ਭਗਤਾਂ ਤੈਨੂੰ ਘੁਟਿਆ ਏ।
ਡਾਹਢਾ ਕਹਿਰ ਤੇਰੇ ਉਤੇ ਟੁਟਿਆ ਏ।

ਏਸੇ ਲਈ ਤੂੰ ਹੋਇਓਂ ਕੰਗਾਲ ਜੱਟਾ।
ਉਠ! ਪੱਗ ਦੇ ਪੇਚ ਸੰਭਾਲ ਜੱਟਾ।

(੧੩) ਝਗੜੇ ਝੁਗੜੇ ਸਭ ਛੋੜ ਕੇ ਪਾਕ ਹੋਜਾ।
ਛਡ ਗ਼ਰੂਰ ਨੂੰ ਭਸ ਦੀ ਖ਼ਾਕ ਹੋ ਜਾ।
ਇਸ ਆਜ਼ਾਦੀ ਦਾ ਪਕਾ ਮੁਸ਼ਤਾਕ ਹੋ ਜਾ।
'ਆਜਜ਼' ਆਪਣਾ ਆਪ ਨਾ ਗਾਲ ਜੱਟਾ।
ਉਠ! ਪੱਗ ਦੇ ਪੇਚ ਸੰਭਾਲ ਜੱਟਾ।

— ਸਾਥੀ ਅਮਰ ਸਿੰਘ 'ਆਜਜ਼' ਪਿਸ਼ਾਵਰੀ
(साथी अमर सिंह ''आजज़'' पिशावरी)

''ਕਿਰਤੀ'' ਮਾਸਕ ਪੱਤਰ
ਸੰਪਾਦਕ : ਬਚਿੱਤਰ ਸਿੰਘ।
ਜਿਲਦ ਨੰ. ੫, ਅੰਕ : ੩, ਮਾਰਚ ੧੯੩੦
ਓਅੰਕਾਰ ਪ੍ਰੈਸ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।

''किरती'' मासिक पत्र
संपादक : बचित्तर सिंह।
जिल्द नं. 5, अंक : 3, मार्च 1930.
ओंकार प्रैस, अमृतसर।

(अवाप्ति संख्या : 2164)

ਭਾਰਤ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਕਮਾਈ ਲੈ ਗਏ ਗੈਰ ਲੁਟਕੇ

ਭਾਰਤ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਕਮਾਈ ਲੈ ਗਏ ਗੈਰ ਲੁਟਕੇ।
ਕੀਤੀ ਕਤਰੀ ਲੁਟਾਈ ਥਕ ਹੁਟ ਹੁਟ ਕੇ।
ਖਾ ਗਏ ਲੁਟ ਕੇ ਬਦੇਸ਼ੀ, ਢਾਹੀ ਰੌਂਵਦੇ ਸੁਦੇਸ਼ੀ,
ਭੁਖੇ ਰੁਲਨ ਪਏ ਦੇਸ਼ੀ, ਵਿਡ ਘੁਟ-ਘੁਟ ਕੇ।।੧।। ਭਾਰਤ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਕਮਾਈ........
ਹੰਭਲਾ ਮਾਰੋ ਨੌਜਵਾਨੋਂ, ਹਕ ਆਪਣੇ ਪਛਾਨੋ,
ਕਿਥੋਂ ਆ ਕੇ ਇੰਗਲਿਸਤਾਨੋ, ਖਾ ਗਏ ਲੁਟ ਪੁਟ ਕੇ।।੨।। ਭਾਰਤ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਕਮਾਈ........
ਦੇਸ਼ ਭਗਤ ਪਿਆਰੇ, ਭੁਖੇ ਜੇਲ੍ਹਾਂ 'ਚ ਮਾਰੇ,
ਕਰ ਕਰਕੇ ਨਿਕਾਰੇ, ਮਾਰੇ ਕੁਟ-ਕੁਟ ਕੇ।।੩।। ਭਾਰਤ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਕਮਾਈ........
ਬੰਦ ਕਰਦੇ ਜ਼ਬਾਨਾ, ਠੋਕਨ ਐਕਟਾਂ ਦਾ ਫਾਨਾ,
ਹੁਣ ਕੀਜੀਊ ਕੇਬਨਣ, ਠੁਕ ਬਨ੍ਹੋ ਜੁਟ ਕੇ।।੪।। ਭਾਰਤ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਕਮਾਈ........
ਨਿਉਂ-ਨਿਉਂ ਕਰਦੇ ਸਲਾਮਾ, ਡੋਬਨ ਵਡਿਆਂ ਦੇ ਨਾਮਾਂ,
ਵਾਂਗ ਸ਼ੁਹਦਿਆਂ ਗੁਲਾਮਾਂ, ਹੇਠਾਂ ਝੁਕ-ਝੁਕ ਕੇ।।੫।। ਭਾਰਤ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਕਮਾਈ........
'ਭਗਤ ਸਿੰਘ' ਬਣ ਜਾਈਏ 'ਦਤ' ਅਖਵਾਈਏ,
ਭੜਥੂ ਦੇਸ਼ ਵਿਚ ਪਾਈਏ, ਸੁਤੇ ਉਠ-ਉਠ ਕੇ।।੬।। ਭਾਰਤ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਕਮਾਈ........
ਸ਼ਾਨ ਹਿੰਦ ਦੀ ਬਚਾਈਏ, ਸ਼ੇਰਾਂ ਸੁਤਿਆ ਜਗਾਈਏ,
ਤੀਰ ਏਕਤਾ ਚਲਾਈਏ, ਨਾ ਮਰੀਏ ਫੁਟ ਕੇ।।੭।। ਭਾਰਤ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਕਮਾਈ........
ਦਈਏ ਦੇਸ਼ 'ਚ ਦੁਹਾਈ, ਭੁਖੀ ਮਰਦੀ ਲੁਕਾਈ,
ਵੀਰੋ! ਬਣੋ ਭਾਈ-ਭਾਈ, ਮਿਲੋ ਘੁਟ ਘੁਟ ਕੇ।।੮।। ਭਾਰਤ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਕਮਾਈ........
ਭਾਰਤ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਕਮਾਈ ਲੈ ਗਏ ਗੈਰ ਲੁਟ-ਲੁਟ ਕੇ,
ਕੀਤੀ ਕਤਰੀ ਗਵਾਈ, ਥਕ ਹੁਟ-ਹੁਟ ਕੇ।

— "ਮਚਲਾ"
("मचला")

"ਕਿਰਤੀ" ਮਾਸਕ ਪੱਤਰ
ਸੰਪਾਦਕ : ਬਚਿੱਤਰ ਸਿੰਘ।
ਜਿਲਦ ਨੰ. ੫, ਅੰਕ : ੩, ਮਾਰਚ ੧੯੩੦
ਓਅੰਕਾਰ ਪ੍ਰੈਸ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।

"किरती" मासिक पत्र
संपादक : बचित्तर सिंह।
जिल्द नं. 5, अंक : 3, मार्च 1930.
ओंकार प्रैस, अमृतसर।

(अवाप्ति संख्या : 2164)

9—254/Deptt. of Archives/ND/97

ਝੰਡਾ ਹਥ ਲੈ ਕੇ ਸਵਾਧੀਨਤਾ ਦਾ, ਕੋਈ ਕੈਦ ਫਾਂਸੀ ਭਲਾ ਪਾਏ ਕਿਉਂਨਾ?

ਇਕ ਵੇਰ ਜੇ ਅਸੀ ਆਰਾਮ ਪਾਈਏ, ਨੀਂਦਰ ਚੈਨ ਦੀ ਅਸਾਂ ਨੂੰ ਆਏ ਕਿਉਂ ਨਾਂ?
ਅਖਾਂ ਪਕ ਗਈਆਂ, ਅਸੀਂ ਅਕ ਗਏ ਹਾਂ, ਕੌਮੀ ਲਹਿਰ ਫਿਰ ਮੂੰਹ ਦਿਖਲਾਏ ਕਿਉਂ ਨਾ?
ਤਰਾਂ-ਤਰਾਂ ਦੇ ਅਸਾਂ ਨੇ ਕਸ਼ਟ ਝਲੇ, ਬਹੁਤਾ ਸਮਾਂ ਹੋਇਆ ਪਏ ਜ਼ੰਜ਼ੀਰ ਸਾਨੂੰ,
ਜੇ ਕਰ ਅਜ ਵੀ ਨਹੀਂ ਬੇਦਾਰ ਹੋਈਏ ਡੈਣ ਖੋਲ੍ਹ ਕੇ ਮੂੰਹ ਡਰਾਏ ਕਿਉਂ ਨਾ?
ਅਸੀਂ ਵੈਰੀਆਂ ਦੇ ਵਾਹਦੇ ਮੰਨ ਲੀਤੇ, ਪਲੇ ਅਸਾਂ ਦੇ ਕਖ ਵੀ ਨਹੀਂ ਪੈਂਦਾ,
ਹੁਣ ਤਾਂ ਆਖਰੀ ਅਸਾਂ ਨੇ ਵੇਖ ਲੀਤੀ, ਪੈਂਦਾ ਅਗ ਆਜ਼ਾਦੀ ਹੋ ਜਾਏ ਕਿਉਂ ਨਾ?
ਰਗ ਰਗ ਚਿ, ਜੋਸ਼ ਹੁਣ ਭਰ ਰਿਹਾ ਏ, ਹੋਏ ਗਭਰੂ ਮਰਨ ਨੂੰ ਤਿਆਰ ਫੌਰਨ?
ਝੰਡਾ ਹਥ ਲੈ ਕੇ ਸਵਾਧੀਨਤਾ ਦਾ ਕੋਈ ਕੈਦ ਫਾਂਸੀ ਭਲਾ ਪਾਏ ਕਿਉਂ ਨਾ,
ਕਨੇ ਕੋਨਿਓਂ ਅਜ ਆਵਾਜ਼ ਔਂਦੀ, ਅਸਾਂ ਹਿੰਦ ਆਜ਼ਾਦ ਕਰਾਵਣਾ ਏ?
ਦਿਲ ਵਿਚ ਮਨੋਹਰ ਦੇ ਭਲਾ ਦਸੋ, ਇਸ਼ਕ ਦੇਸ਼ ਪਰੇਮ ਦਾ ਆਏ ਕਿਉਂ ਨਾ।

— ਦੁਰਗਾ ਦਾਸ 'ਮਨੋਹਰ' ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰੀ
(दुर्गादास ''मनोहर'' अमृतसरी)

''ਕਿਰਤੀ'' ਮਾਸਕ ਪੱਤਰ
ਸੰਪਾਦਕ : ਬਚਿੱਤਰ ਸਿੰਘ।
ਜਿਲਦ ਨੰ. ੫, ਅੰਕ : ੩, ਮਾਰਚ ੧੯੩੦
ਓਅੰਕਾਰ ਪ੍ਰੈਸ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।

''किरती'' मासिक पत्र
संपादक : बचित्तर सिंह।
जिल्द नं. 5, अंक : 3, मार्च 1930.
ओंकार प्रैस, अमृतसर।

(अवाप्ति संख्या : 2164)

ਜਾਂਤੇ ਹਿੰਦੀਓ ਰਹੁ ਗ਼ੁਲਾਮ ਬਣਕੇ, ਯਾ ਫਿਰ ਪਊ ਇਸ ਢੰਗ ਨੂੰ ਭੰਨਣਾ ਜੇ

ਉਠੋ ਹਿੰਦੀਓ ਆਖਰੀ ਸਮਾ ਆਇਆ, ਭਾਰਤ ਦੇਸ਼ ਆਜ਼ਾਦ ਕਰਾਵਣੇ ਦਾ।
ਖ਼ਾਤਰ ਦੂਜਿਆਂ ਦੀ ਹੁਣ ਤਕ ਰਹੇ ਮਰਦੇ, ਵੇਲਾ ਆਪਣੀ ਬੰਦ ਛਡਾਵਣੇ ਦਾ।
ਵੈਰੀ ਫੜੀ ਜਾਂਦਾ ਸਾਡੇ ਆਗੂਆਂ ਨੂੰ, ਢੰਗ ਖੇਡਦਾ ਸ਼ਾਂਤ ਵਰਤਾਵਣੇ ਦਾ।
ਐਪਰ ਉਸਨੂੰ ਆਓ ਜਵਾਬ ਦਈਏ, ਰਸਤਾ ਇਹ ਘਮਸਾਣ ਮਚਾਵਣੇ ਦਾ।
ਹਰਾਮ ਖਾਣ ਦਾ ਪਿਆ ਸਵਾਦ ਜਿਨ੍ਹਾਂ, ਸਿਧੇ ਹੱਥੀਂ ਨਾ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਮੰਨਣਾਂ ਜੇ।
ਜਾਂਤੇ ਹਿੰਦੀਓ ਰਹੁ ਗ਼ੁਲਾਮ ਬਣਕੇ, ਯਾਂ ਫਿਰ ਪਊ ਇਸ ਢੰਗ ਨੂੰ ਭੰਨਣਾ ਜੇ।

ਗ਼ੈਰਤਮੰਦੋ ਕਿਉਂ ਗ਼ੈਰਤਿ ਨੂੰ ਖੋ ਬੈਠੇ, ਭਾਰਤ ਵਰਸ਼ ਦਾ ਫੋਲ ਇਤਿਹਾਸ ਦੇਖੋ।
ਪੜ੍ਹ ਲਵੋ ਬੁਜ਼ਰਗਾਂ ਦੇ ਕਾਰਨਾਮੇ, ਕਿਵੇਂ ਕਰਦੇ ਸੀ ਜ਼ੁਲਮ ਦਾ ਨਾਸ਼ ਦੇਖੋ।
ਕਿਵੇਂ ਰਾਵਣ ਸੀ ਜਿਤਿਆ ਰਾਮ ਜੀ ਨੇ, ਹਸਨ ਹੁਸੈਨ ਦੀ ਕਰਬਲਾ ਖਾਸ ਦੇਖੋ।
ਸਭਦੇ ਵੇਖਦੇ ਦੇਖਦੇ ਕਲ੍ਹ ਯਾਰੋ, ਬਾਜੀ ਕਿਸਤਰ੍ਹਾਂ ਲੈ ਗਿਆ 'ਦਾਸ' ਦੇਖੋ।
ਮਰਨ ਮਾਰਨ ਤੇ ਉਤਰੇ ਜਦੋਂ ਅਸੀਂ, ਰਖੇ ਗ਼ੁਲਾਮ ਮਜ਼ਾਲ ਫਿਰ ਕਿਸਦੀ ਏ।
ਤਦੇ ਨਹੀਂ ਆਜ਼ਾਦੀ ਦਾ ਦਰਸ ਹੋਇਆ, ਕਿਉਂਕਿ ਪਿਆਸੀ ਉਹ ਖ਼ੂਨ ਦੀ ਦਿਸਦੀ ਏ।

ਅਣਖ ਵਾਲਿਓ ਤਕ ਕੇ ਜ਼ਰਾ ਦੇਖੋ, ਜ਼ਾਲਮ ਕਿਸਤਰ੍ਹਾਂ ਜ਼ੁਲਮ ਕਮਾਈ ਜਾਂਦੇ।
ਇਸ ਵਤਨ ਸੰਦੇ ਜੋਧੇ ਹੀਰਿਆਂ ਨੂੰ, ਫੜ ਫੜ ਜੇਲ੍ਹਾਂ ਦੇ ਵਿਚ ਹਨ ਪਾਈ ਜਾਂਦੇ।
ਕਿਤੇ ਹਾਏ ਗ਼ਰੀਬ ਨਿਹੱਥਿਆਂ ਤੇ, ਕਿਵੇਂ ਗੋਲੀ ਦਾ ਮੀਂਹ ਵਰਸਾਈ ਜਾਂਦੇ।
ਕਿਤੇ ਡਾਂਗਾ ਨਾਲ ਕੁਟ ਕੁਟਾਈ ਜਾਂਦੇ, ਕਿਤੇ ਚੱਕੀ ਕਾਨੂੰਨ ਚਲਾਈ ਜਾਂਦੇ।
ਹਾਲਤ ਇਸ 'ਚਾਂ' ਦੋਸਤੋ ਅਸਾਂ ਤਾਈਂ, ਰਸਤਾ ਇਕ ਅਖਤਿਆਰ ਤੇ ਕਰਨਾ ਪਏਗਾ।
ਜਾਂਤੇ ਬਣੇਹੀ ਰਹੀਏ ਗ਼ੁਲਾਮ ਅਸੀਂ, ਯਾਂ ਫਿਰ ਖਾਤ੍ਰ ਆਜ਼ਾਦੀ ਦੀ ਮਰਨਾ ਪਏਗਾ।

ਹਿੰਦੂ, ਮੁਸਲਿਮ, ਤੇ ਸਿਖ, ਈਸਾਈ, ਭਾਈਓ, ਆਓ ਰਲ ਕੇ ਹੰਭਲਾ ਮਾਰ ਦਈਏ।
ਪੂੰਜੀਦਾਰ ਹਨ ਤਿਬਕਦੇ ਜਿਸ ਕੋਲੋਂ, ਆਓ ਓਹੁ ਜਿਹਾ ਰਾਜ਼ ਖਲਾਰ ਦਈਏ।
ਸ਼ਾਹਿਨਸ਼ਾਹੀਆਂ ਦੇ ਮਹਿਲ ਨੂੰ ਸੁੱਟ ਥੱਲੇ, ਸ਼ੋਸ਼ਲਇਜ਼ਮ ਇਕ ਮਹਿਲ ਉਸਾਰ ਦਈਏ।

ਵਕਤ ਆ ਗਿਆ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਨੌਜਵਾਨੋ, ਭਾਰੀ ਸੱਟ ਲਾਕੇ ਹੁਣ ਤੇ ਹਾਰ ਦਈਏ।
ਕੜੀ ਕਿਸਮਤ ਫਿਲਾਸਫੀ ਛਡਕੇ ਤੇ, ਸਿਧੇ ਡਟਕੇ ਤੇ ਹਿੰਦੀਓ ਲੜੀ ਜਾਵੋ।
ਜਿਸ ਕਿਸਤਰ੍ਹਾਂ ਹੋਈਏ ਆਜ਼ਾਦ 'ਸਾਥੀ', ਉਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦਾ ਪੈਂਤੜਾ ਫੜੀ ਜਾਵੋ।

— "ਸਾਥੀ" ਈਸੜ
("साथी" ईसड़)

"ਕਿਰਤੀ" ਮਾਸਕ ਪੱਤਰ
ਸੰਪਾਦਕ : ਬਚਿੱਤਰ ਸਿੰਘ।
ਜਿਲਦ ਨੰ. ੫, ਅੰਕ : ੫, ਮਈ ੧੯੩੦
ਓਅੰਕਾਰ ਪ੍ਰੈਸ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।

"किरती" मासिक पत्र
संपादक : बचित्तर सिंह।
जिल्द नं. 5. अंक : 5. मई 1930.
ओंकार प्रैस, अमृतसर।

(अवाप्ति संख्या : 2172)

ਲੋਕ-ਰਾਏ!

'ਇਨਕਲਾਬ' ਦਾ ਦੋੜਦਾ ਅਟਕ ਆਇਆ, ਕੰਢੇ ਢੱਠ ਗਏ ਨੇ ਪੂੰਜੀਦਾਰੀਆਂ ਦੇ।
ਬਾਦਸ਼ਾਹੀਆਂ ਨੂੰ ਜ਼ਲ-ਜ਼ਲਾ ਪਿਆ ਔਂਦਾ, ਨਿਕਲ ਗਏ ਯਰਕਾਟ ਸ੍ਰਦਾਰੀਆਂ ਦੇ।
ਡਾਵਾਂ ਡੋਲ ਏ ਬੇੜੀ ਬਰਤਾਨੀਆਂ ਦੀ, ਟੁਟੇ ਜ਼ੋਰ ਨੇ ਤਾਕਤਾਂ ਸਾਰੀਆਂ ਦੇ।
ਸੁੱਤਾ ਹਿੰਦ ਵੀ ਜਾਗਦਾ ਅਗਾਂਹ ਵਧਿਆ, ਉਤਰੇ ਨਸ਼ੇ ਗ਼ੁਲਾਮੀਆਂ ਭਾਰੀਆਂ ਦੇ।
ਟੁੱਟਣ ਪਏ ਕਾਨੂੰਨ ਅਜ ਦਿਨੇ ਰਾਤੀਂ, ਚੜ੍ਹੀਆਂ ਪੂਰਬੋਂ ਸਖ਼ਤ ਅਨ੍ਹੇਰੀਆਂ ਨੇ।
ਪਛਮ ਕੰਬਦਾ ਪੱਤੇ ਦੇ ਵਾਂਗ ਵੇਖੋ, ਜੁੱਗ ਪਲਟਿਆ ਸਮੇਂ ਦੀਆਂ ਫੇਰੀਆਂ ਨੇ।

ਲੈਕੇ ਮਾਲਵੀ ਤੋਂ ਗਾਂਧੀ ਤੀਕ ਸਾਰੇ, ਸੱਚੇ ਜੁਗ-ਪਲਟਾਉਆਂ ਦੇ ਨਾਲ ਰਲ ਗਏ।
ਗੁਪਤਾ, ਬੋਸ, ਜਵਾਹਰ, ਡੇਸਾਈ, ਕੈਲਕਰ, ਪੰਦੇ ਲੁਟ ਮੰਦੀ ਹਾਲੋਂ ਹਾਲ ਰਲ ਗਏ।
ਮਾਡਰੇਟ ਤੇ ਲਿਬਰਲ ਬੇ-ਆਸ ਹੋਕੇ, ਮਥੇ ਰਗੜਨ ਦਾ ਛਡਕੇ ਖ਼ਿਆਲ ਰਲ ਗਏ।
ਗੋਲ ਕੀ, ਰਾਸ-ਕੁਮਾਰੀ, ਕਸ਼ਮੀਰ ਤੀਕਰ, ਬਾਂਕੇ ਗਭਰੂ ਤੇ ਬੁਢੇ ਬਾਲ ਰਲ ਗਏ।
ਥਰਥਰਾ ਗਿਆ ਤਖ਼ਤ ਇੰਗਲੈਂਡ ਦਾ ਤੇ ਡੋਲ ਗਈ ਕੁਰਸੀ ਵਾਇਸਰਾਏ ਦੀ ਏ।
ਪਿਆ ਫ਼ਿਕਰ ਗਵਰਨਰਾਂ, ਹਾਕਮਾਂ ਨੂੰ, ਤਾਕਤ ਕਿੱਡੀ ਵੱਡੀ ਲੋਕ-ਰਾਏ ਦੀ ਏ।

— ਬਬਰ ਸ਼ੇਰ
(बबर शेर)

"ਕਿਰਤੀ" ਮਾਸਕ ਪੱਤਰ
ਸੰਪਾਦਕ : ਬਚਿੱਤਰ ਸਿੰਘ।
ਜਿਲਦ ਨੰ. ੫, ਅੰਕ : ੫, ਮਈ ੧੯੩੦
ਓਅੰਕਾਰ ਪ੍ਰੈਸ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।

"किरती" मासिक पत्र
संपादक : बचित्तर सिंह।
जिल्द नं. 5, अंक : 5, मई 1930.
ओंकार प्रैस, अमृतसर।

(अवाप्ति संख्या : 2172)

ਲੂਣ

ਹਿੰਦ ਨੂੰ ਗ਼ੁਲਾਮ ਕੀਤਾ ਹਥ-ਫੇਰੀ ਨਾਲ ਜਿਨ੍ਹੇ,
ਅਜ ਓਹਨੇ ਵੇਖੋ ਓਂਵੇ ਲਿਆ ਜੇ ਸੰਭਾਲ ਲੂਣ।
ਕਾਨਾਂ, ਦਰਯਾਵਾਂ, ਟਾਪੂ ਸਾਗਰਾਂ ਦੇ ਕੰਢਿਆਂ ਤੋਂ,
ਸਾਨੂੰ ਨਹੀਂ ਜੇ ਹੁੰਦਾ ਇਕ ਤੋਲਾ ਵੀ ਦਿਵਾਲ ਲੂਣ।
ਜਨਮਾਂ ਦੇ ਭੁਖੇ ਤਾਈਂ ਭਾਸੀ ਕੁਜਾ ਮਿਸ਼ਰੀ ਏ,
ਕਾਹਨੂੰ ਰੱਬ ਹੋਛਲੇ ਨੂੰ ਦਿਤਾ ਏ ਵਿਖਾਲ ਲੂਣ।
ਲੂਣ ਖਾਕੇ ਹਿੰਦੀਆਂ ਦਾ ਹਿੰਦੀਆਂ ਦੇ ਹਥੋਂ ਖੋਹਵੇ,
ਕੈਦ ਕੀਤਾ ਏਹਨੇ ਵੇਖੋ ਪਹਿਰਿਆਂ ਦੇ ਨਾਲ ਲੂਣ।
ਤਾਹੀਏ ਗਾਂਧੀ ਆਖਦਾ-ਮਰੇਗਾ ਇਹ ਇਸੇ ਨਾਲ,
ਟਕਰੇਗਾ ਇਹਨੂੰ ਹੋਕੇ ਏਸੇ ਦਾ ਈ ਕਾਲ ਲੂਣ।
ਬੁਢਾ ਹਾਂ ਮੈਂ ਭਾਵੇਂ ਪਰ ਬਲੀ ਹਾਂ ਸਚਾਈ ਵਲੋਂ,
ਖੋਹਵੇ ਹਥੋਂ ਮੇਰਿਓਂ ਕੀ ਕਿਸੇ ਦੀ ਮਜਾਲ ਲੂਣ।
ਫਸ ਗਿਆ ਆਪ ਭਾਰਾ ਚਾਤਰ ਇਹ ਆਪ ਆਕੇ,
ਮੈਂ ਵੀ ਏਹਦੇ ਵਾਸਤੇ ਹੀ ਤਾਣਿਆ ਏ ਜਾਲ ਲੂਣ।
ਮਾਲਵੀ ਇਹ ਆਖਦਾ ਏ ਮਾਲ ਵੀ ਮੰਗਾਣਾ ਛਡੋ,
ਕਰੋ ਅਜ ਹਿੰਦੀਓ ਚਾ ਹਿੰਦ ਦਾ ਹਲਾਲ ਲੂਣ।
ਪਿਸੂ ਪੈ ਗਏ ਉਸਨੂੰ ਨੇ ਆਖਦਾ ਇਹ ਕੀ ਹੋਇਆ,
ਗਾਂਧੀ ਨੇ ਕੀ ਕਾਢ ਕਢੀ ਛੇੜਿਆ ਸਵਾਲ ਲੂਣ।
ਵੇਖੋ ਕਿਵੇਂ ਕੈਦ 'ਚੋਂ ਆਜ਼ਾਦ ਅਜ ਹੋ ਗਿਆ ਏ,
ਉਤ੍ਰਾ-ਟਪੀ ਜਾਂਵਦਾ ਏ ਮਾਰ ਮਾਰ ਛਾਲ ਲੂਣ।
ਇਕ ਤੋਲਾ ਡੰਡੀ ਵਿਚੋਂ ਉਠਿਆ ਅਜਿਹਾ ਯਾਰੋ,
ਕੋਨੇਂ ਕੋਨੇ ਹਿੰਦ ਦੇ ਲਿਆਇਆ ਏ ਭੁਚਾਲ ਲੂਣ।
ਹੋਕਾ ਦੇ ਦੇ ਆਖਦਾ ਏ ਆਸ਼ਕ ਸਚਾਈ ਵਾਲਾ,
ਖਾਓ ਮੈਂ ਬਣਾਉਂਦਾ ਹਾਂ ਸਧਰਾਂ ਦੇ ਨਾਲ ਲੂਣ।
ਇਕ ਇਕ ਤੋਲਾ ਮਹਿੰਗੇ ਮੁਲ ਅਜ ਪੈ ਰਿਹਾ ਏ,
ਜੇਹਲਾਂ ਵਿਚ ਭੇਜਦਾ ਏ ਅਜ ਦੋ ਦੋ ਸਾਲ ਲੂਣ।
ਆਖ ਦਿਓ ਓਹਨੂੰ ਖਾਣ ਦੇਣਾ ਨਹੀਂ ਊ ਹਿੰਦੀਆਂ ਨੇ,
ਜਾਹ ਮਾਈ ਡੀਅਰ ਕਿਸੇ ਹੋਰ ਥਾਓਂ ਭਾਲ ਲੂਣ।

ਪਕੀ ਜਾਣ ਹਿੰਦੀਆਂ ਨੇ ਤਰੀ ਕੇਦੋਂ ਕਢ ਹੁਣ,
ਪਿਆ ਜੇਹੜਾ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਤੇ ਮੌਤ ਦਾ ਸਵਾਲ ਲੂਣ।
ਜਿੰਦ ਤੋਂ ਪਿਆਰਾ ਏ ਸਹਾਰਾ ਹਿੰਦ ਵਾਸੀਆਂ ਦਾ,
ਰੁਖੀ ਸੁਖੀ ਵੇਲੇ ਦਾ ਏ ਹਿੰਦ ਦਾ ਖ਼ਿਆਲ ਲੂਣ।
ਹਥ ਆਕੇ ਫੜ, ਅੜ ਭੰਨਕੇ ਈ ਛਡਣੀ ਏ,
ਰਲਕੇ ਬਣਾਵੇਗਾ ਪੰਜਾਬ ਤੇ ਬੰਗਾਲ ਲੂਣ।
'ਜੋਬਨ' ਜਵਾਨੀਆਂ ਘੁਮਾ ਦਿਆਂਗਾ ਲੂਣ ਉਤੋਂ,
'ਕਰ' ਬਿਨ ਵਰਤੇਗਾ ਸ਼ਾਹ ਤੇ ਕੰਗਾਲ ਲੂਣ।

— ਜੋਬਨ
(जौबन)

"ਕਿਰਤੀ" ਮਾਸਕ ਪੱਤਰ
ਸੰਪਾਦਕ : ਬਚਿੱਤਰ ਸਿੰਘ।
ਜਿਲਦ ਨੰ. ੫, ਅੰਕ : ੫, ਮਈ ੧੯੩੦
ਓਅੰਕਾਰ ਪ੍ਰੈਸ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।

"किरती" मासिक पत्र
संपादक : बचित्तर सिंह।
जिल्द नं. 5, अंक : 5, मई 1930.
ओंकार प्रैस, अमृतसर।

(अवाप्ति संख्या : 2172)

ਆਜ਼ਾਦ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨ ਹੋ ਗਿਆ

ਭਾਰਤ ਵਰਸ਼ ਸੋਨੇ ਦੀ ਚਿੜੀਆ ਹਾਇ ਵੀਰਾਨ ਹੋ ਗਿਆ।
ਪੀ ਪੀ ਰੱਤ ਅਸਾੜੀ ਸੂਹਾ ਇੰਗਲਿਸਤਾਨ ਹੋ ਗਿਆ।
ਰੁਲਦੇ ਫਿਰਨ ਮੁਲਕ ਦੇ ਵਾਲੀ ਦਰ ਦਰ ਧੱਕੇ ਖਾਂਵਦੇ,
ਨਾਉਂ ਵਿਦਵਾਨਾਂ ਥੀਂ ਕੁੱਲੀ ਵਿਚ ਜਹਾਨ ਹੋ ਗਿਆ।
ਕੰਮ ਕਰਨ ਜੋ ਭੁੱਖੇ ਮਰਨ ਵਿਹਲੜ ਬੁੱਲੇ ਲੁਟਦੇ,
ਹਾਇ ਹਾਇ ਲੋਹੜਾ ਵੱਢੀ ਖੋਰਾ ਵੀ ਭਗਵਾਨ ਹੋ ਗਿਆ।
ਡਾਰੀ ਅੱਗ ਲੈਣ ਨੂੰ ਆਈ ਮਾਲਕ ਘਰ ਦੀ ਬਣ ਬੈਠੀ,
ਖਹਿੜਾ ਅਜੇ ਤੀਕ ਨਾ ਛੱਡੇ ਘਰ ਵੀਰਾਨ ਹੋ ਗਿਆ।
ਲੂਣ ਤਿੰਨ ਪੈਸੇ ਦੇ ਉਤੇ ਸਵਾ ਰੁਪੱਯਾ ਮਾਮਲਾ,
ਕੇਡਾ ਮਾਈ ਬਾਪ ਫ਼ਰੰਗੀ ਮਿਹਰਬਾਨ ਹੋ ਗਿਆ।
ਨਾਲੇ ਲੁੱਟੇ ਉਲਟਾ ਕੁੱਟੇ ਦੇਵੇ ਰੋਵਣ ਵੀ ਨਹੀਂ,
ਜਿਹੜਾ ਫੋਲਕੇ ਦੁਖੜੇ ਦੱਸੇ ਨਾ-ਫੁਰਮਾਨ* ਹੋ ਗਿਆ।
ਇਕ ਸੌ ਚੌਵੀ ਅਲਫ਼ ਲਗਾਈ ਝੱਟ ਚਾਲਾਨ ਹੋ ਗਿਆ।
ਮਿਲ ਗਈ ਫਾਂਸੀ ਦੇਸ਼ ਨਿਕਾਲਾ ਅੰਡੇਮਾਨ ਹੋ ਗਿਆ।
ਸੇਵਾ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਡਾਹਢੀ ਔਖੀ ਗੱਲਾਂ ਕਰਨ ਸੁਖੱਲੀਆਂ,
ਪਿਆ ਵਕਤ ਹਸਨ ਖਾਂ ਜਰਨਲ† ਦੁਸ਼ਮਨ ਜਾਨ ਹੋ ਗਿਆ।
ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਇਸ਼ਕ ਆਜ਼ਾਦੀ ਲੱਗਾ ਉਹ ਨਹੀਂ ਫਾਂਸੀਆਂ ਥੋਂ ਡਰਦੇ,
ਵਾਹ ਵਾਹ ਸ੍ਰੀ ਜਤੇਂਦਰ ਨਾਥ ਦਾਸ ਕੁਰਬਾਨ ਹੋ ਗਿਆ।
ਰਹਿੰਦਾ ਨਾਉਂ ਸਦਾ ਵਿਚ ਦੁਨੀਆਂ ਓਸ ਸੂਰਬੀਰ ਦਾ,
ਬਦਲੇ ਕੌਮ ਵਤਨ ਦੇ ਜਿਹੜਾ ਬਲੀਦਾਨ ਹੋ ਗਿਆ।
ਝੂਠੇ ਮਜ਼੍ਹਬਾਂ ਦੇ ਝੇੜੇ ਬਣੇ ਹਿੰਦੀ ਛੱਡ ਕੇ,
ਆਉਂਦੀ ਅਕਲ ਅਜੇ ਨਾ ਹਾਲ ਪਸ਼ੂ ਸਮਾਨ ਹੋ ਗਿਆ।
ਸਾਡੀ ਫੁਟ ਤੱਤੀ ਦੇ ਕਾਰਨ ਨਹੀਓਂ ਲੇਖਾਂ ਦਾ ਲਿਖਿਆ,

ਆਕੇ ਇੰਗਲੈਂਡੋਂ ਫ਼ਰੰਗੀ ਹੁਕਮਰਾਨ ਹੋ ਗਿਆ।
ਜਥੇਬੰਦ ਜਦੋਂ ਮਿਲ ਕਿਰਤੀ ਤੇ ਕਿਰਸਾਨ ਹੋ ਗਿਆ,
'ਕਮਲਾ' ਵੇਖ ਲਈਂ ਆਜ਼ਾਦ ਹਿੰਦੋਸਤਾਨ ਹੋ ਗਿਆ।

— "ਕਮਲਾ"
("कमला")

"ਕਿਰਤੀ" ਮਾਸਕ ਪੱਤਰ
ਸੰਪਾਦਕ : ਬਚਿੱਤਰ ਸਿੰਘ।
ਜਿਲਦ ਨੰ. ੫, ਅੰਕ : ੫, ਮਈ ੧੯੩੦
ਓਅੰਕਾਰ ਪ੍ਰੈਸ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।

"किरती" मासिक पत्र
संपादक : बचित्तर सिंह।
जिल्द नं. 5, अंक : 5, मई 1930.
ओंकार प्रैस, अमृतसर।

(अवाप्ति संख्या : 2172)

*ਬਾਗੀ।

†ਇਹ (ਹਸਨਖਾਂ ਜਨਰਲ) ਇਨਕਲਾਬੀ ਪਾਰਟੀ ਦਾ ਮੈਂਬਰ ਹੋਕੇ ਵੀ ਬਰਮਾਂ ਕਾਨਸਿਪਰੇਸੀ ਕੇਸ ਵਿਚ ਵਾਹਦਾ ਮਾਫ਼ ਗੁਵਾਰ ਬਣ ਗਿਆ ਅਤੇ ਸੋਹਨ ਲਾਲ ਪਾਠਕ ਵਰਗੇ ਕਈ ਸੂਰਬੀਰ ਸਚੇ ਸ਼ਹੀਦਾਂ ਦੀ ਫਾਂਸੀ, ਕਾਲਾ ਪਾਣੀ ਅਤੇ ਕੈਦ ਦਾ ਕਾਰਨ ਬਣਿਆ। ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ ਭਈ ਇਹ ਅੱਧੀ ਦਰਜਨ ਤੋਂ ਵੱਧ ਪ੍ਰਦੇਸੀ ਬੋਲੀਆਂ ਜਾਣਦਾ ਸੀ ਅਤੇ ਮੁੱਕਦਮੇ ਦੇ ਪਿਛੋਂ ਮੁਲਕ ਚੀਨ ਵਿਚ ਜਿਥੇ ਇਹ ਦੀ ਚੋਖੀ ਜਾਇਦਾਦ ਏ ਪੁਲੀਸ ਦੀ ਰਾਹੀਂ ਘਲ ਦਿਤਾ ਸੀ।

ਕੇਹੀ ਰੁਤ ਸੁਹਾਵਣੀ ਫੇਰ ਆਈ,
ਵਧ–ਵਧ ਸ਼ਹੀਦੀਆਂ ਪਾਵਣੇ ਨੂੰ

ਵਾਂਗ ਚੀਨ ਜਾਪਾਨ ਦੇ ਯੰਗਮੈਨਾਂ, ਵਾਹ ਆਪਣੀ ਭੀ ਅਸੀ ਲਾ ਲਈਏ ਖਾਂ।
ਆਲਸ ਨੀਂਦ ਸੁਤੇ ਹਿੰਦ ਵਾਸੀਆਂ ਨੂੰ, ਪੈਰੋਂ ਟੁੰਬ ਕੇ ਹੋਸ਼ ਦਵਾ ਲਈਏ ਖਾਂ।
ਮਨ, ਧਨ ਦੇਕੇ, ਜਿੰਦ ਜਾਨ ਦੇਕੇ, ਹਿੰਦ ਨਾਮ ਦੀ ਲਾਜ ਰਖਾ ਲਈਏ ਖਾਂ।
ਚੌਦਾਂ ਪੰਦਰਾਂ ਦੀ ਖੂੰਨੀ ਸੀਟ ਵਾਂਗੂੰ, ਨਵੀਂ ਆਪਣੀ ਸੀਟ ਲਿਖਾ ਲਈਏ ਖਾਂ।
ਸਿਕਾਂ ਸਿਕਦਿਆਂ ਨੂੰ ਦਿਵਸ ਹਥ ਲਗੇ, ਮਾਨਸ ਜਨਮ ਦੁਰਲਭ ਬਨਾਵਣੇ ਨੂੰ।
ਕੇਹੀ ਰੁਤ ਸੁਹਾਵਣੀ ਫੇਰ ਆਈ, ਵਧ ਵਧ ਸ਼ਹੀਦੀਆਂ ਪਾਵਣੇ ਨੂੰ।

ਹਿੰਦੂ ਸਿਖ ਮੁਸਲਿਮ ਸਭੋ ਹੋਏ ਇਕੋ, ਸਾਂਝੀ ਏਕਤਾ ਨਦੀ ਵਹਾ ਦਈਏ ਖਾਂ।
ਭਾਵੇਂ ਲਖ ਮੁਸੀਬਤਾਂ ਔਣ ਸਿਰ ਤੇ, ਝੰਡਾ ਜਗ ਦੇ ਵਿਚ ਝੁਲਾ ਦਈਏ ਖਾਂ।
ਝੰਡਾ ਹਥ ਲੈ ਸਾਗਰੋਂ ਪਾਰ ਕਰੀਏ, ਸ਼ੋਰ ਵਿਚ ਵਲੈਤ ਦੇ ਪਾ ਦਈਏ ਖਾਂ।
ਬੋਰੀ ਬਿਸਤਰਾ ਬੰਨ੍ਹ ਤਿਆਰ ਕਰੀਏ, ਜਾਂਦੀ ਵਾਰ ਸਲਾਮ ਬੁਲਾ ਦਈਏ ਖਾਂ।
ਗਿਆ ਵਕਤ ਨ ਮੂਲ ਫਿਰ ਹਥ ਆਵੇ, 'ਸਿਧੂ' ਹਿੰਦ ਆਜ਼ਾਦ ਕਰਾਵਣੇ ਨੂੰ।
ਕੇਹੀ ਰੁਤ ਸੁਹਾਵਣੀ ਫੇਰ ਆਈ, ਵਧ-ਵਧ ਸ਼ਹੀਦੀਆਂ ਪਾਵਣੇ ਨੂੰ।

— ਚਨਣ ਸਿੰਘ 'ਸਿਧੂ'
(चनण सिंह "सिधु")

"ਕਿਰਤੀ" ਮਾਸਕ ਪੱਤਰ
ਸੰਪਾਦਕ : ਬਚਿੱਤਰ ਸਿੰਘ।
ਜਿਲਦ ਨੰ. ੫, ਅੰਕ : ੫, ਮਈ ੧੯੩੦
ਓਅੰਕਾਰ ਪ੍ਰੈਸ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।

"किरती" मासिक पत्र
संपादक : बचित्तर सिंह।
जिल्द नं. 5, अंक : 5, मई 1930.
ओंकार प्रैस, अमृतसर।

(अवाप्ति संख्या : 2172)

ਭਾਰਤ ਦੀ ਹਾਲਤ

ਇਕ ਬਾਗ ਵਿਚ ਜਾਇਕੇ ਦੇਖਿਆ ਮੈਂ,
ਬੁਢੀ ਮਾਈ ਇਕ ਹਾਲੋ ਬੇ ਹਾਲ ਦਿਸੀ।
ਖੁਲੇ ਵਾਲ ਸਨ ਓਸ ਗਰੀਬਣੀ ਦੇ,
ਜਕੜੀ ਹੋਈ ਜ਼ੰਜੀਰਾਂ ਦੇ ਨਾਲ ਦਿਸੀ।
ਰੰਗ ਜ਼ਰਦ ਤੇ ਭਰੇ ਉਹ ਸ਼ਰਦ ਆਂਹੀ,
ਅਖੋਂ ਹੰਝੂਆਂ ਦੀ ਲੜੀ ਨਾਲ ਦਿਸੀ।
ਹਥ ਜੋੜ ਅਸਮਾਨ ਵਲ ਤਕ ਰਹੀ ਸੀ,
ਦੁਖੀਆ ਦਿਲ ਤੋਂ ਕਰਦੀ ਸਵਾਲ ਦਿਸੀ।
ਮਨਜ਼ਰ ਵੇਖਿਆ ਜਦੋਂ ਇਹ ਦਰਦ ਭਰਿਆ,
ਮੂਹੋਂ ਨਿਕਲ ਗਈ ਚੀਕ ਬੇਵਸ ਮੇਰੇ।
ਆਇਆ ਚਕਰ ਦਿਮਾਗ ਨੂੰ ਹੋਸ਼ ਭੁਲੇ,
ਸਾਹ ਔਨ ਜਾਣੋ ਹੋਏ ਬਸ ਮੇਰੇ।
ਲੇਕਿਨ ਸੁਣ ਆਵਾਜ਼ ਇਹ ਚੀਕ ਵਾਲੀ,
ਉਸ ਮਾਈ ਨੇ ਮੇਰੇ ਵਲ ਧਿਆਨ ਕੀਤਾ।
ਮੈਂ ਵੀ ਉਠ ਕੇ ਹੋਸ਼ ਸੰਭਾਲ ਛੇਤੀ,
ਆਪਣੇ ਕਦਮਾਂ ਨੂੰ ਜਲਦ ਰਵਾਨ ਕੀਤਾ।
ਨਮਸ਼ਕਾਰ ਕੀਤਾ ਉਸ ਮਾਤ ਨੂੰ ਜਾ,
ਨਾਲੇ ਸਵਾਲ ਇਹ ਉਤੋਂ ਜ਼ਬਾਨ ਕੀਤਾ।
ਮਾਤਾ ਦਸ ਤੂੰ ਕੌਣ ਏਂ ਨਾ ਕੀ ਉ?
ਤੇਰਾ ਹਾਲ ਇਹ ਕਿਸ ਬੇਈਮਾਨ ਕੀਤਾ।
ਕਿਉਂ ਇਹ ਹਾਲਤ ਨਮਾਣਿਆਂ ਵਾਂਗ ਹੋਈ,
ਕਿਉਂ ਨਾਲ ਜ਼ੰਜੀਰਾਂ ਦੇ ਕੈਦ ਹੈਂ ਤੂੰ।
ਸਚ ਦਸ ਨਾ ਕਰੀਂ ਲੁਕਾ ਕੋਈ,
ਕਿਹੜੀ ਗਲੋਂ ਮਾਤਾ ਨਾਉਮੈਦ ਹੈਂ ਤੂੰ।
ਉਸ ਕਹਿਆ ਸੁਣ ਹਾਲ ਖਿਆਲ ਦੇ ਨਾਲ,
ਭਾਰਤ ਨਾਮ ਮੇਰਾ ਬਦ ਨਸੀਬ ਦਾ ਏ।
ਵਿਚ ਪਿੰਜਰੇ ਕੈਦ ਸਯਾਦ ਰਖੀ,
ਹੋਇਆ ਹਾਲ ਜਿਵੇਂ ਅੰਦਲੀਬ ਦਾ ਏ।

ਮੇਰਾ ਦੇਸ਼ ਹੋਇਆ ਪੰਜੇ ਗੈਰ ਦੇ ਵਿਚ,
ਸਮਾਂ ਬਣਿਆਂ ਰੰਗ ਅਜੀਬ ਦਾ ਏ।
ਫੁਟੀ ਕਿਸਮਤ ਅਸਮਾਨ ਨੇ ਗੇੜ ਖਾਦਾ,
ਹੋਇਆ ਹਾਲ ਇਹ ਮੈਂ ਗਰੀਬ ਦਾ ਏ।
ਨਿਤ ਨਵੇਂ ਸੂਰਜ ਦਿਲ ਤੇ ਫਟ ਹੁੰਦੇ,
ਦਿਸਦਾ ਕੋਈ ਹਾਏ ਮਰ੍ਹਮ ਨਹੀਂ ਲੌਣ ਵਾਲਾ।
ਹੋਈਆਂ ਮੁਦਤਾਂ ਨੇ ਦੁਖ ਝਾਗਦੀ ਨੂੰ,
ਆਇਆ ਕੋਈ ਨਹੀਂ ਹਾਏ ਛਡੌਨ ਵਾਲਾ।
ਕੀ ਕੀ ਦਸਾਂ ਜੋ ਬੀਤੀਆਂ ਹੈਨ ਮੈਥੇ,
ਕਿਤੇ ਗੋਲੀਆਂ ਛਾਤੀ ਤੇ ਚਲੀਆਂ ਨੇ।
ਉਹ ਯਾਦ ਨੇ ਬਜ ਬਜ ਘਾਟ ਤੇ ਜੋ,
ਮੈਥੇ ਜਾਬਰਾਂ ਕੀਤੀਆਂ ਭਲੀਆਂ ਨੇ।
ਕਿਤੇ 'ਦਾਸ', 'ਬਿਸਮਲ', 'ਅਸ਼ਫਾਕ', 'ਲਹਿਰੀ',
ਜ਼ਿੰਦਾ ਅਜ ਸ਼ਹਾਦਤਾਂ ਖਲੀਆਂ ਨੇ।
'ਭਗਤ', 'ਗੁਰੂ', 'ਸੁਖਦੇਵ', 'ਕਰਤਾਰ' ਦੀਆਂ,
ਕਿਤੇ ਮਿਟੀਆਂ ਮਿਟੀ 'ਚ ਰਲੀਆਂ ਨੇ।
ਜਦੋਂ ਜਿਗਰ ਤੇ ਮਾਰਕੇ ਹਥ ਵੇਖਾਂ,
ਅੱਲੇ ਫਟ ਹਾਏ ਹਥਾਂ ਨੂੰ ਲਗਦੇ ਨੇ।
ਦਿਨ 'ਕਰਤਾਰ' ਸੁਖਾਂ ਦੇ ਪ੍ਰਵਾਜ਼ ਕਰ ਗਏ,
ਵਾ ਵਰੋਲੇ ਪੈ ਦੁਖਾਂ ਦੇ ਵਗਦੇ ਨੇ।

— ਕਾਮਰੇਡ ਕਰਤਾਰ ਸਿੰਘ 'ਕਰਤਾਰ
(कामरेड करतार सिंह "करतार"

"ਦੁਖੀ ਦੁਨੀਆਂ"
ਕਵੀ ਤੇ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਕ :
ਕਾਮਰੇਡ ਕਰਤਾਰ ਸਿੰਘ "ਕਰਤਾਰ"
ਆਜ਼ਾਦ ਪ੍ਰੈਸ, ਮੇਰਠ।

"दुखी दुनियां"
कवि और प्रकाशक :
कामरेड करतार सिंह "करतार"।
आज़ाद प्रैस, मेरठ।

(अवाप्ति संख्या : 1956)

ਵਾਹ ਜੀ ਵਾਹ! ਸੋਹਣੇ ਸ੍ਰਦਾਰ ਭਗਤ ਸਿੰਘ

ਸੀ ਕੌਮ ਦਾ ਗਮਖਾਰ ਤਾਂ ਸਰਦਾਰ ਭਗਤ ਸਿੰਘ,
ਹੋਇਆ ਮੁਲਕ ਤੋਂ ਨਸਾਰ ਤਾਂ ਸ੍ਰਦਾਰ ਭਗਤ ਸਿੰਘ,
ਦੇਸ਼ ਸੇਵਾ ਵਾਸਤੇ ਸਿਰ ਸੀ ਕਟਾ ਲਿਆ,
ਮੂੰਹੋਂ ਨ ਕੀਤਾ ਉਫ ਦਾ ਇਜ਼ਹਾਰ ਭਗਤ ਸਿੰਘ।
ਵਾਹ ਜੀ ਵਾਹ ਸੋਹਣੇ ਸਰਦਾਰ ਭਗਤ ਸਿੰਘ।
ਦੇਸ਼ ਪਿਛੇ ਤਿਖੀ ਸੂਲੀ ਉਤੇ ਚੜ੍ਹ ਕੇ,
ਭਾਂਬੜ ਜ਼ੁਲਮ ਵਾਲੇ ਵਿਚ ਸੜ ਕੇ,
ਸ਼ਹੀਦਾਂ ਵਾਲੀ ਕਤਲਗਾਹ ਵਿਚ ਵੜ ਕੇ,
ਸੀਸ ਦਿਤਾ ਆਪਣਾ ਸੀ ਵਾਰ ਭਗਤ ਸਿੰਘ।
ਵਾਹ ਜੀ ਵਾਹ ਸੋਹਣੇ ਸਰਦਾਰ ਭਗਤ ਸਿੰਘ।
ਰਖਿਆ ਨ ਦਿਲ ਵਿਚ 'ਖੌਫ' ਮਰਨ ਦਾ,
ਸੀ ਖਿਆਲ ਇਕ ਹਿੰਦ ਨੂੰ ਆਜ਼ਾਦ ਕਰਨ ਦਾ,
ਤੇ ਦਾਮਨ ਸ਼ਹਾਦਤ ਦੇ ਨਾਲ ਭਰਨ ਦਾ,
ਇਹਾ ਲੈ ਖਿਆਲ ਹੋਯਾ ਤਯਾਰ ਭਗਤ ਸਿੰਘ।
ਵਾਹ ਜੀ ਵਾਹ ਸੋਹਣੇ ਸਰਦਾਰ ਭਗਤ ਸਿੰਘ।
ਘਰ ਛਡ ਜਿਹਲ ਨੂੰ ਖਾਨਾ ਬਣਾ ਲਿਆ,
ਬਲਿਹਾਰ ਤੇਰੇ ਹੌਸਲੇ ਤੋਂ ਕਰਮਾਂ ਵਾਲਿਆ,
ਵਤਨ ਲਈ ਫਾਂਸੀ ਦਾ ਗਲ ਰੱਸਾ ਪਾ ਲਿਆ,
ਹਦੋਂ ਵਧ ਕੀਤਾ ਉਪਕਾਰ ਭਗਤ ਸਿੰਘ।
ਵਾਹ ਜੀ ਵਾਹ ਸੋਹਣੇ ਸਰਦਾਰ ਭਗਤ ਸਿੰਘ।
ਹਿੰਦ ਨੂੰ ਗੁਲਾਮ ਜਦੋਂ ਤੂੰ ਤਕਾਇਆ ਸੀ,
ਸੀਸ ਵਾਰ ਸਿਰੋਂ ਤੂੰ ਫਰਜ਼ ਲਾਹਿਆ ਸੀ,
ਮੁਲਕ ਨੂੰ ਸ਼ਹੀਦੀਆਂ ਦਾ ਰਾਹ ਵਖਾਇਆ ਸੀ,
ਤੈਥੋਂ ਲਖ ਵਾਰ ਬਲਿਹਾਰ ਭਗਤ ਸਿੰਘ।
ਵਾਹ ਜੀ ਵਾਹ ਸੋਹਣੇ ਸਰਦਾਰ ਭਗਤ ਸਿੰਘ।

ਕੀਤਾ ਜੋ ਤੂੰ ਕੰਮ ਨਹੀ ਕਦੇ ਭੀ ਭੁਲਣਾ,
ਸਾਡੇ ਪਿਛੇ ਤੇਰਾ ਜਿਹਲਾਂ ਵਿਚ ਰੁਲਣਾ,
ਹਿੰਦੀਆਂ ਦੇ ਲਈ ਤੇਰਾ ਖੂਨ ਡੁਲ੍ਹਣਾ,
ਯਾਦ ਤੇਰੀ ਆਵੇ ਬਾਰ ਬਾਰ ਭਗਤ ਸਿੰਘ।
ਵਾਹ ਜੀ ਵਾਹ ਸੋਹਣੇ ਸਰਦਾਰ ਭਗਤ ਸਿੰਘ।

ਤੇਰੀ ਹਰ ਚਾਲ ਕਾਬਲੇ ਕਦਰ ਹੈ,
ਤੇਰੀ ਹਿੰਮਤ ਉਤੇ ਸਾਨੂੰ ਬਜਾ ਫਖਰ ਹੈ,
ਨਾਮ ਤੇਰਾ ਰੌਸ਼ਨ ਸ਼ਮਸੋ ਕਮਰ ਹੈ,
ਕਾਇਮ ਜਦੋਂ ਤੀਕ ਸੰਸਾਰ ਭਗਤ ਸਿੰਘ।
ਵਾਹ ਜੀ ਵਾਹ ਸੋਹਣੇ ਸਰਦਾਰ ਭਗਤ ਸਿੰਘ।

ਕੀਤਾ ਜੋ ਤੂੰ ਕੰਮ ਨਹੀਂ ਕਿਸੇ ਤੋਂ ਲੁਕਿਆ,
ਦੇਸ਼ ਸੇਵਾ ਕਰਦਿਆਂ ਸਰੀਰ ਮੁਕਿਆ,
ਕਿਹੜਾ ਹੈ ਉਹ ਸਿਰ ਜੋ ਤੈਨੂੰ ਨਹੀ ਝੁਕਿਆ,
ਸਿਜਦਾ ਤੈਨੂੰ ਕੀਤਾ ਏ ਨਰ ਨਾਰ ਭਗਤ ਸਿੰਘ।
ਵਾਹ ਜੀ ਵਾਹ ਸੋਹਣੇ ਸਰਦਾਰ ਭਗਤ ਸਿੰਘ।

ਤੈਨੂੰ ਦੁਨੀਆਂ ਤੋਂ ਜੇ ਕੋਈ ਚਾਹੇ ਮਿਟਾਵਨਾ,
ਮਿਟਨਾ ਨਹੀ ਤੂੰ ਓਸ ਮਿਟ ਜਾਵਨਾ,
ਨਾਮ ਤੇਰੇ ਦੁਨੀਆਂ ਤੇ ਸ਼ੁਹਰਤ ਪਾਵਨਾ,
ਮਿਟਨਾ ਨਹੀ ਕਦੇ ਜੀਨਹਾਰ ਭਗਤ ਸਿੰਘ।
ਵਾਹ ਜੀ ਵਾਹ ਸੋਹਣੇ ਸਰਦਾਰ ਭਗਤ ਸਿੰਘ।

ਆਜ਼ਾਦੀ ਵਾਲੀ ਹਵਾ ਦੇ ਜਦ ਬੁਲੇ ਵਗਣ ਗੇ,
ਤੇਰੀ ਚਿਤਾ ਵਾਲੀ ਜਗਾ ਮੇਲੇ ਲਗਣ ਗੇ,
ਘਿਓ ਵਾਲੇ ਦੀਵੇ ਓਸ ਥਾਂ ਤੇ ਜਗਣ ਗੇ,
ਪੂਜਾ ਤੇਰੀ ਹੋਸੀ ਨਾਲ ਪਿਆਰ ਭਗਤ ਸਿੰਘ।
ਵਾਹ ਜੀ ਵਾਹ ਸੋਹਣੇ ਸਰਦਾਰ ਭਗਤ ਸਿੰਘ।

ਜਦੋਂ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨੀ ਹੋ ਆਜ਼ਾਦ ਜਾਣਗੇ,
ਤੇਰੀ ਮੜ੍ਹੀ ਉਤੇ ਫੁਲ ਜਾ ਚੜ੍ਹਾਣਗੇ,

ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਜ਼ਿੰਦਾਬਾਦ ਦੇ ਨਾਹਰੇ ਲਾਣਗੇ,

ਸੁਣੇਂਗਾ ਪਿਆ ਸਾਰਾ ਸੰਸਾਰ ਭਗਤ ਸਿੰਘ।

ਵਾਹ ਜੀ ਵਾਹ ਸੋਹਣੇ ਸਰਦਾਰ ਭਗਤ ਸਿੰਘ।

ਰਬਾ ਹੈ ਇਹਾ ਬੇਨਤੀ ਸਾਨੂੰ ਆਜ਼ਾਦ ਕਰ,
ਸ਼ਕਤ ਦਿਲਾਂ ਅੰਦਰ ਦੇਸ਼ ਸੇਵਾ ਕਰਨੀ ਭਰ,
ਝੰਡਾ 'ਕਰਤਾਰ' ਏਕਤਾ ਦਾ ਜਾਏਂ ਲਹਿਰ,

ਮਨਾਈਏ ਹਰ ਸਾਲ ਪਏ ਤਿਹਵਾਰ ਭਗਤ ਸਿੰਘ।

ਵਾਹ ਜੀ ਵਾਹ ਸੋਹਣੇ ਸਰਦਾਰ ਭਗਤ ਸਿੰਘ।

— ਕਾਮਰੇਡ ਕਰਤਾਰ ਸਿੰਘ "ਕਰਤਾਰ"
(कामरेड करतार सिंह "करतार")

"ਦੁਖੀ ਦੁਨੀਆਂ"
ਕਵੀ ਤੇ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਕ :
ਕਾਮਰੇਡ ਕਰਤਾਰ ਸਿੰਘ "ਕਰਤਾਰ"
ਆਜ਼ਾਦ ਪ੍ਰੈਸ, ਮੇਰਠ।

"दुखी दुनियां"
कवि और प्रकाशक :
कामरेड करतार सिंह "करतार"।
आज़ाद प्रैस, मेरठ।

(अवाप्ति संख्या : 1956)

ਗਜ਼ਲ

ਸਾਨੂੰ ਸਬਕ ਆਜ਼ਾਦੀ ਵਾਲਾ।
ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਗਿਆ ਦਸ ਕੇ।।
ਹਿੰਦੀਓ ਮੌਤ ਕੋਲੋਂ ਨਹੀ ਡਰਨਾ।
ਫਾਂਸੀ ਚੜ੍ਹ ਜਾਓ ਹੱਸ ਕੇ।।

ਬਨ ਗਏ ਦੇਸ ਦੇ ਪਿਆਰੇ।
ਤਿਨੇ ਅਸਾਂਦੇ ਦੁਲਾਰੇ।
ਓਹ ਤਾਂ ਚਾੜ੍ਹ ਫਾਂਸੀ ਤੇ ਮਾਰੇ।
ਰਸਾ ਕਸ ਕਸ ਕੇ।।

ਸੁਨ ਲੋ ਹਰੀ ਕਰਿਸ਼ਨ ਦਾ ਹਾਲ।
ਜਿਸ ਨੇ ਕੀਤਾ ਖੇਲ ਕਮਾਲ।।
ਭਾਰਤ ਮਾਤਾ ਦਾ ਸੀ ਲਾਲ।
ਫਾਂਸੀ ਤੇ ਚੜ੍ਹਿਆ ਹੱਸ ਕੇ।।

ਅਸਾਂ ਹਿੰਦ ਆਜ਼ਾਦ ਹੈ ਕਰਨਾ।
ਤੋਪ ਮਸ਼ੀਨ ਕੋਲੋਂ ਨਹੀਂ ਡਰਨਾ।
ਖੁਸ਼ੀ ਨਾਲ ਫਾਂਸੀ ਤੇ ਚੜ੍ਹਨਾ।
ਜਾਲਮ ਤਾਂਈ ਦਸ ਕੇ।।

ਸੁਨ ਲੌ ਹਿੰਦ ਵਾਲਿਓ ਭਾਈਓ।
ਸਾਰੇ ਹਰੀ ਕਰਿਸ਼ਨ ਬਨ ਜਾਈਓ।।
ਹਿੰਦੀਓ ਦੇਰ ਜਰਾ ਨਾ ਲਾਈਓ।
ਫਾਂਸੀ ਚੜ੍ਹ ਜਾਓ ਹੱਸ ਕੇ।।

ਭਗਤ ਰਾਮ ਜੇਹਲ ਵਿਚ ਰੁਲਦਾ,
ਸਾਡੇ ਦਿਲ ਤੋਂ ਕਦੇ ਨਹੀ ਭੁਲਦਾ।
ਸਾਡਾ ਖੂਨ ਅਖਾਂ ਵਿਚੋਂ ਡੁਲਦਾ,
ਦਰਸਨ ਕਰਿਏ ਨਸਕੇ। ਸਾਨੂੰ।

ਇਕ ਪੰਛੀ ਅਰਜ ਗੁਜ਼ਾਰੇ,
ਘਰ ਘਰ ਲਾਓ ਅਜ਼ਾਦੀ ਨਾਹਰੇ।

ਬਨ ਕੇ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਪਿਆਰੇ,
ਅਜ਼ਾਦੀ ਲੈ ਲੋ ਹਸ ਕੇ।

— ਐਮ.ਐਸ. "ਪੰਛੀ"
(एम.एस. "पंछी")

"ਸਰਹੱਦੀ ਸ਼ੇਰ"
ਕਵੀ ਐਮ. ਐਸ. "ਪੰਛੀ"।
ਵਿਰਜਾਨੰਦ ਪ੍ਰੈਸ, ਲਾਹੌਰ।

"सरहदी शेर"
कवि एम. एस. "पंछी"।
विरजानंद प्रैस, लाहौर।

(अवाप्ति संख्या : 2228)

0--254/Deptt. of Archives/ND/97

ਰਾਜਸੀ ਕੈਦੀ

ਹਾਲ ਤੇ ਬੇਹਾਲ ਕੀਤੇ ਕਿਰਤੀ ਪਤੰਗੇ ਸਾਡੇ,
ਜ਼ੁਲਮ ਅਨ੍ਹੇਰੀ ਯਾਰੋ ਹਿੰਦ ਉਤੇ ਛਾਈ ਹੈ।
ਬੇਲਣੇ ਚਿ ਪੀੜੇ ਅਤੇ ਸੂਲੀ ਤੇ ਚੜ੍ਹਾਏ ਦਿਤੇ,
ਕਾਲੇ ਪਾਣੀ ਵਿਚ ਕਈਆਂ ਉਮਰ ਬਿਤਾਈ ਹੈ।
ਦੋਸ਼ ਨਹੀਂ ਕੋਈ ਉਹ ਤੇ ਹੈਣ ਨਿਰਦੋਸ਼ੇ ਵੀਰੋ,
ਮੂੰਹ ਸਿਰ ਨਹੀਂ ਝੂਠੀ ਸਾਜ਼ਸ਼ ਬਣਾਈ ਹੈ।
ਜ਼ੁਲਮ ਦਾ ਪਹਾੜ ਡਿਗ ਪਿਆ ਉੱਤੇ ਕਿਰਤੀਆਂ ਦੇ,
ਸੁਣਦਾ ਗ਼ਰੀਬਾਂ ਦੀ ਨਾਂ ਕੋਈ ਭੀ ਦੁਹਾਈ ਹੈ।
ਹਿੰਦੂ ਮੁਸਲਮਾਨ ਅਤੇ ਸਿਖ ਸਾਰੇ ਕਠੇ ਹੋਵੋ,
ਸੋਚੀਏ ਉਪਾਉ ਕੋਈ ਵੀਰਾਂ ਦੇ ਛਡੌਣੇ ਦਾ।
ਗੋਡਿਆਂ ਚਿ ਸਿਰ ਦੇਕੇ ਬਹਿਣ ਦਾ ਵਕਤ ਗਿਆ,
ਆ ਗਿਆ ਹੈ ਵੇਲਾ ਕੁਛ ਕਰਕੇ ਦਖੌਣੇ ਦਾ।
ਬਣ ਇਨਸਾਨ ਹਥੀਂ ਕਰਕੇ ਵਿਖਾਲ ਦੇਈਏ,
ਵੇਲਾ ਨਹੀਂ ਨੀਂਦ ਕੁੰਭ ਕਰਨ ਵਾਲੀ ਸੌਣੇ ਦਾ।
ਬੰਨ੍ਹਕੇ ਲੰਗੋਟੇ ਵੀਰੋ ਨਿਤਰੋ ਮੈਦਾਨ ਵਿਚ,
'ਇਨਕਲਾਬ' ਗੀਤ ਹੈ ਅਜ਼ਾਦੜੀ ਦੇ ਗੌਣੇ ਦਾ।
ਕਿਹੜਾ ਜ਼ੁਲਮ ਕੀਤਾ ਉਨ੍ਹਾਂ ਵੀਰਾਂ ਬੇਕਸੂਰਿਆਂ ਨੇ,
ਜ਼ੁਲਮ ਦੇ ਤੁਫ਼ਾਨ ਉਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਝੁਲਾਏ ਨੇ।
ਮੰਗਦੇ ਹਾਂ ਹੱਕ ਕੀ ਕਸੂਰ ਹੈ ਇਹ ਦੱਸੋ ਸਾਨੂੰ,
ਡੱਕ ਵਿਚ ਜੇਹਲਾਂ ਮੱਛੀ ਵਾਂਗ ਤੜਫਾਏ ਨੇ।
ਰਹਿਣਾ ਨਾਂ ਗੁਲਾਮ ਅਸੀਂ ਆਖਦੇ ਵੰਗਾਰ ਕੇ ਹਾਂ,
ਲੈਣੀ ਹੈ ਆਜ਼ਾਦੀ ਗੀਤ ਗਾਏ ਕੇ ਸੁਣਾਏ ਨੇ।
ਘਰ-ਬਾਰ ਤਿਆਗ ਬੱਚੇ ਬੱਚੀਆਂ ਨੂੰ ਰੌਂਦੇ ਛੱਡ,
ਫੇਰ ਕਈਆਂ ਆਕੇ ਡੇਰੇ ਜੇਲਾਂ ਵਿਚ ਲਾਏ ਨੇ।

ਸੰਗਲ ਗੁਲਾਮੀ ਵਾਲੇ ਤੋੜਕੇ ਆਜ਼ਾਦ ਹੋਣਾ,

ਕਈ ਹੀਰੇ ਲਾਲ ਅਸੀ ਹੱਥਾਂ ਚੋਂ ਗੁਵਾਏ ਨੇ।

ਲਾਂਵਦੇ ਨੇ ਨਾਰ੍ਹੇ ਇਨਕਲਾਬ ਵਾਲੇ 'ਜਾਚਕਾਂ' ਓਏ,

ਅਜ਼ਾਦੜੀ ਦੇ ਝੰਡੇ ਲਾਲ ਚਾੜ੍ਹਕੇ ਦਿਖਾਏ ਨੇ।

— ਕਾ: ਸੋਹਣ ਸਿੰਘ "ਜਾਚਕ"
(का. सोहण सिंह ''जाचक'')

"ਕਿਰਤੀ ਲਹਿਰ" ਹਫਤਾਵਾਰ ਅਖਬਾਰ
ਸੰਪਾਦਕ : ਮੁਬਾਰਕ ਸਾਗ਼ਰ।
ਜਿਲਦ ਨੰ. ੧, ਅੰਕ : ੨੦, ਫਰਵਰੀ ੧੯੩੮
ਆਜ਼ਾਦ ਪ੍ਰੈਸ, ਮੇਰਠ।

''किरती लहर'' साप्ताहिक अखबार
संपादक : मुबारक सागर।
जिल्द नं. 1, अंक : 2, 20 फरवरी 1938
आज़ाद प्रैस, मेरठ।

(अवाप्ति संख्या : 1999)

ਐਜੀਟੇਸ਼ਨ ਕਰ ਦਿਓ ਬਾਬੇ ਛੁਡਵਾਵੋ

ਉਠੋ! ਉਠੋ!! ਸਜਣੋ, ਹੁਣ ਕਰੋ ਤਿਆਰੇ,
ਚੌਦਾਂ ਵਾਲੇ ਬਾਬਿਆਂ ਤੋਂ ਜਾਵੋ ਵਾਰੇ।
ਸਾਡੀ ਖਾਤਰ ਛੱਡ ਗਏ, ਪ੍ਰਵਾਰ ਵਿਚਾਰੇ,
ਪਿੰਜਰ ਹੁਣ ਤਾਂ ਰਹਿ ਗਏ, ਜੇਹਲਾਂ ਦੇ ਮਾਰੇ।
ਕਿਉਂ ਨਹੀਂ ਪੈਂਦੀ ਅਣਖ, ਤੁਸੀਂ ਹੋ ਗਏ ਨਕਾਰੇ,
ਭੁਲੇ ਅਪਨੇ ਫ਼ਰਜ਼ ਨੂੰ ਨਿਜ-ਮਾਨ ਵਿਸਾਰੇ।
ਹਿੰਦੂ, ਸਿਖੋ, ਮੋਮਨੋ, ਕੀ ਧਰਮ ਤਿਹਾਰੇ,
ਜੇ ਨਹੀਂ ਬਾਬੇ ਯਾਦ ਤੁਸਾਂ ਨੂੰ ਹੋ ਬੁਰਿਆਰੇ।
ਉਠੋ! ਮਾਰੋ!! ਹੰਭਲਾ ਤੂਫਾਨ ਮਚਾਵੋ,
ਐਜੀਟੇਸ਼ਨ ਕਰ ਦਿਓ, ਬਾਬੇ ਛੁਡਵਾਵੋ।
ਵਿਚ ਸਕੂਲਾਂ ਪੜ੍ਹਦਿਓ, ਹੁਣ ਅੱਖ ਉਠਾਵੋ,
ਰਖੋ ਜਾਂਦੀ ਅਣਖ ਤੁਸੀ, ਗਭਰੂ ਅਖਵਾਵੋ।
ਭਾਰ ਤੁਸਾਂ ਦੇ ਸਿਰਾਂ ਤੇ, ਇਹ ਚੇਤੇ ਲਾਵੋ,
ਭਾਰਤ ਮਾਤ ਪੁਕਾਰਦੀ, ਨਾਂ ਦੇਰਾਂ ਲਾਵੋ,
ਹਿੰਦੁਸਤਾਨੀ ਗਭਰੂਓ! ਨਾ ਫਰਜ਼ ਭੁਲਾਵੋ,
ਪਾ 'ਗੜਗੱਜ' ਪਿਆਰਿਓ ਕੁਝ ਰੱਖ ਵਿਖਾਵੋ।

''ਜ਼ਿੰਦਾ ਸ਼ਹੀਦ ਬਾਬੇ''
ਅਰਥਾਤ ਪੂਰਨ ਆਜ਼ਾਦੀ ਦੀ ਨੀਂਹ
ਰਖਣ ਵਾਲੇ ੧੯੧੪-੧੫ ਦੇ ਅਣਖੀਲੇ ਬੀਰ।
ਸੁਧਾਰਕ ਪ੍ਰੈਸ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।

''जिंदा शहीद बाबे''
अर्थात पूर्ण आज़ादी दी नींव रखने वाले
1914-15 के अनखिले बीर।
सुधारक प्रैस, अमृतसर।

(अवाप्ति संख्या : 2238)

ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਗੀਤ ਗੌਂਦਾ ਹਾਂ।

ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਗੀਤ ਗੌਂਦਾ ਹਾਂ, ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਗੀਤ ਗੌਂਦਾ ਹਾਂ।
ਜੋ ਮੋਢੇ ਤੇ ਬਗਾਵਤ ਦਾ ਝੰਡਾ ਚੁਕ ਨਿਕਲਦੇ ਨੇ।
ਕਿਸੇ ਜ਼ਾਲਮ ਹਕੂਮਤ ਦੇ ਧੜਕਦੇ ਦਿਲ ਤੇ ਹਲਦੇ ਨੇ।
ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਗੀਤ ਗੌਂਦਾ ਹਾਂ, ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਗੀਤ ਗੌਂਦਾ ਹਾਂ।
ਜੋ ਰਖ ਦਿੰਦੇ ਨੇ ਸੀਨਾ ਗਰਮ ਤੋਪਾਂ ਦੇ ਦਹਾਨੇ ਤੇ।
ਜਿਹਨਾਂ ਦੀ ਨਜ਼ਰ ਤੋਂ ਬਿਜਲੀ ਚਮਕ ਪੈਂਦੀ ਜ਼ਮਾਨੇ ਤੇ।
ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਗੀਤ ਗੌਂਦਾ ਹਾਂ, ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਗੀਤ ਗੌਂਦਾ ਹਾਂ।
ਜੋ ਆਜ਼ਾਦੀ ਦੀ ਦੇਵੀ ਨੂੰ ਲਹੂ ਦੀ ਭੇਟ ਦੇਂਦੇ ਨੇ।
ਹਮੇਸ਼ਾਂ ਹਕ ਦੀ ਖਾਤਰ ਜੋ ਹਥ ਤਲਵਾਰ ਲੈਂਦੇ ਨੇ।
ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਗੀਤ ਗੌਂਦਾ ਹਾਂ, ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਗੀਤ ਗੌਂਦਾ ਹਾਂ।
ਭਰੇ ਜਲਸੇ 'ਚ ਕਰਦੇ ਨੇ ਗਦਰ ਭਰੀਆ ਜੁ ਤਕਰੀਰਾਂ।
ਜਿਹਨਾਂ ਦਾ ਹਥ ਉਠਿਆਂ ਹੀ ਚਮਕ ਪੈਂਦੀਆਂ ਸ਼ਮਸ਼ੀਰਾਂ।
ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਗੀਤ ਗੌਂਦਾ ਹਾਂ, ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਗੀਤ ਗੌਂਦਾ ਹਾਂ।
ਉ' ਕੰਗਲੇ ਜਿਨਾਂ ਦੀ ਅਖਾਂ ਚੋਂ ਕਹਿਰ ਵਰ੍ਹੇ ਅਜ਼ਾਬਾਂ ਦਾ।
ਜਿਨਾਂ ਦੇ ਸਾਹਵੇਂ ਹੋਏ ਰੰਗ, ਚਿਟਾ ਹੋਏ ਨਵਾਬਾਂ ਦਾ।
ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਗੀਤ ਗੌਂਦਾ ਹਾਂ, ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਗੀਤ ਗੌਂਦਾ ਹਾਂ।

ਪੇਂਡੂ, ਜਿਨਾਂ ਦੇ ਖਲਵਾੜੇ ਤੇ ਬਿਜਲੀ ਲਿਸ਼ਕਾਂ ਮਾਰੇ ਪਈ।
ਭੁਜਾ ਜਿਨਾਂ ਦੀ ਬਦਲੇ ਲਈ ਜ਼ਾਲਮ ਨੂੰ ਵੰਗਾਰੇ ਪਈ।
ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਗੀਤ ਗੌਂਦਾ ਹਾਂ, ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਗੀਤ ਗੌਂਦਾ ਹਾਂ।
ਉਹ ਮਿਹਨਤ ਕਸ਼ ਜੁ ਆਪਨੇ ਡੌਲਿਆਂ ਤੇ ਲਾਡ ਕਰਦੇ ਨੇ।
ਜਿਨਾਂ ਦੀ ਤਾਕਤਾਂ ਤਕ-ਤਕ ਪਏ 'ਜ਼ੁਲਮੀ ਦੈਂਤ' ਡਰਦੇ ਨੇ।
ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਗੀਤ ਗੌਂਦਾ ਹਾਂ, ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਗੀਤ ਗੌਂਦਾ ਹਾਂ।
ਮਿੱਧ ਸਕਦੇ ਨੇ ਜੋ ਮਜ਼ਦੂਰ ਖਜ਼ਾਨਿਆਂ ਦੇ ਮਾਲਕ ਨੂੰ।
ਜੋ ਸਤਕੇ ਅੱਗ ਲਾ ਦਿੰਦੇ ਨੇ ਜੰਗੀ ਕਾਰਖਾਨਿਆਂ ਨੂੰ।
ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਗੀਤ ਗੌਂਦਾ ਹਾਂ, ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਗੀਤ ਗੌਂਦਾ ਹਾਂ।
ਜੋ ਬਾਲ ਮਵਾਤੇ ਲੌਂਦੇ ਨੇ ਧਰਮ ਕੁਧਰਮ ਦੀ ਵਸਤੀ ਨੂੰ।
ਜੋ ਲਾਹਨਤ ਜਾਣਦੇ ਨੇ ਦੇਸ ਵਿਚ ਫਿਰਕਾ ਪ੍ਰਸਤੀ ਨੂੰ।

ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਗੀਤ ਗੌਂਦਾ ਹਾਂ, ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਗੀਤ ਗੌਂਦਾ ਹਾਂ।
ਵਤਨ ਦੇ ਨੌਜੁਵਾਨਾਂ ਵਿਚ ਨਵੇ ਜਜ਼ਬੇ ਜਗਾਊਗਾਂ।
ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਗੀਤ ਗਾਊਂਗਾ, ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਗੀਤ ਗਾਊਂਗਾ।
ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਗੀਤ ਗੌਂਦਾ ਹਾਂ, ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਗੀਤ ਗੌਂਦਾ ਹਾਂ।

— ਸਾਥੀ ਜਾਂ ਨਿਸਾਰ ਹੁਸੈਨ ਅਖਤਰ
(साथी जां निसार हुसैन अखतर)

"ਕਿਰਤੀ ਲਹਿਰ" ਹਫਤਾਵਾਰ ਅਖਬਾਰ
ਸੰਪਾਦਕ : ਮੁਬਾਰਕ ਸਾਗਰ।
ਜਿਲਦ ਨੰ. ੧, ਅੰਕ : ੩, ੨੭ ਫਰਵਰੀ ੧੯੩੮
ਆਜ਼ਾਦ ਪ੍ਰੈਸ, ਮੇਰਠ।

"किरती लहर" साप्ताहिक अखबार
संपादक : मुबारक सागर।
जिल्द नं. 1, अंक : 3, 27 फरवरी 1938
आज़ाद प्रैस, मेरठ।

(अवाप्ति संख्या : 1994)

† ਇਹ ਸਾਥੀ ਜਾਂ ਨਿਸਾਰ ਹੁਸੈਨ ਅਖਤਰ ਦੀ ਉਰਦੂ ਕਵਿਤਾ ਦਾ ਤਰਜਮਾ ਹੈ।

ਲਗਨ ਆਜ਼ਾਦੀ ਮਨ ਵਿਚ ਯਾਰ,
ਮਰਨੇ ਤੇ ਹੁਣ ਡਰਨਾ ਕੀ।

ਜੇਲਾਂ ਨੇ ਸਾਡੇ ਲਈ ਖੇਲਾਂ, ਜੰਜ਼ੀਰਾਂ ਨੇ ਹਾਰ ਹੰਬੇਲਾਂ,
ਤੋੜ ਦਿਆਂਗੇ ਤੌਕ ਨਕੇਲਾਂ, ਜਿਉਂ ਸਾਬਣ ਨੂੰ ਕਟ ਦੀ ਤਾਰ। ਮਰਨੇ ਤੇ......
ਹਥਕੜੀਆਂ ਹਥਾਂ ਦਾ ਗੈਹਣਾ, ਹਸ ਹਸ ਕੇ ਹਰ ਦੁਖ ਨੂੰ ਸੈਹਣਾ,
ਵਿਚ ਗੁਲਾਮੀ ਦੇ ਨਹੀਂ ਰੈਹਣਾ, ਤਨ ਮਨ ਧਨ ਨੂੰ ਦੇਣਾ ਬਾਰ। ਮਰਨੇ ਤੇ......
ਸਿਰ ਵੇਚਾਂ ਦਾ ਸਾਡਾ ਟੋਲਾ, ਫੁਲ ਸਾਡੇ ਲਈ ਤੋਪ ਦਾ ਗੋਲਾ,
ਕੁਰਬਾਨੀ ਦਾ ਪਾਇਆ ਚੋਲਾ, ਕੀ ਕਰ ਲਊ ਜ਼ਾਲਮ ਸਰਕਾਰ। ਮਰਨੇ ਤੇ......
ਹਥ ਵਿਚ ਫੜ ਕੇ ਲਾਲ ਝੰਡਾ, ਏਹ ਸਾਡਾ ਦੋ ਧਾਰਾ ਖੰਡਾ,
ਲਖ ਪੁਲੀਸ ਬਰਸਾਵੇ ਡੰਡਾ, ਅਗੇ ਵਧਾਂਗੇ ਛਾਲਾਂ ਮਾਰ। ਮਰਨੇ ਤੇ......
ਭਰਮ ਧਰਮ ਰਵਾਜ ਪੁਰਾਣੇ, ਭਾਈ ਪੰਡਤ ਤੇ ਮੁਲਾਣੇ,
ਏਹ ਸਭ ਢੋਲ ਪੋਲ ਖੁਲ ਜਾਣੇ, ਅਜ ਤਾਂਈਂ ਕਰਦੇ ਰਹੇ ਬਹਾਰ। ਮਰਨੇ ਤੇ......
ਜਾਗ ਪਿਆ ਕਿਰਤੀ ਦਲ ਸਾਰਾ, ਇਸ ਦਰਯਾ ਦਾ ਨਹੀਂ ਕਨਾਰਾ,
ਸੰਭਲ ਜ਼ਰਾ ਸਰਮਾਇਆਦਾਰ ਟੁਟ ਜਾਣਾ ਤੇਰਾ ਹੰਕਾਰ। ਮਰਨੇ ਤੇ......
ਪੜ੍ਹੋ ਰੂਸ ਦੀ ਲਾਲ ਕਿਤਾਬ ਜਥੇਬੰਦ ਹੋ ਜਾਓ ਸ਼ਤਾਬ,
ਹੇਠਲੇ ਉਤੇ ਕਰੋ ਜਨਾਬ ਇਨਕਲਾਬ ਦਾ ਨਾਹਰਾ ਮਾਰ। ਮਰਨੇ ਤੇ......
ਮੋਹਨ ਦੁਨੀਆਂ ਨਮੀ ਬਣਾਓ, ਅਮਨ ਅਮਾਨ ਆਜ਼ਾਦੀ ਪਾਓ,
ਦਬ ਕਮਾਓ ਰਜ ਰਜ ਖਾਓ, ਸਾਂਝੀਵਾਲ ਖਿੜੇ ਗੁਲਜਾਰ। ਮਰਨੇ ਤੇ......

— ਮਾਇਲ
(माईल)

"ਕਿਰਤੀ ਲਹਿਰ" ਹਫਤਾਵਾਰ ਅਖਬਾਰ
ਸੰਪਾਦਕ : ਮੁਬਾਰਕ ਸਾਗ਼ਰ।
ਜਿਲਦ ਨੰ. ੧, ਅੰਕ : ੩੩,
੨ ਅਕਤੂਬਰ ੧੯੩੮
ਆਜ਼ਾਦ ਪ੍ਰੈਸ, ਮੇਰਠ।

"किरती लहर" साप्ताहिक अखबार
संपादक : मुबारक सागर।
जिल्द नं. 1, अंक : 33,
2 अक्तूबर 1938
आज़ाद प्रैस, मेरठ।

(अवाप्ति संख्या : 2051)

ਗੱਭਰੂਆਂ ਨੂੰ

ਚਲੋ ਚੱਲੀਏ ਜੇਹਲਾਂ ਨੂੰ!
ਗ਼ੈਰਾਂ ਦੇ ਜੂਲੇ ਹੇਠਾਂ, ਰਹਿੰਦੀ ਆ ਗਰਦਣ ਨੀਵੀ,
ਲੁੱਟੀ ਜਾਂਦੇ ਨੇ ਸਾਨੂੰ, ਹਾਇ! ਡਾਕੂ ਦਿਨ ਦੀਵੀਂ,
ਚਲੋ ਚੱਲੀਏ ਜੇਹਲਾਂ ਨੂੰ!
ਮਰਦੇ ਹਾਂ ਭੁੱਖੇ ਭਾਵੇਂ, ਰਾਤ ਦਿਨ ਪਏ ਕਮਾਈਏ,
ਰੋਟੀ ਦੀ ਬੁਰਕੀ ਖਾਤਰ, ਦਰ ਦਰ ਦੇ ਧੱਕੇ ਖਾਈਏ,
ਚਲੋ ਚੱਲੀਏ ਜੇਹਲਾਂ ਨੂੰ!
ਗ਼ੈਰਾਂ ਦੀ ਈਨ ਹੇਠਾਂ, ਹੁਣ ਦੇਸ਼ ਨਹੀਂ ਸਹਾਰੀ ਦਾ,
ਤੱਕ ਅਪਮਾਨ ਨਾਂ ਹੁੰਦਾ, ਹਿੰਦ ਅੰਮੜੀ ਪਿਆਰੀ ਦਾ,
ਚਲੋ ਚੱਲੀਏ ਜੇਹਲਾਂ ਨੂੰ!
ਆਜ਼ਾਦੀ ਦੇ ਰਸਤੇ ਉਤੇ, ਅਗਾਂਹ ਵਧਦੇ ਜਾਵਾਂਗੇ,
ਤੌਕ ਗੁਲਾਮੀ ਵਾਲਾ, ਤੋੜ ਕੇ ਵਗਾਹਵਾਂਗੇ,
ਚਲੋ ਚੱਲੀਏ ਜੇਹਲਾਂ ਨੂੰ!
ਦੱਤ ਜਿਤੇਂਦਰ ਦੀਆਂ ਰੂਹਾਂ, ਸਾਡੀਆਂ ਰਾਹਾਂ ਤਕਾਵਣ,
ਭਾਰਤ ਦੇ ਗੱਭਰੂਆਂ ਨੂੰ, ਸੈਨਤਾਂ ਮਾਰ ਬੁਲਾਵਣ,
ਚਲੋ ਚੱਲੀਏ ਜੇਹਲਾਂ ਨੂੰ!
ਆਉ ਕੁੱਦੋ ਮੈਦਾਨੀ, ਅਤਿ ਮਹਿੰਗੀ ਹੈ ਚੀਜ਼ ਜੁਆਨੀ,
ਭਾਰਤ ਦੀ ਭੇਟ ਚੜ੍ਹਾਓ, ਹਰ ਗੱਭਰੂ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨੀ,
ਚਲੋ ਚੱਲੀਏ ਜੇਹਲਾਂ ਨੂੰ!

— ਮਹਿੰਦਰ ਸਿੰਘ ਜੋਸ਼ੀ
(महिंद्र सिंह जोशी)

''ਕਿਰਤੀ ਲਹਿਰ'' ਹਫਤਾਵਾਰ ਅਖਬਾਰ
ਸੰਪਾਦਕ : ਹਰਮਿੰਦਰ ਸਿੰਘ (ਅਮ੍ਰੀਕਨ)।
ਜਿਲਦ ਨੰ. ੧, ਅੰਕ : ੩੭,
੩੦ ਅਕਤੂਬਰ ੧੯੩੮
ਆਜ਼ਾਦ ਪ੍ਰੈਸ, ਮੇਰਠ।

''किरती लहर'' साप्ताहिक अखबार
संपादक : हरमिंदर सिंह (अमरीकन)
जिल्द नं. 1, अंक : 37,
30 अक्तूबर 1938
आज़ाद प्रैस, मेरठ।

(अवाप्ति संख्या : 2046)

ਇਨਕਲਾਬ ਦਾ ਪੈਗ਼ਾਮ

ਉਥਲ ਪੁਥਲ ਦਾ ਮੈਂ ਪੈਗੰਬਰ, ਨਵਾਂ ਪੈਗ਼ਾਮ ਲਿਆਇਆ ਹਾਂ,
ਸਾਜ, ਸਮਾਜ, ਰਾਜ ਸਭ ਕੁਝ ਹੀ, ਨਵਾ ਬਨਾਵਣ ਆਇਆ ਹਾਂ।
ਉਲਟ ਦਿਆਂਗਾ ਧਰਤ ਪੁਰਾਣੀ, ਸਾਜਾਂਗਾਂ ਆਕਾਸ਼ ਨਵਾਂ,
ਪ੍ਰਲੈ ਕਾਲ ਦੀ ਗੋਦੀ ਵਿੱਚੋਂ, ਲਭਿਆ ਮੈਂ ਪਰਕਾਸ਼ ਨਵਾਂ।
ਕੋਈ ਹਿਮਾਲਾ, ਕੋਈ ਸਮੁੰਦਰ, ਮੈਨੂੰ ਨਾ ਅਟਕਾਵੇਗਾ,
ਜੋ ਵੀ ਕਦਮ ਉਠੇਗਾ ਮੇਰਾ, ਪਲਟਾ ਨਵਾਂ ਲਿਆਵੇਗਾ।
ਨਵੀਂ ਸਭਯਤਾ ਨਵੀਂ ਬਣਤ ਵਿਚ, ਮੈਂ ਹੀ ਤਾਂ ਪ੍ਰਗਟਾਂਦਾ ਹਾਂ,
ਨਵੀਆਂ ਰੀਝਾਂ ਜਾਗ ਪੈਂਦੀਆਂ, ਪੈਰ ਜਦੋਂ ਮੈਂ ਚਾਂਦਾ ਹਾਂ।
ਕਾਂਬਾ ਛਿੜੇ ਪੁਰਾਤਨਤਾ ਨੂੰ, ਮੇਰੀ ਜਦ ਲਲਕਾਰ ਉਠੇ,
ਸਹਿੰਮੇ ਫੇਰ ਮ੍ਰਿਗਾਵਲਿ ਕਿਉਂ ਨਾ, ਸਿੰਘ ਜਦੋਂ ਭਬਕਾਰ ਉਠੇ।
ਤੇਗ਼ ਮਿਰੀ ਵਿਚ ਸਿਮਟ ਬਿਜਲੀਆਂ, ਜੋਸ਼ ਨਾਲ ਥੱਰ੍ਹਾ ਰਹੀਆਂ,
ਤਾਹੀਏਂ ਮੇਰਾ ਨਾਮ ਸੁਣਦਿਆਂ, ਸ਼ਾਹੀਆਂ ਨੇ ਲਰਜ਼ਾ ਰਹੀਆਂ।
ਵਿਥਾਂ, ਵਿਤਕਰੇ, ਵਲਗਣਾਂ ਸੱਭੇ, ਮੈਂ ਪਲ ਅੰਦਰ ਮੇਟ ਦਿਆਂ,
ਪੂੰਜੀਦਾਰੀ ਦੀ ਚੌਪਟ ਨੂੰ, ਹੁਝਕਾ ਮਾਰ ਸਮੇਟ ਦਿਆਂ।
ਤਾਂਡਵ-ਨਿਰਤ ਨੱਚਕੇ ਮੈਂ ਹੀ, ਤਖਤ ਬਖਤ ਉਲਟਾਂਦਾ ਹਾਂ,
ਚਿੜੀਆਂ ਤੋਂ, ਘੁਗੀਆਂ ਤੋਂ, ਸ਼ਿਕਰੇ, ਲਗੜ, ਬਾਜ਼ ਉੜਵਾਂਦਾ ਹਾਂ।
ਉਡਦਾ ਹਾਂ ਵਧ ਤੇਜ਼ ਪੌਣ ਤੋਂ, ਜੁਗ-ਗਰਦੀ ਦਾ ਚੱਕਰ ਲੈ,
ਨਵੇਂ ਹੁਸਨ ਅੰਗੜਾਈਆਂ ਲੈਂਦੇ, ਉਦੈ ਅਸਤ ਹੱਸੇ ਪਰਲੈ।
ਗੁੜ੍ਹਤੀ ਲਈ ਮਗ਼ਰੂਹੀ ਦੀ ਮੈਂ, ਤੇਗ਼ ਜਦੋਂ ਲਿਸ਼ਕਾਂਦਾ ਹਾਂ,
ਘੋਰ ਤਬਾਹੀ ਦੀ ਕੁਖ ਵਿੱਚੋਂ, ਖੁਸ਼ਹਾਲੀ ਪ੍ਰਗਟਾਂਦਾ ਹਾਂ।
ਘੂਰ ਮਿਰੀ ਕਿਆਮਤ ਦੀ ਸੂਚਕ, ਸੈਨ ਮਿਰੀ ਹਲ-ਚਲ ਲਿਆ ਦੇ,
ਚੀਖ ਮਿਰੀ ਤੂਫਾਨ ਅੰਦਰੋਂ, ਨਵਾਂ ਕੋਈ ਪਰਤੌ ਪਾ ਦੇ।

ਮੈਂ 'ਆਜ਼ਾਦ' ਬਲੀ ਉਹ ਜਿਸਨੇ ਸਾਰਾ ਹੀ ਬ੍ਰਹਿਮੰਡ ਬਦਲਾਂ,
ਨਵੀ ਸਾਜਣਾਂ ਸਾਜ ਜਗਤ ਦੀ, ਨਵੇਂ ਨਿਯਮ ਦੇਣੇ ਵਰਤਾ।

— ਅਵਤਾਰ ਸਿੰਘ 'ਆਜ਼ਾਦ'
(अवतार सिंह "आज़ाद")

"ਕਿਰਤੀ ਲਹਿਰ" ਹਫਤਾਵਾਰ ਅਖਬਾਰ
ਸੰਪਾਦਕ : ਹਰਮਿੰਦਰ ਸਿੰਘ (ਅਮ੍ਰੀਕਨ)।
ਜਿਲਦ ਨੰ. ੧, ਅੰਕ : ੩੮,
੬ ਨਵੰਬਰ ੧੯੩੮
ਆਜ਼ਾਦ ਪ੍ਰੈਸ, ਮੇਰਠ।

"किरती लहर" साप्ताहिक अखबार
संपादक : हरमिंदर सिंह (अमरीकन)
जिल्द नं. 1, अंक : 38,
6 नवम्बर 1938
आज़ाद प्रैस, मेरठ।

(अवाप्ति संख्या : 2029)

ਪੁਟ ਦੇਣੀ ਜੜ ਅਸਾਂ ਸ਼ਾਹੀ ਪੂੰਜੀਦਾਰੀ ਦੀ

ਬਸ-ਬਸ, ਪੂੰਜੀਦਾਰਾ ਤੇਰੀ ਸਾਡੀ ਬੱਸ ਹੋਈ,
ਛੱਟ ਇਹ ਗੁਲਾਮੀ ਵਾਲੀ ਹੋਰ ਨੀ ਸਹਾਰੀ ਦੀ।
ਮੁਛ ਮੁਛ ਪੇਟ ਤੂੰ ਬਥੇਰੇ ਸਾਡੇ ਖਾ ਗਿਆ ਏਂ,
ਖੁਲ੍ਹ ਗਈ ਕਲੀ ਤੇਰੀ ਧੋਖੇ ਵਾਲੀ ਯਾਰੀ ਦੀ।
ਕਿਰਤੀ-ਕਿਸਾਨ ਨੌਜਵਾਨ ਕੱਠੇ ਹੋ ਗਏ ਨੇ,
ਚੱਲਣੀ ਨ ਤੇਰੀ ਹੁਣ ਚਾਲ ਹੈ ਮਕਾਰੀ ਦੀ।
ਦਾਤੀ ਤੇ ਹਥੌੜੇ ਵਾਲਾ ਲਾਲਝੰਡਾ ਹੱਥ ਲੈ ਕੇ,
ਲੱਭ ਲਈ ਨਾੜ ਅਸਾਂ ਭੁੱਖ ਦੀ ਬਿਮਾਰੀ ਦੀ।

ਸਦੀਆਂ ਤੋਂ ਕਿਰਤੀ-ਕਿਸਾਨ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਹੇਠਾਂ ਰੱਖੇ,
ਮਿੱਤ ਦੇਣੀ ਆਊ ਹੁਣ ਉਹਨਾਂ ਨੂੰ ਭੀ ਵਾਰੀ ਦੀ।
ਯਾਦ ਫੇਰ ਆਊ ਕਿਵੇਂ ਲੁੱਟ-ਲੁੱਟ ਖਾਈਦਾ ਏ,
ਪੱਟੀ ਜਦੋਂ ਅੱਖੀਆਂ ਤੋਂ ਲੱਥਗੀ ਖੁਮਾਰੀ ਦੀ।
ਕੱਲੇ ਦੀ ਨਹੀਂ, ਤੇਰੇ ਨਾਲ ਤੇਰੇ ਜਹੀਓ ਗਤ ਹੋਊ,
ਤੇਰੇ ਸਾਥੀ, ਮੁੱਲਾਂ, ਭਾਈ, ਪਾਦਰੀ, ਪੁਜਾਰੀ ਦੀ।
ਨਰਕਾਂ ਤੇ ਸੁਰਗਾਂ ਦੇ ਸ਼ਜਰੇ ਬਣੌਣ ਵਾਲੇ,
ਭੰਨ ਦੇਣੀ ਕਲਮ ਅਸਾਂ ਏਸ ਪਟਵਾਰੀ ਦੀ।

ਫਿਰਕਾ-ਪਰਸਤੀ ਦੇ ਕੱਖ-ਕਾਨੇ ਉਡ ਜਾਣੇ,
ਘਿੱਸ ਜਦੋਂ ਵੱਜੀ "ਇਨਕਲਾਬ" ਦੀ ਬੁਹਾਰੀ ਦੀ।
ਗੱਲ ਕਾਹਦੀ ਗਲਨ ਨਾ ਤੇਰੀ ਹੁਣੀ ਦਾਲ ਦੇਣੀ,
ਬੰਦ ਕਰ ਦੇਣੀ ਏ ਦੁਕਾਨ ਹੀ ਪਸਾਰੀ ਦੀ।
"ਪਾੜੋ ਰਾਜ ਕਰੋ" ਵਾਲੀ ਪਾਲਿਸੀ ਨ ਰਹਿਣ ਦੇਣੀ,
ਮੋੜ ਦੇਣੀ ਧਾਰ ਸ਼ਾਹੀ ਬਰਛੀ ਦੋ ਧਾਰੀ ਦੀ।
ਹਵਾ ਹੁਣ ਚੱਲੂ "ਸਾਂਝੀਵਾਲਤਾ" ਦੀ ਜੱਗ ਸਾਰੇ,
ਇਕੋ ਜੇਹੀ ਕਰੂ ਕੰਧ ਕੋਠੇ ਤੇ ਅਟਾਰੀ ਦੀ।

ਹਾਕਮ-ਮਹਿਕੂਮੀ ਵਾਲਾ, ਝੇੜਾ ਹੀ ਨਬੇੜ ਦੇਣਾ,
ਕਰ ਦੇਣੀ ਧੌਣ ਨੀਵੀਂ ਸੜੀ ਸਰਦਾਰੀ ਦੀ।

ਅੱਖੀਂ ਘੱਟਾ ਪਾ ਕੇ ਨਿੱਤ ਲੁੱਟੇ ਜੋ ਗਰੀਬਾਂ ਤਾਈਂ,
ਟੋਟੇ-ਟੋਟੇ ਕਰ ਦੇਣੀ "ਢੀਚਕ", ਮਦਾਰੀ ਦੀ।
"ਹੱਥੀਂ ਜੋ ਕਮਾਵੇ, ਉਹੋ ਖਾਵੇ", ਵੇਲ੍ਹਾ ਜੇਲ੍ਹ ਜਾਵੇ,
ਇਹੋ ਹੀ ਅਵਾਜ਼ ਹੋਊ ਬੱਚੇ-ਬੁੱਢੇ-ਨਾਰੀ ਦੀ।
ਝੁੱਲਸੀ, ਨਿਸ਼ਾਨ ਸਾਰੇ ਜੱਗ ਉਤੇ ਕਿਰਤੀ ਦਾ,
ਪੁਟ ਦੇਣੀ ਜੜ ਅਸਾਂ ਸ਼ਾਹੀ ਪੂੰਜੀਦਾਰੀ ਦੀ।

— ਡਾ: ਅਵਤਾਰ ਸਿੰਘ "ਦਲੇਰ"
(डा. अवतार सिंह "दलेर")

"ਕਿਰਤੀ ਲਹਿਰ" ਹਫਤਾਵਾਰ ਅਖਬਾਰ
ਸੰਪਾਦਕ : ਹਰਮਿੰਦਰ ਸਿੰਘ (ਅਮ੍ਰੀਕਨ)।
ਜਿਲਦ ਨੰ. ੧, ਅੰਕ : ੩੯,
੧੩ ਨਵੰਬਰ ੧੯੩੮
ਆਜ਼ਾਦ ਪ੍ਰੈਸ, ਮੇਰਠ।

"किरती लहर" साप्ताहिक अखबार
संपादक : हरमिंदर सिंह (अमरीकन)
जिल्द नं. 1, अंक : 39,
13 नवम्बर 1938
आज़ाद प्रैस, मेरठ।

(अवाप्ति संख्या : 2037)

ਵਤਨ ਅਜ਼ਾਦ ਕਰੌਣਾ ਏ

ਉਠ ਕਿਸਾਨਾ! ਪਕੜ ਪਗਾਣੀ, ਸੁਤਿਆ ਟੁੰਬ ਜਗੌਣਾ ਏ।
ਜੁਗਾਂ-ਜੁਗਾਂ ਦੇ ਮੁਰਦ ਗੁਲਾਮਾਂ, ਕਿਰਤੀ-ਜਾਮ ਪਿਲੌਣਾ ਏ।
ਸਾਥੋਂ ਜੁਗ ਦੇ ਅੰਨ-ਦਾਤਿਆ! ਝੁੱਗਾ ਨਹੀਂ ਲੁਟੌਣਾ ਏ।
ਅੱਠੇ ਪਹਿਰ ਬਲੇਦਾਂ ਵਾਂਗੂ, ਕਾਹਨੂੰ ਚੰਮ ਕੁਟੌਣਾ ਏ।
ਪੜੀ-ਪੁਲਸ ਪਟਵਾਰੀ ਦਾ ਨਹੀਂ, ਦਿਲ ਤੇ ਖੌਫ ਧਰੌਣਾ ਏ।
ਰਲ ਕੇ ਵਿੱਚ ਕਿਸਾਨ ਕਮੇਟੀ, ਵਤਨ ਅਜ਼ਾਦ ਕਰੌਣਾ ਏ।੧।
ਦਿਨ ਤੇ ਰਾਤ ਕਮਾਂਦੇ ਮਰਦੇ, ਬਚਦੀ ਰੋਜ ਦੁਆਨੀ ਨਾਂ।
ਟੱਬਰ ਭਾਵੇਂ ਭੁੱਖਾ ਮਰ ਜਏ, ਟਲੇ ਲਗਾਨ ਸ਼ਤਾਨੀ ਨਾਂ।
ਖ਼ਾਲਸ ਨਫਿਓਂ ਚੌਹੁਣ ਚੁਥਾਈ, ਏਥੇ ਬਚੇ ਪੁਆਨੀ ਨਾਂ।
ਪੇਟ ਸਰਾਂ ਦਾ ਭਰਣ ਲਈ ਹੁਣ, ਗਾਲੀ ਜਾਇ ਜੁਆਨੀ ਨਾਂ।
ਹਾਲਾ ਦੇਣਾ ਟੈਕਸ ਦੇ ਭਾ, ਵਾਧੂ ਬੋਝ ਹਟੌਣਾ ਏ।
ਰਲ ਕੇ ਵਿੱਚ ਕਿਸਾਨ ਕਮੇਟੀ, ਵਤਨ ਅਜ਼ਾਦ ਕਰੌਣਾ ਏ।੨।
ਦਿੰਦੇ ਪੀੜ੍ਹੀਆਂ ਮੁਕ ਗਈਆਂ, ਪਰ ਕਰਜ਼ ਸ਼ਾਹਾਂ ਦੇ ਮੁਕਦੇ ਨਾ।
ਵਧਣ ਸੂਦ ਦਰ ਸੂਦ ਸਦਾਈ, ਇਕ ਪਲ ਖਾਤਰ ਰੁਕਦੇ ਨਾ।
ਪੱਥਰ ਚਿੱਤ ਕਸਾਈਓਂ ਵਧ ਕੇ, ਰੱਤ ਚੂਸਣੋਂ ਉਕਦੇ ਨਾ।
ਨਾਰ ਨਵੇਲੀ, ਬਾਲ ਮਸੂਮਾਂ, ਹੰਝੂ ਅਖੀਓਂ ਸੁਕਦੇ ਨਾ।
ਹੋਈਏ ਤਦੇ ਸੁਖਾਲੇ ਸਾਹੀਂ, ਕਰਜਾ ਕੁੱਲ ਉਡੌਣਾਂ ਏ।
ਰਲ ਕੇ ਵਿੱਚ ਕਿਸਾਨ ਕਮੇਟੀ, ਵਤਨ ਅਜ਼ਾਦ ਕਰੌਣਾ ਏ।੩।
ਚਪੜਾਸੀ ਤੋਂ ਵਡੇ ਲਾਟ ਤਕ, ਸਾਰੇ ਸਾਡੇ ਬਰਦੇ ਨੇ।
ਸਿਰੋਂ ਸਾਡਿਓਂ ਤਲਬਾਂ ਪਾਕੇ, ਕੰਮ ਗੈਰਾਂ ਦੇ ਕਰਦੇ ਨੇ।
ਸਾਨੂੰ ਜੁੜੇ ਨ ਸੁੱਕੀ ਰੋਟੀ, ਖਾਣ ਪਲੱਾ ਤੇ ਜ਼ਰਦੇ ਨੇ।
ਪਰ ਟੋਡੀ ਬਣ ਸਾਡੇ ਹੀ ਸਿਰ, ਛੱਟ ਗੁਲਾਮੀ ਧਰਦੇ ਨੇ।
ਜੀ ਆਵੇਗਾ ਓਸੇ ਨੂੰ ਹੁਣ, ਅਫਸਰ ਅਸੀਂ ਬਣੌਣਾ ਏ।
ਰਲ ਕੇ ਵਿੱਚ ਕਿਸਾਨ ਕਮੇਟੀ, ਵਤਨ ਅਜ਼ਾਦ ਕਰੌਣਾ ਏ।੪।

ਰੋਟੀ, ਜ਼ਿਮੀ, ਅਜ਼ਾਦੀ ਖਾਤਰ, ਸਾਂਝਾ ਜੰਗ ਮਚਾਵਾਂਗੇ।
ਪੂੰਜੀਦਾਰੀ ਦੇ ਸਭ ਪਿੱਠੂ, ਫੜ ਕੇ ਪਰ੍ਹਾਂ ਹਟਾਵਾਂਗੇ।
ਰਸਮ-ਰਵਾਜ, ਸਮਾਜ, ਜੰਜੀਰਾਂ, ਗਲ ਚੋਂ ਤੋੜ ਵਗਾਹਵਾਂਗੇ।
ਕਿਰਤੀ ਰਾਜ ਬਣਾ ਕੇ ਜਗ ਤੇ, ਸਾਰਾ ਜੁਗ ਪਲਟਾਵਾਂਗੇ।
ਊਚ ਨੀਚ ਦੀ ਕੀਚ ਉਡਾ ਕੇ, ਝੰਡਾ ਲਾਲ ਝੁਲੌਣਾ ਏ।
ਰਲ ਕੇ ਵਿੱਚ ਕਿਸਾਨ ਕਮੇਟੀ, ਵਤਨ ਅਜ਼ਾਦ ਕਰੌਣਾ ਏ।੫।

— ਕਾਮਰੇਡ ਕਰਤਾਰ ਸਿੰਘ "ਚੰਗਿਆੜਾ"
(कामरेड करतार सिंह "चंगिआड़ा")

"ਕਿਰਤੀ ਲਹਿਰ" ਹਫਤਾਵਾਰ ਅਖਬਾਰ
ਸੰਪਾਦਕ : ਹਰਮਿੰਦਰ ਸਿੰਘ (ਅਮ੍ਰੀਕਨ)।
ਜਿਲਦ ਨੰ. ੧, ਅੰਕ : ੪੨,
੪ ਦਸੰਬਰ ੧੯੩੮
ਆਜ਼ਾਦ ਪ੍ਰੈਸ, ਮੇਰਠ।

"किरती लहर" साप्ताहिक अखबार
संपादक : हरमिंदर सिंह (अमरीकन)
जिल्द नं. 1, अंक : 42,
4 दिसम्बर 1938
आज़ाद प्रैस, मेरठ।

(अवाप्ति संख्या : 2035)

ਜਾਨ ਦੀ ਬਾਜ਼ੀ

ਅਸਾਂ ਜਾਨ ਦੀ ਬਾਜ਼ੀ ਲਾ ਲਈ ਏ, ਦਬਿਆਂ ਨੂੰ ਉੱਪਰ ਜਾਣ ਲਈ,
ਬੰਦੀ ਦਾ ਤੌਕ ਤੁੜਾਣ ਲਈ, ਆਜ਼ਾਦੀ ਹੀਰਾ ਪਾਣ ਲਈ।
ਅਸਾਂ ਜਾਨ..........

ਅਸੀਂ ਸੱਚੇ ਭਾਰਤ ਵਾਸੀ ਹਾਂ ਟਿੱਚ ਸਮਝਦੇ ਸੂਲੀ ਫਾਸੀ ਹਾਂ,
ਮਜ਼ਲੂਮਾਂ ਰਾਜ ਦਿਵਾਣ ਲਈ, ਬਾਗੀ ਸਿਰ ਤਾਜ ਟਿਕਾਣ ਲਈ।
ਅਸਾਂ ਜਾਨ..........

ਹਾਂ! ਦਬਿਆਂ ਸਦੀਆਂ ਮੁਕ ਗਈਆਂ, ਸੀਨੇ ਵਿਚ ਸਧਰਾਂ ਸੁਕ ਗਈਆਂ,
ਗੈਰਾਂ ਨੇ ਗੁਰਜਾਂ ਚੁਕ ਲਈਆਂ, ਮੋਯਾਂ ਨੂੰ ਹੋਰ ਮੁਕਾਣ ਲਈ।
ਅਸਾਂ ਜਾਨ..........

ਇਹ ਚਿਰੋਂ ਲੁਟੇਰੇ ਸੀਸ ਚੜ੍ਹੇ, ਸਾਡੇ ਭਰੇ ਖ਼ਜ਼ਾਨੇ ਲੁੱਟ ਖੜੇ,
ਫੜ ਪੰਛੀ ਪਿੰਜਰੇ ਵਿਚ ਕੜੇ, ਮਾਂ ਰੁਲਦੀ ਹੋਰ ਰੁਲਾਣ ਲਈ।
ਅਸਾਂ ਜਾਨ..........

ਉਹ ਜ਼ਾਲਮ ਘੂਰਾਂ ਵਟਦਾ ਏ, ਝੱਟ ਰੌਂਦੇ, ਲੁਛਦੇ, ਕਰਦਾ ਏ,
ਪਾ ਦੀਨਾਂ ਛੱਜ 'ਚ ਛਟਦਾ ਏ, ਸਾਡੀ ਖਾਕ 'ਚ ਅਣਖ ਮਿਲਾਣ ਲਈ।
ਅਸਾਂ ਜਾਨ..........

ਜੁਆਨਾਂ! ਕਿਉਂ ਅਣਖ ਗਵਾਈ ਏ, ਸ਼ਰਮਾਂ ਦੀ ਲੋਈ ਲਾਹੀ ਏ,
ਸਿਰ ਪੰਡ ਗੁਲਾਮੀ ਚਾਈ ਏ, ਅਜ਼ਮਤ ਨੂੰ ਵੱਟਾ ਲਾਣ ਲਈ।
ਅਸਾਂ ਜਾਨ..........

ਕਿਉਂ ਜੋਸ਼ ਉਬਾਲੇ ਖਾਂਦਾ ਨਹੀਂ, ਲਹੂ ਜੁੱਸੇ ਨੂੰ ਗਰਮਾਂਦਾ ਨਹੀਂ,
ਦਿਲ ਮਰਣ ਲਈ ਕਿਉਂ ਚਾਂਧਾ ਨਹੀਂ, ਕਾਲਖ਼ ਦਾ ਦਾਗ ਮਿਟਾਣ ਲਈ।
ਅਸਾਂ ਜਾਨ..........

ਆਉ ਕਾਇਰਪੁਣਾ ਵਿਸਾਰੋ ਹੁਣ, ਕੁਝ ਉੱਦਮ ਦਿਲ ਵਿਚ ਧਾਰੋ ਹੁਣ,
ਸਭ ਲੋਕਾਂ ਉਤਾਂਹ ਉਭਾਰੋ ਹੁਣ, ਸਚ ਸੂਰਜ ਜਿਉਂ ਚਮਕਾਣ ਲਈ।
ਅਸਾਂ ਜਾਨ..........

ਹੁਣ ਸੁਤਿਆਂ ਤਈਂ ਝੰਜੋੜ ਦਿਓ! ਸਭ ਕਸੀਆਂ ਮੁਸ਼ਕਾਂ ਤੋੜ ਦਿਓ।
ਸ਼ਾਹ-ਰਗ ਦਾ ਖ਼ੂਨ ਨਿਚੋੜ ਦਿਓ! ਦੁਨੀਆਂ ਦਾ ਚਮਨ ਖਿੜਾਣ ਲਈ।

ਅਸਾਂ ਜਾਨ..........

— ਕਾਮਰੇਡ ਮਹਿੰਦਰ ਸਿੰਘ 'ਜੋਸ਼ੀ'

(कामरेड महिंद्र सिंह 'जोशी')

"ਕਿਰਤੀ ਲਹਿਰ" ਹਫਤਾਵਾਰ ਅਖਬਾਰ
ਸੰਪਾਦਕ : ਹਰਮਿੰਦਰ ਸਿੰਘ (ਅਮ੍ਰੀਕਨ)।
ਜਿਲਦ ਨੰ. ੧, ਅੰਕ : ੪੨,
੪ ਦਸੰਬਰ ੧੯੩੮
ਆਜ਼ਾਦ ਪ੍ਰੈਸ, ਮੇਰਠ।

"किरती लहर" साप्ताहिक अखबार
संपादक : हरमिंदर सिंह (अमरीकन)
जिल्द नं. 1, अंक : 42,
4 दिसम्बर 1938
आज़ाद प्रैस, मेरठ।

(अवाप्ति संख्या : 2035)

ਸੁੱਤੇ ਜੱਟ ਨੂੰ ਹਲੂਣਾ

ਉਠ ਤੂੰ ਜੱਟਾ ਸੁਤਿਆ! ਵੇ ਕਿਓਂ ਪਿਐਂ ਲੰਬੀਆਂ ਤਾਣ।
ਤੈਨੂੰ ਸੁਤਿਆਂ ਸਦੀਆਂ ਬੀਤੀਆਂ, ਹੁਣ ਛੱਡ ਇਹ ਭੈੜੀ ਬਾਣ।
ਵੇ ਹੁਣ ਵੇਲਾ ਹੈ ਨਹੀਂ ਸੌਣ ਦਾ, ਚੱਕ ਦਾਤੀ ਅਤੇ ਵਿਦਾਣ।
ਜੜ ਵੱਡਦੇ ਪੂੰਜੀਦਾਰੀ ਦੀ, ਇਕੋ ਵਾਰੀ ਲਾਕੇ ਤਾਣ।
ਤੈਨੂੰ ਰੋਜ ਬਦੇਸ਼ੀ ਲੁਟਦੇ, ਤੂੰ ਅਜੇ ਨਾ ਲਵੇਂ ਉਸਾਣ।
ਜੱਟਾ ਵੇਹਲੜ ਧਨੀ ਲੁਟੇਰੜੇ, ਤੇਰੇ ਸਿਰਤੇ ਮੌਜ ਉਡਾਣ।
ਤੈਨੂੰ ਸੁੱਕਾ ਟੁੱਕ ਨਸੀਬ ਨਾਂ, ਗੈਰ ਦੁਧ-ਮਲਾਈਆਂ ਖਾਣ।
ਇਹ ਰਾਜੇ, ਸ਼ਾਹ, ਨੁਵਾਬ ਸਭ, ਤੈਨੂੰ ਖਾ-ਖਾ ਢਿੱਡ ਵਧਾਣ।
ਵੇ ਤੂੰ ਅਜੇ ਨਾ ਹੋਸ਼ ਸੰਭਾਲਦਾ, ਉਠ ਅਪਣਾ ਫਰਜ਼ ਪੁਛਾਣ।
ਤੂੰ ਤੇ ਪਾਲੇਂ ਸਾਰੇ ਜੱਗ ਨੂੰ, ਵੇ ਤੂੰ ਰਾਜ਼ਕ ਰੱਬ ਕਿਸਾਣ।
ਜੋ ਤੂੰ ਮਿਹਨਤ ਕਰਕੇ ਖੱਟਦਾ, ਗੈਰ ਫੌਰਨ ਲੁਟ ਲੈ ਜਾਣ।
ਵੇ ਤੈਨੂੰ ਧਨੀਆਂ ਧੋਖਾ ਦੇ ਲਿਆ, ਲਗੇ ਬੂਟੀ ਬੁਰੀ ਸੁੰਘਾਣ।
ਕਿਓਂ ਤੂੰ ਸ਼ੇਰਾ! ਅੱਖਾਂ ਮੀਟੀਆਂ, ਗਿੱਦੜ ਤਾਂਹੀਓਂ ਸ਼ੋਰ ਮਚਾਣ।
ਉਠ ਲਾਹਦੇ ਸਿਰ ਤੋਂ ਸੀਧਿਆ, ਮਾਰ ਭਬਕ ਤੇ ਨਿਤਰ ਮੈਦਾਨ।
ਫੇਰ ਗਿੱਦੜ ਲੂੰਬੜ ਲੁਕਣਗੇ, ਜਦੋਂ ਖੜ੍ਹ ਗਿਓਂ ਛਾਤੀ ਤਾਣ।
ਜਿਹੜੇ ਡੱਕਾ ਇਕ ਨਾ ਚੱਕਦੇ, ਉਹ ਤਾਂ ਅੰਡੇ-ਬਿਸਕੁਟ ਖਾਣ।
ਵੇ ਤੂੰ ਪੈਦਾ ਕਰੇਂ ਅਨਾਜ ਸਭ, ਕਿਓਂ ਭੁੱਖਾ ਮਰੇਂ ਜੁਆਣ।
ਵੇਖਾਂ ਵੇਹਲੜ ਲੇਟਣ ਮਖਮਲੀ, ਤੇਰੀ ਮੰਜੜੀ ਨੂੰ ਨਾ ਬਾਣ।
ਜੱਟਾ! ਸ਼ਾਹੂਕਾਰ ਮੱਕਾਰ ਨੇ, ਤੈਨੂੰ ਕੀਤਾ ਬਹੁਤ ਵੈਰਾਣ।
ਉਠ ਲਾਹਦੇ ਸ਼ਾਹ ਦੀ ਛੱਟ ਨੂੰ, ਛੱਡ ਸੁਸਤੀ ਬਣ ਬਲਵਾਨ।

—254/Deptt. of Archives/ND/97

ਹੁਣ ਕਹਿਦੇ ਪੂੰਜੀਦਾਰ ਨੂੰ, ਚੱਕ ਬੁਜਕਾ ਛੱਡ ਮਕਾਨ।
"ਸੱਚ" ਕਣਕ ਛਕਾਂਗੇ ਅਸੀਂ ਹੁਣ, ਤੂੰ ਤਾਂ ਡੇਰਾ ਮੱਲ ਮਸਾਣ।
ਓ ਤੈਨੂੰ ਲੁਟਦਿਆਂ ਸਦੀਆਂ ਬੀਤੀਆਂ.........

— ਸਾਥੀ ਅਰਜਣ ਸਿੰਘ 'ਸੱਚ'
(साथी अरजण सिंह "सच")

ਕਿਰਤੀ ਲਹਿਰ" ਹਫਤਾਵਾਰ ਅਖਬਾਰ
ਕ : ਹਰਮਿੰਦਰ ਸਿੰਘ (ਅਮ੍ਰੀਕਨ)।
ਜਿਲਦ ਨੰ. ੧, ਅੰਕ : ੪੪,
੧੮ ਦਸੰਬਰ ੧੯੩੮
ਆਜ਼ਾਦ ਪ੍ਰੈਸ, ਮੇਰਠ।

"किरती लहर" साप्ताहिक अखबार
संपादक : हरमिंदर सिंह (अमरीकन)
जिल्द नं. 1, अंक : 44,
18 दिसम्बर 1938
आज़ाद प्रैस, मेरठ।

(अवाप्ति संख्या : 2032)

ਮੁਜ਼ਾਹਰੇ ਦੀਆਂ ਬੋਲੀਆਂ

ਜਥੇਬੰਦੀ ਹੁਣ ਕਰ ਕਿਰਸਾਣਾ, ਕੱਠਾ ਕਰ ਲੈ ਆਟਾ ਦਾਣਾ।
ਕਰਨ ਮੁਜ਼ਾਹਰਾ ਜ਼ਿਲੇ ਚਿ ਜਾਣਾ, ਚਲਕੇ ਗਿੱਧਾ ਪਾਈਏ।।
ਕੋਠੀ ਡੀ.ਸੀ. ਦੀ। ਭੜਥੂ ਘੂਬ ਮਚਾਈਏ। ਕੋਠੀ......
ਉਠ ਕਿਸਾਣਾ ਸ਼ੇਰਾ ਮੱਲਾ! ਧੱਕੇ ਖਾ ਨਾਂ ਕੱਲਾ ਕੱਲਾ।
ਜਥੇਬੰਦ ਹੋ ਪਾ ਤਰਥੱਲਾ, ਸੱਚੀ ਕਹੋ ਕਹਾਣੀ।।
ਆਖੋ ਡੀ.ਸੀ. ਨੂੰ ਹੈ ਨੀ ਖੂਹਾਂ ਚਿ ਪਾਣੀ। ਆਖੋ.......
ਇਕ-ਮਿਕ ਹੋ ਕੇ ਚਲੋ ਕਿਸਾਣੋ! ਹਿੰਦੂ ਸਿੱਖ ਤੇ ਮੁਸਲਮਾਣੋ।
ਡੀ.ਸੀ. ਨੂੰ ਕਹੋ ਬੋਲ ਜ਼ਬਾਣੋਂ, ਪਰਜਾ ਦੇਖ ਦੁਖਿਆਰੀ।।
ਮਾਮਲਾ ਮਾਫ ਕਰੋ, ਫਸਲ ਸੋਕੜੇ ਮਾਰੀ। ਮਾਮਲਾ......
ਪੂੰਜੀਦਾਰੀ ਕਰੇ ਖੁਆਰੀ, ਜ਼ੁਲਮਾਂ ਦੀ ਹੱਥ ਫੜੀ ਬੁਹਾਰੀ।
ਭੁੱਖ ਪੇਟ ਤੇ ਚੱਲੇ ਆਰੀ, ਫੜਕੇ ਵੇਖ ਲੈ ਨਾੜੀ।।
ਪਰਜਾ ਰੋਂਦੀ ਏ, ਜ਼ੁਲਮਾਂ ਨਾਲ ਲਤਾੜੀ। ਪਰਜਾ......
ਜਿੱਥੇ ਜ਼ੁਲਮ ਵਧੇਰੇ ਹੋਵੇ, ਸੂਰਾ ਛਾਤੀ ਡਾਹ ਖਲੋਵੇ।
ਕਾਇਰ ਗੀਦੀ ਜਾਨ ਲੁਕੋਵੇ, ਰਿੱਕ ਪਿੱਛੋਂ ਦੀ ਚੋਵੇ।।
ਵਿੱਚ ਮਦਾਨਾਂ ਦੇ, ਫਤੇ ਸੱਚ ਦੀ ਹੋਵੇ। ਵਿੱਚ......
ਸੁਣੀ ਜੱਟ ਦੀ ਰਾਮ ਕਹਾਨੀ, ਬਾਰਿਸ਼ ਹੋਈ ਨਾ ਅਸਮਾਨੀ।
ਵਾਇਦੇ ਝੂਠੇ ਕਰੇ ਜ਼ਬਾਨੀ, ਤਲ ਤੇ ਵਿੱਚ ਕੜਾਹੀ,
ਸਾਡਾ ਸਬਰ ਪਵੇ।. ਹੈ! ਹੈ! ਸਕੰਦਰ ਸ਼ਾਹੀ! ਸਾਡਾ......
ਅਸੀਂ ਜੇਲ੍ਹ ਨੂੰ ਖੇਲ ਬਨਾਣਾ, ਸਹੁਰੇ ਘਰ ਜਿਉਂ ਡੇਰਾ ਲਾਣਾ।
ਪੈਰ ਪਿਛਾਹਾਂ ਨਹੀਂ ਭੁਆਣਾ। ਚਾਲੀ ਚਾਰ ਤੁੜਾਈਏ,
ਮੌਤੋਂ ਨਾ ਡਰੀਏ। ਹੱਕ ਤੇ ਸੀਸ ਕਟਾਈਏ, ਮੌਤੋ.......

— ਕਾਮਰੇਡ ਲਹੌਰੀ ਰਾਮ 'ਪਰਦੇਸੀ'
(कामरेड लाहौरी राम 'परदेसी'')

"ਕਿਰਤੀ ਲਹਿਰ" ਹਫਤਾਵਾਰ ਅਖਬਾਰ
ਸੰਪਾਦਕ : ਹਰਮਿੰਦਰ ਸਿੰਘ (ਅਮ੍ਰੀਕਨ)।
ਜਿਲਦ ਨੰ. ੧, ਅੰਕ : ੪੪,
੧੮ ਦਸੰਬਰ ੧੯੩੮
ਆਜ਼ਾਦ ਪ੍ਰੈਸ, ਮੇਰਠ।

"किरती लहर" साप्ताहिक अखबार
संपादक : हरमिंदर सिंह (अमरीकन)
जिल्द नं. 1, अंक : 44,
18 दिसम्बर 1938
आजाद प्रैस, मेरठ।

(अवाप्ति संख्या : 2032)

ਜਿਸ ਜੀਵਨ ਵਿਚ ਦੁਨੀਆਂ ਦੀ ਅਜ਼ਾਦੀ ਦੀ ਮਹਿਕਾਰ ਨਹੀਂ

ਜਿਸ ਜੀਵਨ ਨੇ ਦੁਖੀਆਂ ਕੋਲੋਂ, ਕਨ ਕਤਰਾ ਕੇ ਲੰਘ ਜਾਣਾ,
ਜਿਸ ਜੀਵਨ ਦਾ ਦੁਖੀ, ਯਤੀਮਾਂ ਭੁੱਖਿਆਂ ਨਾਲ ਪਿਆਰ ਨਹੀਂ।
ਜਿਸ ਜੀਵਨ ਨੇ ਅਚਕਨ ਲਾਹਕੇ, ਗਲ ਵਿਚ ਖਫ਼ਨੀ ਪਾਈ ਨਹੀਂ,
ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਗਰਮਾਈ ਦੇ ਕੇ, ਆਪੂੰ ਕੱਟੇ ਠਾਰ ਨਹੀਂ।
ਜਿਸ ਜੀਵਨ ਦੇ ਮਾਰੂ-ਥਲ ਵਿਚ, ਕਦੇ ਡਾਚੀਆਂ ਨੱਸੀਆਂ ਨਾ,
ਜਿਸ ਜੀਵਨ ਵਿਚ ਆਜ਼ਾਦੀ ਦੇ, ਪੁੰਨੂੰ ਦੀ ਕੋਈ ਭਾਲ ਨਹੀਂ।
ਜਿਸ ਜੀਵਨ ਵਿਚ ਠੰਡੇ, ਠੇਕਰ, ਲਾਠੀ-ਚਾਰਜ ਹੋਇਆ ਨਾਂ,
ਜਿਸ ਜੀਵਨ ਵਿਚ ਗੋਲੀ, ਤੋਪਾਂ, ਬੰਬਾਂ ਦੀ ਬੂਛਾੜ ਨਹੀਂ।
ਜਿਸ ਜੀਵਨ ਵਿਚ ਦੇਸ਼-ਦਰਦ ਦੇ, ਉਠੇ ਕਦੀ ਉਬਾਲੇ ਨਾਂ,
ਜਿਸ ਜੀਵਨ ਨੇ ਐਸਿ-ਗੁਲਾਮੀ, ਉਤੇ ਮਾਰੀ ਧਾਰ ਨਹੀਂ।
ਉਸ ਜੀਵਨ ਦਾ ਟੁਰਨਾ-ਫਿਰਨਾ, ਬੋਝ ਜਿਹਾ ਇਸ ਧਰਤੀ ਤੇ,
ਜਿਸ ਜੀਵਨ ਨੇ ਜੇਲ੍ਹ-ਯਾਤਰਾ ਸਮਝੀ ਐਸ਼-ਬਹਾਰ ਨਹੀਂ।
ਜੇੜਾ ਜੀਵਨ ਜੀਵਨ ਖਾਤਰ, ਮਰਕੇ ਜੀਵਨ ਬਣਦਾ ਨਹੀਂ,
ਜੇੜਾ ਜੀਵਨ ਜਾਮ-ਸ਼ਹਾਦਤ, ਪੀਂਦਾ ਨਾਲ ਪਿਆਰ ਨਹੀਂ।
ਜਿਸ ਜੀਵਨ ਦਾ ਸਿਦਕ-ਹੌਸਲਾ ਇਨਕਲਾਬ ਨਾਂ ਪੈਦਾ ਕਰੇ,
ਜਿਸ ਜੀਵਨ ਦੇ ਠੰਢੇ ਹੋਕੇ ਆਤਸ਼-ਫਸ਼ਾਂ ਪਹਾੜ ਨਹੀਂ।
ਜਿਸ ਜੀਵਨ ਵਿਚ ਦੁਨੀਆਂ ਦੀ, ਅਜ਼ਾਦੀ ਦੀ ਮਹਿਕਾਰ ਨਹੀਂ,
ਉਸ ਜੀਵਨ ਵਿਚ ਪਤ-ਝੜ ਰਹਿੰਦੀ, ਔਂਦੀ ਕਦੇ ਬਹਾਰ ਨਹੀਂ।
ਉਹ ਜੀਵਨ - ਇਸ ਦੁਨੀਆਂ ਅੰਦਰ, ਜੀਵਨ ਦਾ ਹੱਕਦਾਰ ਨਹੀਂ,
ਉਸ ਜੀਵਨ ਤੋਂ ਮੁਰਦਾ ਚੰਗਾ, ਸਾਨੂੰ ਉਹ ਦਰਕਾਰ ਨਹੀਂ।

— ਕਾਮਰੇਡ ਸਾਧੂ ਸਿੰਘ 'ਦਰਦ'
(कामरेड साधु सिंह 'दरद')

"ਕਿਰਤੀ ਲਹਿਰ" ਹਫ਼ਤਾਵਾਰ ਅਖਬਾਰ
ਸੰਪਾਦਕ : ਹਰਮਿੰਦਰ ਸਿੰਘ (ਅਮ੍ਰੀਕਨ)।
ਜਿਲਦ ਨੰ. ੨, ਅੰਕ : ੧, ੧ ਜਨਵਰੀ ੧੯੩੯
ਆਜ਼ਾਦ ਪ੍ਰੈਸ, ਮੇਰਠ।

"किरती लहर" साप्ताहिक अखबार
संपादक : हरमिंदर सिंह (अमरीकन)
जिल्द नं. 2, अंक : 1, 1 जनवरी 1939
आज़ाद प्रैस, मेरठ।

(अप्राप्ति संख्या : 2059)

ਸਾਂਝੀ ਕੋਇਲ ਕੂਕ ਸੁਣਾ।
ਗੀਤ ਅਜ਼ਾਦੀ ਘਰ-ਘਰ ਗਾ।।

ਉਡ ਮੇਰਠ ਤੋਂ ਦਿੱਲੀ ਜਾ, ਖੂਹ ਕਾਲਿਆਂ ਦੇ ਦਰਸ਼ਨ ਪਾ।
ਗੁਰ ਕੀ ਨਗਰੀ ਜਲ੍ਹਿਆਂ ਵਾਲੇ, ਬਹਿਕੇ ਭੰਨ ਜਿਗਰ ਦੇ ਛਾਲੇ।
ਲਾਵੀਂ ਕੁਲ ਜੇਲ੍ਹਾਂ ਤੇ ਚੱਕਰ, ਵੇਖੀਂ ਗੁਰਮੁਖ ਬੀਰ ਸੁਤੰਤਰ।
ਕੋਠੀ-ਬੰਦ ਅਜ਼ਾਦੀ-ਲਾੜੇ, ਭੁੱਖੇ ਮਰੇ ਜਾਂ ਸੂਲੀ ਚਾੜ੍ਹੇ।
ਸਭ ਦੇ ਨਾਂ ਤੇ ਕੂਕ ਲੱਗਾ। ਗੀਤ ਅਜ਼ਾਦੀ......
ਕੂਕੀਂ ਸਤਲੁਜ ਦੇ ਬਹਿ ਪੁਲ ਤੇ, ਹੰਝੂ ਕੇਰੀਂ ਯਾਦ ਅਮੁਲ ਤੇ।
ਜੈਤੋ ਹੁੰਦੀ, ਜਾਈਂ ਕੁਠਾਲੇ, ਫਿਰੀਂ ਲੁਹਾਰੂ ਤੇ ਪਟਿਆਲੇ।
ਹੱਕਾਂ ਬੱਦਲੇ ਜ਼ੁਲਮ ਪਹਾੜ, ਰਾਖੇ ਖੇਤੀ ਰਹੇ ਉਜਾੜ।
ਇਕ ਦਰ ਪ੍ਰਜਾ ਟੁਕੜਿਓਂ ਆਤੁਰ, ਲੱਖਾਂ ਉਡਣ ਐਸ਼ ਦੀ ਖਾਤਰ।
ਉਠੋ ਗੁਲਾਮੋ! ਸ਼ੋਰ ਮਚੱਾ! ਗੀਤ ਅਜ਼ਾਦੀ.......
ਚੌਰਾ ਚੌਰੀ, ਬਜ ਬਜ ਘਾਟ, ਵਿੱਚ ਪਸ਼ੌਰ ਪਵੇ ਕੁਰਲਾਟ।
ਪੂੰਜੀਦਾਰੀ ਕਰੇ ਖੁਆਰੀ, ਖਲਕਤ ਪੈਰਾਂ ਹੇਠ ਲਤਾੜੀ।
ਅੰਨ੍ਹੀ ਪੀਹੇ, ਕੁੱਤੀ ਚੱਟੇ, ਵੇਲ੍ਹੜ ਬਣ ਗਏ ਹੱਟੇ-ਕੱਟੇ।
ਹਿੰਦੂ, ਮੁਸਲਮ, ਸਿੱਖ ਈਸਾਈ, ਸਾਰੇ ਕਿਰਤੀ ਭਾਈ-ਭਾਈ।
ਦੱਸ ਏਕਤਾ, ਹੱਥ ਮਿਲੱਾ, ਗੀਤ ਅਜ਼ਾਦੀ......
ਕੋਇਲ ਕੂਕ ਹਿੰਦ ਦੇ ਉੱਤੇ, 'ਕਿਰਤੀ ਜਾਗ ਕਿਸਾਣਾ ਸੁੱਤੇ!'
ਤੇਰੇ ਇਕ ਪਸਲੇਟੇ ਅੱਗੇ, ਗੈਰਾਂ ਜਾਂਦਿਆਂ ਪਲ ਨਾ ਲੱਗੇ।
ਤੇਰੇ ਹੀ ਸਿਰ ਸ਼ਾਹਿਨਸ਼ਾਹੀ, ਸਿਰ ਫਰੇਂ ਤਾਂ ਹੋਇ ਤਬਾਹੀ।
ਏਕੇ ਦੀ ਜੇ ਵਗੇ ਹਵਾਇ, ਸ਼ਾਹੀ ਕੱਖਾਂ ਵਾਂਗੂ ਉਡਾਇ।
ਮੱਲਾ! ਡੌਲੇ ਹੁਣ ਫੜਕੱਾ, ਗੀਤ ਅਜ਼ਾਦੀ......
ਚਲ ਕੋਇਲ ਤੂੰ ਚੀਨ ਜਪਾਨ, ਸਾਗਰ ਲੰਘ ਲਗਾ ਕੇ ਤਾਣ।
ਜਰਮਨ, ਇਟਲੀ ਇੰਗਲਿਸਤਾਨ, ਪੁੱਜ 'ਮਰੀਕਾ ਤੇ ਫਿਲਪਾਨ।

12—254/Deptt. of Archives/ND/97

ਜਿੱਥੇ ਕੋਈ ਸਾਂਝ-ਸਿਪਾਹੀ, 'ਜੰਗ ਅਜ਼ਾਦੀ' ਫੇਰ ਦੁਹਾਈ।
ਇਕ ਮੁੱਠ ਹੋ ਸਭ ਸਾਂਝੀਵਾਲ, ਪੱਕੜ-ਸ਼ਾਹੀ ਨੂੰ ਦਿਓ ਗਾਲ।
ਵਾਹ! ਵਾ ਕੋਇਲ ਖੁਸ਼ੀ ਮਨੌਾ, ਗੀਤ ਅਜ਼ਾਦੀ......

— ਸਰਦਾਰਾ ਸਿੰਘ "ਯੁਥਪ"
(सरदारा सिंह "युथप")

"ਕਿਰਤੀ ਲਹਿਰ" ਹਫਤਾਵਾਰ ਅਖਬਾਰ
ਸੰਪਾਦਕ : ਹਰਮਿੰਦਰ ਸਿੰਘ (ਅਮ੍ਰੀਕਨ)।
ਜਿਲਦ ਨੰ. ੨, ਅੰਕ : ੧, ੧ ਜਨਵਰੀ ੧੯੩੯
ਆਜ਼ਾਦ ਪ੍ਰੈਸ, ਮੇਰਠ।

"किरती लहर" साप्ताहिक अखबार
संपादक : हरमिंदर सिंह (अमरीकन)
जिल्द नं. 2, अंक : 1, 1 जनवरी 1939
आज़ाद प्रैस, मेरठ।

(अवाप्ति संख्या : 2059)

ਸ਼ਹੀਦਾਂ ਦੀ ਯਾਦ

ਕਈਆਂ ਨੇ ਜਾਨ ਗੁਵਾਈ, ਇਕ ਤੇਰੀ ਜਾਨ ਬਦਲੇ।
ਜੇਲਾਂ ਵਿੱਚ ਕਸ਼ਟ ਉਠਾਏ, ਤੇਰੇ ਅਰਮਾਨ ਬਦਲੇ।
ਸੁਤਿਆ ਤੂੰ ਜਾਗ ਕਿਸਾਨਾਂ, ਹਿੰਦ ਦਿਆ ਨੌਜਵਾਨਾਂ,
ਸਦੀਆਂ ਦੀ ਨੀਂਦੇ ਸੌਂ ਗਏ ਤੈਨੂੰ ਜਗਾਨ ਬਦਲੇ।
ਕਈਆਂ ਤੇ ਗੋਲੀ ਚੱਲੀ, ਬਜ-ਬਜ ਦੇ ਘਾਟ ਉਤੇ,
ਤੋਪਾਂ ਦੇ ਅੱਗੇ ਉਡੇ ਤੇਰੀ ਸ਼ਾਨ ਬਦਲੇ,
ਕਈਆਂ ਨੇ ਜਾਨ ਗੁਆਈ......
ਦਾਣਿਆਂ ਦੇ ਵਾਂਗ ਭੁੱਜੇ ਜਲਿਆਂ ਦੇ ਬਾਗ ਅੰਦਰ,
ਮਾਵਾਂ ਦੇ ਲਾਲ ਸੋਹਣੇ ਤੇਰੇ ਉਗਾਣ ਬਦਲੇ,
ਕਈਆਂ ਨੇ ਜਾਨ ਗੁਆਈ......
ਭੁੱਖਾਂ ਦੇ ਨਾਲ ਮਰ ਗਏ, ਸਤਲੁਜ ਦੇ ਕੰਢੇ ਸੜ ਗਏ,
ਗੁਰਮੁਖ ਜਿਹੇ ਜਿਹਲੀਂ ਅੜ ਗਏ, ਤੈਨੂੰ ਛੁੜਾਨ ਬਦਲੇ,
ਕਈਆਂ ਨੇ ਜਾਨ ਗੁਆਈ......
ਗਿਣ-ਗਿਣ ਕੇ ਦੱਸਾਂ ਕਿੰਨੇ, ਜੋ ਮੌਤ ਦੀ ਸੂਲੀ ਵਿੰਨ੍ਹੇ,
ਹੋਏ ਕੁਰਬਾਨ ਜਿੰਨੇ ਦੁਖੀ ਏ ਕਿਸਾਨ ਬਦਲੇ,
ਕਈਆਂ ਨੇ ਜਾਨ ਗੁਆਈ......
ਸਭ ਕੁਰਕ ਜੈਦਾਤ ਕਰਾਈ, ਜੇਲ੍ਹਾਂ ਵਿਚ ਉਮਰ ਬਿਤਾਈ,
ਹਾ! ਵਸਦੇ ਉਜੜੇ ਵੀਰਾ ਤੈਨੂੰ ਵਸਾਣ ਬਦਲੇ,
ਕਈਆਂ ਨੇ ਜਾਨ ਗਵਾਈ, ਇੱਕ ਤੇਰੀ ਜਾਨ ਬਦਲੇ।
ਜੇਲਾਂ ਵਿਚ ਕਸ਼ਟ ਉਠਾਏ ਤੇਰੇ ਅਰਮਾਨ ਬਦਲੇ।

— ਉਜਾਗਰ ਸਿੰਘ "ਵੀਰ" ਲਾਹੌਰ
(उजागर सिंह "वीर" लाहौर)

"ਕਿਰਤੀ ਲਹਿਰ" ਹਫਤਾਵਾਰ ਅਖਬਾਰ
ਸੰਪਾਦਕ : ਹਰਮਿੰਦਰ ਸਿੰਘ (ਅਮ੍ਰੀਕਨ)।
ਜਿਲਦ ਨੰ. ੨, ਅੰਕ : ੧, ੧ ਜਨਵਰੀ ੧੯੩੯
ਆਜ਼ਾਦ ਪ੍ਰੈਸ, ਮੇਰਠ।

"किरती लहर" साप्ताहिक अखबार
संपादक : हरमिंदर सिंह (अमरीकन)
जिल्द नं. 2, अंक : 1, 1 जनवरी 1939
आज़ाद प्रैस, मेरठ।

(अवाप्ति संख्या : 2059)

ਗੀਤ ਅਜ਼ਾਦੀ

ਉਠ ਜਾਗ, ਗੁਲਾਮ ਗੁਲਾਮਾਂ ਦੇ, ਹੁਣ ਜੁੱਗ ਅਜ਼ਾਦੀ ਸੌਣਾ ਕੀ।
ਸੋਹਣੇ ਸਬਕ ਅਜ਼ਾਦੀ ਬਾਝੋਂ, ਪੜ੍ਹਨਾ ਅਤੇ ਪੜ੍ਹੌਣਾ ਕੀ।
ਇਸ਼ਕ ਅਜ਼ਾਦੀ, ਸੁਖ ਦਾ ਸੌਣਾ, ਇਹ ਤਾਂ ਗਲ ਅਨਹੋਣੀ ਏ,
ਜਿਸ ਦੀ ਸੇਜ੍ਹਾ ਸੂਲੀ ਹੋਵੇ, ਉਹਨੂੰ ਲੇਫ ਬਿਛੌਣਾ ਕੀ।
ਜਿੱਤਣ ਲਈ ਜਗਤ ਦੀ ਬਾਜ਼ੀ, ਖਿੱਦੋ ਸੀਸ ਬਣਾ ਪਹਿਲਾਂ -
ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਕੱਟ ਤਲੀ ਸਿਰ ਧਰਿਆ, ਗੈਰਾਂ ਫੇਰ ਝੁਕੌਣਾ ਕੀ।
ਸਿਰ ਤੇ ਬੰਨ੍ਹ ਸ਼ਹੀਦੀ ਕੱਫਣ, ਰੱਤ ਦੀ ਹੋਲੀ ਖੇਡਣ ਨੂੰ,
ਵਿੱਚ ਮਦਾਨ ਅਜ਼ਾਦੀ ਆਏ, ਫੋਕੇ ਪੁਰਬ ਮਨੌਣਾ ਕੀ।
ਚੂਸ-ਚੂਸ ਕੇ ਲਹੂ ਅਸਾਡਾ, ਉਹ ਕੁੱਪੇ ਜਿਉਂ ਫੁੱਲ ਗਏ,
ਇੱਕੋ ਹਰਫ ਸ਼ਕਾਇਤ ਕਾਫੀ, ਬਹੁਤੇ ਲੇਖ ਲਿਖੌਣਾ ਕੀ।
ਗੈਰਾਂ ਖਾਤਰ ਜੁਗ-ਜੁਗ ਲੜਿਓਂ, ਅਪਣੀ ਲੈ ਹੁਣ ਸਾਰ ਜਰਾ,
ਨੱਾਰਾ "ਹਾਇ ਰੋਟੀ!" ਦਾ ਲਾ ਕੇ, ਗੀਤ ਗੈਰ ਦੇ ਗੌਣਾ ਕੀ।
ਇਕ ਮੁਠ ਹੋ ਕੇ ਮਾਰ ਹੰਭਲਾ! ਕਿਰਤੀ! ਜੁਗ ਪਲਟਾ ਛੇਤੀ।।
ਤੂਹੀਓਂ ਮਾਲਕ ਕੁਲ ਧਰਤੀ ਦਾ, "ਯੂਥਪ" ਹੋਰ ਸਿਖੌਣਾ ਕੀ।
ਉਠ ਜਾਗ! ਗੁਲਾਮ ਗੁਲਾਮਾਂ ਦੇ, ਹੁਣ ਜੁੱਗ ਅਜ਼ਾਦੀ ਸੌਣਾ ਕੀ।
ਸੋਹਣੇ ਸਬਕ ਅਜ਼ਾਦੀ ਬਾਝੋਂ, ਪੜ੍ਹਨਾ ਅਤੇ ਪੜ੍ਹੌਣਾ ਕੀ।

— ਸਰਦਾਰਾ ਸਿੰਘ "ਯੂਥਪ"
(सरदारा सिंह "युथप")

"ਕਿਰਤੀ ਲਹਿਰ" ਹਫਤਾਵਾਰ ਅਖਬਾਰ
ਸੰਪਾਦਕ : ਹਰਮਿੰਦਰ ਸਿੰਘ (ਅਮ੍ਰੀਕਨ)।
ਜਿਲਦ ਨੰ. ੧, ਅੰਕ : ੩,
੧੫ ਜਨਵਰੀ ੧੯੩੯
ਆਜ਼ਾਦ ਪ੍ਰੈਸ, ਮੇਰਠ।

"किरती लहर" साप्ताहिक अखबार
संपादक : हरमिंदर सिंह (अमरीकन)
जिल्द नं. 1, अंक : 3,
15 जनवरी 1939
आज़ाद प्रैस, मेरठ।

(अवाप्ति संख्या : 2040)

ਜੁਗ-ਜੁਗ ਜੀਵੇ ਜੁਗ ਪਲਟਾਊ

ਰਾਜੇ ਛੱਡ ਮਨੁੱਖੀ ਜੀਵਨ, ਸੈਰ-ਸ਼ਿਕਾਰਾਂ ਬਨ ਗਏ ਕੀੜ।
ਪਰਜਾ ਦੇਹ ਕਰੀ ਕਮਜੋਰੀ, ਖੁਰਚ-ਖੁਰਚ ਕੇ ਹੱਡੀ ਰ੍ਹੀੜ।
ਟੈਕਸ, ਚੰਦਾ, ਪਈ ਬਿਮਾਰੀ, ਮਾਮਲਿਆਂ ਦੀ ਪਾਈ ਭੀੜ।
ਵਾਂਗ ਕਮਾਣਾਂ ਕਮਰਾਂ ਝੁਕੀਆਂ, ਵਧਦੀ ਜਾਂਦੀ ਪਲ-ਪਲ ਪੀੜ।
ਜ਼ਬਰ-ਜ਼ੁਲਮ ਨੇ ਛੌਣੀ ਪਾਈ, ਖੋਹ-ਖਿੰਜ ਦਾ ਗਰਮ ਬਜਾਰ।
ਬੰਦਿਆਂ ਉਤੇ ਵਾਂਗ ਹੈਵਾਨਾਂ, ਡੰਡੇ ਬੁੜ੍ਹਕਣ ਬਿਨਾਂ ਵਿਚਾਰ।
ਜਬਤੀ, ਕੁਰਕੀ, ਕਰ ਜ਼ੁਰਮਾਨੇ, ਬੇ ਘਰ ਕੀਤੇ ਕਈ ਹਜਾਰ।
ਜੇਲ੍ਹਾਂ ਅੰਦਰ ਕਈ ਬਿਦੋਸ਼ੇ, ਕੁੱਟ-ਕੁੱਟ ਕੇ ਦਿੱਤੇ ਮਾਰ।
ਹੱਕ ਮੰਗਦਿਆਂ ਲਾਠੀ ਗੋਲੀ ਡੰਡਾ-ਬੇੜੀ ਤੌਕ ਜੰਜੀਰ।
ਕਿਲੇ ਹਕੀਮਾਂ ਵਿੱਚ ਕੁਠਾਲੇ, ਖ਼ੂਨ ਵਗੇ ਜਿਉਂ ਬਹਿੰਦਾ ਨੀਰ।
ਧਨਕਨਾਲ ਤੇ ਰਾਜ ਕੋਟ ਵਿਚ, ਲੋਹਾਰੂ, ਜੈਤੋ ਕਸ਼ਮੀਰ।
ਗੜਿਆਂ ਵਾਂਗਰ ਬਰਸੇ ਗੋਲੀ, ਕਰਸਾਣਾ ਤੇ ਬਿਨ ਤਕਸੀਰ।
ਕਾਰ ਬਗਾਰਾਂ ਰਿਸ਼ਵਤ ਖੋਰੀ, ਪੁਲਸ ਅਦਾਲਤ ਲੈਂਦੀ ਘੂਰ।
ਦਿਨ ਦਿਹਾੜੇ ਲੁਟ ਮਚਾਈ ਦੁਖੀ ਹੋਏ ਕਿਰਤੀ ਮਜਦੂਰ।
ਲਾਠੀ ਚਲੀ ਕੋਟਲੇ-ਨਾਭੇ, ਵਿੱਚ ਚੜਿਕ ਦੇ ਪਿਆ ਫਤੂਰ।
ਟਰਾਵਨ ਕੋਰ, ਹੈਦਰਾਬਾਦੀ, ਭਾਂਬੜ ਬਲਦੇ ਵਿੱਚ ਮਸੂਰ।
ਦੀਨ-ਦੁਨੀ ਦੇ ਨੂਰੀ ਚੰਦਾ! ਚੜ੍ਹ ਅਕਾਸ਼ ਤੇ ਲਿਸ਼ਕਾਂ ਨਾਲ।
ਸ਼ਾਂਤ ਬਹਿਰ ਦੇ ਸੁੱਚੇ ਮੋਤੀ, ਪ੍ਰੀਤ-ਲੜੀ ਦੇ ਹੀਰੇ ਲਾਲ।
ਭਾਰਤ ਮਾਂ ਦੇ ਬੀਰ ਸਪੁੱਤਰ, ਨੀਤੀ ਬੇਤਾ ਸਾਂਝੀਵਾਲ।
ਉਠ ਜਾਗ ਹੁਣ ਕਿਰਤੀ ਜੁਆਨਾ! ਲੜ ਹੱਕਾਂ ਹਿਤ ਹੋਸ਼ ਸੰਭਾਲ।
ਲੁੱਟੂ ਰਾਜ ਜਗੀਰੀ ਟੋਲਾ, ਪਰਜਾ ਪੀੜਤ ਕਰੇ ਪੁਕਾਰ।
ਸ਼ਖਸੀ ਤਾਜੋ ਤਖਤ ਉਡਾਕੇ, ਸਾਂਝੀ ਕੌਂਸਲ ਕਰੀਂ ਤਿਆਰ।

ਧੁੰਦ ਮਿਟਾਕੇ ਕਰੀ ਉਜਾਲਾ, ਕਿਰਨ ਅਜ਼ਾਦੀ ਹਿੰਦ ਖਿਲਾਰ।
ਜੁਗ-ਜੁਗ ਜੀਵੇਂ ਜੁਗ ਪਲਟਾਊ! ਦਿਨ-ਦਿਨ 'ਪਾਂਧੀ' ਵਧੇ ਵਕਾਰ।

— ਸਾਥੀ ਸੰਤਾ ਸਿੰਘ 'ਪਾਂਧੀ'
(साथी संता सिंह "पाँधी")

"ਕਿਰਤੀ ਲਹਿਰ" ਹਫਤਾਵਾਰ ਅਖਬਾਰ
ਸੰਪਾਦਕ :
ਬਾਬਾ ਕਰਮ ਸਿੰਘ "ਧੂਤ" (ਅਮ੍ਰੀਕਨ)।
ਜਿਲਦ ਨੰ. ੨, ਅੰਕ : ੪-੫,
੨੬ ਜਨਵਰੀ ੧੯੩੯
ਆਜ਼ਾਦ ਪ੍ਰੈਸ, ਮੇਰਠ।

"किरती लहर" साप्ताहिक अखबार
संपादक :
बाबा करम सिंह "धुत" (अमरीकन)
जिल्द नं. 2, अंक : 4-5,
26 जनवरी 1939
आज़ाद प्रैस, मेरठ।

(अवाप्ति संख्या : 2251)

ਓਥੇ ਖੂਨ ਸ਼ਹੀਦਾਂ ਦਾ ਡੁਲ੍ਹਦਾ ਏ

ਓਥੇ ਬੁਲਬੁਲਾਂ ਪਿੰਜਰੇ ਬੰਦ ਹੋਵਨ, ਬੇਰਹਿਮ ਜਿਥੋਂ ਦਾ ਸਈਆਦ ਹੋਵੇ।
ਓਥੇ ਕਈ ਮਾਸੂਮ ਨਿਤ ਜ਼ਿਬਾ ਹੋਵਨ, ਜੇੜ੍ਹੀ ਕਤਲਗਾਹ ਵਿਚ ਜੱਲਾਦ ਹੋਵੇ।
ਆਵਨ ਲਾਸ਼ਾਂ ਹੀ ਬਾਹਰ ਫਿਰ ਕਫਸ ਵਿਚੋਂ - ਜੇੜ੍ਹੀ ਕਲਮਰੋ ਵਿੱਚ ਬੇਦਾਦ ਹੋਵੇ।
ਫੇਰ ਹੰਝੂ ਵਗੋਣੇ ਵੀ ਮਨਾਂ ਜਿੱਥੇ, ਅਤੇ ਸੁਣੀਦੀ ਨਾਂਹਿ ਫਰਿਆਦ ਹੋਵੇ।
ਦਰਦ ਭਰੀ ਯਤੀਮ ਜੇ ਹਾਂ ਮਾਰੇ, ਸਿਰ ਤੇ ਸਾਇਆ ਸ਼ਮਸ਼ੀਰ ਦਾ ਝੁੱਲਦਾ ਏ।
ਜਿੱਥੇ ਜੋਰੋ-ਜਫ਼ਾਂ ਦਾ ਦੌਰ ਚੱਲੇ, ਓਥੇ ਖੂਨ ਸ਼ਹੀਦਾਂ ਦਾ ਡੁੱਲ੍ਹਦਾ ਏ।
ਜਿੱਥੇ ਸ਼ਾਹੀ ਘਮੰਡ ਦੇ ਵਿੱਚ ਆਕੇ, ਦੀਨ-ਦੁਖੀ ਅਨਾਥ ਸਤਾਏ ਜਾਵਣ।
ਸਿਰਫ ਸ਼ੱਕੀ ਬਿਨੱਾ ਤੇ ਆਖ 'ਬਾਗੀਂ', ਵਿਚ ਜੇਲ੍ਹਾਂ ਦੇ ਝੱਟ ਪੋਚਾਏ ਜਾਵਣ।
ਕਿਸੇ ਬਾਗ ਅੰਦਰ ਬੇਗੁਨਾਹ ਹੀਰੇ, ਹਾਇ! ਗੋਲੀਆਂ ਨਾਲ ਉਡਾਏ ਜਾਵਣ।
ਜੇੜ੍ਹੇ ਵਾਂਗ ਇਨਸਾਨਾਂ ਦੇ ਚਾਹੁਨ ਜੀਣਾ, ਫੜਕੇ ਫਾਸੀਆਂ ਉਤੇ ਲਟਕਾਏ ਜਾਵਣ।
ਸਾਕਾ ਯਾਦ ਏ ਬਜਬਜ ਦੇ ਘਾਟ ਵਾਲਾ! ਕੰਢਾ ਨਹੀਂ ਏ ਸਤਲੁਜ ਦਾ ਭੁੱਲਦਾ ਏ।
ਜਿੱਥੇ ਹਵਾ ਅਜ਼ਾਦੀ ਦੀ ਵੱਗਣੀ ਏ, ਓਥੇ ਖੂਨ ਸ਼ਹੀਦਾਂ ਦਾ ਡੁੱਲ੍ਹਦਾ ਏ।
ਜਿੱਥੇ ਝੂਠੀਆਂ ਸਾਜ਼ਸ਼ਾਂ ਨਿੱਤ ਘੜ ਕੇ, ਦਾਵੇ ਦੇਸ਼ ਭਗਤਾਂ ਉਤੇ ਚੱਲਦੇ ਨੇ।
ਏਧਰ ਕਲਮ ਔਂਦੀ ਜਦੋਂ ਵਿਚ ਹਰਕਤ, ਓਧਰ ਕਰੰਗ ਮਾਸੂਮਾਂ ਦੇ ਹੱਲਦੇ ਨੇ।
ਹੁੰਦਾ ਖਾਤਮਾਂ ਕਈਆਂ ਦੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦਾ, ਖਾਨਦਾਨ ਕਈ ਖਾਕ ਵਿਚ ਰੱਲਦੇ ਨੇ।
ਲਾਸ਼ਾਂ ਪਹੁੰਚ ਜਾਵਨ ਇਕ ਦਰ ਵਿੱਚ ਕਬਰਾਂ, ਇਕ ਦਰ ਸਿਵੇ ਯਤੀਮਾਂ ਦੇ ਬੱਲਦੇ ਨੇ।
ਹਿਲ ਜਾਂਦਾ ਏ ਅਰਸ਼ੇ ਅਜ਼ੀਮ ਓਦੋਂ, ਜੁਲਮੋ-ਸਿਤਮ ਵਾਲਾ ਤੱਕੜ ਤੁੱਲਦਾ ਏ।
ਜਿੱਥੇ ਹਾਂ! ਗਰੀਬਾਂ ਦੀ ਨਿਕਲਦੀ ਏ, ਓਥੇ ਖੂਨ ਸ਼ਹੀਦਾਂ ਦਾ ਡੁਲ੍ਹਦਾ ਏ।
ਜਿੱਥੇ ਗੰਨ ਮਸ਼ੀਨਾਂ ਦੇ ਮਾਣ ਉਤੇ, ਕਤਲ ਗੜ੍ਹੀ ਕਾਕੋਰੀ ਬਣਾਈ ਜਾਂਦੀ।
ਕਿਤੇ ਭੁਖਿਆਂ ਰਖ ਜ਼ਿੰਦਾਨ ਅੰਦਰ, ਕਿਸੇ 'ਦਾਸ' ਦੀ ਜਾਨ ਗਵਾਈ ਜਾਂਦੀ।
ਰਾਜ ਗੁਰੂ, ਸੁਖ ਦੇਵ ਤੇ ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਦੀ, ਰਾਖ ਵਿਚ ਦਰਿਆ ਬਹਾਈ ਜਾਂਦੀ।
ਸੂਰਤ ਸੋਹਨੀ 'ਸਰਾਭੇਂ' ਜਿਹੇ ਬੱਚਿਆਂ ਦੀ, ਗੋਦੀ ਮੌਤ ਦੀ ਵਿੱਚ ਸੁਲਾਈ ਜਾਂਦੀ।

ਜਿੱਥੇ ਕੀਤੇ ਬੇਦੋਸ਼ ਹਲਾਕ ਜਾਂਦੇ, ਇਨਕਲਾਬ ਦਾ ਫਿਰ ਝੰਡਾ ਝੁੱਲਦਾ ਏ।
ਨਸ਼ਟ ਹੋਵੇ 'ਕਰਤਾਰ' ਉਹ ਰਾਜ ਛੇਤੀ, ਜਿੱਥੇ ਖੂਨ ਸ਼ਹੀਦਾਂ ਦਾ ਡੁਲ੍ਹਦਾ ਏ।

— ਕਾਮਰੇਡ ਕਰਤਾਰ ਸਿੰਘ 'ਕਰਤਾਰ'
(कामरेड करतार सिंह "करतार")

"ਕਿਰਤੀ ਲਹਿਰ" ਹਫਤਾਵਾਰ ਅਖਬਾਰ
ਸੰਪਾਦਕ :
ਬਾਬਾ ਕਰਮ ਸਿੰਘ "ਧੂਤ" (ਅਮ੍ਰੀਕਨ)।
ਜਿਲਦ ਨੰ. ੨, ਅੰਕ : ੭,
੧੨ ਫਰਵਰੀ ੧੯੩੯
ਆਜ਼ਾਦ ਪ੍ਰੈਸ, ਮੇਰਠ।

"किरती लहर" साप्ताहिक अखबार
संपादक :
बाबा करम सिंह "धुत" (अमरीकन)
जिल्द नं. 2, अंक : 4-5,
26 जनवरी 1939
आज़ाद प्रैस, मेरठ।

(अवाप्ति संख्या : 2257)

ਬਨਾ ਦੋ ਭਿਖਾਰੀ, ਸਭੇ ਤਾਜ ਧਾਰੀ

ਉਠੋ ਓ ਕਿਸਾਨੋਂ, ਬੇ ਘਰ ਨਾ ਤਵਾਨੋਂ, ਉਮਰ ਦੇ ਜਵਾਨੋਂ, ਗੁਲਾਮੋ ਹੈਵਾਨੋ।
ਕਰੋ ਖਾਂ ਤਿਆਰੀ, ਫੜੋ ਹੋਸ਼ਿਆਰੀ, ਬਨਾ ਦੋ ਭਿਖਾਰੀ, ਸਭੇ ਤਾਜ ਧਾਰੀ।
ਉਠੋ ਓ ਮਜ਼ੂਰੋ, ਧਨਾਡਾਂ ਨੂੰ ਘੂਰੋ, ਜਗਾਓ ਫਤੂਰੋ, ਨ ਕਰਮਾਂ ਨੂੰ ਝੂਰੋ।
ਕਰੋ ਕਾਰ ਕਾਰੀ, ਹੈ ਹਿੰਮਤ ਕਿਉਂ ਹਾਰੀ, ਬਨਾ ਦੋ ਭਿਖਾਰੀ, ਸਭੇ ਤਾਜ ਧਾਰੀ।
ਏ ਫਾਕੇ ਕੁੜਾਪੇ, ਜੁਵਾਨੀ ਬੁੜ੍ਹਾਪੇ, ਜਲਾ ਦੋ ਏ ਛਾਪੇ, ਕਰਾ ਦੋ ਸਿਆਪੇ।
ਮਿਟੇ ਪੂੰਜੀ ਦਾਰੀ, ਤੇ ਜਾਗੀਰ ਦਾਰੀ, ਬਨਾ ਦੋ ਭਿਖਾਰੀ, ਸਭੇ ਤਾਜ ਧਾਰੀ।
ਰਿਆਸਤ ਦੇ ਵਾਸੀ, ਦੁਖਾਂ ਵਾਲੀ ਫਾਸੀ, ਕਰਾ ਲੋ ਖਲਾਸੀ, ਨ ਸਮਝੋ ਏ ਹਾਸੀ।
ਏ ਜੁਲਮਾਂ ਦੀ ਆਰੀ, ਨ ਚੱਲੇ ਦੁਬਾਰੀ, ਬਨਾ ਦੋ ਭਿਖਾਰੀ, ਸਭੇ ਤਾਜ ਧਾਰੀ।
ਨਵਾਬਾਂ ਤੇ ਰਾਜੇ, ਏ ਡੱਡੂ ਖੁਵਾਜੇ, ਹੋਏ ਬਦ ਮਿਜ਼ਾਜੇ, ਹਾ! ਤਖਤੀ ਬਿਰਾਜੇ।
ਬਣੇ ਅੱਤਿਆਚਾਰੀ, ਤੇ ਪਰਜਾ ਦੁਖਾਰੀ, ਬਨਾ ਦੋ ਭਿਖਾਰੀ, ਸਭੇ ਤਾਜ ਧਾਰੀ।
ਨਾ ਹੁਣ ਤੂੰ ਸਬਰ ਕਰ, ਲੈ ਜ਼ੋਰੇ ਜ਼ਬਰ ਕਰ, ਚੁਤਰਫੇ ਖਬਰ ਕਰ, ਉ ਸ਼ੇਰੇ ਬਬਰ ਨਰ।
ਜਥੇਬੰਦ ਤਿਆਰੀ, ਤੇ ਲਾਹ ਦੇ ਖੁਮਾਰੀ, ਬਨਾ ਦੋ ਭਿਖਾਰੀ, ਸਭੇ ਤਾਜ ਧਾਰੀ।
ਗੁਲਾਮੋ ਗੁਲਾਮੀ, ਵਡੀ ਏ ਖੁਨਾਮੀ, ਅਜ਼ਾਦੀ ਦੇ ਹਾਮੀ, ਆ ਨਿਕਲੋ ਮਦਾਨੀ।
ਮਿਟੇ ਅੰਧ ਕਾਰੀ, ਕਰੋ ਘੋਲ ਜਾਰੀ, ਬਨਾ ਦੋ ਭਿਖਾਰੀ, ਸਭੇ ਤਾਜ ਧਾਰੀ।
ਦੁਖਾਂ ਨੇ ਜੁ ਘੇਰੇ, ਆ ਪਾਏ ਚੁਫੇਰੇ, ਤੇ ਜੁਲਮੀ ਅੰਧੇਰੇ, ਘਰੀਂ ਲਾਏਂ ਡੇਰੇ।
ਬਣੇ ਨੇ ਸ਼ਕਾਰੀ, ਕੜੇ ਕਰਮ-ਚਾਰੀ, ਬਨਾ ਦੋ ਭਿਖਾਰੀ, ਸਭੇ ਤਾਜ ਧਾਰੀ।
ਏ ਹਾਲੇ ਤੇ ਕਰਜ਼ੇ, ਏ ਟੈਕਸ ਬੇ ਦਰਦੇ, ਤੇ ਫਸਲਾਂ ਦੇ ਹਰਜੇ, ਹਾ! ਹਾਕਮ ਬਿਗਰਜੇ।
ਵਡੀ ਹੈਂਸਿਆਰੀ, ਉਡਾ ਦੋ ਬੀਮਾਰੀ, ਬਨਾ ਦੋ ਭਿਖਾਰੀ, ਸਭੇ ਤਾਜ ਧਾਰੀ।
ਹਕੂਮਤ ਬੇ ਢੰਗੀ, ਜੋ ਲੁੱਟੂ ਲੁਫੰਗੀ, ਦਖੋਂਦੀ ਦੇ ਤੰਗੀ, ਨ ਲਗਦੀ ਏ ਚੰਗੀ।
ਹੈ ਲਾਨਤ ਦੀ ਮਾਰੀ, ਦੀ ਕਰ ਦੋ ਖੁਆਰੀ, ਬਨਾ ਦੋ ਭਿਖਾਰੀ, ਸਭੇ ਤਾਜ ਧਾਰੀ।
ਏ ਦੁੱਖਾਂ ਦੀ ਚਾਦਰ-ਦਾ ਕਰਨਾ ਕੀ ਆਦਰ, ਉਠੋ ਐ ਬਿਰਾਦਰ, ਬਣੋ ਹੁਣ ਬਹਾਦਰ।
ਬਣੋ ਨਾ ਪੁਜਾਰੀ, ਹੈ ਨਾਗਾਂ ਪਟਾਰੀ, ਬਨਾ ਦੋ ਭਿਖਾਰੀ, ਸਭੇ ਤਾਜ ਧਾਰੀ।

13—254/Deptt. of Archives/ND/97

ਨ ਕਰਮਾਂ ਦੇ ਫਲ ਤੋਂ, ਹਕੂਮਤ ਦੇ ਛਲ ਤੋਂ, ਨ ਗੈਰਾਂ ਦੇ ਦਲ ਤੋਂ, ਡਰੋ ਨਾ ਅਜਲ ਤੋਂ।
ਨਵਾਂ ਜੁੱਗ ਜਾਰੀ, 'ਦੁਖੀ' ਕਰ ਤਿਆਰੀ, ਬਨਾ ਦੇ ਭਿਖਾਰੀ, ਸਭੇ ਤਾਜ ਧਾਰੀ।

— ਕਾਮਰੇਡ ਜੀਵਣ ਸਿੰਘ 'ਦੁਖੀ'
(कामरेड जीवण सिंह 'दुखी')

"ਕਿਰਤੀ ਲਹਿਰ" ਹਫਤਾਵਾਰ ਅਖਬਾਰ
ਸੰਪਾਦਕ :
ਬਾਬਾ ਕਰਮ ਸਿੰਘ "ਧੂਤ" (ਅਮ੍ਰੀਕਨ)।
ਜਿਲਦ ਨੰ. ੨, ਅੰਕ : ੮-੯,
੧੯ ਫਰਵਰੀ ੧੯੩੯
ਆਜ਼ਾਦ ਪ੍ਰੈਸ, ਮੇਰਠ।

"किरती लहर" साप्ताहिक अखबार
संपादक :
बाबा करम सिंह "धुत" (अमरीकन)
जिल्द नं. 2, अंक : 8-9,
19 फरवरी 1939
आज़ाद प्रैस, मेरठ।

(अवाप्ति संख्या : 2260)

ਇਨਕਲਾਬ ਜ਼ਿੰਦਾਬਾਦ, ਇਨਕਲਾਬ ਆ ਗਿਆ

ਖੇਤਾਂ ਅਤੇ ਮਿਲਾਂ ਵਿੱਚ, ਗਭਰੂਆਂ ਦੇ ਦਿਲਾਂ ਵਿੱਚ,
ਜੋਸ਼ ਇੱਕ ਨਵਾਂ ਜਿਹਾ, ਭਾਂਬੜ ਮਚਾ ਗਿਆ।
ਇਨਕਲਾਬ ਜ਼ਿੰਦਾਬਾਦ, ਇਨਕਲਾਬ ਆ ਗਿਆ।

ਹੋ ਹੋ ਕੇ ਕੱਠੇ ਸਾਰੇ, ਮਾਰਦੇ ਪਏ ਨੇ ਲਲਕਾਰੇ,
ਕਹਿੰਦੇ ਪੂੰਜੀਦਾਰੀ ਵਾਲਾ, ਅੰਤ ਸਮਾ ਆ ਗਿਆ।
ਇਨਕਲਾਬ ਜ਼ਿੰਦਾਬਾਦ, ਇਨਕਲਾਬ ਆ ਗਿਆ।

ਛੱਡਣੀ ਨਾ ਸ਼ਹਿਨ ਸ਼ਾਹੀ, ਕੀਤੀ ਏਸ ਨੇ ਤਬਾਹੀ,
ਸਬਕ ਪਕੌਂਦੇ ਜੇਹੜਾ-ਲੈਨਿਨ ਸਿਖਾ ਗਿਆ।
ਇਨਕਲਾਬ ਜੀਵੇ ਸਦਾ, ਇਨਕਲਾਬ ਆ ਗਿਆ।

ਥੌੜੇ ਦਾਤੀ ਫੜੇ ਹੋਏ, ਰੋਹ ਵਿੱਚ ਖੜੇ ਹੋਏ,
ਚੋਟ ਲੌਣ ਲਈ ਤਿਆਰ, ਗਰਮ ਤਾਅ ਆ ਗਿਆ।
ਇਨਕਲਾਬ ਜਿਉਂਦਾ ਰਹੇ, ਇਨਕਲਾਬ ਆ ਗਿਆ।

ਗੌਣ ਸਾਰੇ ਮਿਲ ਮਿਲਕੇ, ਝੂਮ ਝੂਮ ਤੇ ਹਿਲ ਹਿਲਕੇ,
ਇਨਕਲਾਬ ਜ਼ਿੰਦਾਬਾਦ, ਇਨਕਲਾਬ ਆ ਗਿਆ।
ਇਨਕਲਾਬ ਜ਼ਿੰਦਾਬਾਦ, ਇਨਕਲਾਬ ਆ ਗਿਆ।

— ਕਾਮਰੇਡ ਹਰਨਾਮ ਸਿੰਘ 'ਚਮਕ'
(कामरेड हरनाम सिंह "चमक")

"ਕਿਰਤੀ ਲਹਿਰ" ਹਫਤਾਵਾਰ ਅਖਬਾਰ
ਸੰਪਾਦਕ :
ਬਾਬਾ ਕਰਮ ਸਿੰਘ "ਧੂਤ" (ਅਮ੍ਰੀਕਨ)।
ਜਿਲਦ ਨੰ. ੨, ਅੰਕ : ੮-੯,
੧੯ ਫਰਵਰੀ ੧੯੩੯
ਆਜ਼ਾਦ ਪ੍ਰੈਸ, ਮੇਰਠ।

"किरती लहर" साप्ताहिक अखबार
संपादक :
बाबा करम सिंह "धुत" (अमरीकन)
जिल्द नं. 2, अंक : 8-9,
19 फरवरी 1939
आज़ाद प्रैस, मेरठ।

(अवाप्ति संख्या : 2260)

ਉਠ ਮੱਲਾ! ਤੂੰ ਹੋਸ਼ ਸੰਭਾਲ!

ਉਠ ਮੱਲਾ ਤੂੰ ਹੋਸ਼ ਸੰਭਾਲ। ਜੂਆ ਗੁਲਾਮੀ ਗਲੋਂ ਨਿਕਾਲ।
ਕਿਉਂ ਫਸਿਆਂ ਵਿਚ ਆਲਸ-ਜਾਲ। ਹੋਸ਼ ਸੰਭਾਲ ਹੋਸ਼ ਸੰਭਾਲ।
ਐਡੀ ਨੀਂਦ ਕਿਧਰ ਦੀ ਆਈ, ਜਿਸ ਨੇ ਤੇਰੀ ਹੋਸ਼ ਭੁਲਾਈ।
ਖੋਹ ਲਈ ਗੈਰਾਂ ਪਾਈ ਪਾਈ, ਲੁੱਟ ਲਿਆ ਸਾਰਾ ਧੰਨ ਮਾਲ।
ਉਠ ਮੱਲਾ ਤੂੰ.........

ਤੂੰ ਬੀਜੇਂ ਤਾਂ ਲੋਕੀ ਖਾਂਦੇ, ਤੇਰੇ ਸਿਰ ਤੇ ਮੌਜ ਉਡਾਂਦੇ।
ਖਾ-ਖਾ ਵਿਹਲੜ ਢਿੱਡ ਵਧਾਂਦੇ, ਤੇਰਾ ਫਿਰ ਭੀ ਮੰਦਾ ਹਾਲ।
ਉਠ ਮੱਲਾ ਤੂੰ.........

ਲਾਲੀ ਸਭ ਦੀ ਤੇਰੇ ਈ ਕਰਕੇ, ਤੈਨੂੰ ਰੋਟੀ ਮਿਲਦੀ ਮਰਕੇ।
ਵਿਹਲੜ ਤੂੰਬੜ ਢਿਡ ਨੂੰ ਭਰ ਕੇ, ਸੌ-ਸੌ ਮਣ ਦੇ ਲੈਣ ਡਕਾਰ।
ਉਠ ਮੱਲਾ ਤੂੰ.........

ਜੂਆ ਗੁਲਾਮੀ ਲਾਹ ਸੁਟ ਜੱਟਾ। ਫਿਰਕੇ ਦਾਰੀ-ਸਿਰ ਪਾ ਘੱਟਾ।
ਆ ਕਰ ਲਈਏ ਕੱਟੀ-ਕੱਟਾ, ਵਾਹ-ਵਾਹ ਮਰੇਂ, ਨ ਝੁੱਗਾ ਗਾਲ।
ਉਠ ਮੱਲਾ ਤੂੰ.........

ਜਥੇਬੰਦੀ ਤੂੰ ਕਰ ਲੈ ਪੱਕੀ, ਪੂੰਜੀਦਾਰੀ ਉਡ ਜਏ ਫੱਕੀ।
ਦੁਨੀਆਂ ਰਹਿ ਜਾਇ ਹੱਕੀ-ਬੱਕੀ, ਛਡ ਦੇ ਸਾਰੇ ਆਲ-ਜੰਜਾਲ।
ਉਠ ਮੱਲਾ ਤੂੰ.........

ਜੇ ਤੂੰ ਮੰਨੇ ਮੇਰਾ ਕਹਿਣਾ, ਲਾਲ ਝੰਡਾ ਜਾਂ ਹੱਥ ਚਿ ਲੈਣਾ।
ਵੇਹਲੜਾਂ ਅਗੋਂ ਨੌਹ ਨਾਂ ਲੈਣਾ, ਸਾਰੇ ਬਣਸਨ ਭਾਈ ਵਾਲ।
ਉਠ ਮੱਲਾ ਤੂੰ.........

ਨਾਂ ਦਿੱਸੇ ਕੋਈ ਨੀਚ ਉਚੇਰਾ, ਨਾਂ ਹੀ ਹਾਕਮ ਨਾਂ ਕੋਈ ਚੇਰਾ।
ਨਾਂ ਪੈਦਲ, ਨਾਂ ਹੇਠ ਬਛੇਰਾ; ਇੱਕ ਜਿਹੇ ਸਭ ਮਾਂ ਦੇ ਲਾਲ।
ਉਠ ਮੱਲਾ ਤੂੰ.........

ਨਾਂ ਕੋਈ ਕੱਲਾ ਕਾਰ ਚਲਾਵੇ, ਨਾਂ ਕੋਈ ਸੂਦ ਮੁਫਤ ਦਾ ਖਾਵੇ।
ਨਾਂ ਕੋਈ ਫੋਕਾ ਰੋਹਬ ਦਿਖਾਵੇ, ਇੱਕੋ ਹੋਣ "ਕੌਰ" ਤੇ ਗੁਆਲ।
ਉਠ ਮੱਲਾ ਤੂੰ.........

ਜੂਆ ਗੁਲਾਮੀ ਗਲੋਂ ਨਕਾਲ। ਕਿਉਂ ਫਸਿਆ ਵਿਚ ਆਲਸ ਜਾਲ?
ਹੋਸ਼ ਸੰਭਾਲ ਹੋਸ਼ ਸੰਭਾਲ, ਉਠ ਮੱਲਾ! ਤੂੰ ਹੋਸ਼ ਸੰਭਾਲ।

— ਕਾਮਰੇਡ "ਕੌਰ" ਜੀ ਉਮਰਪੁਰਾ
(कामरेड "कौर" उमरपुरा)

"ਕਿਰਤੀ ਲਹਿਰ" ਹਫਤਾਵਾਰ ਅਖਬਾਰ
ਸੰਪਾਦਕ :
ਬਾਬਾ ਕਰਮ ਸਿੰਘ "ਧੂਤ" (ਅਮ੍ਰੀਕਨ)।
ਜਿਲਦ ਨੰ. ੨, ਅੰਕ : ੧੧,
੧੨ ਮਾਰਚ ੧੯੩੯
ਆਜ਼ਾਦ ਪ੍ਰੈਸ, ਮੇਰਠ।

"किरती लहर" साप्ताहिक अखबार
संपादक :
बाबा करम सिंह "धुत" (अमरीकन)
जिल्द नं. 2, अंक : 11,
12 मार्च 1939
आज़ाद प्रैस, मेरठ।

(अवाप्ति संख्या : 2266)

ਗੁਲਾਮਾਂ ਦੀਆਂ ਹੋਲੀਆਂ

ਦੱਸਾਂ ਕੀ ਮਰਮ ਔਂਦੀ, ਮੂਲ ਨਾਂ ਸ਼ਰਮ ਸਗੋਂ,
ਹਿੰਦੀ ਨੌਜਵਾਨ ਗੱਲਾਂ ਕਰਦੇ ਨਿ ਲੋਲ੍ਹੀਆਂ।
ਕਈ-ਕਈ ਦਿਨ ਐਵੇਂ ਵੇਲ੍ਹੇ ਹੀ ਗੁਜਾਰ ਦਿੰਦੇ,
ਬੰਨ੍ਹ-ਬੰਨ੍ਹ ਫਿਰਦੇ ਬਜ਼ਾਰਾਂ ਵਿਚ ਟੋਲੀਆਂ।
ਸ਼ੁਗਲ ਮਨੌਂਦੇ, ਰੰਗ ਪੌਂਦੇ ਭਲੇ ਮਾਣਸਾਂ ਤੇ,
ਗੰਦੀਆਂ ਜ਼ਬਾਨਾਂ ਵਿਚੋਂ ਬੋਲਦੇ ਕੁਬੋਲੀਆਂ।
ਹਿੰਦੀ ਨੌਜਵਾਨੋ, ਜ਼ਰਾ ਸੋਚ ਕੇ ਜਵਾਬ ਦਿਉ।
ਦੱਸੋ ਖਾਂ ਗੁਲਾਮਾਂ ਦੀਆਂ ਕਾਹਦੀਆਂ ਨਿ ਹੋਲੀਆਂ?

ਹੋਲੀਆਂ ਮਨਾ ਕੇ ਰੀਸ ਕਰੋ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਜੋਧਿਆਂ ਦੀ,
ਉਨ੍ਹਾਂ ਖ਼ੂਨ ਨਾਲ ਨਿਜ ਰੰਗੀਆਂ ਸੀ ਚੋਲੀਆਂ।
ਦੁਖ, ਦੁਖੀ ਦੇਸ਼ ਦਾ ਵੰਡਾਇਆ ਹਿੰਦੀ ਦੇਵੀਆਂ ਨੇ,
ਟੋਟੇ ਨਿਜ ਪੁੱਤਾਂ ਦੇ ਪੁਵਾਏ ਵਿਚ ਝੋਲੀਆਂ।
ਜੰਮ-ਜੰਮ ਹੋਲੀਆਂ ਮਨੌਣ ਉਹ ਜਹਾਨ ਉਤੇ,
ਕਾਲਖਾਂ ਗੁਲਾਮੀ ਦੀਆਂ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਲੋਕਾਂ ਧੋ ਲੀਆਂ।
ਹਿੰਦੀ ਹੋਣਹਾਰੋ, ਦਿਲ ਆਪਣੇ ਵਿਚਾਰੋ ਜਰਾ,
ਸਾਡੀਆਂ ਗੁਲਾਮਾਂ ਦੀਆਂ ਕਾਹਦੀਆਂ ਨਿ ਹੋਲੀਆਂ?

ਨਿਗਾ ਮਾਰੋ ਯਾਰੋ! ਜਰਾ ਰੂਸ ਦੇ ਜੁਆਨਾਂ ਵਲ,
ਜਾਨਾਂ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਦੀਨਾਂ ਦੀ ਅਜ਼ਾਦੀ ਲਈ ਘੋਲੀਆਂ।
ਛੱਡ ਗਏ ਜੁਆਨੀਆਂ ਤੇ ਸੁੰਦਰ ਸੁਆਨੀਆਂ ਨੂੰ,
ਸ਼ਗਨਾਂ ਦੇ ਗਾਨੇ ਦੀਆਂ ਗੰਢਾਂ ਵੀ ਨਾਂ ਖੋਲ੍ਹੀਆਂ।
ਦੇਸ਼ ਦੇ ਗੁਲਾਮੀ ਦੁਖ ਦੇਖ ਨਾਂ ਸਹਾਰ ਸੱਕੇ,
ਵਧ-ਵਧ ਛਾਤੀਆਂ ਚਿ ਖਾਧੀਆਂ ਸੀ ਗੋਲੀਆਂ।
ਰੰਗ ਪਏ ਉਡੌਂਦੇ ਤੁਸੀਂ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਹਸੌਂਦੇ ਹਾਇ?
ਖ਼ੂਨ ਨਾਲ ਖੇਲ੍ਹੀਆਂ ਬਹਾਦੁਰਾਂ ਨੇ ਹੋਲੀਆਂ।

ਦੁਖਾਂ-ਭੁਖਾਂ ਮਾਰਿਆਂ ਨੇ ਹੋਲੀਆਂ ਮਨੌਣੀਆਂ ਕੀ,
ਗੈਰਾਂ ਦੀ ਗੁਲਾਮੀ ਦੀਆਂ ਚੱਕੀਆਂ ਨੇ ਝੋਲੀਆਂ।
ਕੁੱਲੀ ਜੁੱਲੀ ਗੁੱਲੀ ਸਾਨੂੰ ਜੁੜਨੀ ਮੁਹਾਲ ਹੋਈ,
ਦਾਣਿਆਂ ਤੋਂ ਖਾਲੀ ਹੋਏ ਘੜੇ ਤੇ ਭੜੋਲੀਆਂ।
ਦੁਰੇ-ਦੁਰੇ, ਪਰੇ-ਪਰੇ, ਬੇਈਮਾਨ, ਕਾਲੇ ਕੁਲੀ,
ਸਾਨੂੰ ਸਰਮਾਏਦਾਰ ਕਰਦੇ ਠਠੋਲੀਆਂ।
ਹਿੰਦੀਓ ਜਵਾਨੋ! ਆਗੂ ਸੜਦੇ ਨਿ ਜੇਲ੍ਹਾਂ ਵਿਚ,
ਦੱਸੋ ਕਿਹੜਾ ਮੁੱਖ ਲੈ ਮਨੌਂਦੇ ਫਿਰੋ ਹੋਲੀਆਂ।

— ਸ: ਜਗਜੀਤ ਸਿੰਘ "ਚਮਨ"
(सरदार जगजीत सिंह "चमन")

"ਕਿਰਤੀ ਲਹਿਰ" ਹਫਤਾਵਾਰ ਅਖਬਾਰ
ਸੰਪਾਦਕ :
ਬਾਬਾ ਕਰਮ ਸਿੰਘ "ਧੂਤ" (ਅਮ੍ਰੀਕਨ)।
ਜਿਲਦ ਨੰ. ੨, ਅੰਕ : ੧੧,
੧੨ ਮਾਰਚ ੧੯੩੯
ਆਜ਼ਾਦ ਪ੍ਰੈਸ, ਮੇਰਠ।

"किरती लहर" साप्ताहिक अखबार
संपादक :
बाबा करम सिंह "धुत" (अमरीकन)
जिल्द नं. 2, अंक : 11,
12 मार्च 1939
आज़ाद प्रैस, मेरठ।

(अवाप्ति संख्या : 2266)

ਇਨਕਲਾਬ ਤੂੰ ਛੇਤੀ ਆ, ਅਪਣਾ ਖੂੰਨੀ ਗੀਤ ਸੁਣਾ

ਵੇਖ ਰਹੇ ਹੁਣ ਤੇਰੇ ਵਲ, ਅਮਨ ਦੇ ਦੇਸ਼ ਨੂੰ ਤੂੰ ਲੈ ਚੱਲ,
ਲੈ ਚਲ ਅਜੇ ਹੀ ਤੂੰ ਲੈ ਚੱਲ, ਹੁਣ ਨਾਂ ਪਲ ਬੀ ਦੇਰੀ ਲਾ।
ਇਨਕਲਾਬ ਹੁਣ ਛੇਤੀ ਆ। ਅਪਣਾ ਖੂੰਨੀ ਗੀਤ ਸੁਣਾ।

ਭੁੱਖ ਦੇ ਦੁਖੋਂ ਤੂੰਹੀਂ ਛਡੌਣਾ, ਇਹ ਦੁਖ ਨਿਤ ਦਾ ਤੂੰ ਹੀ ਮਕੌਣਾ,
ਸਰਮਾਏਦਾਰੀ ਨੂੰ ਤੈਂ ਢੌਣਾ, ਸਹਿਨਸ਼ਾਹੀ ਨੂੰ ਜੜੋਂ ਮੁਕਾ।
ਇਨਕਲਾਬ ਹੁਣ ਛੇਤੀ ਆ। ਅਪਣਾ ਖੂੰਨੀ ਗੀਤ ਸੁਣਾ।

ਇਕ ਮਈ ਸਾਰੇ ਜਗ ਕਰਦੇ, ਦੁਖ ਗਰੀਬਾਂ ਦੇ ਸਭ ਹਰਦੇ,
ਜਿਸ ਘਰ ਵੇਹਲੜ ਮੌਜਾਂ ਕਰਦੇ, ਉਸ ਘਰ ਨੂੰ ਦੇਹ ਤੀਲੀ ਲਾ।
ਇਨਕਲਾਬ ਤੂੰ ਛੇਤੀ ਆ। ਅਪਣਾ ਖੂੰਨੀ ਗੀਤ ਸੁਣਾ।

ਅਪਣਾ ਭਿਆਨਕ ਰੂਪ ਵਿਖਾ ਦੇ, ਭਬਕ ਨਾਲ ਸਭ ਲਹੂ ਸੁਕਾ ਦੇ,
ਮਜ਼ਹਬੀ ਆਗੂ ਸਭ ਮੁਕਾ ਦੇ, ਨਾ ਹੋਵਨ ਲੋਕ ਗੁਮਰਾਹ।
ਇਨਕਲਾਬ ਹੁਣ ਛੇਤੀ ਆ। ਅਪਣਾ ਖੂੰਨੀ ਗੀਤ ਸੁਣਾ।

ਨਵਿਆਂ ਲਈ ਤੂੰ ਰਾਗ ਨਵੇਂ ਗਾ, ਨਏ ਰਾਗਾਂ ਲਈ ਸਾਜ਼ ਨਏ ਲਿਆ,
ਤਿੜ ਗੋਲੀ ਤੇ ਤੋਪ ਦੀ ਧਾ, ਗਭਰੂਆਂ ਦੇ ਦਿਲ ਆ ਤੜਪਾ।
ਇਨਕਲਾਬ ਹੁਣ ਛੇਤੀ ਆ। ਅਪਣਾ ਖੂੰਨੀ ਗੀਤ ਸੁਣਾ।

ਮਜ਼ਦੂਰਾਂ ਕਿਸਾਣਾਂ ਨੂੰ ਹੁਣ, ਇਕ ਦੂਜੇ ਦੇ ਪ੍ਰਾਣਾ ਨੂੰ ਹੁਣ,
ਜਾਣ ਦੇ ਹੋਇਆਂ ਅਣਜਾਣਾ ਹੁਣ, ਇਕ ਥਾਂ ਕਰਕੇ ਜਕੜ ਬਠਾ।
ਇਨਕਲਾਬ ਹੁਣ ਛੇਤੀ ਆ। ਅਪਣਾ ਖੂੰਨੀ ਗੀਤ ਸੁਣਾ।

ਮੱਕਸਦ ਹੋਵੇ ਇਕੋ ਸਾਂਝਾ, ਮੋਰਚਾ ਹੋਵੇ ਇੱਕੋ ਸਾਂਝਾ,
ਕਦਮ ਵਧੇ ਪਰ ਭੀ ਸਾਂਝਾ, ਬਣ ਜਾਵਣ ਸਭ ਸਕੇ ਭਰਾ।
ਇਨਕਲਾਬ ਤੂੰ ਛੇਤੀ ਆ। ਅਪਣਾ ਖੂੰਨੀ ਗੀਤ ਸੁਣਾ।

ਆ ਵੇਹਲੜ ਸਰਮਾਏਦਾਰਾਂ. ਆ. ਏਹਨਾਂ ਸੜੀਆਂ ਸਰਕਾਰਾਂ.
ਪਾਂਧੇ. ਮੁੱਲਾਂ ਤੇ ਭਾਈਆਂ ਮੱਕਾਰਾਂ. ਹੱਥੋਂ ਕਿਰਤੀ ਦੁਖੀ ਆ ਛੁੱਡਾ।
ਇਨਕਲਾਬ ਤੂੰ ਛੇਤੀ ਆ। ਅਪਣਾ ਖੂੰਨੀ ਗੀਤ ਸੁਣਾ।

— ਕਾਮਰੇਡ ਹਰਨਾਮ ਸਿੰਘ 'ਚਮਕ'

(कामरेड हरनाम सिंह 'चमक')

"ਕਿਰਤੀ ਲਹਿਰ" ਹਫਤਾਵਾਰ ਅਖਬਾਰ
ਸੰਪਾਦਕ :
ਬਾਬਾ ਕਰਮ ਸਿੰਘ "ਧੂਤ" (ਅਮ੍ਰੀਕਨ)।
ਜਿਲਦ ਨੰ. ੨. ਅੰਕ : ੨੬.
੨੫ ਜੂਨ ੧੯੩੯
ਆਜ਼ਾਦ ਪ੍ਰੈਸ. ਮੇਰਠ।

"किरती लहर" साप्ताहिक अखबार
संपादक :
बाबा करम सिंह "धुत" (अमरीकन)
जिल्द नं. 2, अंक : 26,
25 जून 1939
आज़ाद प्रैस. मेरठ।

(अवाप्ति संख्या : 2014)

ਅਸੀਂ ਅਗ ਅਸਮਾਨ ਨੂੰ ਲਾ ਦਿਆਂਗੇ

ਭਾਰਤ ਮਾਤਾ ਦੇ ਪੁਤ ਹਾਂ ਅਸੀਂ ਹਿੰਦੀ, ਲੇਖੇ ਮਾਤ ਦੇ ਜਿੰਦੜੀ ਲਾ ਦਿਆਂਗੇ।
ਸਾਡੀ ਮਾਤ ਵਲ ਕਰੇਗਾ ਅੱਖ ਜਿਹੜਾ, ਅਸੀ ਲੂਣ ਉਹਦੀ ਅਖੀਂ ਪਾ ਦਿਆਂਗੇ।
ਲੋੜ ਪਈ ਤਾਂ ਭਾਰਤ ਦੀ ਪੱਤ ਬਦਲੇ, ਅਸੀਂ ਆਪਣੀ ਰਤ ਵਹਾ ਦਿਆਂਗੇ।
ਨਿਰੇ ਕਹਿੰਦੇ ਨਹੀ ਗਾਲੜੀ ਨਹੀਂ ਅਸੀ, ਜੋ ਕੁਝ ਕਹਾਂਗੇ ਕਰਕੇ ਵਿਖਾ ਦਿਆਂਗੇ।
ਗੂੜੀ ਨੀਂਦਰ ਗੁਲਾਮੀ ਦੇ ਸੁਤਿਆਂ ਨੂੰ, ਝੂਣ ਝੂਣ ਕੇ ਸਿਰੋਂ ਜਗਾ ਦਿਆਂਗੇ।
ਭਾਂਬੜ ਬਾਲਕੇ ਲਖਾਂ ਕੁਰਬਾਨੀਆਂ ਦੇ, ਅਸੀ ਅੱਗ ਅਸਮਾਨ ਨੂੰ ਲਾ ਦਿਆਂਗੇ।
ਭਾਂਬੜ ਜੋਸ਼ ਦੇ ਲਖਾਂ ਹੀ ਉਠਦੇ ਨੇ, ਹਿੰਦੁਸਤਾਨ ਦੇ ਇਕ ਇਕ ਜਵਾਨ ਵਿਚੋਂ,
ਜਿਵੇਂ ਲਿਸ਼ਕਦੀ ਨਿਕਲਦੀ ਤੇਗ ਤਿੱਖੀ, ਕਾਲੀ ਕਾਲੀ ਤੇ ਤਿਰਛੀ ਮਿਆਨ ਵਿਚੋਂ।
ਓਏ ਫਰੰਗੀਆ ਰੋਂਦਾ ਈ ਜਾਏਂਗਾ ਤੂੰ, ਆਪ ਹੁਦਰਿਆ ਵੇ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨ ਵਿਚੋਂ।
ਵੇਖੀਂ ਫੁੰਡਿਆ ਜਾਏਂਗਾ ਤੋਤਿਆ ਵੇ, ਛੁਟਾ ਤੀਰ ਜਦੋਂ ਕੌਮੀ ਕਮਾਨ ਵਿਚੋਂ।
ਅਸੀਂ ਆਪਣੀ ਆਈ ਤੇ ਜਦੋਂ ਆ ਗਏ, ਤੈਨੂੰ ਨਾਨਕੇ ਚੇਤੇ ਕਰਾ ਦਿਆਂਗੇ।
ਅਸੀਂ ਡਾਢੇ ਚੰਗਆੜੇ ਹਾਂ ਜਦੋਂ ਮਘੇ, ਫੜਕੇ ਅਗ ਅਸਮਾਨ ਨੂੰ ਲਾ ਦਿਆਂਗੇ।
ਅਸੀ ਮੋਏ ਨਹੀਂ, ਜਿੰਦਾ ਹਾਂ, ਅਣਖ ਵੀ ਹੈ, ਅਗੋਂ ਦਿਆਂਗੇ ਤੈਨੂੰ ਜਵਾਬ ਜ਼ਿੰਦਾ।
ਜੇਕਰ ਮਰਾਂਗੇ ਤਾਂ ਵੀ ਪੰਜਾਬ ਅੰਦਰ, ਦੇਸ਼ ਭਗਤ ਹੋਸਨ ਬੇ ਹਿਸਾਬ ਜ਼ਿੰਦਾ।
ਜਦੋਂ ਤੀਕ ਪੰਜਾਬ ਦਾ ਇਕ ਗਭਰੂ, ਜੀਉਂਦਾ ਜਾਗਦਾ ਹੈ, ਹੈ ਪੰਜਾਬ ਜ਼ਿੰਦਾ।
ਓਦੋਂ ਤਕ ਸਾਰੇ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨ ਅੰਦਰ, ਰਹਿਸੀ ਪਕ ਸਮਝੀਂ, ਇਨਕਲਾਬ ਜ਼ਿੰਦਾ।
ਭਗਤ ਸਿੰਘ, ਸਰਾਭੇ ਦੀ ਰਤ ਉਤੇ, ਅਸੀਂ ਰਤ ਦਾ ਵੈਹਣ ਵਗਾ ਦਿਆਂਗੇ।
ਪਾ ਪਾ ਕੇ ਤੇਲ ਕੁਰਬਾਨੀਆਂ ਦਾ, ਕੌਮੀ ਅਗ ਦੇ ਭਾਂਬੜ ਮਚਾ ਦਿਆਂਗੇ।
ਰਹਿ ਗਈ ਏ ਤੇਰੀ ਮਿਆਦ ਥੋੜੀ, ਉਚੇ ਵਾ ਵਰੋਲਿਆ ਥਲ ਦਿਆ ਵੇ।
ਘੜੀ ਪਲਕ ਨੂੰ ਲੋੜਿਆਂ, ਲਭਨਾਂ ਨਹੀਂ, ਹਿੰਦ ਵਿਚੋਂ ਪਰਛਾਂਵਿਆਂ ਢਲਦਿਆ ਵੇ।
ਕਰਨਾਂ ਕੂਚ ਤੂੰ ਹਿੰਦ ਸਰਾਂ ਵਿਚੋਂ, ਮੁਠਾਂ ਮੀਟ, ਪਰਾਹੁਣਿਆਂ ਪਲਦਿਆ ਵੇ।
ਤੇਲ ਮੁਕਿਆ ਈ ਤੇਰਾ ਚਾਂਹਵਦਾ ਏ, ਜ਼ੋਰ ਜ਼ੁਲਮ ਦੇ ਦੀਵਿਆ ਬਲਦਿਆ ਵੇ।
ਤੇਰੀ ਜ਼ੁਲਮ ਦੀ ਲਾਟ ਨੂੰ ਅਸੀਂ 'ਮਹਿਰਮ' ਮਾਰ ਮਾਰ ਕੇ ਫੂਕਾਂ ਬੁਝਾ ਦਿਆਂਗੇ।

ਤੀਲੀ ਬਾਲਕੇ ਇਕੋ ਕੁਰਬਾਨੀਆਂ ਦੀ, ਫੜਕੇ ਅੱਗ ਅਸਮਾਨ ਨੂੰ ਲਾ ਦਿਆਂਗੇ।

"ਕਿਰਤੀ ਲਹਿਰ" ਹਫਤਾਵਾਰ ਅਖਬਾਰ	"किरती लहर" साप्ताहिक अखबार
ਸੰਪਾਦਕ :	संपादक :
ਬਾਬਾ ਕਰਮ ਸਿੰਘ "ਧੂਤ" (ਅਮ੍ਰੀਕਨ)।	बाबा करम सिंह "धुत" (अमरीकन)
ਜਿਲਦ ਨੰ. ੨, ਅੰਕ : ੨੭,	जिल्द नं. 2, अंक : 27,
੨ ਜੁਲਾਈ ੧੯੩੯	2 जुलाई 1939
ਆਜ਼ਾਦ ਪ੍ਰੈਸ, ਮੇਰਠ।	आज़ाद प्रैस, मेरठ।

(अवाप्ति संख्या : 2017)

ਝੂੰਣ ਝੂੰਣ, ਟੁੰਬ ਟੁੰਬ, ਦੇਸ਼ ਨੂੰ ਜਗਾ ਦਿਓ

ਉਠੋ ਨੌਜਵਾਨੋ ਮਾਰੋ ਹੰਭਲਾ ਦਲੇਰ ਹੋ ਕੇ,
ਪਰਾਧੀਨਤਾ ਦੀ ਜੜ੍ਹ ਪੁੱਟ ਕੇ ਵਖਾ ਦਿਉ।
ਦੇ ਕੇ ਕੁਰਬਾਨੀ ਹਾਨੀ ਹੁੰਦੀ ਤਾਈਂ ਦੂਰ ਕਰੋ,
ਦੇਸ ਪ੍ਰਦੇਸ ਡੰਕਾ ਹਿੰਦ ਦਾ ਵਜਾ ਦਿਉ।
ਰਹਿਣਾ ਨਹੀਂ ਗੁਲਾਮ ਖਾਸ ਆਮ ਤਾਈਂ ਆਖ ਦੇਵੋ,
ਝੰਡਾ ਲੋਕ ਰਾਜ ਵਾਲਾ ਹਿੰਦ ਤੇ ਝੁਲਾ ਦਿਉ।
ਚਲਦੀ ਜੋ ਲਹਿਰ, ਕਹਿਰ ਪਾਊ ਘਰ ਵੈਰੀਆਂ ਦੇ,
ਦੁਖ ਦੂਰ ਕਰ, ਸਾਰੇ ਸੁਖ ਵਰਤਾ ਦਿਉ।
ਰੁੱਸੀ ਹੈ ਚਰੋਕਣੀ "ਆਜ਼ਾਦੀ" ਨਾਲ ਹਿੰਦੀਆਂ ਦੇ,
ਦੇ ਕੇ ਤਨ ਭੇਂਟ ਇਸ "ਦੇਵੀ" ਨੂੰ ਮਨਾ ਦਿਉ।
ਮੰਨਣਾ ਨਹੀਂ ਸਾਯਾ ਸਿੱਕਾ ਗ਼ੈਰਾਂ ਦਾ ਹੈ ਹਿੰਦ ਉਤੇ,
ਕਰਨਾ ਹੈ ਰਾਜ ਅਸੀਂ ਆਪ ਬਤਲਾ ਦਿਉ।
ਫੜਕੇ ਕਟਾਰ ਇਤਫ਼ਾਕ ਵਾਲੀ ਹੱਥ ਵਿਚ,
ਫੁੱਟ ਚੰਦਰੀ ਦੀ ਅਲਖ ਅਕੇਰਾਂ ਹੀ ਮਿਟਾ ਦਿਉ।
ਅਸੀਂ ਘਰ ਆਪਣੇ ਦੀ ਰਾਖੀ ਆਪੇ ਕਰਲਾਂਗੇ,
ਨੌਕਰਸ਼ਾਹੀ ਦੀ ਨਾ ਲੋੜ ਗਲ ਸੱਚੀ ਹੀ ਸੁਣਾ ਦਿਉ।
ਤੇਰਾ ਉਹ ਪਿਆਰ ਸਾਨੂੰ ਜੁੱਗਾਂ ਤੀਕ ਭੁਲਣਾ ਨਹੀਂ,
ਜੱਲ੍ਹਿਆਂ ਦਾ 'ਬਾਗ' ਸਾਕਾ ਯਾਦ ਕਰਵਾ ਦਿਉ।
ਭੈਣਾ ਸਾਡੀਆਂ ਦੇ ਮੂੰਹਤੇ ਥੁੱਕਣੋ ਭੀ ਅੱਕਿਉਂ ਨਾ,
ਮਾਰਸ਼ਲ ਲੱਾਅ ਦਾ ਚੇਤਾ ਉਸ ਨੂੰ ਜਿਤਾ ਦਿਉ।
ਜਲ੍ਹਿਆਂ ਦੇ ਬਾਗ ਸਾਡਾ ਖੂੰਨ ਸਾਂਝਾ ਹੋ ਗਿਆ ਏ,
"ਅਸੀਂ ਨਾ ਟੁਟਣ ਵਾਲੇ" ਉਸ ਨੂੰ ਜਿਤਾ ਦਿਉ।
ਬੱਜ ਬੱਜ ਘਾਟ, ਨਨਕਾਣਾ, ਗੁਰੂ ਬਾਗ, ਜੈਤੋ,
ਖਾਧੀ ਗੋਲੀ ਸੀਨੇ, ਸੀਨੇ ਖੋਲ੍ਹ ਕੇ ਦਿਖਾ ਦਿਉ।
ਰੌਲਪਿੰਡੀ, ਕੁਆਟ, ਬੰਨੂੰ ਟਾਂਕ, ਤੇਰੇ ਕਾਰੇ ਦੇਖੇ,
ਲਖਨਊ, ਕਾਨਪੁਰ, ਬੰਬਈ, ਜਤਲਾ ਦਿਉ।
ਪੇਸ਼ਾਵਰ ਹੈ ਤੂੰ! ਅਸਾਂ ਭੁਲਣਾ 'ਪਸ਼ਾਵਰ' ਨਹੀਂ,
ਤਾੜ ਤਾੜ ਗੋਲੀਆਂ ਦੀ ਯਾਦ ਵੀ ਕਰਾ ਦਿਉ।

ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਰਾਜ ਗੁਰੂ, ਸੁਖ ਦੇਵ, ਤੇ ਸਰਾਭੇ ਤਾਈਂ,
'ਚੌਦਾਂ-ਪੰਦਰਾਂ' ਦੇ ਫਾਂਸੀ ਚੜ੍ਹੇ ਇਨਾਂ ਨੂੰ ਗਿਣਾ ਦਿਓ।
ਰਖਣੀ ਹੈ ਯਾਦ ਕੁਰਬਾਨੀ ਉਨਾਂ ਦੋਸਤਾਂ ਦੀ,
ਜੇਹੜੇ ਬੈਠੇ ਸੜਨ ਜੇਲ੍ਹੀਂ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਬਾਹਰ ਕਢਵਾ ਦਿਓ।
ਸਾਰੇ ਦੁਖ ਦੂਰ ਲੋਕ ਰਾਜ ਬਿਨਾ ਹੋਵਣੇ ਨਹੀਂ,
ਇਨਕਲਾਬ 'ਮਾਰ' ਨਾਹਰਾ ਵੈਰੀ ਨੂੰ ਕੰਬਾ ਦਿਓ।
ਮਜ੍ਹਬਾਂ ਦੇ ਝੇੜੇ ਜੇਹੜੇ, ਵੇਹੜੇ ਸਾਡੇ ਪੌਣ ਗਿੱਝੇ,
ਉਹਨਾਂ ਤਾਈਂ ਦੂਰੋਂ ਵਾਂਗ ਸੁਆਨ ਫਿੱਟਕਾ ਦਿਓ।
ਔਂਦੀ ਹੈ ਆਜ਼ਾਦੀ ਵਾਹੋ ਦਾਹੀ ਵਧੀ ਤੁਸਾਂ ਵੱਲ,
ਝੂੰਣ ਝੂੰਣ, ਟੁੰਬ ਟੁੰਬ, ਦੇਸ਼ ਨੂੰ ਜਗਾ ਦਿਓ।

— ਜੀ. ਸਿੰਘ ਨਕੋਦਰੀ "ਦੁਖੀ ਮਜ਼ਦੂਰ"
(जी. सिंह नकोदरी "दुखी मज़दूर")

"ਕਿਰਤੀ ਲਹਿਰ" ਹਫਤਾਵਾਰ ਅਖਬਾਰ
ਸੰਪਾਦਕ :
ਬਾਬਾ ਕਰਮ ਸਿੰਘ "ਧੁਤ" (ਅਮ੍ਰੀਕਨ)।
ਜਿਲਦ ਨੰ. ੨, ਅੰਕ : ੩੫,
੨੭ ਅਗਸਤ ੧੯੩੯
ਆਜ਼ਾਦ ਪ੍ਰੈਸ, ਮੇਰਠ।

"किरती लहर" साप्ताहिक अखबार
संपादक :
बाबा करम सिंह "धुत" (अमरीकन)
जिल्द नं. 2, अंक : 35,
27 अगस्त 1939
आज़ाद प्रैस, मेरठ।

(अवाप्ति संख्या : 2021)

ਅੰਤ ਹੋਵੇਗਾ ਵਤਨ ਆਜ਼ਾਦ ਸਾਡਾ

ਸਾਡਾ ਕਿਸੇ ਦੇ ਨਾਲ ਨਹੀਂ ਵੈਰ ਬਿਲਕੁਲ,
ਅਸੀਂ ਵਤਨ ਆਜ਼ਾਦ ਕਰਵਾਵਨਾ ਹੈ।
ਅਸੀਂ ਸੰਗਲ ਗੁਲਾਮੀ ਦੇ ਲੌਹਨ ਖਾਤਰ,
ਜੰਗ ਸ਼ਾਂਤਮਈ ਖੂਬ ਮਚਾਵਨਾ ਹੈ।
ਇਸ ਦੀ ਸ਼ਾਨ ਲਈ ਜਾਨ ਕੁਰਬਾਨ ਕਰਨੀ,
ਵਿਚ ਜੇਹਲਾਂ ਦੇ ਹਸ ਹਸ ਜਾਵਨਾ ਹੈ।
ਹਾਸਲ ਕਰਨ ਲਈ ਇਕ ਸਵਤੰਤਰਤਾ ਨੂੰ,
ਰਸਾ ਚੁੰਮ ਕੇ ਗਲ ਵਿਚ ਪਾਵਨਾ ਹੈ।
ਹਾਸਲ ਕਰਨ ਲਈ ਏਸ ਆਜ਼ਾਦੀ ਨੂੰ ਹੀ,
ਹੋਇਆ 'ਭਗਤ' ਜਿਤਇੰਦਰ ਬਰਬਾਦ ਸਾਡਾ।
ਖਾਕੇ ਕਸਮ ਸ਼ਹੀਦਾਂ ਦੀ ਆਖਦਾ ਹਾਂ,
ਅੰਤ ਹੋਵੇਗਾ ਵਤਨ ਆਜ਼ਾਦ ਸਾਡਾ।
ਐਬੇਸੀਨੀਆਂ ਵਾਲਿਆਂ ਹਬਸ਼ੀਆਂ ਨੇ,
ਹੈ ਗੁਲਾਮੀ ਤੋਂ ਮਰਨਾ ਕਬੂਲ ਕੀਤਾ।
ਆਇਰਲੈਂਡ ਨੇ ਏਸੇ ਬਰਤਾਨੀਆਂ ਤੋਂ,
ਸੀਸ ਵਾਰ ਕੇ ਵਤਨ ਵਸੂਲ ਕੀਤਾ।
ਚੀਨ ਵਾਲਿਆਂ ਐਧਰ ਗੁਲਾਮ ਹੋਕੇ,
ਜ਼ਿੰਦਾ ਰਹਿਨਾ ਮਨਜ਼ੂਰ ਨਾ ਮੂਲ ਕੀਤਾ।
ਸਾਡਾ ਦੇਸ਼ ਹੁਨ ਅਗਾਂ ਨੂੰ ਚਾਹੀਦਾ ਏ,
ਸਾਥੋ ਅਰਸੇ ਤੋਂ ਗੈਰਾਂ ਨੇ ਰੂਲ ਕੀਤਾ।
ਅਸੀਂ ਹਾਸਲ ਆਜ਼ਾਦੀ ਨੂੰ ਕਰਾਂਗੇ ਹੁਨ,
ਏਸ ਗਲ ਦਾ ਖੂਨ ਹੈ ਸ਼ਾਹਦ ਸਾਡਾ।
ਸੀਸ ਭੇਂਟ ਆਜ਼ਾਦੀ ਦੇ ਕਰ ਜਾਂਗੇ,
ਅੰਤ ਹੋਵੇਗਾ ਵਤਨ ਆਜ਼ਾਦ ਸਾਡਾ।
ਇਕ ਦੇਵੀ ਆਜ਼ਾਦੀ ਦੀ ਵਰਨ ਖਾਤਰ,
ਲਖਾਂ ਸਬਕ ਸ਼ਹਾਦਤ ਦਾ ਪੜ੍ਹਨਗੇ ਹੁਨ।
ਪਿਆਰਾ ਵਤਨ ਆਜ਼ਾਦ ਕਰਾਨ ਖਾਤਰ,
ਦਰਦੀ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਜੇਹਲਾਂ ਚਿ ਵੜਨਗੇ ਹੁਨ।

ਜ਼ੁਲਮੋ ਸਿਤਮ ਤੇ ਜਬਰ ਦੀ ਲਾਟ ਉਤੇਂ,
ਕਈ ਵਾਂਗ ਪਤੰਗਾਂ ਦੇ ਸੜਨਗੇ ਹੁਨ।
ਲੋੜ ਪਈ ਜੇ ਫਾਂਸੀ ਤੇ ਚੜ੍ਹਨ ਦੀ ਵੀ,
ਹਿੰਦੀ ਨੌਜਵਾਨ ਫਾਂਸੀ ਤੇ ਚੜ੍ਹਨਗੇ ਹੁਨ।
ਸਾਡਾ ਵਤਨ ਆਜ਼ਾਦ ਜ਼ਰੂਰ ਹੋਸੀ,
ਪਿਆ ਆਖਦਾਏ ਏਹਤਕਾਦ ਸਾਡਾ।
ਅਸੀਂ ਜੰਗ ਆਜ਼ਾਦੀ ਦਾ ਲੜੀ ਜਾਂਗੇ,
ਅੰਤ ਹੋਵੇਗਾ ਵਤਨ ਆਜ਼ਾਦ ਸਾਡਾ।
ਇਹ ਕੋਈ ਭੁਲ ਨਹੀ ਦੇਸ਼ ਦੁਲਾਰਿਆਂ ਨੂੰ,
ਕਿਵੇਂ ਦੇਸ਼ ਆਜ਼ਾਦੀ ਲਈ ਮਰੀਦਾ ਏ।
ਤੈਹ ਕਰਨੀ ਹੋਵੇ ਜੇ ਇਹ ਮੰਜ਼ਲ,
ਤਾਂ ਫਿਰ ਕਸ਼ਟ ਸਰੀਰ ਤੇ ਜਰੀਦਾ ਏ।
ਪੈਰ ਮੌਤ ਦੀ ਹਦ ਤੋਂ ਰਖ ਅਗੇ,
ਸੁਤੰਤਰਤਾ ਨੂੰ ਫੇਰ ਵਰੀਦਾ ਏ।
ਸੀਸ ਕਟਕੇ ਤਲੀ ਤੇ ਰਖੀਏ ਜੇ,
ਫੇਰ ਦਰਸ਼ ਮਹਬੂਬ ਦਾ ਕਰੀਦਾ ਏ।
ਹੁਨ ਤਾਂ ਕੁਲ ਜ਼ਮਾਨਾ ਇਹ ਸਮਝਦਾ ਏ,
ਇਨਕਲਾਬ ਹੋਸੀ ਜ਼ਿੰਦਾਬਾਦ ਸਾਡਾ।
ਸੀਸ ਭੇਂਟ ''ਕਰਤਾਰ'' ਚੜ੍ਹਾ ਦਿਆਂਗੇ,
ਅੰਤ ਹੋਵੇਗਾ ਵਤਨ ਆਜ਼ਾਦ ਸਾਡਾ।

— ਕਾਮਰੇਡ ਕਰਤਾਰ ਸਿੰਘ ''ਕਰਤਾਰ''
(कामरेड करतार सिंह ''करतार'')

''ਦੁਖੀ ਦੁਨੀਆਂ''
ਕਵੀ ਤੇ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਕ :
ਕਾਮਰੇਡ ਕਰਤਾਰ ਸਿੰਘ ''ਕਰਤਾਰ''
ਆਜ਼ਾਦ ਪ੍ਰੈਸ, ਮੇਰਠ।

''दुखी दुनियां''
कवि और प्रकाशक :
कामरेड करतार सिंह ''करतार''।
आज़ाद प्रैस, मेरठ।

(अवाप्ति संख्या : 1956)